

मो ती ला ल व ना र सी दा स
चौक, वाराणसी
बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली—७
अशोक राजपथ, पटना (बिहार)

प्रथम संस्करण १९६८
मूल्य—९.००

श्री सुन्दर लाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी, द्वारा
प्रकाशित तथा मोहनलाल, केशव मुद्रणालय, पाण्डेपुर पिसनहरिया,
वाराणसी द्वारा मुद्रित ।

समर्पण

पुण्य प्रताप पुंज से जिनके,
मैंने ज्योतिष शास्त्र पढ़ा ॥
जिनके उत्साहित करने से,
इसमें मेरा ज्ञान बढ़ा ॥१॥
परम पूज्य वर पिता आप की,
पुण्य स्मृति ये सञ्चित है ॥
सेवा में लघु सेवक की यह,
सादर भेंट समर्पित है ॥२॥

प्राक्कथन

वैदिक काल से भारतीय विज्ञानों में ज्योतिष शास्त्र का एक प्रमुख स्थान रहा है। बिना द्वीप के गणित और फलित ज्योतिष दोनों ही में, प्राचीन काल में जितना विवाद विवेचन ज्योतिष के सम्बन्ध में भारतवर्ष में हुआ है, शायद ही किसी अन्य राष्ट्र में हुआ हो। जब से हिन्दी भारत को राष्ट्र-भाषा घोषित की गई है, तब से आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनेकानेक ग्रन्थ हिन्दी में लिखे जा रहे हैं। इस कार्य में अनेक कठिनाइयाँ सम्मुख आती हैं। पारिभाषिक शब्द ही हजारों की सख्या में गढ़ना पड़ते हैं। परन्तु यह दुःख की बात है कि जहाँ पारिभाषिक शब्दों का कोई सवाल नहीं, जो विद्याएँ हमारी पतक सम्पत्ति हैं, उनकी भी सरल सुन्दर और विस्तृत व्याख्याएँ हिन्दी में आज भी दुष्प्राप्य हैं।

हर्ष का विषय है कि ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी इस कमी को पूरा करने में 'सिंहसदन' नरसिंहपुर के श्री वी० एल० ठाकुर सलग्न हैं। उन्होंने अपने "सचित्र ज्योतिष शास्त्र" का प्रथम भाग पूर्ण कर लिया है। इस शास्त्र में स्वयं मुझे रुचि है।

यह सुन्दर ग्रन्थ पढ़ कर मुझे संतोष हुआ। पुस्तक में यथास्थान अनेक चित्र दिये हैं और यद्यपि ठाकुर साहब ने अनेक भागों को काफी विस्तार से समझाया है, भाषा सरल है और ठाकुर साहब ने इस बात को सदा ध्यान में रक्खा है कि पुस्तक उनके लिये लिखी जा रही है जिन्होंने पहिले कभी भारतीय ज्योतिष शास्त्र में कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की।

आशा है, ठाकुर साहब का यह स्तुत्य प्रयत्न सफल होगा और हिन्दी संसार उनके ज्योतिष शास्त्र को पूर्णतया अपनावेगा।

नागपुर

दिनांक २२ फरवरी १९५४

}

कुंजीलाल दुवे

छपकुलपति

नागपुर विश्वविद्यालय

लेफ्ट० कर्नल पंडित के० एल० दुवे

वी० ए०, एल-एल० वी०, एम० एल० ए०

वाइस चान्सलर नागपुर यूनिवर्सिटी

व स्पीकर मध्य प्रदेश लेजिसलेटिव असेम्बली

नागपुर म० प्र०

उद्देश्य

बहुत से ज्योतिष ग्रन्थों के होने पर भी इस पुस्तक के लिखने की क्यों आवश्यकता हुई यहाँ संक्षेप में यह बता देना अनुचित न होगा ।

आज कल पाश्चात्य देशों में भी फलित में विश्वास बढ़ने लगा है । कई पुरुष स्वयं भी अनुभव कर फलित पर विश्वास करने लगे हैं, इस कारण इस शास्त्र के अध्ययन की ओर लोगो की रुचि बढ़ रही है, परन्तु ज्योतिष के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं और वे ग्रन्थ विद्वानों के समझने योग्य ही लिखे गये हैं, अर्थात् वे ही उनको समझ सकते हैं जो उस विषय में कुछ जानते हों । परन्तु जो उस विषय में कुछ भी न जानते हों उनके समझने में वे पुस्तकें भाषा टीका में होने पर भी समझ में नहीं आ सकती । कारण कि नवीन विद्यार्थी को उन पुस्तकों के समझने में बड़ी कठिनाई होती है । संस्कृत की भी उतनी योग्यता प्राप्त करने का समय या साधन का अभाव भी बहुत खटकता है ।

इस कारण राष्ट्रभाषा हिन्दी में एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता है कि जिससे कोई विद्यार्थी यदि ज्योतिष का एक अक्षर भी न जानता हो तो बिना किसी दूसरी पुस्तक के सहारा लिये घर बैठे स्वयं ज्योतिष का अध्ययन कर सके ।

मैंने भी ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन में बहुत वर्ष व्यतीत किये हैं और कई पण्डितों से मिल कर इसका अध्ययन करते समय आवश्यक सक्षिप्त नोट भी तैयार करता गया जिससे उस विषय की विस्मृति न हो ।

कई मित्रों ने जिनको इस विषय के अध्ययन की तीव्र इच्छा हुई, ये नोट देख कर प्रसन्न हुए और जन साधारण के लाभार्थ प्रकाशित करा देने की सम्मति दी । इस कारण इस पुस्तक के प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई ।

यह पुस्तक इस बात को ध्यान में रखकर लिखी गई है कि पाठक इस विषय के अनभिज्ञ हैं, इसी कारण किसी विषय को समझाते समय नवीन विद्यार्थी के अध्ययन करते समय कठिनाई न हो, कहीं कहीं एक बात की पुनरुक्ति भी करनी पड़ी है और इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि कोई कठिन शब्द न आवे जिससे भावार्थ समझने में कठिनाई जान पड़े । जहाँ आवश्यक हुआ है वहाँ कठिन शब्दों को समझा दिया गया है । पारिभाषिक शब्द तो सर्वत्र ही समझा दिये गये हैं । इसमें स्थान स्थान पर विशेष शब्दों के अंग्रेजी में भी अर्थ दे दिये गये हैं जिससे अंग्रेजी जानने वालों को

इसके अतिरिक्त भी इतर अंग्रेजी के ज्योतिष ग्रंथों को भी समझने की योग्यता प्राप्त हो जायगी। तात्पर्य यह है कि शास्त्ररूपी सागर को पार करने के लिये पाठक इस पुस्तक को नौका रूप में पायेंगे।

केवल इस ज्ञान खण्ड के ही पढ़ लेने से कोई पूरा ज्योतिषी नहीं बन सकता, किन्तु यह खण्ड ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगा, एवम् ज्योतिष शास्त्र में प्रवेश करने के लिये सच्चे मार्ग दर्शक का काम देगा।

नवीन विद्यार्थी को क्रमानुसार इसके सम्पूर्ण खण्डों का अध्ययन करना होगा। ज्ञान खण्ड अध्ययन कर लेने से ज्योतिष सम्बन्धी बहुत सी महत्वपूर्ण मुख्य मुख्य बातें समझ में आने लगेंगी। इसमें ज्योतिषियों के लाभार्थ बहुत से उपयोगी चुटकुले भी दिये हैं। जैसे किसी का जन्म सम्बन्ध मास पक्ष दिन समय आदि न ज्ञात हो तो केवल कुंडली चक्र को देख कर ही ये सब बातें किस प्रकार बताई जा सकती हैं या विना पचाग के तिथि नक्षत्र करण वार सूर्य चन्द्र स्पष्ट आदि किस प्रकार बताये जा सकते हैं समझाया है। इनके अतिरिक्त तारोख से तिथि आदि कैसे जानना भी बताया है और अनन्त वर्षों की जन्त्री देकर जन्त्री बनाने की युक्ति भी बताई गई है। इस ज्ञान खण्ड के अध्ययन करने के उपरान्त आगे अध्ययन करना चाहिए। इस ज्ञान खण्ड के अध्ययन कर लेने से किसी को टिप्पणी (सक्षिप्त जन्मपत्रिका) बना लेना आ जाता है। अन्त में फलित सम्बन्धी मुख्य मुख्य बातें संक्षेप में बताई गई हैं जिनको जानना आवश्यक है और जिनके जान लेने पर फलित समझने की योग्यता बढ़ेगी। इसके उपरान्त ज्यो ज्यो आप आगे के और भी खण्ड अध्ययन करते जायेंगे योग्यता बढ़ती जायगी और पूर्ण अध्ययन कर लेने पर आप ज्योतिष के अच्छे जानकार अवश्य बन जायेंगे।

गणित खण्ड के अध्ययन से आप किसी की भी पूरी जन्मपत्री बना सकेंगे, और जन्मपत्र बनाने के सम्बन्ध को सम्पूर्ण बातें आप को आ जावेंगी। इसमें समय ज्ञान, इष्ट साधन, ग्रह साधन, लग्न साधन, द्वादश भाव साधन, वर्ग साधन, अष्टक वर्ग साधन, ग्रह पडवल साधन, भाव पडवल साधन, आयु साधन, दशा साधन, अहर्गण साधन, अहर्गण से ग्रह साधन आदि अनेक प्रकार का गणित उदाहरण देकर सरलता पूर्वक समझाया है, जिससे नवीन विद्यार्थी को समझने में अड़चन न हो। इसके उत्तरार्द्ध में प्रत्येक गणित को क्रिया करने की रीति भी समझाई गई है।

फलित खण्ड—फलित सम्बन्धी शेष सब बातें रहेंगी और महान् पुरुषों की कुंडली से उदाहरण देकर अभ्यास कराया जायेगा जिससे फल कथन करने की योग्यता आ जायगी। यह योग्य विद्वानों की अध्यक्षता में तैयार होगा जिनका सारा जीवन इसे अध्ययन कर व इसमें अनुभव प्राप्त कर फलादेश कथन में कीर्ति प्राप्त की है।

वर्षफल खण्ड—वर्षफल बनाने का पूरा गणित उदाहरण देकर समझाया

जायेगा और वर्ष भर का सम्पूर्ण फल रहेगा जिससे आप अपना या किसी का भी वर्षफल बना सकेंगे ।

प्रश्न खण्ड—प्रश्न ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण बातें रहेंगी और किसी प्रश्न का उत्तर देने का अभ्यास उदाहरण देकर कराया जायेगा ।

मुहूर्त खण्ड—मुहूर्त सम्बन्धी सम्पूर्ण बातें इसमें रहेंगी ।

संहिता खण्ड—ज्योतिष की शेष बातें मेदनोसंहिता आदि सम्बन्धी बातें इसमें रहेंगी । इसमें वर्षा का विचार देश के फल का विचार वस्तु की महगाई आदि का विचार इत्यादि बातें रहेंगी ।

यह पुस्तक ज्योतिष के नवीन विद्यार्थी को लाभ पहुँचाने की दृष्टि से लिखी गई है । इस कारण यदि इसके प्रकाशन से जनता का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना उद्देश्य सफल समझूँगा ।

पाठक यदि इस ज्ञान खण्ड को अपना कर यदि मेरा उत्साह बढ़ायेंगे तो इसके इतर खण्डों के प्रकाशन में शीघ्रता होगी ।

अंत में विशेष प्रार्थना है कि भूल होना मानुषीय है, यदि किसी विषय को समझाने में कोई त्रुटि हुई हो तो या अन्य प्रकार की कोई भूल हुई हो तो सज्जनो से आशा है कि क्षमा प्रदान कर भूल की सूचना देंगे या अपनी कठिनाई सूचित करेंगे तो मैं अति अनुगृहीत होऊँगा और भविष्य में भूल सुधार दी जायेगी और कठिनाई दूर कर आवश्यक बातों का समावेश कर दिया जायगा ।

इस खण्ड के लिखने में श्री उमाप्रसाद जी पोतदार हस्तरेखा शास्त्री और ज्योतिषाचार्य और मेरे भाई नर्मदा प्रसाद ठाकुर (जो हस्तरेखा और ज्योतिष शास्त्र में दक्ष हैं) उचित परामर्श देकर बहुत सहायता की है । इसलिये उनको धन्यवाद है ।

भवदीय

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य

नरसिंहपुर

सिंह सदन

दिनांक १८-७-१९४५

नरसिंहपुर म० प्र०

ज्योतिष शिक्षा

(ज्ञान खण्ड)

के अध्याय की सूची

अध्याय विषय	पृष्ठ	अध्याय विषय	पृष्ठ
समर्पण	३	१६ अग्नेजी पंचाग	११०
प्राक्कथन	५	२० कुण्डली विचार	११३
उद्देश्य	६	२१ लग्न निकालना	१२१
१ ज्योतिष शास्त्र के भेद	१	२२ इष्ट काल और	
२ ज्योतिष शास्त्र में विश्वास	२	कुण्डली बनाना	१२७
३ सौर जगत और ग्रह	७	२३ राशिया और कालाग	१३३
४ राशि चक्र	१३	२४ राशि गुण धर्म	१३७
५ नक्षत्र विचार	२०	२५ ग्रह विचार और स्वग्रह	१३९
६ ध्रुव की पहिचान	२३	२६ ग्रह की उच्च नीच	
७ नक्षत्रों की पहिचान और चित्र	२५	राशिया	१४४
८ राशियों के स्वरूप	३८	२७ ग्रहमन्त्री	१४७
९ अक्षांश देशान्तर विचार	४०	२८ ग्रहों की दृष्टि विचार	१५४
१० आकाश की कल्पित		२९ ग्रहों का परिचय	१६४
रेखाओं का स्पष्टीकरण	४७	३० ग्रह गुण धर्म	१६५
११ ग्रहों की गति	५४	३१ ग्रहों का प्रभाव	१६९
१२ सम्पात विचार	५८	३२ भाव परिचय नाम आदि	१७३
१३ सायन निरयन विचार	६२	३३ भाव विचार	१७६
१४ काल प्रमाण और वर्ष		३४ धूपघड़ी बनाना	१८२
आदि विचार	६५	३५ विना पंचाग के तिथि	
१५ मास और पक्षादि विचार	७२	आदि ज्ञान	१८५
१६ पंचाग के अंग तिथि		३६ सायन सूर्य-चन्द्र साधन	१८२
आदि का विचार	७६	३७ तारीख से तिथि जानना अनन्त	
१७ मुहूर्त का संक्षिप्त ज्ञान	८६	वर्षों की जन्मों आदि	२०४
१८ पंचाग कैसे देखना और		३८ दिन मान चन्द्रोदय	
उपयोग	९८	आदि जानना	२२१

अध्याय विषय	पृष्ठ	अध्याय विषय	पृष्ठ
३६ कुण्डली पर से जन्म		४५ गोचर विचार	२६२
समय ज्ञान	२२७	४६ शनि का विशेष विचार	२६३
४० ग्रह बल विचार	२३४	४७ आयुर्दाय विचार	२६६
४१ नक्षत्र गुण धर्म	२३७	४८ मारकेश विचार	२६८
४२ जन्म पत्री बनाना	२३९	४९ दशा साधन	२७०
४३ फलित सम्बन्धी स्थूल विचार	२४९	५० कार्यसिद्ध योग	२७८
४४ फलित विचार करने के		५१ नवांश ज्ञान	२७९
कुछ नियम	२५४		



चित्रों की सूची

चित्र	पृष्ठ	चित्र	पृष्ठ
१ सूर्य के आसपास ग्रह इस प्रकार घूमते हैं	८	१६ मृगशिर	२७
२ ग्रहों के परिक्रमा करने का क्रम	८	२० आर्द्रा	२७
३ ग्रहों के आकार का आनुपातिक मिलान	१०	२१ पुनर्वसु	२८
४ राहु केतु की स्थिति	११	२२ पुष्य	२८
५ राशि चक्र और ग्रह घूमने की दिशा व पृथ्वी के आसपास ग्रहों का घूमना	१२	२३ आश्लेषा	२८
६ राशि चक्र विपुवत वृत्त का घ्रुव	१४	२४ मघा	२९
७ पृथ्वी की कक्षा या परिक्रमा मार्ग	१४	२५ पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी	२९
८ कोण	१७	२६ हस्त	२९
९ समकोण	१७	२७ चित्रा	३०
१० एक चक्र के समकोण	१७	२८ स्वाती	३०
११ ऊर्ध्व रेखा के दोनों ओर के कोण	१७	२९ विशाखा	३०
१२ कोण नापने का चक्र	१८	३० अनुरावा	३०
१३ आकाश में अशों का अनुमान	२०	३१ ज्येष्ठा	३०
१४ सप्त ऋषि, लघु ऋक्ष, घ्रुव और महर्षि	२४	३२ मूल	३०
१५ अश्विनी	२६	३३ पूर्वाषाढा उत्तराषाढा	३०
१६ भरणी	२६	३४ अभिजित	३१
१७ कृत्तिका	२६	३५ श्रवण	३१
१८ रोहिणी	२६	३६ धनिष्ठा	३१
		३७ पूर्वा भाद्रपद उत्तरा भाद्रपद	३२
		३८ रेवती	३२
		३९ आकाश के नक्षत्रों का चित्रपट १	३३
		४० आकाश के नक्षत्रों का चित्रपट २	३४
		४१ आकाश के नक्षत्रों का चित्रपट ३	३५

चित्र	पृष्ठ	चित्र	पृष्ठ
बारह राशियों के कल्पित स्वरूप		६५ आकाश का चौकोर चित्र	११६
४२ मेष	३६	६६ लग्न दशम अस्त पाताल	
४३ वृष	३६	दर्शक चौकोर चित्र	११७
४४ मिथुन	३६	६७ आकाश में द्वादश भाव	११८
४५ कर्क	३६	६८ लग्न कुंडली	११८
४६ सिंह	३९	६९ भाव सूचक लग्न कुंडली	११९
४७ कन्या	३६	७० आकाश में लग्न से अस्त तक भाव	१२४
४८ तुला	४०	७१ राशियों के घूमने का क्रम और स्वराशि	१४१
४९ वृश्चिक	४०	७२ स्वराशि दर्शक चित्र	१४२
५० धन	४०	७३ ग्रह की दृष्टि सूचक चित्र	१५५
५१ मकर	४०	ग्रहों के कल्पित स्वरूप के चित्र	
५२ कुंभ	४०	७४ रवि	१६८
५३ मीन	४०	७५ चन्द्र	१६८
५४ अक्षांश और देशान्तर	४१	७६ मंगल	१६८
५५ ध्रुव की उँचाई का नाप	४४	७७ बुध	१६८
५६ एलाहाबाद में मव्याह्न में सूर्य की उँचाई	४५	७८ गुरु	१६८
५७ नरसिंह पुर में मव्याह्न में सूर्य की उँचाई	४५	७९ शुक्र	१६८
५८ नाडीवृत्त, क्रांतिवृत्त, भोग और शर	५०	८० शनि	१३८
५९ दूसरा उदाहरण शरभोग आदि का	५२	८१ राहु	१६८
६० क्षितिज, क्रांतिवृत्त, नाडीवृत्त ध्रुव	५३	८२ केतु	१६८
६१ सम्पात विन्दु	५८	८३ धूपघड़ी बनाना	१८४
६२ क्रांति सीमा नाडी वृत्त आदि	५९	८४ धूपघड़ी का चक्र बनाना	१८४
६३ आकाश में पूर्व दशम अस्त पाताल	११४	८५ समय सूचक चक्र और ध्रुव का अक्षांश	१८९
६४ आकाश की दिशाएँ दर्शक चित्र	११४	८६ भूमि पर धूपघड़ी बनाना	
		८७ कुण्डली के भिन्न भिन्न प्रकार और पाश्चात्य पद्धति से कुंडली	२४४-२४७
		८८ दिशाओं की राशियाँ और भाव	२७९

ज्योतिष-शिक्षा

[प्रारंभिक ज्ञानखण्ड]

बुद्धि विनायक विघ्न हर, विनवौ बारम्बार ॥
 विनय करुं वागीश की, विमल बुद्धि दातार ॥ १ ॥
 जय महेश जिन तन लसै, वर नक्षत्र की माल ॥
 जाकी आज्ञा से भ्रमत, ग्रह आदिक अरु काल ॥ २ ॥
 ग्रह प्रभाव से प्रगट हो, पूर्व जन्म का कर्म ॥
 कष्ट कटें प्रभु ध्यान से, अरु प्रगटें शुभ धर्म ॥ ३ ॥
 धरुं ध्यान कल्याण हित, किरपा करहु कृपाल ॥
 शीघ्र पूर्ण हो ग्रन्थ यह, दो शक्तो तत्काल ॥ ४ ॥

अध्याय १

ज्योतिष शास्त्र के भेद

ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि ज्योतिष शास्त्र के कितने भेद हैं। इसके मुख्य २ भेद हैं—

(१) गणित ज्योतिष *Astra Nomy* (एस्ट्रा नमो)=जिससे पचाङ्ग आदि बनाये जाते हैं।

(२) फलित ज्योतिष *Astra logy* (एस्ट्रा लजी)=जिससे ग्रहों के फल का विचार होता है।

इनके भी कई भेद हो गये हैं जो नीचे समझाये जाते हैं—

१ गणित ज्योतिष—इससे ग्रहों का स्वरूप अवस्था गति आदि निश्चय किया जाता है। इसके ३ भेद हैं—

(१) सिद्धान्त—जिसमें कल्प (सृष्टि के आदि) से ग्रह आदि स्पष्ट करने के लिये गणित करने की रीति दी है।

(२) तन्त्र—जिसमें युग (वर्तमान कलियुग) से गणित करने की रीति दी है ।

(३) करण—जिसमें इष्ट शाका से गणित करने की रीति दी है ।

गणित ज्योतिष के अन्तर्गत वह गणित भी है जिसमें जोड़ना घटाना गुणा भाग वर्गमूल आदि निकालना तथा भूमि आकाश आदि के नापने की विधि बतलाई गई है । इसी गणित द्वारा ग्रहों की स्थिति आदि निकाली जाती है ।

२ फलित ज्योतिष (नजूम)—ग्रहों की स्थिति पर से शुभाशुभ फलों का विचार इससे होता है । इसके भेद इस प्रकार हैं—

(१) होरा अर्थात् जातक—आधान कुडली से दुःख सुख का विचार ।

(२) मूहूर्त—कार्य आरम्भ करने में ग्रह तिथि नक्षत्र वार आदि के प्रमाण से शुभाशुभ फल का विचार ।

(३) ताजिक—वर्ष प्रवेश, मास प्रवेश, दिन प्रवेश आदि बनाकर वर्ष भर के शुभाशुभ फल का विचार ।

(४) प्रश्न ज्योतिष—किसी भी समय इष्टकाल पर से किसी भी प्रश्न का तत्सम्बन्धी दुःख सुख आदि के परिणाम का विचार ।

(५) मेदनीय किंवा राष्ट्र ज्योतिष—किसी देश या राष्ट्र की उन्नति अवनति दुःख सुख आदि का विचार ।

(६) संहिता खण्ड—किसी सम्बत का शुभाशुभ, भूकम्प, इन्द्र धनुष, केतु उदय आदि का फल, शुभाशुभ शकुन, शरीर चिह्न द्वारा मरण होने का ज्ञान, स्वरोदय, पल्लीपतन, सामुद्रिक, अङ्ग स्फुरण आदि का विचार ।

अध्याय २

ज्योतिष शास्त्र में विश्वास

इस ग्रन्थ में फलित ज्योतिष का अध्ययन करने के लिये ही प्रारम्भिक वाते बताई गई हैं । फलित ज्योतिष में कई मनुष्य विश्वास करते हैं कई नहीं करते और कहते हैं कि ग्रह इतने दूर होते हुए पृथ्वी पर किस प्रकार प्रभाव पहुँचा सकते हैं । इस कारण प्रारम्भ में ही संक्षेप में ग्रहों के प्रभाव के विषय में थोड़ा बता देना अनावश्यक न होगा ।

यह निर्विवाद सिद्ध है कि सूर्य के आस-पास पृथ्वी आदि कई ग्रह परिक्रमा करते हैं और समस्त ग्रह आदि एव सूर्य अनन्त विश्व के अन्तरिक्ष में निराधार लटके हुए निरन्तर नियमित रूप से गति करते रहते हैं । सूर्य के आस पास चन्द्र सहित पृथ्वी

एवं बुध शुक्र मंगल गुरु शनि आदि ग्रह घूम रहे हैं। इन सबों के समुदाय को सौर जगत् या सूर्य का परिवार कहते हैं।

ये सब ग्रह सूर्य की आकर्षण शक्ति के बशीभूत होकर विशेष नियम के अनुसार सूर्य के आस पास घूम रहे हैं। इनमें प्रत्येक ग्रहों की भी पृथक्-पृथक् आकर्षण शक्ति है। जैसे पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के प्रभाव से खिंचा हुआ पृथ्वी के आस पास घूम रहा है और सूर्य की आकर्षण शक्ति से खिंचे हुए चन्द्र और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। इसी प्रकार शनि आदि ग्रहों के भी उपग्रह हैं जो उन ग्रहों के आकर्षण के प्रभाव से उन ग्रहों की परिक्रमा करते हुए सूर्य के आकर्षण से प्रभावित होकर सूर्य की भी परिक्रमा कर रहे हैं।

पृथ्वी से ९३८ लाख मील दूर होते हुए भी जब समस्त पृथ्वी पर सूर्य की आकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ता है तो पृथ्वी में रहने वाले जड़ एवं चैतन्य पशु-पक्षी मनुष्य आदि भी सूर्य के प्रभाव से प्रभावित होने में कैसे वच सकते हैं।

प्रत्यक्ष देखने में आता है कि जब सूर्य विशेष राशियों में आता है तो किस प्रकार जाड़ा गर्मी बरसात आदि ऋतुओं में परिवर्तन होता है जिसका प्राणी मात्र पर प्रभाव पड़ता है। सूर्य के ही कारण प्रकाश, उष्णता, ग्रह गति होती है। सूर्य न हो तो प्राणी मात्र का जीना असम्भव हो जाय। आज कल सूर्य की किरणों से चिकित्सा भी होने लगी है।

प्रातः काल सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं। मध्याह्न में सीधी पड़ती हैं और रात्रि में किरणों का अभाव रहता है। इस प्रकार जैसे समय में जिस बालक का जन्म हो उस समय का प्रभाव उसके स्वभाव में परिणत हो जाता है। अर्थात् समय के अनुसार ही स्वभाव पड़ जाता है। ग्रीष्म में (वृष और मिथुन के सूर्य में) सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। हेमन्त ऋतु (वृश्चिक-धन के सूर्य में) में तिरछी पड़ती हैं। इस लिये इन सूर्य की राशियों में जिस बालक का जन्म होगा उसी के अनुसार शरीर में प्रभाव बढेगा।

सूर्य का प्रभाव पौधों और वृक्षों पर भी पड़ता है। वर्षा ऋतु में इल्लियाँ अधिक उत्पन्न होती हैं और कृषि को हानि पहुँचाती है। बुखार का प्रकोप भी समयानुसार बढ़ता है। इस प्रकार समस्त जड़ चैतन्य पर सूर्य का प्रभाव पड़ता है। सब ग्रहों में सूर्य बड़ा बलवान् है इसी कारण सूर्य को मनुष्य की आत्मा कहा है।

जहाँ जो जिस परिस्थिति में उत्पन्न हुआ है वही उसका प्राकृतिक स्वभाव बन जाता है। इसी प्रकार विशेष ग्रहस्थिति और समय में उत्पन्न बालक का विशेष स्वभाव बन जाता है। जैसे ठंडी प्रकृति में उत्पन्न हुए वृक्ष को यदि उष्ण प्रकृति के स्थान में

लगाओ तो नहीं होगा, यदि हुआ भी तो शक्ति हीन, रोगी होगा। कारण कि ठंडे वातावरण में उत्पन्न होने से उसका जीवन भी जन्म समय के वातावरण से प्रवाहित होकर वही की प्रकृति का स्वभाव ग्रहण करता है। इसी कारण भिन्न भिन्न स्थिति में उत्पन्न हुए बालकों की प्रकृति भी भिन्न-भिन्न हो जाती है, जिससे किसी विशेष ग्रह का प्रभाव भिन्न-भिन्न मनुष्यों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है।

Dr Maurice Faure (डाक्टर मारिस फाउर) ने सन् १९२७ में फ्रेंच एकेदेमी के समक्ष डाक्टरी और ज्योतिष सम्बन्धी रिकार्ड उपस्थित कर बताया था कि सूर्य के धब्बे भी सूर्य के आस पास एक ही दिशा में परिक्रमा करते हैं। २५ $\frac{1}{2}$ दिन में उनकी एक परिक्रमा होती है। जब धब्बे दिखाई देते हैं तो उस समय साधारण मृत्यु सख्या से दुगुनी मृत्यु सख्या हो जाती है। इसका पूरा प्रमाण भी उपस्थित किया गया था।

चन्द्र का प्रभाव सूर्य से दूसरे नम्बर का है। इसका महत्तम पृथ्वी से अंतर २५२९४८ मील है। यह पृथ्वी के सब ग्रहों से समीप होने के कारण अधिक प्रभाव करता है। चन्द्र की भी आकर्षण शक्ति समूची पृथ्वी पर पड़ती है, जिससे जब चैतन्य सभी प्रभावित हो रहे हैं। प्रत्यक्ष में देखा जाता है कि चन्द्र की घटावढी के कारण समुद्र की लहरों पर प्रभाव पड़ता है। पूर्णिमा को ज्वारभाटे का पूर्ण प्रभाव देखने में आता है। जब समुद्र सरोखे जड़ पदार्थ पर भी इतना प्रभाव पड़ता है कि जल राशि को अपनी ओर आकर्षित कर बड़ी-बड़ी लहरों का उत्पादक होता है तो यह इतर प्राणियों पर क्यों न प्रभाव करेगा ?

मनुष्य के चित्त पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है, इसी कारण चन्द्रमा को मनुष्य का मन कहते हैं। बहुत देखा जाता है कि चन्द्र के घटाव वढाव का प्रभाव पागल पर अधिक पड़ता है इसी कारण पागलपन को चन्द्र के नाम से अंग्रेजी में ल्यूनेसी Lunacy कहते हैं। सर इसाक न्यूटन Isaac Neutan ने सिद्ध कर बताया है कि पागलपन चन्द्र से सम्बन्धित है और मानसिक दशा पर चन्द्र का बहुत प्रभाव पड़ता है।

केवल जीवों पर ही नहीं वनस्पतियों आदि पर भी इसका पूरा प्रभाव पड़ता है। जंगल में जो बास आदि उज्जेल पक्ष में काटे जाते हैं, वे शीघ्र घुन जाते हैं क्योंकि शुक्ल पक्ष का अधिक प्रभाव वृक्ष आदि की उत्पादक शक्ति पर पड़ता है इससे उसमें कीड़े शीघ्र उत्पन्न हो जाते हैं।

अभी ब्रिटिश कालोनियल (उपनिवेश) आफिस के विशेषज्ञ ने खोजकर प्रगट किया है कि मछलियों पर चन्द्र का विशेष प्रभाव पड़ता है। पूर्णमासी के समय मछलियाँ अधिक पकड़ी जाती हैं, कृष्ण-पक्ष में इस सम्बन्ध से लाभजनक स्थिति नहीं रहती।

खोज से यह भी पता लगा है कि अपनी मध्याह्न रेखा के अनुसार चन्द्र की विशेष क्रियाओं को ही ओस्टर और मुसेल (घोघा मछलियों की जाति) अपने घोघे खोलते और अपना पालन करते हैं ।

इसी प्रकार इतर ग्रहों की भी आकर्षण शक्ति सूर्य की आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर पृथ्वी आदि समस्त ग्रहों पर प्रभाव उत्पन्न करती है और वे ग्रह भी अपने डील-डौल के अनुसार सम्पूर्ण सूर्य सम्प्रदाय पर प्रभाव डालते हैं तो फिर जीव जन्तु वनस्पति आदि प्रभावित होने से कैसे बच सकते हैं ?

ग्रह के प्रभाव से हीरा आदि अमूल्य रत्न भी अपना विचित्र प्रभाव धारण करते हैं ।

अभी हाल में एक होप (आसा) नाम के प्रसिद्ध हीरा के विचित्र प्रभाव की कथा प्रकाशित हुई थी । यह हीरा जिसके-जिसके पास गया उसका नाश हुआ । यह हीरा भारतवर्ष के किसी मन्दिर की मूर्ति की आँख में लगा था । वह किसी प्रकार वेलजियम के निवासी के हाथ लगा । उसने फ्रांस के बादशाह लुइस १४ को बेचा । पश्चात् मेरी एन्टोनिटी ने उसे पहिना, उसकी अपघात से मृत्यु हुई । अमस्टर डाम के विलियम फल्स ने उस हीरे को काटा उसका सर्वनाश हुआ । फ्रांसिस विऊलिऊ ने उसे प्राप्त किया उसकी मृत्यु क्षुधा पीडा से हुई । सन् १९०१ में इशाक कोलोर्ट ने उसे मोल लिया उपघात से उसकी मृत्यु हुई । उपरान्त वह हीरा रूस के राजकुमार कन्टोस्की के पास पहुँचा जिसने अभिनय के समय एक सुन्दर नर्तकी को पहिरने को दिया था वह अभिनय करते समय गोली से मारी गई । उपरान्त राजकुमार भी शस्त्राघात से मारा गया । इसके बाद वह हीरा किसी यूनान निवासी के पास पहुँचा उसकी अपनी स्त्री और बच्चों सहित फिसलने से मृत्यु हुई । पूर्व सुलतान अब्दुल हमीद ने वह हीरा कान्स्टेन्ट नोपल में अपनी प्रेमिका को पहिनने को दिया वह गोली से मारी गई । बाद में हवीव नाम के अरमेनियन के पास पहुँचा । वह सिंगापुर में डूब कर मर गया । सन् १९११ में एवलिन मेकलीन ने उसे मोल लिया उसका लडका विन्सेन्ट मोटर से दब कर मर गया स्त्री मिमैस एवलिन मेकनील रेनोल्ड ने उसे पहिना तो उसकी अचानक मृत्यु हुई ।

इन्हीं सब सिद्धान्तों पर पश्चात्य देशों में भी ग्रहों के प्रभाव को मान कर फलित ज्योतिष पर विश्वास करने लगे हैं । यहाँ तक कि भविष्य कथन करते हैं । उनके सम्बन्ध की बातें भी प्रमाणित की जाती हैं कि कहाँ तक भविष्य कथन सत्य निकला जिन पर विचार करने से भविष्य कथन की सत्यता पर लोगों का विश्वास होने लगा है ।

प्रायः यह भी देखा जाता है कि कई लोगों की भविष्यवाणी असत्य भी निकल जाती है । इसका मुख्य कारण कल्पना शक्ति है । क्योंकि यह तो कल्पना और तर्क शास्त्र है, जिसमें कल्पना और तर्क करने के सिद्धान्त दिये हैं, उनमें वे प्रभाव घटित होने का संकेत मिलता है । यदि कल्पना में भूल हुई तो भविष्य कथन में अवश्य अन्तर

पड़ेगा। डाक्टर जो कई वर्षों तक अंग्रेजी पढ़ कर डाक्टरी विद्या अध्ययन कर पद प्राप्त करता है, जब डाक्टर होकर किसी रोग का निदान करता है तो उस रोग के विषय में भिन्न-भिन्न डाक्टरों की भिन्न-भिन्न राय हो जाती है। जब असली रोग की जड़ पा जाते हैं तो निदान पक्का हो जाता है।

इस विषय में श्री स्टेन ली लीफ इंग्लैण्ड के प्रमुख प्राकृतिक चिकित्सक एव "हेल्थ फार आल" मासिक पत्रिका के सम्पादक ने लिखा है सर डेविड्डू मड ने ग्लासगो की रायल फेकल्टी आफ सर्जन के सभापति की हैसियत से अपने भाषण में कहा था कि "शव परीक्षा से यह बात भलीभाँति प्रमाणित हो चुकी है कि औसत दर्जे के चिकित्सकों का निदान ८० प्रतिशत गलत हुआ करता है"।

बोस्टन के सुप्रसिद्ध चिकित्सक और निदान शास्त्री डाक्टर रिचर्ड केवट ने, जिन्होंने निदान पर एक शास्त्रीय पुस्तक लिखी और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सम्मानित अध्यापक हैं, अमेरिकन मेडिकल असोसियेशन के वार्षिक अधिवेशन में अपने विस्तृत अनुभव के आधार पर लिखित एक निबन्ध प्रस्तुत किया था। जिसमें उन्होंने एक हजार रोगियों का विवरण देकर विश्लेषण कर यह परिणाम निकाला था कि सब मिलाकर ५० प्रतिशत निदान सही और ५० प्रतिशत बिल्कुल गलत थे।

हृदय रोग के सुप्रसिद्ध चिकित्सक सर जेम्स मैकेंजी ने अपनी मृत्यु के कुछ समय पूर्व एक भाषण में यह धारणा व्यक्त की थी कि जीवन पर्यन्त अनुसंधान और शव-परीक्षण करने के उपरांत मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि चिकित्सक लोग साधारण रोगों में ७० प्रतिशत गलत निदान करते हैं। असाधारण रोगों में यह संख्या और अधिक होगी। जब उन्नति के शिखर पर पहुँची डाक्टरी विद्या का यह हाल है तो फिर ज्योतिष शास्त्र क्यों बदनाम किया जाता है।

इसी प्रकार बड़े-बड़े जज जो अनेक वर्षों तक विद्या अध्ययन कर कानूनी पुस्तकों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर चुकते हैं किसी अभियोग का निर्णय कर अपराधी को प्राण दण्ड की सजा देते हैं। परन्तु अपील करने पर ऊँची अदालत उस जज के निर्णय को पलट कर अपराधी को उन्हीं साक्षियों के आधार पर निर्दोष पाकर छोड़ देती है। इसी को कहते हैं विचार शक्तियों में अन्तर। विचार करने में असावधानी या कोई विशेष बात की सूझ का अभाव या समझ की भूल वहाँ पर होने के कारण फल कथन में अन्तर पड़ सकता है।

इस कारण बड़ी सावधानी से ज्योतिष के एक-एक विषय को क्रम पूर्वक अध्ययन और मनन करने की आवश्यकता है। अनुभव होने पर उसका परिणाम प्रत्यक्ष गोचर होने लगेगा।

अध्याय ३

सौर जगत् और ग्रह Solar System and Planets

उस सर्वव्यापी जगन्निर्माता परमेश्वर की लीला कितनी विचित्र है। आप आकाश की ओर ध्यान दें तो विदित होगा कि आकाश में अनेक तारागण अघर में लटके हुए हैं। आकाश में करोड़ों तारागण हैं जो साधारण दृष्टि से गोचर नहीं होते उनमें कई तारागण केवल बड़ो-बड़ी दूरवीनो के सहारे ही देखे जा सकते हैं।

अन्य तारागणों के मध्य एक तारागणों का मंडल है जिसे सौर जगत् या सौर परिवार या सूर्य सम्प्रदाय कहते हैं। उनके मध्य में अपना एक ही सूर्य है जिसके आस पास अपनी पृथ्वी और इतर ग्रह बुध शुक्र गुरु आदि परिक्रमा करते हैं, जिन सबका सूर्य से सम्बन्ध है और जो सब, सूर्य की आकर्षण शक्ति के प्रभाव से सूर्य को छोड़ कर कहीं दूसरी जगह भटक कर नहीं जा सकते। इसी कारण इन सब ग्रहों के समुदाय को और उन तारागणों को जो इन ग्रहों की परिक्रमा के मार्ग के आस पास पड़ते हैं, सौर जगत् कहते हैं।

आकाश में कई प्रकाशवान् तारागण दिखते हैं। उनमें कई तो अपने सूर्य से भी कई गुने बड़े हैं। बहुत दूरी के कारण यहाँ से छोटे दिखते हैं। उसी प्रकार जो ग्रह शुक्र गुरु आदि देखने में छोटे दिखते हैं वड़े भीमकाय ग्रह हैं, जो अघर में लटके हुए हैं। इन सबके आकार आदि का वर्णन आगे होगा।

एक विचित्र तारा का पता लगा है जो सूर्य से १६० गुना बड़ा है। १० हजार वर्ष में उसका प्रकाश पृथ्वी पर पहुँचता है और वह पृथ्वी से ५२५६० लाख मील की दूरी पर है। ऐसे कई तारे हैं जो करोड़ गुना सूर्य से तेजस्वी हैं। इस प्रकार आकाश में अनेक सूर्य हैं उनमें से अपना सूर्य एक है और इस अपने सूर्य का परिवार अलग है और इस परिवार के ग्रह इसी सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

नोज से पता लगा है कि अपना सौर जगत् किमी और शक्तिशाली सूर्य के आस पास अपने परिवार सहित घूम रहा है। कृतिका नक्षत्र को केन्द्र मान कर अपना सौर जगत् घूम रहा है। अमेरिकन साइन्टिस्ट असोसियेशन ने कई वर्षों की जाँच के उपरान्त बताया है कि अपना सूर्य एक सेकण्ड में १३० मील के हिसाब से Diaco ड्रेको (अजगर) नक्षत्र की ओर अपने परिवार सहित घूम रहा है। यह नक्षत्र उत्तर ध्रुव के पास है।

यहाँ के ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध केवल अपने सौर जगत् से है। महर्षियों ने सूर्यादि सब ग्रहों की गति प्रभाव आदि का पूर्ण अध्ययन कर और अनुभव कर जिस शास्त्र का निर्माण किया है उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं।

सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहों में पृथ्वी को छोड़कर शेष ग्रहों के नाम नीचे दिये हैं ।

क्रम ग्रह	अंग्रेजी नाम	फारसी नाम	अंग्रेजी चिह्न	हिन्दी चिह्न
१ सूर्य	Sun	सन	आफताब	☉ र. या, सू.
२ चंद्रमा	Moon	मून	माहताब (कमर)	☾ च.
३ मंगल	Mars	मार्स	मिर्रीख	♂ मं.
४ बुध	Mercury	मरकरी	उतारद	♿ बु
५ गुरु (बृहस्पति)	Jupiter	जुपीटर	मुश्तरी	♃ गु
६ शुक्र	Venus	वेनस	जुहरा	♀ शु
७ शनि	Seturn	सेटर्न	जुहल	♄ श
८ राहु	Caput या Dragon's Head या Ascending Node	केपुट ड्रैगून्स हेड असेन्डिंग नोड	रास	♋ रा
९ केतु	Cauda या Dragon's Tail या Decending Node	कअडा ड्रैगून्स टेल डिसेन्डिंग नोड	जनव	♌ के
१० वरुण	Naptunc	नेपच्यून		♆ व
११ प्रजापति	Herschel या Uranus	हरसल		♅ प्र

ग्रह और तारा में अन्तर

किसी निर्मल रात्रि को आकाश की ओर देखो तो अनेक तारागण दृष्टि गोचर होंगे, उनमें मुख्य दो प्रकार के तारागण हैं । एक साधारण तारा और दूसरा ग्रह ।

इनमें से ग्रह और तारा इस प्रकार पहिचाने जा सकते हैं—

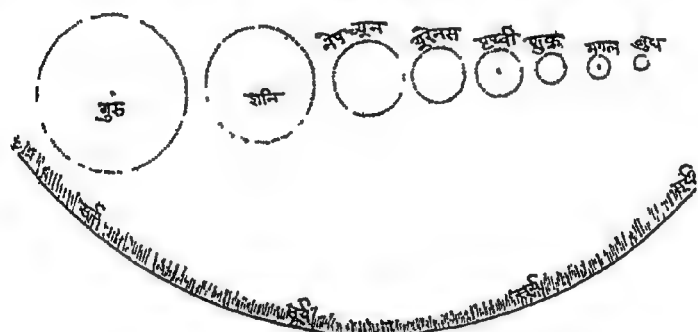
(१) तारा Star=आकाश में कई तारे ऐसे हैं जो स्वयं प्रकाशवान् हैं । ऐसे तारागण रात्रि को दीपक की लव सदृश जुग जुगाते दिमाई देते हैं अर्थात् उनके प्रकाश की लव या किरणें छोटी बड़ी होते दिगती हैं । इन्हें तारागण कहने हैं ।

(२) ग्रह Planet=दूसरे प्रकार के ऐसे तारे दिखेंगे जिनका प्रकाश एक-सा रहता है अर्थात् जुग जुगाते नहीं दिखते । ऐसे दिखते हैं जैसे बिना लव की अगर हो जिनका एक संरीखा प्रकाश दिखता है । ये ग्रह सूर्य के प्रकाश पड़ने से प्रकाशित होते हैं । वे स्वतः प्रकाशवान् नहीं हैं । ये ही ग्रह कहलाते हैं ।

शुक्र ग्रह जो सूर्य के उदय होने के बहुत पहिले जब कभी आकाश में देखा जाता है और जिसे लोग “भुन सरिया” तारा कहते हैं उसे अधिकतर लोग पहिचानते हैं । इसको ध्यान से देखो तो समझ पड़ेगा कि यह तारा है या ग्रह । कभी यह शुक्र ग्रह सूर्यास्त के बाद दिखता है तब इसे पहिचान सकते हैं ।

प्रतिदिन शुक्र गुरु आदि ग्रहों और इतर तारागणों को अवलोकन करते रहने से ग्रह और तारागण में अन्तर समझ पड़ेगा ।

अंग्रेजी के ज्योतिष ग्रन्थों में ग्रहों के स्थान में उपरोक्त चिह्नों का उपयोग हुआ है उस कारण उन चिह्नों को ध्यान में रखना चाहिये । इनमें से केवल ९ मुख्य ग्रह हैं । हर्शल और नेपच्यून ग्रह नवीन खोज किये हुए हैं और पाश्चात्य पद्धति में उनका भी



चित्र सख्या ३—ग्रहों के आकार का अनुपातिक मिलान

वर्णन रहता है इस कारण उनको भी बता दिया है, जिनको मिलकर ११ ग्रह हो जाते हैं । इस प्रकार हर्शल और नेपच्यून के निकालने से वचे हुए ९ ग्रहों में से ७ ग्रह आकाश में दिखते हैं । दो ग्रह राहु और केतु अदृश्य ग्रह हैं ।

राहु-केतु

यद्यपि राहु और केतु की गणना ग्रहों में की गई है परन्तु वास्तव में ये ग्रह नहीं हैं इनको अप्रकाश ग्रह Showdy Planets कहते हैं । अर्थात् आकाश में ये ग्रह नहीं दिखते और न इनका कोई आकार ही है । पृथ्वी के आस-पास चन्द्रमा परिक्रमा करता है और चन्द्रमा सहित पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है । इस प्रकार पृथ्वी की परिक्रमा

की परिधि को चन्द्र अपनी परिक्रमा में २ जगह काटता है। अर्थात् पृथ्वी और चन्द्र की परिक्रमा की परिधि एक दूसरे को २ जगह काटती है, उनमें से एक बिन्दु को राहु कहते हैं जो नीचे से ऊपर की ओर जाने वाला बिन्दु है। और दूसरे बिन्दु को जो उसके ठीक विरुद्ध है, केतु कहते हैं। यह ऊपर से नीचे आने वाला बिन्दु है इसीसे राहु को Asending Node (असेण्डिंग नोड) और केतु को Decending Node (डिसेण्डिंग नोड) भी कहते हैं।

ये दोनों ग्रह बिन्दु मात्र हैं। एक दूसरे से सदा ६ राशि के अन्तर पर रहते हैं और सदा दूसरे ग्रहों की दिशा से विरुद्ध क्रम से चलते हैं। जब चन्द्रमा पूर्णमासी के समय या सूर्य अमावस्या के समय इन्हीं पातों के पास पहुँचता है तो चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण होता है। इस कारण राहु और केतु को भी यह माना गया है।

जिस प्रकार चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय सप्ताह के वातावरण में विचित्र प्रभाव



चित्र संख्या ४—राहु केतु की स्थिति

होता है इसी प्रकार राहु केतु की स्थिति के कारण भी मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। चित्र संख्या ४ से राहु-केतु की स्थिति समझ में आवेगी।

पृथ्वी का भ्रमण-मार्ग ही सूर्य का भ्रमण-मार्ग कहा जाता है जिसे ही क्रान्ति वृत्त कहते हैं। इसी प्रकार चन्द्र पृथ्वी की परिक्रमा करते समय क्रान्ति वृत्त को २ स्थानों में काटता है जो चित्र संख्या ४ में तीर की नोक से बताये गये हैं इन्हीं स्थानों को चन्द्र के पात भी कहते हैं।

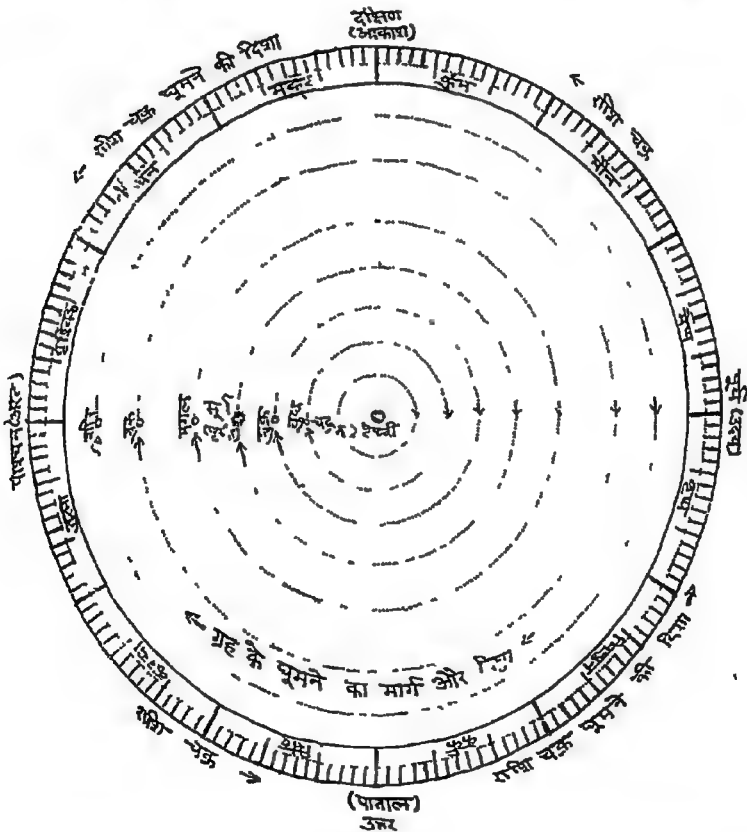
देखो चित्र संख्या ४। चन्द्रमा अ बिन्दु से पहुँचकर आ होते हुए व बिन्दु पर जाता है इसलिये इस चढाव के बिन्दु अ को उत्तर पात या राहु कहते हैं। चन्द्रमा व बिन्दु

से वा होते हुए उतरते हुए अ बिन्दु पर आता है इससे व बिन्दु को दक्षिण पात या केतु कहते हैं ।

चन्द्रमा जिस मार्ग में परिक्रमा करता है उसे चन्द्रकक्षा कहते हैं । चन्द्रकक्षा क्रान्ति वृत्त को लगभग ५ अंश कोण बनाते हुए काटती है । अर्थात् जहाँ चन्द्र का मार्ग पृथ्वी के मार्ग को काटता है वहाँ लगभग ५ अंश का कोण बनता है इसी कोण को चन्द्र का विक्षेप कहते हैं । विक्षेप=क्षर=Celestial Latitue ।

सूर्य स्थिर है

सूर्य आकाश में पूर्व दिशा में उदय होता है और पश्चिम में अस्त होते दिखता है, परन्तु वास्तव में सूर्य स्थिर है । पृथ्वी इतर ग्रहों के सदृश पश्चिम से पूर्व की ओर



चित्र संख्या ५

पश्चिम और ग्रहों के घूमने की दिशा सूचक चित्र, इसमें पृथ्वी के आस-पास ग्रह घूमते हुए बताये हैं ।

घूमती है इस कारण पृथ्वी लोक के रहने वालों को सूर्य भ्रमण करता हुआ दिखता है । परन्तु ज्योतिष शास्त्र में गणित की सुविधा के लिये पृथ्वी को स्थिर मान कर सूर्य को चलित माना है । चाहे सूर्य को या पृथ्वी को स्थिर मानो परन्तु उनकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता । सूर्य को चलित मान लेने में गणित में बहुत सरलता प्रतीत होती है । इसी कारण सूर्य को चलित माना है परन्तु वास्तव में सूर्य स्थिर है इसका ध्यान रहे ।

पृथ्वी ग्रह के स्थान में सूर्य ग्रह मानकर जो सूर्य का गणित किया जाता है वह पृथ्वी का ही गणित है । आगे चित्र क्रम संख्या ५ में पृथ्वी की केन्द्र मानकर सूर्य आदि ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए बताये गये हैं ।

राशि-चक्र पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता है जिससे पहिले मेष फिर वृष इत्यादि क्रमानुसार राशियाँ आकाश में उदय होते दिखाई देती हैं । परन्तु ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर घूमते हैं जैसा चित्र संख्या ५ में तीर द्वारा समझाया गया है ।

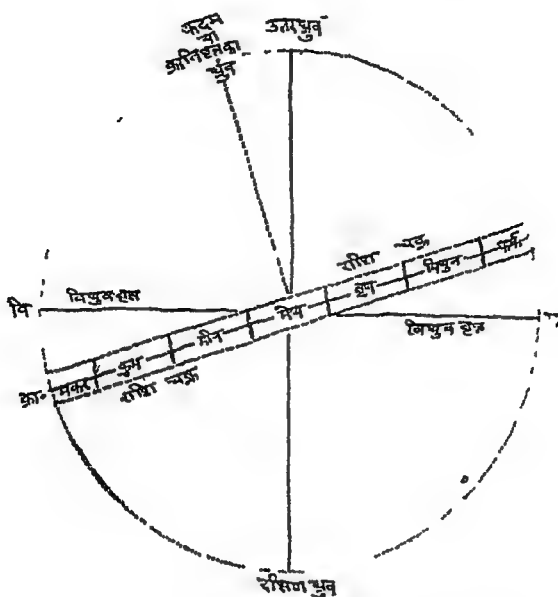
इस राशि-चक्र में प्रत्येक राशियों के अंश भी बताये गये हैं जिसमें २ अंश का एक छोटा घर है । सब नक्षत्र और राशियाँ पूर्व (लग्न=उदय स्थान) से शिरोविन्दु (आकाश=दशम स्थान) की ओर जाते दिखते हैं । और शिरोविन्दु से पूर्व (लग्न) की ओर चलते हैं ।

अध्याय ४

राशिचक्र Zodiac

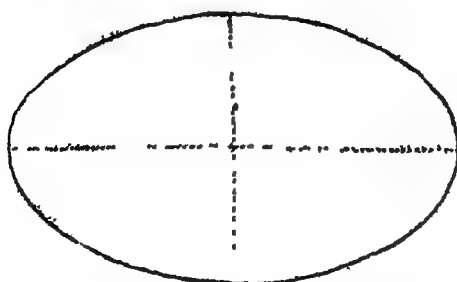
आकाश में सूर्य जिस मार्ग से भ्रमण करते हुए दिखता है उसे क्रांतिवृत्त Ecliptic कहते हैं । इसे आपामडल या क्रांतिमडल भी कहते हैं । देखो चित्र संख्या ६ । सब ही ग्रह इसी मार्ग से या इसके समीप होकर सूर्य की परिक्रमा करते हैं । इसे रवि का मार्ग भी कहते हैं क्योंकि सूर्य एक वर्ष में १२ राशियों में प्रायः इसी मार्ग में एक बार परिक्रमा कर लेता है । क्रांतिवृत्त वास्तव में पृथ्वी के परिक्रमा करने का मार्ग है और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में प्रायः १२ राशियों में कर लेती

है । परन्तु साधारण प्रकार से यही कहा जाता है कि सूर्य क्रांतिवृत्त की १२ राशियो



चित्र संख्या ६—विषुववृत्त क्रांतिवृत्त राशिचक्र और ध्रुव

में एक वर्ष में परिक्रमा कर लेता है, इस बात का ध्यान रहे । यह क्रांतिवृत्त अंडाकार है । देखो, चित्र संख्या ७



चित्र संख्या ७—पृथ्वी की कक्षा (परिक्रमा का मार्ग) Orbit of the earth

भचक्र या राशिचक्र यह क्रांतिवृत्त के उत्तर दक्षिण ९-९ अंश की चौड़ाई का एक कल्पित पट्टा माना जाता है उसे भचक्र या राशिचक्र कहते हैं, क्योंकि सब ही ग्रह इस कल्पित पट्टे के भीतर क्रांतिवृत्त पर या उसके उत्तर या दक्षिण होकर घूमा

करते हैं देखो चित्र सख्या ६। क्रांति=क्रातिवृत्त है जिसके उत्तर और दक्षिण में ९-९ अंश का चौड़ा पट्टा है। इस पूरे चौड़े पट्टे को राशि चक्र कहते हैं।

वि पु=विपुवृत्त है=यह आकाशीय विपुवृत्त, पृथ्वी के विपुवृत्त के सीध में आकाश में एक कल्पित रेखा है। आकाशीय विपुवृत्त=Celestial equator इस विपुवृत्त पर क्रातिवृत्त २३°-२८' का कोण बनाते हुए एक दूसरे को काटते हैं।

इस राशिचक्र का आदि अन्त नहीं है किन्तु नापने के लिये बिन्दु स्थान नियत किया गया है वह मेष राशि का आदि स्थान है। यह राशिचक्र दिन में एक बार पूर्व से पश्चिम को घूमते दिखता है जैसे चित्र ५ में बताया है।

इसे पट्टे (राशिचक्र) के समान १२ विभाग करने से १२ राशियाँ बनी हैं और इसी के २७ समान विभाग किये जायें तो २७ नक्षत्र होते हैं। अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ होने वाले और रेवती नक्षत्र के अन्त में पूरे २७ नक्षत्र होने वाले इसी चक्र को भगण भी कहते हैं।

जिस प्रकार भारत वर्ष में अनेक ग्राम हैं। परन्तु किसी विशेष ग्राम को जाने में चाहे पक्की सड़क या रेल से जाओ जितने ग्राम उस मार्ग में या उसके आस पास समीप ही मिलते हैं, मार्ग के ग्रामों में केवल उन्हीं ग्रामों की गणना होती है, यद्यपि अन्य ग्राम समुदाय अनेक हैं। इसी प्रकार कोट्यनुकोटि तारागणों में से केवल २७ ही नक्षत्रों की गणना की है। राशि चक्र के पट्टे के भीतर अर्थात् जिस मार्ग से सव ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं, केवल उसी मार्ग में जो-जो तारागणों का समुदाय है, उनमें से २७ तारागणों के समुदाय को ही चुन लिया गया है, जिनके समीप से ग्रह भ्रमण करते हैं। मान लो कि ये ही मार्ग के २७ ग्राम हैं। इस कारण केवल उन्हीं तारागणों के समुदाय की गणना ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्रों में की गई है, जिससे ग्रहों के स्थान आदि प्रकट करने में सुविधा हो कि अमुक ग्रह अमुक समय पर अमुक स्थान पर है। इन नक्षत्रों के नाम और परिचय आगे दिये हैं।

राशियाँ Sign वर्ज

राशिचक्र के १२ समान विभाग करने से १२ राशियाँ बनती हैं उनके नाम ये हैं। फारसी में इन्हें वर्ज कहते हैं।

क्रम	राशि	अंग्रेजी नाम	फारसी नाम	अंग्रेजी चिह्न	हिन्दी चिह्न
१	मेष	Aries एरीज	हामल	♈	मे०
२	वृष	Taurus ट्यूरस	सूर	♉	वृ०
३	मिथुन	Gemini जेमिनी	जोझा	♊	मि०
४	कर्क	Cancer केन्सर	सर्तान	♋	क०
५	सिंह	Leo लियो	असद	♌	सि०
६	कन्या	Virgo भरगो	सुबला	♍	क०
७	तुला	Libra लिब्रा	मीडान	♎	तु०
८	वृश्चिक	Scorpio स्कारपियो	अक्रब	♏	वृ०
९	धन	Sagittarius सगीटारस	कौस	♐	ध०
१०	मकर	Capricorn केप्रिकॉर्न	जुदी	♑	म०
११	कुम्भ	Aquarius अक्वारियस	दलु	♒	कु०
१२	मीन	Pisces पिसेस	हूत	♓	मी०

राशिचक्र विभाग

प्रत्येक चक्र Circle में ३६० अंश होते हैं। इनके १२ विभाग करने से ३६०-१२=३० अंश की प्रत्येक राशि होती है।

इसी प्रकार ३६० अंश के २७ विभाग किये=३६०÷२७=१३'-२०" तो प्रत्येक विभाग १३ अंश २० कला का हुआ अर्थात् राशिचक्र को २७ नक्षत्रों में बाँटने से प्रत्येक नक्षत्र १३'-२०" का हुआ। अर्थात् एक राशि में २७ नक्षत्र हुए।

प्रत्येक नक्षत्र के ४ विभाग विभाग किये तो प्रत्येक विभाग को चरण कहते हैं। इस कारण ११ राशि=३०°=२७ नक्षत्र=९ चरण। १ चरण=३'-२०"

१ चक्र=३६० अंश degree (डिग्री)	} ये कोणात्मक अंशादि हैं। इनके चिह्न अंश° कला' विकला''
१ राशि=३०° (अंश)	
१ अंश ६०' (कला) minute (मिनट)	
१ कला=६०'' (विकला) Second (सेकण्ड)	

ये चिह्न अंश कलादि के अंकों की इकाई वाली संख्या के ऊपर दाहिनी ओर कुछ तिरछे लगाये जाते हैं जैसा ऊपर बताया गया है। जहाँ अंश कला आदि लिखना हो वहाँ केवल ये चिह्न लगा देते हैं जिसे समझ लेना चाहिये।

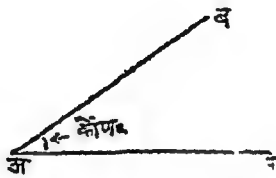
कोणात्मक अंश Angular distance

ऊपर कोणात्मक अंशादि बताये गये हैं इनके विषय में अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिये, क्योंकि उनका अधिक काम पड़ता है।

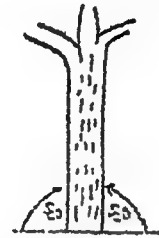
कोणात्मक अंश को कुछ उदाहरण देकर समझाते हैं।

कोण Angle

जब दो रेखाएँ किसी एक बिन्दु पर परस्पर मिलती हैं तो बीच में एक कोण बन जाता है। देखें चित्र संख्या ८। यहाँ अ व एक लकीर, दूसरी लकीर अ, स से अ बिन्दु पर मिली है जिससे व अ स कोण बन गया है। वह कोण चित्र में तीर और बिन्दुओं से बताया गया है। इसी कोण का नाप अश कला विकला में होता है।



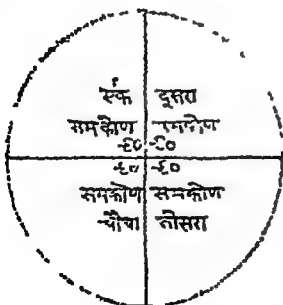
चित्र संख्या ८ कोण Angle



चित्र संख्या ९ समकोण

अब चित्र संख्या ९ को देखें। एक वृक्ष भूमि पर बिलकुल सीधा खड़ा है इसके कारण वृक्ष और भूमि के बीच में दोनों ओर यहाँ एक-एक समकोण बन गया है। वृक्ष सीधा होने के कारण ९० अंश का समकोण दोनों ओर बनाता है। किमी भी समकोण Right Angle में ९० अंश होते हैं। उसके दूसरी ओर भी ९० अंश का दूसरा समकोण बनता है। दोनों समकोणों का योग $९० + ९० = १८०^{\circ}$ होता है।

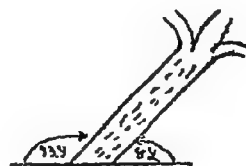
वृक्ष की तरह किसी भूमि या रेखा पर जो सीधी खड़ी रेखा होती है उसे लम्ब Perpendicular Line कहते हैं। इस प्रकार किसी आधार (भूमि आदि) पर लम्ब खड़ा करने से दोनों ओर एव-एक समकोण $९०^{\circ}-९०^{\circ}$ होते हैं। पूरे चक्र में ३६०° होते हैं। पूरे चक्र में ४ समकोण होते हैं। अर्द्ध चक्र में २ समकोण और चौथाई चक्र में १ समकोण होता है। जैसा चित्र संख्या १० में बताया गया है। इसी प्रकार एक



चित्र संख्या १०

एक चक्र के ४ समकोण

२



चित्र संख्या ११

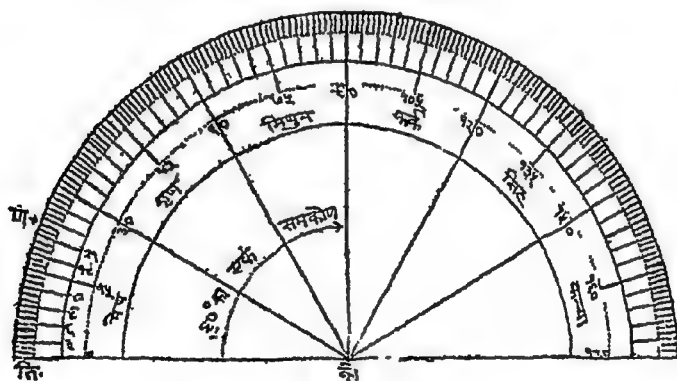
उर्ध्व रेखा के दोनों ओर के कोण

राशि चक्र में ३६० अंश होते हैं और इन अंशों को १२ राशियों में विभक्त करने से प्रत्येक राशि $360 \div 12 = 30^\circ$ की हुई ।

यदि कोई एक वृक्ष एक ओर सीधा झुक जाता है तो उसी मान से झुकाव की ओर के कोण का अंश कम हो जाता है परन्तु दूसरी ओर उसी प्रमाण से कोण बढ़ जाता है, परन्तु दोनों कोणों का योग 180° ही होता है । क्योंकि दो समकोण का योग 180° ही होता है । चित्र संख्या ११ देखें । वृक्ष के झुकाव के कारण जहाँ अधिक झुका है उस ओर 45° का कोण है तो दूसरी ओर $(180^\circ - 45^\circ) 135^\circ$ का कोण अवश्य होगा । अर्थात् 180° में से एक ओर का कोण घटाने से दूसरी ओर के कोण का अंश प्रकट हो जाता है ।

कोण और कोणात्मक दूरी का नाप

किसी नाप का कोण बनाने के लिए एक पैमाने की आवश्यकता पड़ती है जैसा चित्र संख्या १२ में बताया है ।



चित्र संख्या १२—कोण नापने का चक्र

एक अर्धवृत्त Semi circle बनाओ (इसमें २ समकोण और 180° होते हैं क्योंकि प्रत्येक समकोण में 90° होते हैं ।) अब इस 180° के अर्धवृत्त में एक एक अंश का चिह्न यहाँ चित्र में बताये अनुसार बनाकर विभाग कर लो तो यह कोण नापने का चक्र या पैमाना बन जायगा । इससे किसी भी नाप का कोण बना सकते हैं ।

मान लो 23° का कोण बनाना है तो 15° के आगे 2° और लो । जहाँ चित्र में तीर का निशान बनाया है 23° हो जाते हैं । फिर जिस कागज में कोण बनाना है एक सीधी लकीर खींच कर उसमें किसी एक बिन्दु पर (को) स्थान मान कर चिह्न लगा दो । फिर उस सीधी लकीर पर इस पैमाने को इस प्रकार जमा दो जिससे पैमाना

के नीचे की लकीर कागजकी लकीर के ठीक ऊपर रहे और उसका (को) चिह्न ∞ माना के (को) बिन्दु के ठीक नीचे रहे । फिर पंमाना में जहाँ 23° पूरे हुए थे (ण) स्थान के ठीक नीचे एक बिन्दु का चिह्न कागज में बनाकर उस (ण) स्थान के बिन्दु में और (को) बिन्दु में मिलती हुई रेखा खींचो तो (ति को ण) से जो कोण बनेगा वह 23° का होगा ।

इसी प्रकार किसी भी इच्छित अंश का कोण बना सकते हैं और किसी भी कोण को नापकर जान सकते हैं कि वह कितने अंश का है । कोण नापने का पैमाना धातु आदि का बना हुआ बाजार में ड्राइंग का सामान बेचने वाले के यहाँ मिल सकता है ।

अंश के विभाग

जिन प्रमाण घड़ी में १२ वजे तक के सब अंक अंकित रहते हैं और प्रत्येक खण्ड १ घण्टे का होता है । एक घण्टे के ६० विभाग करने से प्रत्येक विभाग १ मिनट का और १ मिनट के ६० विभाग करने से प्रत्येक विभाग एक सेकण्ड का माना जाता है, इसी प्रकार राशि-चक्र के भी विभाग हैं । जहाँ राशि अंश आदि का उपयोग हुआ है ।

जिन प्रकार मूर्य के अनुसार घड़ी का समय होता है और कोई पूछता है कि क्या बजा है तो घड़ी देखकर ठीक बतला सकते हैं कि ४ वजकर ४१ मिनट १० सेकण्ड हुआ है अर्थात् मूर्य आकाश में इतना चढ़ा है । इसी प्रकार ज्योतिष गणना में प्रत्येक ग्रह की स्थिति बताई जाती है । जैसे मूर्य की स्थिति २ राशि ४ अंश ४१ कला १० विकला पर है । उसको लिखने में इस प्रकार लिखेंगे मूर्य स्पष्ट $2-4^\circ-41'-10''$ ।

आकाश में अंशों का अनुमान करना

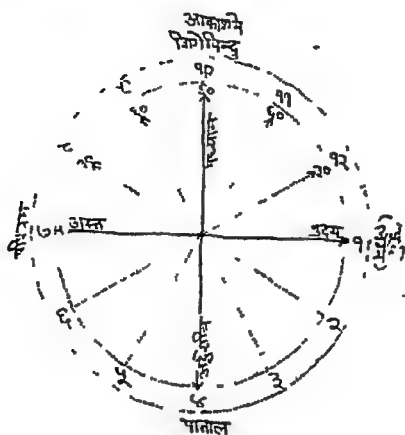
किसी मैदान में खड़े होकर देखें तो चारों ओर पृथ्वी से आकाश लगा हुआ दिखेगा और चारों ओर आकाश की गोलाई दृष्टि गोचर होगी । जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला हुआ दिखता है उसे क्षितिज Horizon कहते हैं ।

जिस स्थान पर खड़े हैं वह उस स्थान का केन्द्र हुआ । उससे ठीक सिर के ऊपर जो आकाश का बिन्दु है उसे ख स्वमिक या गिरोबिन्दु Zenith कहते हैं । इसी का नाम “ख” भी है ।

क्षितिज से गिरोबिन्दु तक एक गोलाई (वृत्त) का चतुर्थांश हुआ, जिसमें 90° होते हैं । इस कारण यदि क्षितिज से अंश गिनना आरम्भ करें तो गिर पर 90° होते हैं ।

गिरोबिन्दु को मदा दशम स्थान समझें । जैसा चित्र सत्या १३ में बताया है । भिन्न-भिन्न में पर्व की ओर लग्न का स्थान होता है उनके विषय में और भी अधिक बातें भाव के वर्णन क्रम में मिलेंगी ।

लग्न (क्षितिज) और दशम (शिरोविन्दु) के बीच के स्थान के ३ भाग करें $90 \div 3 = 30^\circ$ हुए। यही एक-एक भाग को १-१ राशि हुई। प्रत्येक राशि 30° की



चित्र सख्या १३—आकाश में अशो का अनुमान

होगी। प्रत्येक विभाग (१ राशि) 30° का होगा। देखें चित्र सख्या १३। इसका अभ्यास आकाश की ओर देखकर प्रत्येक दिशा में करें।

उत्तर की ओर ध्रुव तारा को देखें। वह जितने अश ऊँचा है वही ऊँचाई उस स्थान का अक्षांश होगा। इसी प्रकार सब दिशाओं में आकाश के विभाग कर १ राशि $= 30^\circ$ कितना होगा, अनुमान करें तो 1° कितना होगा इसका भी अनुमान हो जायगा।

अध्याय ५

नक्षत्र Constallations या Asterisms

पहिले बता चुके हैं कि राशि-चक्र के २७ सम विभाग करने से २७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र $13^\circ-20'$ का होता है और १ राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं। नक्षत्र का प्रत्येक चरण (चतुर्थ भाग) $3^\circ-20'$ का होता है।

नक्षत्रों के नाम ये हैं—

क्रम	नक्षत्र	अंग्रेजी नाम	फारसी नाम	हिन्दी चिह्न	
१	अश्विनी	Beta Arietis	बीटा अरायटिस	शरती	अ.
२	भरणी	41 Arietis	४१ अरायटिस	वर्तनि	भ.
३	कृतिका	Eta Tauri	ईटा टाउरी	सुरैया	कृ.
४	रोहिणी	Aldebaran	अल्डे बरान	दबरा	रो.
५	मृगशिर	Lambda Orionis	लामडा ओरयोनिस्	हुकुआ	मृ
६	आर्द्रा	Gamma Geminorum	गामा जेमिनोरम	हनझा	आ
७	पुनर्वसु	Pollux	पोल्लाक्स	झिरा	पुन.
८	पुष्य	Delta cancri	डेल्टा ककरी	नसर्रा	पु.
९	आश्लेषा	Zeta Hydrae	झीटा हायड्राई	तुफा	इले.
१०	मघा	Regulus	रेगुलस	जवहा	म.
११	पूर्वाफाल्गुनी	Theta Iconis	थीटा लियोनिस्	शाहेरा	पूफा.
१२	उत्तराफाल्गुनी	Denebola	डेनेबोला	सफा	उफा.
१३	हस्त	Delta Corvi	डेल्टा कोरवी	अवा	ह
१४	चित्रा	Spica	स्पीका	समाक	चि.
१५	स्वानी	Arcturus	आर्कटयूरस	गफरा	स्वा.
१६	विशाखा	Alpha Librae	अल्फा लिब्राई	झवा	वि
१७	अनुराधा	Delta Scorpii	डेल्टा स्कारपी	अकली	अनु
१८	ज्येष्ठा	Antares	अन्तारेस	कल्ब	ज्ये
१९	मूल	Lambda Scorpii	लामडा स्कार्पी	मोला	मू
२०	पूर्वाषाढा	Delta Sagittarii	डेल्टा सागिट्टारी	नवा	पूपा.
२१	उत्तराषाढा	Phi Sagittarii	फी सागिट्टारी	बलदा	उपा.
२१अ	अभिजित्	Vega	व्हेगा	झावे	अभि
२२	श्रवण	Altair	आल्तायर	बला	श्र
२३	धनिष्ठा	Alpha Delphini	अल्फा डेल्फिनी	सोऊद	ध
२४	शतभिषक्	Lambda Aquarii	लामडा अक्वेरी	अखवा	श.
२५	पूर्वाभाद्रपद	Markab	मर्काब	मुकइ	पूभा
२६	उत्तराभाद्रपद	Algenib	अलगेनिब	मुअख	उभा
२७	रेवती	Zeta Piscium	झीटा पोशियम	रिशा	रे

२७ नक्षत्रों में अभिजित् नक्षत्र (२१ अ) की गणना नहीं होती । क्योंकि यह नक्षत्र

क्रान्ति प्रदेश के बाहर है। इसका उपयोग मुहूर्त विषय में होता है। यह नक्षत्र आकाश में उत्तराषाढा और श्रवण के बीच में कुछ हट कर है।

उत्तराषाढा नक्षत्र का चतुर्थ चरण अर्थात् अन्तिम चतुर्थ भाग और श्रवण नक्षत्र के आदि का एक भाग जो ४ घड़ी का है अर्थात् श्रवण नक्षत्र के आदि का पन्द्रहवां भाग इतना सब मिलाकर अभिजित् नक्षत्र का भोग माना जाता है। अर्थात् इतना अभिजित् नक्षत्र होता है।

प्रत्येक राशि में २३ नक्षत्र=९ चरण होते हैं। प्रत्येक राशि में किस नक्षत्र का कौन-कौन चरण आता है नीचे चक्र से समझ में आ जायेगा—

क्रम	राशि	नक्षत्र	चरण	क्रम	राशि	नक्षत्र	चरण
१	मेघ (१)	अश्विनी	॥॥॥	७	तुला (१४)	चित्रा	००॥
	(२)	भरणी	॥॥॥		(१५)	स्वाती	॥॥॥
	(३)	कृत्तिका	॥०००		(१६)	विशाखा	॥॥०
२	वृष (३)	कृत्तिका	०॥॥	८	वृश्चिक (१६)	विशाखा	०००॥
	(४)	रोहिणी	॥॥॥		(१७)	अनुराधा	॥॥॥
	(५)	मृगशिर	॥००		(१८)	ज्येष्ठा	॥॥॥
३	मिथुन (५)	मृगशिर	००॥	९	घन (१९)	मूल	॥॥॥
	(६)	आर्द्रा	॥॥॥		(२०)	पूषा	॥॥॥
	(७)	पुनर्वसु	॥॥०		(२१)	उषा	॥०००
४	कर्क (७)	पुनर्वसु	०००॥	१०	मकर (२१)	उषा	०॥॥
	(८)	पुष्य	॥॥॥		(२२)	श्रवण	॥॥॥
	(९)	आश्लेषा	॥॥॥		(२३)	धनिष्ठा	॥००
५	सिंह (१०)	मघा	॥॥॥	११	कुम्भ (२३)	धनिष्ठा	००॥
	(११)	पूषा	॥॥॥		(२४)	शतभिष	॥॥॥
	(१२)	उषा	॥०००		(२५)	पूषा	॥॥०
६	कन्या (१२)	उषा	०॥॥	१२	मीन (२५)	पूषा	०००॥
	(१३)	हस्त	॥॥॥		(२६)	उषा	॥॥॥
	(१४)	चित्रा	॥००		(२७)	रेवती	॥॥॥

प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होते हैं। इन चरणों में से जो चरण लिये गये हैं उनके लिये खड़ी लकीर और जो नहीं लिये गये उनके लिये ० बताया गया है। एक खड़ी लकीर को १ चरण समझना चाहिये।

ऊपर बताये १ चरण का चिन्ह ।	}	जैसे अश्विनी के ४ चरण, भरणी के
२ " " " "		४ चरण और कृत्तिका का आदि का
३ " " " "		१ चरण मिल कर मेघ राशि बनी है ।
४ " " " "		अब कृत्तिका के अन्तिम ३ चरण बचे ।

ये कृत्तिका के अन्तिम ३ चरण, रोहिणी के ४ चरण और मृगशिर के आदि के २ चरण मिल कर वृष राशि बनती है । मृगशिर के अन्तिम २ चरण मिथुन राशि में चले जाते हैं । इसी प्रकार चक्र देखकर समझ लेना चाहिये । प्रत्येक राशि में इस प्रकार ९ चरण होते हैं । ये ९ चरण मिलकर २३ नक्षत्र पूरे हो जाते हैं ।

प्रत्येक चरण के लिये एक अक्षर होता है । जिस चरण में किसी बालक का जन्म होता है उसी चरण के अक्षर पर से बालक का नाम रखा जाता है । चरण के अनुसार अक्षर बताने वाले चक्र को होडाचक्र कहते हैं । प्रत्येक पंचांग में यह चक्र दिया रहता है । यह विषय आगे समझाया जायेगा ।

अध्याय ६

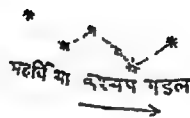
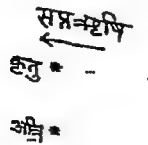
ध्रुव की पहिचान

आकाश में नक्षत्रों को पहिचानने के पहिले ध्रुव को पहिचान लेना आवश्यक है । क्योंकि सब ग्रह आदिक एव नक्षत्र-समुदाय ध्रुव के आस पास घूमते हुए प्रतीत होते हैं । ध्रुव की पहिचान हो जाने पर नक्षत्रों का उदय अस्त और क्रान्तिवृत्त को गोलाई आदि समझ में आ जायेगी ।

जिस प्रकार पृथ्वी का उत्तर और दक्षिण ध्रुव हैं और जिस प्रकार पृथ्वी का झुकाव ध्रुव की ओर जमीन की धरातल से २३°-१७' पर है उसी प्रकार आकाशीय उत्तर ध्रुव भी नीचे के धरातल से ऊपर उठा हुआ दिखता है । धरातल से यह ध्रुव का झुकाव वहाँ के स्थानिक अक्षांश के अनुसार ही होता है । इस विषय का वर्णन आगे होगा ।

ध्रुव तारा Polar star के आस पास सप्तऋषि Great Bear के ७ तारे हैं । वे ध्रुव की परिक्रमा करते रहते हैं जिससे ध्रुव तारे की पहिचान सरलता से हो सकती है । इस लिये इन सप्तऋषि तारों को पहिचानना आवश्यक है । सप्तऋषियों के पास ही लघुऋक्ष little Bear के तारे भी हैं जिन्हें लघु सप्तऋषि भी कहते हैं । कभी-कभी सप्तऋषि तारागण नीचे की ओर रहने से नहीं दिखते उस समय

उसके विरुद्ध दिशा में और सीध में एक तारागणो का समुदाय दिखता है, जो अग्नेयी के “एम” के आकार M के और है जिन्हे महर्षि या कश्यप मंडल Cassiopea कहते हैं ।



चित्र सख्या १४—सप्तऋषि लघुऋक्ष ध्रुव और महर्षि

इनसे भी ध्रुव तारे की पहिचान हो सकती है । चित्र सख्या १४ देखने से ये तारागण और ध्रुव पहिचाने जा सकते हैं ।

सप्तऋषि

यह ७ तारो का झुण्ड है जो उत्तर में ध्रुव की परिक्रमा सदा करते रहते हैं । ये ७ तारे ७ ऋषि माने गये हैं । इनमें से ४ तारे खाट के पाये सदृश हैं जिनसे कुछ लम्बाई लिये एक चौकोन बनता है । इनके नीचे की ओर से एक तिरछी, छोर में कुछ उठी हुई पूँछ सरीखी गई है जिसमें ३ तारे हैं । इस चौखटे के सबसे आगे के दो पाये एक ऊपर एक नीचे हैं जिनको क्रतु और अग्नि कहते हैं । इन दोनों की सीध में यदि एक लकीर आगे उसी सीध की ओर बढ़ती हुई खींची जावे तो उसी सीध में

एक तारा साधारण प्रकाश का दिखेगा। उसी तारे की ओर प्रतिदिन ध्यान दें तो वह कभी चलता नहीं दिखेगा और उसी तारे के आस पास सप्तऋषि घूमते दिखेंगे। दो चार बार ध्यान पूर्वक उत्तर की ओर देखने से यह ध्रुव तारा पहिचान में आ जायेगा।

कश्यप मण्डल में बाईं ओर ऊपर जो तारा है उससे एक लम्बी रेखा लम्ब स्वरूप खींची जावे तो वह भी ध्रुव में आकर मिलेगी। चित्र सख्या १४ के देखने से यह समझ में आ जायेगा। सप्तऋषि और महीष के बीच यह ध्रुव तारा है। इस ध्रुव के आस पास सप्तऋषि आदि पूर्व से पश्चिम को घूमते दिखते हैं।

अध्याय ७

नक्षत्रों की पहिचान

क्रान्ति प्रदेश में २७ तारागणों का समुदाय या नक्षत्र है और अभिजित् नक्षत्र क्रान्ति मण्डल के बाहर है इन सबको पहिचान लेना चाहिये। इन सब नक्षत्रों को पहिचान लेने से ज्योतिष की कई बातें शीघ्र समझ में आने लगेंगी। इस कारण इन सबकी पहिचान यहाँ देते हैं। आगे इनके नक्षत्र भी दिये हैं, जिनके सहारे आकाश में नक्षत्रों को पहिचानने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। देखें चित्र सख्या ३९-४०-४१ (तीन चित्र पट आकाश के)। इनके अतिरिक्त पृथक्-पृथक् नक्षत्रों को पहिचानने के लिये अलग चित्र दिये हैं। उनकी पहिचान यहाँ बताई जाती है।

१ अश्विनी—के ३ तारे हैं परन्तु उनकी पहिचान के लिये एक और आगे का तारा मिला देने में शीघ्र पहिचाने जा सकते हैं। २ तारे बीच में पास-पास कुछ तिरछे एक में दूसरा कुछ नीचा परन्तु बराबरी में हैं और ऊपर छोट पर १ तारा और नीचे १ तारा हैं। ये दोनों तारे चमकदार हैं परन्तु उत्तर का तारा अधिक चमकदार है और तीसरा तारा जो पूर्व में है वह सब से तेजस्वी है। इसके पश्चिम में भी एक तारा है। देखें चित्र संख्या १५। यह नक्षत्र कुंआर के महीने में ८-९ वजे रात को पूर्व बिन्दु से कुछ उत्तर की ओर हट कर उदय होने के ६½ घण्टा के उपरान्त सिरपर आता है और ६½ घण्टा के उपरान्त पश्चिम बिन्दु से कुछ उत्तर की ओर अस्त होता है।

यह नक्षत्र जनवरी के आरम्भ में व्यालू के समय सिर पर आता है और शिरो-बिन्दु में कुछ उत्तर की ओर दिखता है। इसके ३ तारों का आकार घोंडे के मुख सदृश होने में इसे अश्विनी कहते हैं। कुंआर की पूर्णिमा के लगभग चन्द्रमा इस नक्षत्र पर रहता है।

२ भरणी—इसके ३ छोटे-छोटे तारे हैं जिनसे छोटा सा त्रिकोण बनता है। अश्विनी और भरणी के बीच में रेखा खींचने पर उस रेखा के उत्तर में—यह त्रिकोण पड़ता है। यह अश्विनी के आगे पूर्व की ओर है इसका आकार योनि सरीखा बताया है परन्तु यह त्रिकोणाकार है। देखें चित्र संख्या १६।

३ कृतिका—यह तारागणों का गुच्छा सा दिखता है किसान लोग इसे अच्छी तरह पहचानते हैं। वे लोग इसे धोबी का मोगरा कहते हैं। कार्तिक के महीने में व्यालू के समय यह पूर्व में दिखता है और इसी को देखकर कार्तिक स्नान करने वाले समय



५

चित्र संख्या १५ चित्र संख्या १६ चित्र संख्या १७ चित्र संख्या १८

१ अश्विनी २ भरणी ३ कृतिका ४ रोहिणी

का अनुमान करते हैं। इसके ६ तारे माने जाते हैं और इसका आकार छुरा सदृश कहा है। फरवरी में यह व्यालू के समय सिर पर आता है। कार्तिक की पूर्णिमा के लगभग चन्द्र इस नक्षत्र पर रहता है। देखें चित्र संख्या १७।

४ रोहिणी—इसमें ५ तारे माने जाते हैं और आकार गाड़ी सदृश बताया गया है। परन्तु देखने में यह एक कोण सा दिखता है। यह कृतिका के कुछ वाजू से नीचे की ओर दिखता है। इसमें नीचे का तारा अधिक प्रकाशवान् है। ये तारे कृतिका से कुछ दक्षिण की ओर हैं। फरवरी में व्यालू के समय ये सिर पर आते हैं और कुछ दक्षिण की ओर रहते हैं। इनका आकार चित्र संख्या १८ देखने से समझ पड़ेगा।

कहते हैं शनि और मंगल जब इस शकट (गाड़ी) को भेदन करते हैं (इस त्रिकोण में से होकर जाते हैं) तब प्रलय होता है। इसलिये ये ग्रह शकट भेदन नहीं करते। केवल चन्द्र ही यहाँ से जाता है इसी कारण रोहिणी को चन्द्र की स्त्री कहा है।

५ मृगशिर या मृगशिरा—इसे बहुधा सर्व किसान पहचानते हैं। इसे वे हिरनी या खटोला कहते हैं। इसके चारों ओर चौकोन बनाते हुए ४ प्रकाशवान् तारे हैं। इनके बीच में ३ तारे एक दूसरे की सीध में हैं। इसे व्याध का तीर कहते हैं। व्याध का तारा बहुत नीचे हटकर अतिप्रकाशवान् है और शीघ्र पहचाना जा सकता है। मृगशिर के अन्त में ३ तारे पास-पास एक सीध में हैं उसे हिरन की पूँछ कहते हैं और सामने की

ओर ३ तारो का एक छोटा त्रिकोण है उसे हिरन का मुख कहते हैं। अगहन के महीने में व्यालू के समय यह पूर्व में दिखता है अगहन की पूर्णिमा के लगभग चन्द्र इस नक्षत्र पर रहता है। इन तारों में मृगशिर के ३ ही तारे माने जाते हैं। और आकार हिरन सदृश माना जाता है। ये तारे आकाश गंगा के किनारे हैं और जब सिर पर आते हैं तब ठीक सिर पर दिखते हैं। ये रोहिणी से कुछ दूर हट कर दक्षिण की ओर हैं। मार्च के महीने में व्यालू के समय ये सिर पर आते हैं। उदय होने के ६ घण्टा बाद सिर पर आते हैं। देखें चित्र सख्या १९।



चित्र संख्या १९
५ मृगशिर

चित्र सख्या २०
६ आर्द्रा

६ आर्द्रा—इसका एक तारा है। यह प्रायः भरणी के बीच में है और मृगशिर तथा पुनर्वसु के बीच में दिखता है। मार्च के महीने में लगभग व्यालू के समय सिर पर आता है और सिर से कुछ दक्षिण की ओर दिखता है। इसका आकार मणि सदृश माना है। इसका प्रकार साधारण है। यह भी आकाश गंगा के बाहरी किनारे पर है। इसकी पहिचान के लिये और तारों को पहिचान कर इसे खोजें। देखें चित्र सख्या २०।

७ पुनर्वसु—इसके ४ तारे हैं। घर सदृश इसका आकार बताया है। २ तारे इसके पहिली श्रेणी के (अधिक प्रकाशवान्) और तीसरा तारा भी पहिली श्रेणी का है। इस प्रकार उत्तर की ओर २ तारे हैं और दक्षिण की ओर २ तारे हैं। उत्तर की ओर के २ तारे सबसे पहिले उगते हैं। देखें चित्र सख्या २१। तारे कितनी श्रेणियों के हैं उनकी श्रेणी का क्रम चित्रपट ३९-४०-४१ देखने से प्रकट होगा।

८ पुष्य—इसके ३ तारे लिये जाते हैं और बाण सदृश इसका आकार माना जाता है। देखें चित्र सख्या २२। ये बारीक-बारीक तारे हैं जिनका छोटा त्रिकोण बनता है। जो देखने में एक ही तारा सदृश दिखता है। अप्रैल के महीने में व्यालू के समय

यह सिर पर आता है। पूष के महीने में पूर्णिमा के लगभग चन्द्रमा इस नक्षत्र पर रहता है।



चित्र सख्या २१

चित्र सख्या २२

चित्र सख्या २३

७ पुनर्वसु

८ पुष्य

९ आश्लेषा

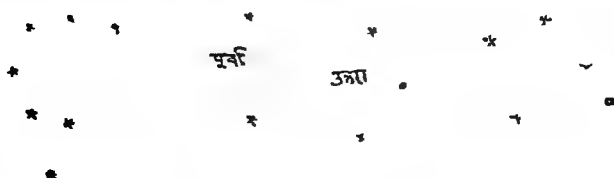
९ आश्लेषा या अश्लेषा—इसके ५ तारे और चक्र सरीखा आकार बताया है। यह पुष्य के दक्षिण में है और उसीकी बराबरी से सिर पर आता है। चन्द्र पुष्य से आश्लेषा पर शीघ्र आ जाता है। इसके वारीक तारे हैं जिनमें एक प्रकाशवान् तारा है। देखें चित्र सख्या २३।

१० मघा—इसके ६ तारे माने जाते हैं और आकार भवन सदृश बताया गया है। परन्तु इन ६ तारों पर विचार करने से हसिया सरीखा आकार दिखाई देता है। ध्यान में आते ही यह शीघ्र पहिचाना जा सकता है। इसके ४ बड़े तारे हैं इनका आकार एक समानान्तर भुज चौकोन सा बनता है, जिस प्रकार दियासलाई की डिब्बी के ऊपर के ढक्कन को दबा देने से कुछ तिरछा चौकोन बनता है। इसके पश्चिम की ओर दक्षिण कोण का तारा तेजस्वी है और पहिली श्रेणी का है। इसके दक्षिण में एक वारीक तारा है जो पाँचवाँ तारा है। पूर्व बाजू से दोनों दक्षिण के तारे अधिक तेजस्वी हैं। मई महीने के आरम्भ में व्यालू के समय यह सिर पर कुछ दक्षिण की ओर हटा हुआ दिखता है। माघ की पूर्णिमा को चन्द्रमा इसके समीप रहता है। कोई इसके ५ तारे मानते हैं। देखें चित्र सख्या २४।

११ पूर्वा फाल्गुनी } मघा के पूर्व में कुछ उत्तर को दोनों फाल्गुनी के ४ तारे हैं
१२ उत्तरा फाल्गुनी } जो चौकोन सरीखे दिखते हैं। उसके पूर्व-पश्चिम बाजू का

उत्तर-दक्षिण बाजू से अन्तर दुगने से कुछ कम है। पश्चिम की ओर के २ तारे पूर्वा फाल्गुनी हैं। इसके उत्तर की ओर का अधिक तेजस्वी है। पूर्व बाजू के दोनों तारों को उत्तरा फाल्गुनी कहते हैं। इसके नीचे दक्षिण का तारा अधिक तेजस्वी है। उत्तर का

बारीक है। फाल्गुन में इस नक्षत्र पर पूर्णिमा को चन्द्र आता है। फाल्गुन में ये २ नक्षत्र व्यालू के समय पूर्व में दिखते हैं। मई जून में व्यालू समय सिर पर दिखते हैं। और ठोक सिर पर आते हैं। देखें चित्र सख्या २५।



चित्र सख्या २४

१० मघा

चित्र सख्या २५

११ पूर्वा फाल्गुनी

१२ उत्तरा फाल्गुनी

चित्र सख्या २६

१३ हस्त

१३ हस्त—इसके ५ तारे हैं। आकार हाथ सदृश है। यह मघा के दक्षिण ओर है। शीघ्र पहिचाना जा सकता है। हाथ की अंगुलियों की ५ नोक सदृश ये पाँचो तारे दिखते हैं। जून के महीने में ये व्यालू समय सिर पर दिखते हैं और शिरोविन्दु से ३०-४० अंश दक्षिण की ओर रहते हैं। देखें चित्र सख्या २६।

१४ चित्रा—हस्त के बाजू पूर्व को कुछ उत्तर की ओर यह एक ही तारा है जो बड़ा प्रकाशवान् है। आकार इसका मोती सदृश बताया है। जून के अन्तिम भाग में यह व्यालू के समय सिर पर आता है। चैत्र की पूर्णिमा को चन्द्र इस पर आता है। यह तारा प्रायः क्रातिवृत्त पर है। देखें चित्र सख्या २७।

१५ स्वाती—यह अकेला और बहुत बड़ा तारा है। सरलता से पहिचाना जा सकता है। चित्रा से बहुत उत्तर को इसका तारा चमकता हुआ दिखता है। यह तारा चित्रा से भी अधिक प्रकाशवान् है। चित्रा के प्रायः ५० मिनट बाद यह शिरोविन्दु पर आता है और उसके १॥ घंटा बाद डूबता है। यह चित्रा से प्रायः ३०° दक्षिण को है। इसका एक ही तारा है और आकार भूंगा सदृश बताया है। यह कुछ लाल रंग का है। देखें चित्र सख्या २८।

१६ विशाखा—इसके २ तारे हैं। चित्रा के सामने ही नीचे की ओर २ तारे चमकते हुए दिखते हैं, परन्तु चित्रा से उनका तेज कम है। फरवरी में ५ बजे प्रातः के लगभग ये सिर पर दिखते हैं। पहिले तारे के उपरान्त दूसरा तारा २६ मिनट के अन्तर से उगता है। उसके बराबरी से २ और छोटे तारे हैं जिनको मिला कर देखने से एक चौकोन सा बन जाता है। इसके ४ तारे और आकार तोरण सदृश मानते हैं। वैशाख में चन्द्रमा पूर्णिमा को इस नक्षत्र पर आता है। मई महीने में

व्यालू समय यह उदय होता है और उदय होने के समय पूर्व और आग्नेयकोण के बीच दिखता है। दोनों बड़ा तारो मे एक चित्र के तारो के सामने नीचे की ओर दिखता है और दूसरा उसके बाईं ओर दिखता है। दोनों तारे एक से तेजस्वी



चित्र सख्या २७ चित्र सख्या २८ चित्र सख्या २९ चित्र सख्या ३०
१४ चित्रा १५ स्वाती १६ विशाखा १७ अनुराधा

है, परन्तु चित्रा से तेज कम है। कभी चन्द्र दोनों बड़े तारो के बीच से होकर जाता है। देखें चित्र सख्या २९।

१७ अनुराधा—इसके ४ तारे हैं, जो प्रायः एक सीध में उत्तर दक्षिण को हैं और विशाखा के नीचे पूर्व को हैं। विशाखा के बड़े तारो से एक सीधी रेखा अनुराधा के तारो की सरल रेखा के छोरो से मिलाई जावे तो उत्तर की अपेक्षा दक्षिण का अन्तर अधिक प्रगट होगा। इन तारो का आकार भात की वलि (पिंड) सदृश बताया है अर्थात् किसी ने भात की वलि के ४ कोर उठाकर ४ जगह में एक रेखा में एक के नीचे एक रख दिया हो। देखें चित्र संख्या ३०।

१८ ज्येष्ठा—इसके ३ तारे प्रायः एक सीध में पूर्व पश्चिम को हैं। अनुराधा के सीधी रेखा में बीच से पूर्व को एक लम्ब खींचा जावे तो उसकी सीध में ३ अनुराधा के तारे खड़े एक के नीचे एक हैं तो ज्येष्ठा के तारे आड़े एक के बाद एक हैं। ज्येष्ठा के बीच का एक तारा पहिली श्रेणी का है। ज्येष्ठ मास में पूर्णमासी को चन्द्र इस नक्षत्र पर रहता है। इसका आकार कुण्डली सरीखा बताया है। देखें चित्र सख्या ३१।



चित्र सख्या ३१ चित्र सख्या ३२ चित्र सख्या ३३
१८ ज्येष्ठा १९ मूल २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा

१९ मूल—ज्येष्ठा के पूर्व में ११ तारे हैं, जो सिंह की पूछ सरीखा या बिच्छू के डक सरीखा आकार गोलाई लिये बनाते हैं। यह शीघ्र पहिचाना जा सकता है। आकाश

गंगा में यह क्रातिवृत्त के दक्षिण को है। देखें चित्र मर्या ३२। इसका आकार सिंह पुच्छ मरीखा माना है। यह जून के उत्तरार्द्ध में व्यालू के समय उदय होता है। सितम्बर में ५ बजे संध्या को और अप्रैल में प्रातः के समीप सिर पर दिखता है। अनुराधा आदि के तारों को मिला कर देखने में आकाश में एक बड़ा बिच्छू सरीखा आकार सिर में ५०-६० अंश दक्षिण की ओर लटकता हुआ दिखता है।

२० पूर्वाषाढा } नमो प्रत्येक के २-२ तारे हैं। इनके २-२ तारे मिल कर एक
२१ उत्तराषाढा } नमकोण मरीखा बन जाता है। २ तारा पूर्वाषाढा के आकाश

गंगा के बाहर है। उत्तराषाढा के उत्तर दक्षिण लम्बाई से पूर्व पश्चिम लम्बाई का प्रमाण प्रायः दुगुना है। अप्रैल के प्रातः के लगभग यह चौकोन सिर पर आता है। देखें चित्र मर्या ३३। पूर्वाषाढा का आकार हाथी दात और उत्तराषाढा का आकार मूँच (मचैया) मरीखा माना है।

३१ अभिजित्—दोनों आषाढा के बाद अभिजित् का तारा लिया जाता है। परन्तु यह क्रातिवृत्त प्रदेश में दूर और बाहर है इस कारण इसे नक्षत्र की गणना करते समय छोड़ देते हैं। यह तारा उत्तर की ओर आकाश गंगा के किनारे है और बड़ा प्रकाशवान् है। इसके पाम दो छोटे २ तारे हैं जिनमें एक त्रिकोण सरीखा दिखता है। इन नक्षत्र को मिलाने में २८ नक्षत्र हो जाते हैं परन्तु इसे छोड़कर केवल क्राति प्रदेश के ही २७ नक्षत्र लिये जाते हैं। यह प्रायः प्रथम श्रेणी का है। देखें चित्र मर्या ३४।

२२ श्रवण—इसके ३ तारे हैं जिसमें बीच का तारा पहिली श्रेणी का और बहुत चमकीला है। ये तारे आकाश गंगा में उत्तराषाढा में बहुत उत्तर को कुछ पूर्व कोने में हैं। श्रवण मान की पूर्णमासी की चंद्र इस नक्षत्र के समीप आता है। ये तारे शीघ्र

चित्र मर्या ३३

चित्र मर्या ३५

चित्र मर्या ३६

३१ अभिजित्

२२ श्रवण

२३ धनिष्ठा

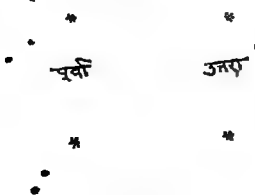
पहचाने जा सकते हैं। एक मोक्ष में ये तीनों तारे हैं और प्रायः उत्तर दक्षिण कुछ तिरछे हैं। इन तीनों तारों का आकार वामन धीतार के चरण सदृश माना जाता है परन्तु देखने में ये बाण सरीखे दिखते हैं। देखें चित्र मर्या ३५।

२३ धनिष्ठा—इसके ५ तारे हैं जो पास-पास हैं। श्रवण के पूर्व कुछ उत्तर वाजू इसका शुभका दिखता है। इसका आकार मृदग सरीखा कहा गया है। नीचे का छोटा तारा छोड़ कर ४ तारों को देखें तो चपटा चौकोन सरीखा दिखता है। यह आकाश गंगा के बाहर है। ये ४ तारे पास पास और मद ज्योति के हैं। देखें चित्र सख्या ३६।

२४ शतभिषक् या शतभिषा—इसे शततारक भी कहते हैं। कहा जाता है कि इसमें १०० तारों का झुण्ड है। इसका आकार वृत्त Circle सरीखा बताया गया है परन्तु कोई इसमें से १० तारा कोई १ ही तारा को ही शतभिषक् मानते हैं। यह नवम्बर में व्यालू के समय सिर पर आता है और प्रायः २८ अश सिर से दक्षिण की ओर दिखता है। इसीके सीध में बहुत नीचे दक्षिण में १ बहुत ही प्रकाशवान् तारा है जिसे याममत्स्य कहते हैं। दोनों का अन्तर ८ अश का है। १०० तारे होने से इसका नाम शततार पडा है। वहाँ बहुत से तारेगण पास-पास हैं।

२५ पूर्व भाद्रपद } याममत्स्य और शतभिषक् के प्रकाशवान् तारा को १ सरल
२६ उत्तर भाद्रपद } रेखा से मिलाओ और इस रेखा को उत्तर की ओर बढ़ाते जाओ तो इस रेखा के कुछ पश्चिम की ओर पूर्व भाद्रपद के २ तारे आते हैं। याममत्स्य से जितने अश पर उत्तर में शतभिषक् है उतने ही अन्तर पर शतभिषक् से उत्तर में पूर्व भाद्रपद का १ तारा है और उसके वाजू ठीक उत्तर में १३° पर पूर्व भाद्रपद का दूसरा तारा है। ये दोनों तारे एक से तेजस्वी हैं। नवम्बर में व्यालू के समय सिर पर आते हैं उस समय शिरो बिन्दु के दक्षिण ५-६ अश पर रहते हैं और दूसरा उतने ही उत्तर को रहता है। इन दोनों तारों के बीच जितना अन्तर है उससे भी अधिक अन्तर पर प्रत्येक के पूर्व में एक-एक तारा है इस प्रकार २ तारे हैं। इन दोनों को उत्तर भाद्रपद कहते हैं। इन दोनों में उत्तर का अधिक तेजस्वी है यह दूसरी श्रेणी का तारा है।

पूर्व भाद्रपद के २ तारे और उत्तर भाद्रपद के २ तारे मिलकर एक चौकोन सरीखा बनता है। देखें चित्र सख्या ३७। भाद्रपद मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा इस नक्षत्र के



चित्र सख्या ३७

२५ पूर्वा भाद्रपद, २६ उत्तरा भाद्रपद



चित्र सख्या ३८

२७ रेवती

समाप्त आता है। पूर्व भाद्रपद का आकार मञ्च सरीखा और उत्तर भाद्रपद का आकार यमल (जोड़ा) सरीखा बताया है।

२७ रेवती—इसमें ३२ तारे हैं। आकार मृदङ्ग सरीखा है और वंसा ही दिखता है। ये छोटे-छोटे तारे हैं। उत्तर भाद्रपद के दोनों तारों में से दक्षिण के तारे के आग्नेय कोण के लगभग १०-१० अंश पर तारों की १ कतार है जो पूर्व-पश्चिम गई है। इनमें ६-७ तारे तेजस्वी हैं और प्रायः एक दूसरे के समानान्तर पर हैं। इनके दक्षिण में अश्विनी है। देखें चित्र सख्या ३८।

इन नक्षत्रों के अतिरिक्त आकाश गंगा, याममत्स्य आदि चित्र में दिये हैं जिनको देखकर आकाश में पहिचानने का प्रयत्न करें।

आकाश गंगा Milk way

यह आकाश में उत्तर से दक्षिण की ओर तिरछी गई है। इसमें बहुत से तारों का घना समुदाय होता है, जिसके कारण आकाश का वह भाग ज्वेत सरीखा दिखता है जैसे बादल के टुकड़े छाये हों।

क्रान्ति प्रदेश का वर्णन आगे मिलेगा।

अश्विनी से १२ नक्षत्र तक सब तारे विपुवत्वृत्त के उत्तर में हैं और स्वाती अभिजित श्रवण धनिष्ठा पूर्वभाद्रपद उत्तरभाद्रपद रेवती इनके तारे भी विपुवत् वृत्त के उत्तर में हैं। शेष तारे दक्षिण में हैं।

चन्द्र का भ्रमण मार्ग—चन्द्रमा इस प्रकार नक्षत्रों में से होकर जाता है।

१—इन १० नक्षत्रों के दक्षिण की ओर से चन्द्रमा जाता है। नक्षत्रों के नाम के आगे उनकी क्रम सख्या दी है।

(१) अश्विनी १, (२) भरणी २, (३) पुनर्वसु ७, (४) पू० फा० ११, (५) उ० फा० १२, (६) स्वाती १५, (७) श्रवण २२, (८) धनिष्ठा २३, (९) पू० भा० २५, (१०) उ० भा० २६।

२—इन ५ नक्षत्रों के उत्तर से चन्द्रमा जाता है।

(१) मृग० ५, (२) आर्द्रा ६, (३) आश्लेषा ९, (४) हस्त १३, (५) मूल १९।

३—शेष १२ नक्षत्रों के दोनों ओर से, कभी पास से कभी उन को डाकते हुए, चन्द्रमा जाता है।

(१) कृत्तिका ३, (२) रोहिणी ४, (३) पुष्य ८, (४) मघा १०, (५) चित्रा १४, (६) विशाखा १६, (७) अनुराधा १७, (८) ज्येष्ठा १८, (९) शतभिषक् २४, (१०) पू० पा० २०, (११) उ० पा० २१, (१२) रेवती २७।

आकाश के नक्षत्रों को देखने की रीति

नक्षत्रों में जो दिशाएँ दी हैं उनके सम्बन्ध में कुछ भ्रम हो सकता है। कारण यह है कि उत्तर के उपरान्त वाई ओर पूर्व फिर दक्षिण फिर पश्चिम दिया है। पूर्व के स्थान में पश्चिम होने का कारण नीचे समझाया गया है।

नक्षत्रों को आकाश से मिलान करने के लिये खुले मैदान में बैठें जहाँ से आकाश अच्छी तरह दिखे। मुँह ऊपर की ओर कर आकाश को देखें फिर नक्षत्रों को लौटाकर सिर के ऊपर रखें जिससे नक्षत्रों की पीठ आकाश की ओर रहे और नक्षत्र पढ़ने में आ सके। नक्षत्रों में उत्तर दिया है, वह उत्तर ध्रुव की ओर करें और नक्षत्रों के पूर्व को पूर्व की ओर रखें तो नक्षत्रों की शेष दिशाएँ ठीक स्थिति पर आ जायेंगी। इसके उपरान्त तारा देखने का जो समय बताया है उन्हीं महीनों की उन्हीं तारों को जो जैसा आगे बताया है उस नक्षत्रों के अनुसार ताराओं को खोजें तो अवश्य मिलेंगे।

इसी प्रकार आकाश में देखते-देखते और पहिचानने का प्रयत्न करते रहने से मुख्य-मुख्य नक्षत्रों की अवश्य पहिचान होने लगेगी। जब आकाश खुला रहे और अँधेरी रात हो, तारा गणों का अवलोकन कर नक्षत्र पहिचानने का प्रयत्न करते हैं।

जब नक्षत्रों की पहिचान हो जावे तो ग्रहों की भी खोज करें। किसी पञ्चांग से प्रगट हो सकता है कि अमुक ग्रह अमुक नक्षत्र या राशि पर है। इनको समझ लेने से ज्योतिष शास्त्र की ओर बातें शीघ्र समझ में आने लगेगी।

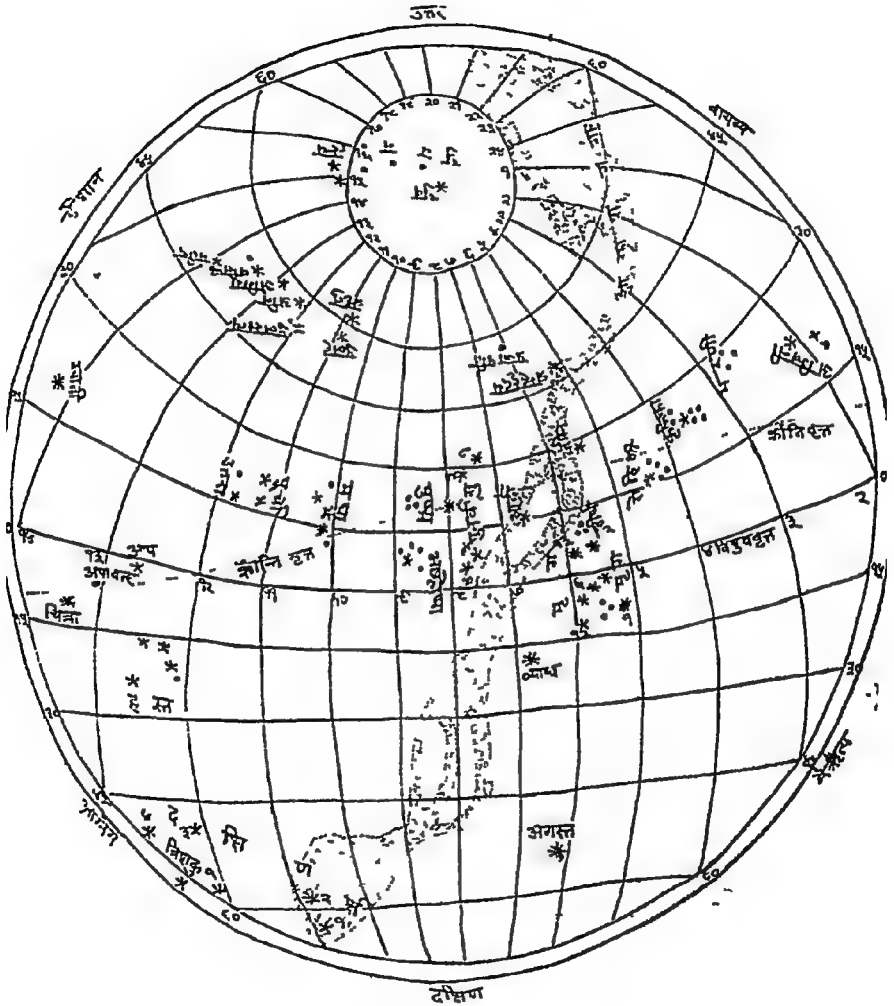
आकाश का नक्षत्र देखने का समय

तारागण प्रतिदिन पश्चिम को 1° पीछे हटते हैं। जो तारा आज सच्चा को ७ वजे सिर पर है वह कल ७ वजने को ४ मिनट शेष रहेंगे तब सिर पर आवेगा। अर्थात् ४ मिनट पहिले दिखेगा।

वृत्त में 360° होते हैं और २४ घण्टे में एक वृत्त का चक्कर पूरा होता है। अर्थात् एक दिन रात में सूर्य या नक्षत्र का पूरा एक चक्कर हो जाता है। इस प्रकार से १ घण्टे में 15° या ४ मिनट में 1° नक्षत्र चलते हैं। इसी हिसाब से प्रति दिन नक्षत्रों की चाल में 1° का अन्तर पड़ जाता है। अन्तर=१ दिन में=४ मिनट। १५ दिन=१ घण्टा। १ मास=२ घण्टा। ३ मास=६ घण्टा।

कारण यह है कि सावन मास से नक्षत्र दिन का मान २३ घण्टा ५६ मि० ४०९०६ से० का है अर्थात् सावन दिन से नक्षत्र दिन लगभग ४ मिनट छोटा है। नक्षत्र उदय होने में अस्त होकर फिर दूसरे दिन उदय होने तक १ नक्षत्र दिन होता है। वह सूर्य के समय से ४ मिनट छोटा है अर्थात् सूर्य का विषुवांश प्रतिदिन ४ मिनट बढ़ता है।

नारा की ओर
परिली दूसरी ओर की पावनी पट्टी



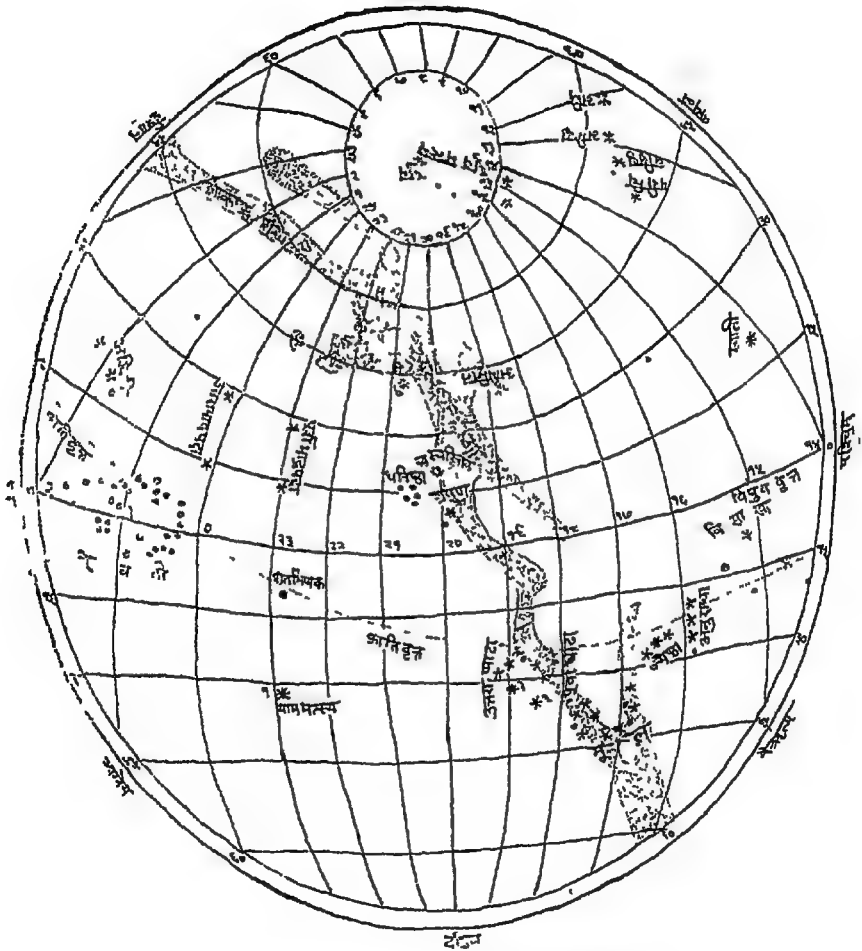
चित्र संख्या ३९-फागुन मास का आकाश का चित्र पट

तारा की श्रेणी

पहली दूसरी तीसरी चौथी पचवीं छठवीं

* * * * *

अ

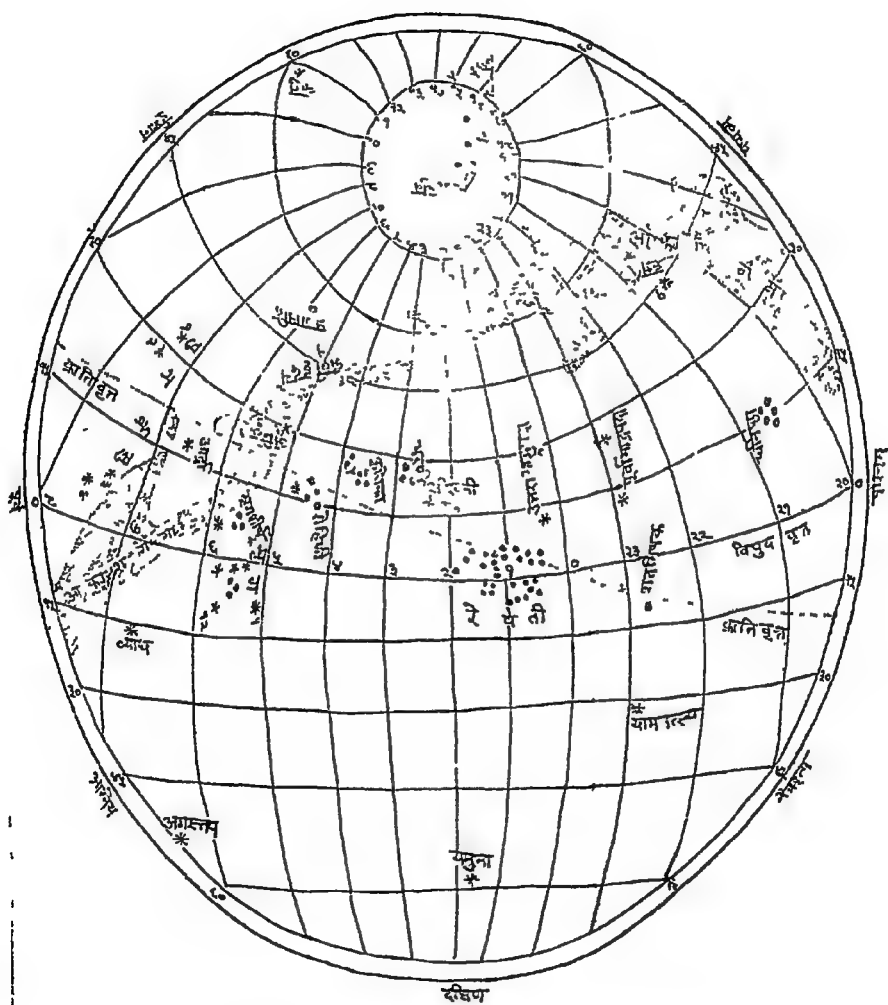


चित्र खंख्या ४०-भाद्रपद मास का आकाश का चित्र पट

तारा की श्रेणी

~ पहिली दुसरी तिसरी चौथी पाचवी षट्ठी

* * * * *



चित्र सख्या ४१-मार्गशीर्ष मास का आकाश का चित्र पट

इस हिसाब से आज ७ वजे सध्या को जो नक्षत्र सिर पर दिखेगा वह कल ७ वजे सध्या को 1° पश्चिम में हटा दिखेगा । १५ दिन में वही तारा (15×4) = ६० मिनट (१ घण्टा) पहिले अर्थात् ६ वजे सध्या को सिर पर आवेगा । ७ वजे सध्या को उसे देखेंगे तो 15° पश्चिम को वह तारा हटा दिखेगा । जो नक्षत्र आज ७ वजे सध्या को सिर पर है वह तीन महीना बाद ७ वजे सध्या को आकाश में डूबते दिखेगा, अर्थात् ३ महीने में 90° का अन्तर पड़ जाता है । जो तारा आज 10° वजे रात सिर पर दिखेगा, १ महीना बाद वह सिर पर 1° वजे रात दिखेगा अर्थात् १ महीने के बाद वह तारा आज से २ घण्टा पहिले उस स्थिति में आवेगा ।

इस नियम को ध्यान में रख कर नक्षत्र पर (नकशा) देखने का समय जान सकते हैं कि किस-किस तारोख को किस-किस समय पर चित्रपट में दिये हुए तारागण दिखाई देंगे ।

नक्षत्र पट (नकशा) देखने का समय ।

चित्रपट सख्या ३९			चित्रपट सख्या ४०			चित्रपट सख्या ४१ ।		
तारोख	महीना	समय	ता०	महीना	समय	ता०	महीना	समय
२०	नवम्बर	४ वजे रात	८	मई	५ वजे रात	२२	अगस्त	४ वजे रात
६	दिसम्बर	३ " "	२३	" "	४ " "	६	सितम्बर	३ " "
२१	" "	२ " "	७	जून	३ " "	२१	" "	२ " "
५	जनवरी	१ " "	२२	" "	२ " "	६	अक्टूबर	१ " "
२०	" "	१२ " "	७	जुलाई	१ " "	२१	" "	१२ " "
४	फरवरी	११ " "	२२	" "	१२ " "	५	नवम्बर	११ " "
२०	" "	१० " "	६	अगस्त	११ " "	२०	" "	१० " "
७	मार्च	९ " "	२१	" "	१० " "	६	दिसम्बर	९ " "
२२	" "	८ " "	५	सितम्बर	९ " "	२१	" "	८ " "
६	अप्रैल	७ " "	२०	" "	८ " "	५	जनवरी	७ " "

अध्याय ८

राशियों के स्वरूप

आकाश में इन नक्षत्रों के आकार यदि ध्यान पूर्वक देखें तो कुछ आकृतियाँ बनी हुई प्रतीत होगी । । इन्हीं आकृतियों के अनुमान से राशियों का नाम पड़ा है । जैसे —

१—मेष=मेढा

२—वृष=बैल

- ३—मिथुन=स्त्री पुरुष का जोड़ा ।
 ४—कर्क=केकड़ा ।
 ५—सिंह=सिंह ।
 ६—कन्या=नाव में बैठी कुमारी ।
 ७—तुला=तराजू ।
 ८—वृश्चिक=विच्छू ।
 ९—धन=धनुषधारी पुरुष जिसका धड घोड़े सरीखा है ।
 १०—मकर=सिर हिरन सरीखा और धड मगर सरीखा ।
 ११—कुम्भ=हाथो में घड़ा लिये हुये पुरुष ।
 १२—मीन=२ मछलियाँ जिनमें १ का मुँह दूसरी की पूँछ की ओर है ।
 इनके अनुमानिक चित्र सख्या ४२ से ५३ तक में दिये हैं ।

राशियों के कल्पित चित्र



चित्र सख्या ४२
मेप

चित्र सख्या ४३
वृप

चित्र सख्या ४४
मिथुन



चित्र सख्या ४५
कर्क

चित्र सख्या ४६
सिंह

चित्र सख्या ४७
कन्या



चित्र सख्या ४८

तुला

चित्र सख्या ४९

वृश्चिक

चित्र सख्या ५०

धन



चित्र सख्या ५१

मकर

चित्र सख्या ५२

कुम्भ

चित्र सख्या ५३

मीन

अध्याय ६

पृथ्वी के अक्षांश और देशान्तर का स्पष्टीकरण

पृथ्वी के अक्षांश और देशान्तर का अधिक काम पडता है। इस कारण इनको समझ लेना चाहिये।

पृथ्वी नारंगी के सदृश गोल है और दोनो मिरों पर चपटी है। पृथ्वी के इन दोनो सिरो को ध्रुव Pole कहते हैं। उत्तर के छोर को उत्तर ध्रुव और जो ठीक उसके विरुद्ध नीचे का छोर है उसे दक्षिण ध्रुव कहते हैं। दोनो ध्रुवों के बीचोबीच एक कल्पित रेखा गई है उसे धुरी axle कहते हैं। दोनो ध्रुवों के बीचोबीच ध्रुवों से समानान्तर दूरी पर जो एक कल्पित रेखा पूर्व पश्चिम पृथ्वी की सतह पर से पृथ्वी को घेरते हुए गई है उसे विपुलवृत्त या विपुलवत् रेखा या भूमध्य रेखा Equator कहते हैं। इस रेखा से उत्तर या दक्षिण ध्रुव समानान्तर दूरी पर है। इसे भूमध्य रेखा कहते हैं।

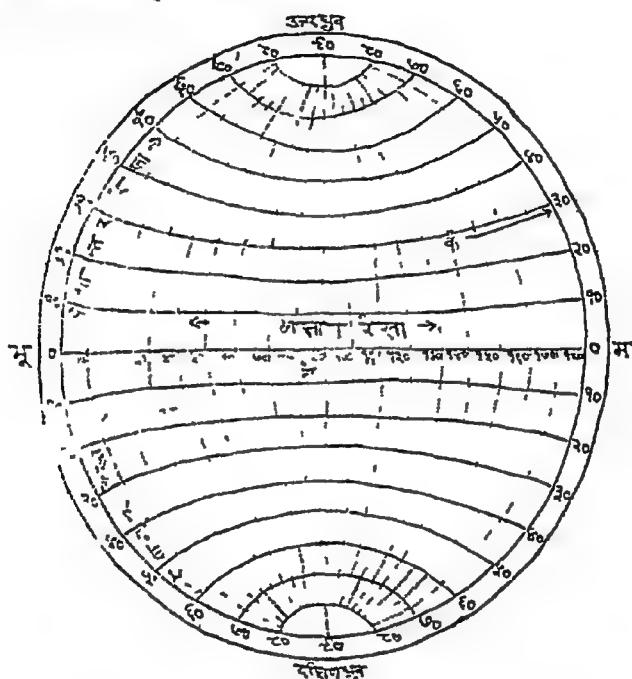
अक्षांश Latitude

भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण को समानान्तर दूरी पर जो कल्पित रेखाएँ पृथ्वी की सतह पर पूर्व-पश्चिम बनाई गई हैं वे रेखाएँ अक्षांश कहलाती हैं। इन रेखाओं

से प्रकट होता है कि किसी स्थान की उत्तर या दक्षिण दूरी भूमध्य रेखा से कितनी है।

अक्ष=धुरी, अक्ष + अश=धुरी का कोणात्मक अश।

अर्थात् उससे प्रकट होता है कि उस स्थान में पृथ्वी की धुरी का झुकावकोणात्मक अश क्या है और भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण किसी स्थान विशेष की कोणात्मक दूरी का ही नाम अक्षांश है।



चित्र सत्या ५४-अक्षांश और देशान्तर

चित्र मत्वा ५४ देखने में अक्षांश समझ में आ जायेगा। भूमध्यरेखा पर अक्षांश ० होता है और उसे निरक्ष देश कहने हैं क्योंकि वहाँ कुछ भी अक्षांश नहीं रहता। यहाँ से ज्यों-ज्यों उत्तर या दक्षिण की ओर जाओ तो अक्षांश बढ़ता जायेगा।

देशान्तर—Longitude देश + अन्तर=देशों का अन्तर।

इसे मध्याह्न रेखा Meridian भी कहते हैं। किसी प्रवाण रेखा Prime meridian में पूर्व या पश्चिम में किसी स्थान का अन्तर इससे नापा जाता है।

किसी प्रवाण मध्याह्न रेखा से आरम्भ कर समानान्तर दूरी पर भूमध्य रेखा पर जो रेखाएँ पूर्व-पश्चिम की दूरी बताने को खींची जाती हैं, वे ही देशान्तर रेखाएँ

कहलाती है। इन रेखाओं का एक छोर उत्तर ध्रुव में और दूसरा छोर दक्षिण ध्रुव में मिलता है। ये रेखाएँ भूमध्य रेखा को काटते हुए उत्तर और दक्षिण को जाती हैं। इनके बीच का हिस्सा अपने सिर के ऊपर से होकर जाता है। ये भी कल्पित रेखाएँ हैं। यद्यपि ये रेखाएँ उत्तर दक्षिण खींची गई हैं परन्तु इनसे किसी स्थान का पूर्व-पश्चिम अन्तर प्रधान मध्याह्न रेखा के स्थान से मालूम होता है जैसा चित्र सख्या ५४ के देखने से प्रकट होगा। जब सूर्य इस रेखा पर आता है तो उन सब स्थानों में एक ही समय मध्याह्न [दोपहर] होता है, जहाँ-जहाँ से वह रेखा जाती है, उसके पैर के नीचे वाले देशों में उस समय अर्द्धरात्रि होती है। इसी कारण इस रेखा को मध्याह्न रेखा भी कहते हैं।

प्रधान मध्याह्न रेखा Prime meridian

जहाँ से आदि स्थान मानकर पूर्व-पश्चिम अन्तर नापा जाता है। पहिले उज्जैन से—अर्थात् जो रेखा उज्जैन पर से होते हुए उत्तर दक्षिण गई है, उससे—देशान्तर नापा जाता था। परन्तु अब इंग्लैण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान को प्रधान मध्याह्न रेखा मान कर देशान्तर [ग्रीनविच से ही] नापा जाता है। और आज कल के सब नकशों में देशान्तर इसी के अनुसार बताया जाता है।

परन्तु ज्योतिष शास्त्र में पचाग बनाने आदि के लिये अब भी उज्जैन को प्रधान रेखा मान कर उज्जैन से देशान्तर निकालते हैं।

प्राचीन मध्याह्न रेखा इन देशों पर से जाती है —

लका देवकाँची, स्वेत पर्वत, पर्जली, वत्सगुल्म, अवन्ती, गर्गराट, कुरुक्षेत्र, रोहितक और मेरु। इन स्थानों का नाम ज्योतिष ग्रन्थों में आया है। इनमें से कुछ स्थानों के नाम प्राचीन होने से नहीं समझ पड़ते परन्तु अवन्ती [उज्जैन], कुरुक्षेत्र, लका आदि के नाम सबको प्रकट है। इस कारण भारत वर्ष में उज्जैन पर से ही देशान्तर नापा जाता है।

चित्र सख्या ५४ में गोलाकार पृथ्वी बताई है। इसके उत्तर में उत्तर ध्रुव और दक्षिण में दक्षिण ध्रुव हैं और [अ ब] कल्पित रेखा धुरी हैं। पृथ्वी के बीच से जो [भू म] रेखा दोनों ध्रुवों के समानान्तर पर पूर्व-पश्चिम गई है वही भूमध्य रेखा है।

इस रेखा के उत्तर और दक्षिण को जो आड़ी रेखाएँ लकीर द्वारा बताई गई हैं ये अक्षांश हैं। ये रेखाएँ पूर्व-पश्चिम खींची गई हैं। ये आड़ी रेखाएँ उत्तर-दक्षिण नाप के लिये मानो नाप सूचक हृदयदी हैं।

भूमध्य रेखा पर अक्षांश ० है। यहाँ से उत्तर ध्रुव तक १ से ९० अंश तक अक्षांश बने हैं। इसी प्रकार दक्षिण ध्रुव की ओर भी १ से ९० अंश तक अक्षांश दिये हैं क्योंकि एक वृत्त के चौथाई भाग में ९० अंश होते हैं। भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण में कोई स्थान जितने अंश दूरी पर होगा, वही अंश उस स्थान का अक्षांश है। वह स्थान उत्तर में होगा तो उत्तर अक्षांश कहलायेगा, दक्षिण में होगा तो दक्षिण अक्षांश कहलायेगा। इन अक्षांशों का नाप चित्र सख्या ५४ में गोला के किनारे-किनारे बताया है।

देशान्तर—जो रेखाएँ उत्तर ध्रुव से होकर भूमध्य रेखा को काटती हुई दक्षिण ध्रुव में जाकर मिली हैं ये देशान्तर रेखाएँ हैं, जो विन्दुओं द्वारा चित्र में बताई गई हैं। ये रेखाएँ भी कहलाती हैं। इनका नाप पूर्व-पश्चिम होता है। उत्तर-दक्षिण रेखाएँ तो केवल नाप बताने वाली हृदयदी रेखाएँ हैं।

कोई स्थान ग्रीनविच या उज्जैन [किसी प्रधान मध्याह्न रेखा के स्थान से] चाहे वह वहाँ से पूर्व या पश्चिम में हो उस स्थान से कितने अंश की दूरी पर है, बताया जाता है। यदि पूर्व में अपना देश है तो पूर्व देशान्तर होगा, पश्चिम में है तो पश्चिम देशान्तर होगा।

मान लो कि [क] स्थान की स्थिति जाननी है। यह स्थान भूमध्य रेखा से ३० अंश उत्तर में है। देखे उस लकीर के छोर पर ३० अंश लिखा है, तो उस स्थान का अक्षांश ३० अंश उत्तर हुआ। अब उत्तर से दक्षिण जाने वाली रेखा का नाप देखें जो (क) स्थान पर से जाती है। यह देशान्तर रेखा विन्दुओं से बताई गई है। नीचे १४०° लिखा है यह नाप पश्चिम से पूर्व का है। यदि ० स्थान पर प्रधान मध्याह्न रेखा का देश है तो वहाँ ने (क) का देशान्तर १४०° पूर्व हुआ। इस प्रकार (क) का अक्षांश ३०° उत्तर और देशान्तर १४०° पूर्व हुआ।

दूसरा उदाहरण—मान लो [ख] स्थान का अक्षांश देशान्तर जानना है। आडी अक्षांश की रेखाएँ १०° और २०° के बीच में [ख] दोनों के बीच १० का अन्तर है मान लो १०° के आगे और ५° आगे [ख] है तो यह भूमध्य रेखा से $10^\circ + 5^\circ = 15^\circ$ दूरी पर है। इससे इसका अक्षांश १५° दक्षिण हुआ। अब देशान्तर जानना है। मान लो मध्याह्न रेखा का स्थान ८१° पर है जहाँ [ग] है। ३०° और ४०° देशान्तर रेखा के बीच [ख] स्थान है। मान लो ३०° के आगे ४° और चलकर यह स्थान है अर्थात् ३४° पर [ख] स्थान है, तो यह स्थान मध्याह्न रेखा से पश्चिम में हुआ। अब दोनों का अन्तर निकाला [मध्याह्न रेखा ८१°-अपना स्थान ३४°] = ४७° देशान्तर हुआ। इससे [ख] का देशान्तर ४७° पश्चिम हुआ। क्योंकि [ग] से ४७° पश्चिम में है।

(१) किसी स्थान के अक्षांश जानने की युक्ति

एक पतली सुतली लेकर उसका एक छोर सम धरातल [भूमि] में लगाकर रखें और दूसरा छोर ध्रुव तारा की सीध मिलाकर किसी ऊँची चीज पर [या किसी बाँस को गाड़कर या किसी वृक्षादि से] इस प्रकार बाँध दें कि सुतली का ऊपरी छोर ठीक ध्रुव तारा की सीध में रहे, तो उस सुतली से जमीन के धरातल पर एक कोण बनेगा। उस कोण को नाप लें, जितने अंशादि वह कोण नाप में होगा वही वहाँ का अक्षांश होगा। यहाँ पर 23° का कोण बना है इसमें अक्षांश 23° हुआ। देखे चित्र सख्या ५५।



चित्र सख्या ५५—अक्षांश और ध्रुव की ऊँचाई का नाप

भारत इसका यह है कि उस स्थान पर ध्रुव तारा की जो ऊँचाई है उसी ऊँचाई का कोणात्मक अंश वहाँ का अक्षांश होता है। उत्तरी गोलार्द्ध के किसी भी स्थान का अक्षांश ध्रुव तारा की ऊँचाई से ज्ञात हो सकता है। जैसे लाहौर में ध्रुव तारा की ऊँचाई $31^\circ-30'$ है तो वहाँ अक्षांश भी $31^\circ-30'$ होगा। नरसिंहपुर में ध्रुव की ऊँचाई का कोण $22^\circ-46'$ है तो यहाँ का अक्षांश 22° अंश $46'$ हुआ।

उत्तरी गोलार्द्ध North Hemis Phere

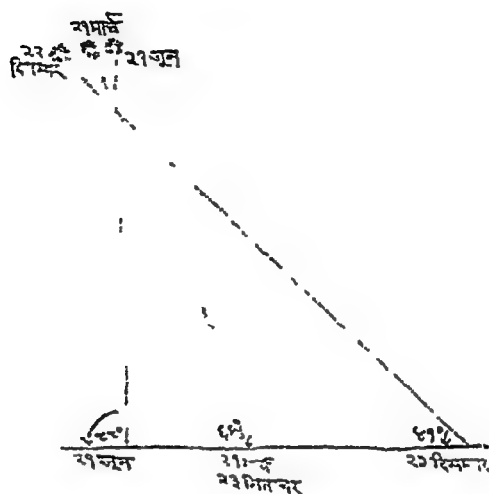
भूमध्य रेखा से पृथ्वी के २ भाग हो जाते हैं। एक भूमध्य रेखा से उत्तर का आधा भाग, दूसरा दक्षिण का आधा भाग। भूमध्य रेखा से जो उत्तर का भाग है वही उत्तरी गोलार्द्ध है। इसके दक्षिण का भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है।

ध्रुव तारा उत्तर में है इसलिये वह केवल उत्तरी गोलार्द्ध वालों को दिखता है, यह दक्षिणी गोलार्द्ध वालों को नहीं दिखता।

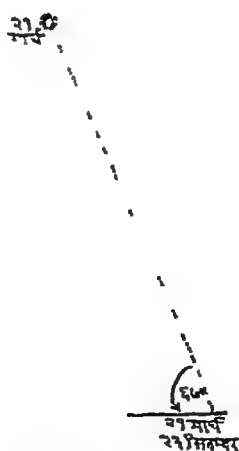
(२) अक्षांश जानने की दूसरी रीति।

२१ मार्च या २३ सितम्बर को [जब दिन-रात बराबर रहता है] किसी स्थान के मध्याह्न कालीन [दोपहर के] सूर्य को जो ऊँचाई है वह ऊँचाई 90° अंश से घटा दें, घटाने से जो शेष रहे, वह उस स्थान का अक्षांश होगा।

जिस प्रकार ध्रुव तारा की ऊँचाई निकाली गई थी उसी प्रकार सूर्य की ऊँचाई भी निकाली जाती है। देखें चित्र सख्या ५६ और ५७



चित्र सख्या ५६—डलाहाबाद में मध्याह्न के समय सूर्य की ऊँचाई



चित्र सख्या ५७—नरसिंहपुर में मध्याह्न के समय सूर्य की ऊँचाई

जैसे यहाँ डलाहाबाद की भिन्न-भिन्न समय की सूर्य की ऊँचाई नापी गई है, २१ मार्च या २३ सितम्बर को मध्याह्न समय की सूर्य की ऊँचाई $64\frac{1}{2}^{\circ}$ है तो $[90 - 64\frac{1}{2}] = 25\frac{1}{2}$ अक्षांश हुआ।

नरसिंहपुर मे ऊँचाई [उसी समय की] ६७ अश है तो [१०-६७]=२३ अश वहाँ का अक्षांश हुआ ।

[३] स्कूल के नकशो मे प्रायः प्रत्येक स्थान का अक्षांश मिल सकता है । नक्शे में अपना स्थान खोजकर अक्षांश जान लें । यदि अपना स्थान न मिले तो समीप के किसी बड़े स्थान को खोज कर उसमे अक्षांश जान लें ।

किसी स्थानके अक्षांश व देशान्तर से देशके अन्तरका नाप मीलमे करना ।

A mile of Latitude=Geographical mile=Aknot=2028 yards.
A knot=one minute of Latitude=1 15 ordinary mile

अक्षांश का १ मील=भौगोलिक मील=१ नाट=२०२८ गज १ कला=११५ माघारण मील ।

भूमध्य रेखा पर १ अश अक्षांश का=३६० भाग पृथ्वी की परिधि का । भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की परिधि २४८४० मील, लगभग २५००० मील है, इस हिसाब से १ अश मे ६९ मील पडा । किसी दो स्थानो की ध्रुव की ऊँचाई [अक्षांश] से दोनो स्थानो का अन्तर मील मे निकालने के लिये दोनो स्थानो के अक्षांश का अन्तर निकालें फिर अन्तर के मील बनाने को ६९ मे गुणा कर दे । जैसे नरसिंहपुर का अक्षांश २३ अश है और पूना का १९ अश है तो दोनो का अन्तर [२३ अश-१९ अश]=४ अश हुआ । $४ \times ६९ = २७६$ मील दोनो देशो का अन्तर हुआ । इसी प्रकार किसी भी स्थान का अन्तर नापा जा सकता है ।

देशान्तर का नाप

देशान्तर रेखाओ के अश मे, पृथ्वी के भिन्न-भिन्न भागो मे भिन्न-भिन्न नाप होता है । इसका कारण यह है कि भूमध्य रेखा पर तो पृथ्वी की परिधि २४८४० मील है । पृथ्वी गोल होने के कारण उत्तर या दक्षिण मे जाने पर परिधि घटती जाती है । इस कारण प्रत्येक १०-१० अश पर नाप लगभग कितने मील होते हैं, नीचे दिया है—

भूमध्य रेखा पर परिधि ३६०००=१ अश मे ६९ मील लगभग हुआ । भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश होता है । यहाँ से उत्तर या दक्षिण १०-१० अक्षांश आगे बढ़ने पर प्रति अक्षांश मे इस प्रकार मील होते हैं —

अक्षांश	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
मील	६९	६८	६५	६०	५३	४४	३४॥	२३	११॥	०

अन्त मे ९० अश पर अर्थात् ध्रुव स्थान मे अन्तर शून्य हो जाता है ।

इन्ही अक्षांशो पर मे जिस अक्षांश के देशान्तर का अन्तर मील मे निकालना हो, ऊपर बनाये चक्र के अनुसार निकाल सकते हैं ।

अध्याय १०

आकाशीय कल्पित रेखाओं का स्फटीकरण

जिम प्रकार अक्षांश और देशान्तर में पृथ्वी के किसी स्थान की ठीक स्थिति प्रकट की जाती है उसी प्रकार आकाशीय तारागण आदि की स्थिति ठीक प्रकार से प्रकट करने के लिये आकाशीय अधांश और विषुववृत्त या रेखाएं भी होते हैं। आगे इन्हीं को समझाने हैं। आकाशीय अक्षांश को ग्रह और रेखांश को भोग या भोगांश कहते हैं।

आकाशीय विषुव वृत्त Celestial equator

जिम प्रकार पृथ्वी के बीचो-बीच पूर्व-पश्चिम विषुववृत्त [भूमध्यरेखा] गई है उसी प्रकार आकाशीय विषुववृत्त भी है।

पृथ्वी के विषुव रेखा के मीथ में प्रत्येक बिन्दु में यदि मीथे आकाश तक रेखा घटाई जावे तो आकाश में भी उसी की मीथ में एक कल्पित रेखा बन जायगी। इसी आकाशीय कल्पित रेखा को विषुववृत्त या नाडीवृत्त भी कहते हैं। इसे निरक्ष भी कहते हैं अर्थात् यहाँ पर अधांश शून्य रहता है।

[विषुववृत्त [नाडीवृत्त] आकाश के २ समान विभाग करता है। इसका १ भाग उत्तर में और दूसरा भाग दक्षिण में हो जाता है। उत्तर में जो है वह उत्तर गोल और दक्षिण का दक्षिण गोल कहलाता है। ध्यान रहे कि सूर्य इस नाडीवृत्त पर में नहीं घूमता, वह क्रांतिवृत्त पर में घूमते दिखता है।

क्रांतिवृत्त Ecliptic

आकाश में जिम मार्ग में सूर्य घूमते हुए दिखता है वही क्रांतिवृत्त है। वास्तव में यही पृथ्वी की कक्षा Orbit है जिम पर से होकर पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। यह मार्ग अंडाकार है। देखें चित्र नमूना ७।

क्रांति प्रदेश Zodiac

क्रांतिवृत्त के दोनों ओर १° - १° का एक कल्पित चीड़ा पट्टा है जिसके भीतर सब ही ग्रह घूमते हैं। इस प्रकार १° के चीड़े पट्टे को क्रांतिप्रदेश कहते हैं। इसके भीतर १२ राशियाँ और २७ नक्षत्र हैं।

क्रांतिवृत्त का धरातल *Plane of ecliptic*

क्रांतिवृत्त के जिस धरातल में ग्रह परिक्रमा करते हैं उसे क्रांतिवृत्त का धरातल कहते हैं ।

आकाशीय ध्रुव *Celestial pole*

जिस प्रकार पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण ध्रुव हैं उसी प्रकार ठीक इन्हीं के सीध में आकाश में आकाशीय उत्तर या दक्षिण ध्रुव हैं । ये भी कल्पित स्थान हैं ।

यामोत्तरवृत्त *meridian*

आकाशीय दोनो ध्रुवों से जो रेखाएँ आकाशीय नाडीवृत्त पर लम्ब होकर जाती हैं वे कल्पित रेखाएँ यामोत्तरवृत्त कहलाती हैं । यह रेखा उसी प्रकार की है जैसे पृथ्वी की देशान्तर रेखा है । यामोत्तर=याम+उत्तर । याम=दक्षिण ।=उत्तर से दक्षिण जाने वाली कल्पित रेखाएँ जो नाडीवृत्त को काटती हुई जाती हैं वे ही रेखाएँ यामोत्तरवृत्त हैं ।

इसी यामोत्तरवृत्त से पूर्व या पश्चिम का जो अंतर है वह भोग का भोगांश या क्षेप *Celestial longitude* कहलाता है । आकाश में एक मुख्य यामोत्तरवृत्त से यह पूर्व या पश्चिम को नापा जाता है और यह अन्तर क्रांतिवृत्त पर नापा जाता है । इसका मुख्य यामोत्तरवृत्त वसंत सम्पात है जिसके विषय में आगे बताया गया है ।

ऊपर जो नाडीवृत्त का वर्णन किया है उसके विषय में ध्यान रहे कि इस नाडीवृत्त का आकाश में कोई स्थिर और पक्का वृत्त नहीं है । जैसे पृथ्वी में भूमध्य रेखा की स्थिति निश्चित है ठीक वैसी स्थिति इस आकाशीय नाडीवृत्त की नहीं है । क्योंकि बहुत वर्षों के उपरान्त उसके स्थान में कुछ परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण भिन्न-भिन्न काल में वह आकाश का भिन्नता पूर्वक भाग करता है, क्योंकि सारा विषय चल रहा है । इसी कारण नाडीवृत्त से आकाशीय अक्षांश नहीं नापा जाता ।

क्रांति *Declination*

आकाशीय नाडीवृत्त से क्रांतिवृत्त की ओर ग्रहों का अन्तर इस नाडीवृत्त से नापा जाता है जिसमें प्रकट हो कि कोई तारा नाडीवृत्त से उत्तर या दक्षिण को कितने अन्तर पर है । जितने अंश की दूरी पर वह ग्रह या तारा उपरोक्त नाप से निकलेगा वही नाप उस ग्रह या तारे की उत्तर या दक्षिण क्रांति होगी ।

अक्षांश=क्षर=*Celestial latitude*

आकाश में अक्षांश क्रांतिवृत्त से नापे जाते हैं क्योंकि क्रांतिवृत्त की स्थिति स्थिर और निश्चित है ।

क्रातिवृत्त के समानान्तर उत्तर या दक्षिण दूरी पर जितने अंश दूरी पर वह ग्रह होगा वही उसका अक्षांश होगा। आकाशीय अक्षांश को शर भी कहते हैं। इसी को विक्षेप भी कहते हैं।

क्रातिवृत्त से उत्तर या दक्षिण को ग्रहो या तारा के अन्तर को शर या अक्षांश कहते हैं परन्तु नाडीवृत्त से ग्रह आदि की उत्तर या दक्षिण की दूरी को क्रांति कहते हैं।

सूर्य सदा क्रातिवृत्त पर ही चलता है। इससे उसका कोई शर नहीं होता परन्तु नाडीवृत्त से उसका अन्तर घटता-बढ़ता रहता है, इस कारण सूर्य की क्रांति घटती-बढ़ती रहती है। उसी प्रकार चंद्र आदि ग्रह जब क्रातिवृत्त पर रहते हैं तब उसका कोई शर नहीं रहता।

क्रांति से प्रगट होता है कि वह ग्रह नाडीवृत्त से कितने कोणात्मक अन्तर पर उत्तर या दक्षिण गोल में है अर्थात् नाडीवृत्त से उत्तर या दक्षिण किसी तारा या ग्रह का अन्तर यामोत्तरवृत्त पर नापने में जो मिले वही क्रांति कहलाती है।

ये सब बातें आगे चित्र सख्या ५८, ५९ और ६० देखने में समझ में आ जायेंगी।

सम्पात विन्दु Equinox

आकाशीय विपुवृत्त और क्रातिवृत्त एक दूसरे को $[23^{\circ}-24^{\circ}$ का कोण बनाते हुए] दो स्थानों में काटते हैं। उन दो विन्दुओं को सम्पात विन्दु कहते हैं। इसे ही अयन विन्दु या विपुव विन्दु भी कहते हैं।

मेष का आगम विन्दु जिसे उत्तर सम्पात या वसंत सम्पात Vernal equinox कहते हैं, इसमें आकाशीय रेखाश का पूर्व पश्चिम नाप होता है और यह पृथ्वी की गति की दिशा में, अर्थात् पश्चिम में पूर्व की ओर नापा जाता है।

यहाँ पर यह बात ध्यान में रखने की है कि ध्रुव भी दो प्रकार के हैं। नाडीवृत्त के ध्रुव को ध्रुव Pole of the celestial equator कहते हैं। और ध्रुव से जो यामोत्तरवृत्त नाडीवृत्त पर समकोण बनाते हुए खींचे जावें उन्हें ध्रुव प्रोतवृत्त meridian of the celestial equator कहते हैं। और क्रातिवृत्त के ध्रुव को कदम्ब pole of the ecliptic कहते हैं। कदम्ब से जो वृत्त समकोण बनाते हुए क्रातिवृत्त पर खींचे जावें वे कदम्ब प्रोतवृत्त कहलाते हैं।

किसी ग्रह में विपुवृत्त [नाडीवृत्त] पर जो अन्तर ध्रुव प्रोतवृत्त पर से नापा जावे उसे क्रांति कहते हैं। ग्रह में ध्रुव प्रोतवृत्त विपुवृत्त तक खींचा जावे तो ध्रुव प्रोतवृत्त के नापने में जो अन्तर ग्रह और विपुवृत्त का होगा वही अन्तर उस ग्रह की क्रांति होगी।

किसी ग्रह से क्रातिवृत्त का अन्तर कदम्ब प्रोतवृत्त पर होता है। वही अन्तर उस ग्रह का शर या विक्षेप होता है। कदम्ब से एक कदम प्रोतवृत्त उस ग्रह से होते हुए इस प्रकार खींचें जो क्रातिवृत्त पर समकोण बनाती हुई मिले तो उस ग्रह का जो अन्तर क्रातिवृत्त

ना डो=नाडीवृत्त

ध्रु व=उत्तर और दक्षिणध्रुव

क्रा ति=क्रातिवृत्त

क=कदम्ब=क्रातिवृत्त का उत्तर ध्रुव

द= " " दक्षिण "

स=उत्तर सम्पात बिन्दु जहाँ नाडीवृत्त

और क्रातिवृत्त एक दूसरे को काटते हैं ।

ग्र=एक ग्रह ।

क ग्र भो =कदम्ब में एक कदम्ब प्रोतवृत्त ग्रह पर में होते हुए इस प्रकार खींचा गया है जो क्रातिवृत्त पर भो स्थान पर समकोण बनाते हुए मिला है ।

ग्र भो =उस ग्रह का उत्तर घर हुआ ।

स भो =उस ग्रह का भोग हुआ । ग्रह न (सम्पात बिन्दु) में भो स्थान तक जो अंतर है वही भोग हुआ । यह भोग उत्तर सम्पात बिन्दु में आरंभ होकर पश्चिम से पूर्व की नापा जाता है, जैसा दूसरे उदाहरण से समझ पड़ेगा ।

दूसरा उदाहरण (चित्र सख्या ५८)

ह दूसरा ग्रह है

द ह प =दक्षिण कदम्ब से एक कदम्बवृत्त ह ग्रह पर से होते हुए इस प्रकार खींचा गया है जो क्रातिवृत्त पर समकोण बनाते हुए प स्थान पर मिला है ।

ह प =यह ग्रह का घर हुआ और यह दक्षिण में होने से दक्षिण घर हुआ ।

स भो. ति क्रा प यह ग्रह का भोग हुआ अर्थात् सम्पात बिन्दु से पूर्व की ओर जाकर, फिर घेरते हुए क्रा में प बिन्दु आने तक जो दूरी होगी, उसी का नाप भोगाग होगा ।

या प स अंतर को 360° में घटा दें तो भी ग्रह का भोग निकल आवेगा ।

ग्रह की क्राति और विपुलाश नाडीवृत्त में नापे जाते हैं । उसका उदाहरण देकर समझाते हैं देखें चित्र सख्या ५९ ।

ना डी नाडीवृत्त

ध्रु =नाडीवृत्त का उत्तर ध्रुव

व = " " दक्षिण "

क्रा ति=क्रातिवृत्त

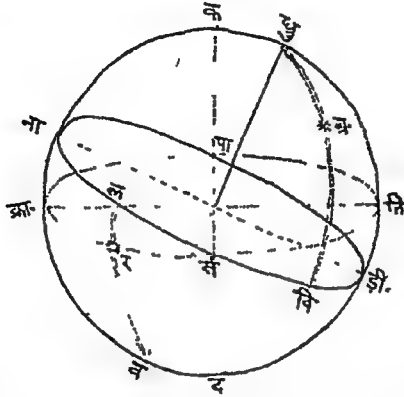
क द =कदम्ब उत्तर-दक्षिण

सं पा =दो सम्पात बिन्दु

सं=उत्तर सम्पात

ग्र=एक ग्रह

ध्रु ग्र वि=ध्रुव से एक ध्रुव प्रोतवृत्त ग्र (ग्रह) पर से होते हुए इस प्रकार खींचा गया है जो नाडीवृत्त पर समकोण बनाते हुए वि स्थान पर मिला है।



चित्र सख्या ५९-भोग, शर, नाडीवृत्त, क्रातिवृत्त, आदि

ग्र. वि =ग्रह की उत्तर क्राति

ध्रु ग्र=ग्रह का ध्रुवान्तर=(९०°-ग्र वि)

स वि=ग्रह का विपुवाश

दूसरा उदाहरण देखें चित्र सख्या ५९।

र=रवि यह सदा क्रातिवृत्त पर रहता है।

व. र ल=एक ध्रुव प्रोतवृत्त (यामोत्तरवृत्त) जो व दक्षिण ध्रुव से र (रवि) पर से होते हुए नाडी वृत्तपर ल स्थान पर समकोण बनाते हुए मिला है।

व र=ध्रुवांतर हुआ।

र ल=सूर्य की दक्षिण क्राति हुई

स. वि डी पा ना ल=यह सूर्य का विपुवाश हुआ।

यह विपुवाश स=उत्तर सम्पात से पूर्व की ओर नापा जाता है। इस कारण स बिन्दु से होकर डी पर में पूरा चक्कर घूमते हुए ना पर से होते हुए ल तक आने में जितनी दूरी होगी वही विपुवाश होगा।

या=(३६०—ल स की दूरी=सूर्य का विपुवाश)

आकाश में नक्षत्र आदि या ग्रह क्यो तिरछे घूमते हुए दृष्टिगोचर होते हैं ? चित्र सख्या ६० के देखने से समझ में आ जायेगा।

अध्याय ११

ग्रहों की गति Velocity or motion & Planets

प्रत्येक ग्रह की पृथक् २ गति (चाल) होती है । सब ग्रहों के साथ राहु केतु भी आकाशमार्गीय क्रान्ति प्रदेश के पथ पर घूमते हैं ।

गति दो प्रकार की होती है (१) परिभ्रमण Rotation और (२) परिक्रमण Revolution ।

परिभ्रमण—जब ग्रह अपनी धुरी पर अपने ही आस-पास पश्चिम से पूर्व को घूमता है, उस गति को परिभ्रमण कहते हैं ।

परिक्रमण—ग्रह जब अपने मार्ग से चलते हुए सूर्य के आस-पास घूमता है, जैसे परिक्रमा दे रहा हो, तो उस गति को परिक्रमण कहते हैं ।

पृथ्वी जब अपनी धुरी पर दिन-रात में अर्थात् २४ घण्टे में अपने ही चहुँ ओर घूम लेती है तो उसे परिभ्रमण कहते हैं । पृथ्वी जब परिभ्रमण करते हुए अपनी कक्षा पर सूर्य की परिक्रमा करने को आगे बढ़ती है तो उसे परिक्रमण कहते हैं । जैसे भौरा अपने आस-पास चक्कर लगाते हुए भी आगे बढ़ता है ।

परिक्रमण दो प्रकार का है —(१) मार्गी गति Acceleration or direct (२) वक्री गति Retrograde

(१) मार्गी—जब ग्रह अपने मार्ग में सीधा बढ़ते चला जाता है तो उसे मार्गी ग्रह कहते हैं । यह गति पश्चिम से पूर्व को होती है जैसे कि सूर्य चलता है । जैसे कोई ग्रह मेष राशि में है तो उसके उपरान्त वृष फिर मिथुन आदि की ओर बढ़ता जायेगा । यही ग्रहों की सीधी गति है ।

(२) वक्री—जब ग्रह सीधी चाल जाते-जाते एकदम वापस लौट पड़ता है तो उसे वक्री ग्रह कहते हैं । यह गति पूर्व से पश्चिम को सूर्य की चाल के विरुद्ध होती है । जैसे कोई ग्रह मिथुन राशि पर है उसके उपरान्त कर्क की ओर जाना था परन्तु आगे न बढ़कर फिर वृष की ओर लौट पड़े तो उस ग्रह का वक्री होना कहते हैं ।

ग्रह जब वक्री होकर फिर सीधा-सीधा रास्ता चलने लगता है तो उसे फिर मार्गी कहने लगते हैं ।

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की पृथक्-पृथक् गति होती है । कोई शीघ्र चलता है कोई धीरे-धीरे चलता है । इस प्रकार क्रान्ति प्रदेश में कोई ग्रह कभी आगे रहते हैं, कभी पीछे रहते हैं, कभी-कभी चलते-चलते मिल जाते हैं ।

प्रत्येक ग्रहों की गति

(१) चन्द्र—सबसे शीघ्र चलने वाला ग्रह है। पृथ्वी के आस-पास प्राय ३० दिन में घूमकर अपनी परिक्रमा पूरी करता है।

(२) शनि—सबसे धीमी चाल चलने वाला ग्रह है। यह ३० वर्ष में अपनी परिक्रमा पूरी करता है।

(३) सूर्य—१ वर्ष (३६५ $\frac{१}{४}$ दिन) में परिक्रमा पूरी कर लेता है। प्रतिदिन लगभग १° चलता है। इस प्रकार स्थूल मान से १ राशि में १ मास रहता है।

इस प्रकार १ राशि में चन्द्र २। दिन, मंगल १॥ मास, बुध १ मास, गुरु १३ मास, शुक १ मास, शनि ३० मास, राहु १८ मास, केतु १८ मास, हर्षल १ राशि में ७ वर्ष और नेपच्यून १३ वर्ष रहता है।

इस प्रकार कम ज्यादा समय परिक्रमा में लगने का कारण यह है कि जो ग्रह पास है उनकी परिक्रमा में अल्प समय लगता है और जो ग्रह दूर है उनकी परिक्रमा में दूरी के अनुसार अधिक समय लगता है। चित्र सख्या १ से परिक्रमा की दूरी समझ पड़ेगी। ग्रहों की प्रतिदिन की मध्यम गति (औसत गति) भी इस प्रकार है —

दैनिक मध्यम गति				दैनिक मध्यम गति			
ग्रह	अंश	कला	विकला	ग्रह	अंश	कला	विकला
सूर्य	०	५९	८	मंगल	०	३१	२६
चन्द्र	१३	१०	३४	गुरु	०	४	४९
बुध	१	५	३२	शनि	०	२	०
शुक	१	३६	७	राहु, केतु	०	३	११

राहु केतु को छोड़कर शेष ग्रहों की गति सदा बदलती रहती है। राहु केतु की गति कभी नहीं बदलती, सदा इनकी एक सरीखी गति रहती है। राहु केतु सदा वक्री रहते हैं अर्थात् सदा एक सरीखी चाल से उल्टे चलते रहते हैं।

सूर्य और चन्द्र कभी वक्री नहीं होते शेष ग्रह बुध, गुरु, मंगल, गुरु, शनि, हर्षल और नेपच्यून सदा वक्री और मार्गी होते रहते हैं और उनकी दैनिक गतियों में भी परिवर्तन होता रहता है।

उपरोक्त ग्रह अपनी दृष्टानुसार वक्री मार्गी नहीं होते परन्तु एक प्रबल शक्ति सूर्य के कारण ही गतियों में यह सब परिवर्तन होता है, क्योंकि सब ग्रह सूर्य की आकर्षण शक्ति के प्रभाव से खिंचे हुए हैं।

सूर्य के आस-पास जो परिक्रमा का मार्ग है, वह एक सरीखा गोल नहीं अडाकारे है, जिसके बीच में सूर्य है। देखें चित्र सख्या ७। चित्र से प्रकट होगा कि इस मार्ग का

कुछ भाग सूर्य के समीप पड जाता है कुछ दूर हो जाता है । कोई ग्रह जब चलते-चलते सूर्य के अधिक पास पहुँच जाता है तो उसे सूर्य के समीप Perihelion कहते हैं (यह घटना पृथ्वी के सम्बन्ध में लगभग १ जनवरी को होती है) । जब सूर्य से ग्रह अधिक दूरी पर चला जाता है तब उसे सूर्य से अधिक दूर Aphelion कहते हैं । पृथ्वी १ जुलाई के लगभग अधिक दूरी में होती है ।

ग्रह जब सूर्य के समीप हो जाता है तो सूर्य की आकर्षण शक्ति बढ़ती है जिसके कारण सूर्य के खिंचाव से ग्रह की गति में अधिक तेजी आ जाती है और ज्यो-ज्यो वह ग्रह सूर्य से दूर होता जाता है उसकी गति धीमी होती जायेगी क्योंकि सूर्य से दूरी होने के कारण सूर्य का खिंचाव (आकर्षण शक्ति) कम होने लगता है और उस समय ग्रह वक्री हो जाता है अर्थात् फिर लौट पडता है । परन्तु जब दूर से लौट कर ग्रह सूर्य की ओर बढ़ता है तो फिर ग्रह में भी सूर्य के प्रभाव में बल आ जाता है और सम्हल कर फिर आगे बढ़ता है तब मार्गी ग्रह हो जाता है । अब समझ लेंगे कि इसी अड्डाकार वृत्त के कारण उन पर सूर्य की आकर्षण शक्ति का घटाव-बढ़ाव होता है जिससे ग्रह वक्री-मार्गी होते हैं ।

कुचस्तम्भ Stationary

जब ग्रह वक्र होकर उसकी गति मन्द हो जाती है तब उस ग्रह का स्तम्भ होना कहते हैं । उस समय ग्रह एक राशि पर बहुत दिनों तक रहता है, इसे ही कुचस्तम्भ कहते हैं । परन्तु मंगल ग्रह के सम्बन्ध में ही कुचस्तम्भ शब्द का प्रयोग होता है । शेष ग्रहों की ऐसी स्थिति में स्तम्भ ही कहेंगे ।

साधारण प्रकार से कौन ग्रह कितने दिनों में वक्री मार्गी होता है, यह नीचे चक्र में बताया है ।

उदय अस्त वक्री मार्गी चक्र

ग्रह	अस्त होने के	उदय के उपरांत	वक्री के उपरांत	मार्गी के उपरांत
	इतने मास उपरांत	इतने मास में	इतने मास में	इतने मास में
	उदय होगा	वक्री होगा	मार्गी होगा	अस्त होगा
मंगल	४ मास	१० मास	२ मास	१० मास
गुरु	१ मास	४ १/४ मास	४ मास	४ १/४ मास
शनि	१ १/४ मास	३ मास	४ मास	३ १/४ मास

ग्रह पूर्व में अस्त होने के उपरांत पश्चिम में इतने दिनों में उदय होगा	पश्चिम में उदय उपरांत इतने दिनों में उदय होगा	वक्री के उदय उपरांत इतने दिनों में उदय होगा	पश्चिम में उदय उपरांत इतने दिनों में उदय होगा	पूर्व में उदय मार्गी होने के उपरांत इतने दिनों में उदय होगा	अस्त के बाद के इतने दिनों में उदय होगा
बुध ३२ दिन	३२ दिन	४ दिन	१६ दिन	४ दिन	३२ दिन
शुक्र ७५ दिन	२४० दिन	२३ दिन	९ दिन	२३ दिन	२४० दिन

राहु केतु सदा वक्री रहते हैं। सूर्य और चन्द्रमा कभी वक्री नहीं होते। शेष ग्रह वक्री मार्गी होते हैं।

उदय अस्त ज्ञान Heliacal rising and setting of planets

सूर्य के पास कोई ग्रह आ जाने से उस ग्रह को अस्त होना कहते हैं। यदि वह ग्रह सूर्य के आगे चला जावे तो उसे उदय होना कहते हैं।

सूर्य के पास ग्रह आ जाने में ग्रह नहीं दिखता इस कारण उसे अस्त कहते हैं। जब सूर्य के दूर चले जाने के कारण वह ग्रह दिखने लगता है तो उसे उदय होना कहते हैं।

सूर्य को छोड़कर शेष ग्रहों का उदय अस्त होता है। इसमें भी यह प्रमाण है कि सूर्य में विद्यमान अंग दूर हो जाने पर कोई ग्रह दिखने लगता है कोई नहीं दिखता।

सूर्य के कितने अन्तर पर ग्रह चले जाने पर दिखने लगता है अर्थात् उदय होता है, नीचे दिया है। सूर्य में इतने अंगों के भीतर ग्रह हो तो वह ग्रह अस्त ही समझा जायेगा। जैसे सूर्य से चन्द्र का अन्तर १२ अंग के भीतर रहने तक चन्द्र अस्त ही रहेगा (नहीं दिखेगा) परन्तु १२° हो जाने पर चन्द्र उदय होगा (दिखने लगेगा)। इसी प्रकार सब ग्रहों के विषय में समझना।

ग्रहों के कालांश

ग्रह	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य से अन्तर—कालांश (अंगों में)	१२	१७	१३	११	९	१५

इस अन्तर को कलाश भी कहते हैं।

अन्तोदय—२ प्रकार का है। एक तो प्रति दिन ग्रह उदय होते हैं और अस्त होते हैं। यहाँ जो बताया गया है वह इसमें भिन्न है अर्थात् सूर्य के पास जब ग्रह होता है तो अस्त होना कहा जाता है। जब सूर्य के पास ग्रह होता है तो उसे सूर्य सन्निध भी कहते हैं। उदय अस्त को और भी अच्छी तरह समझाते हैं।

उदय—सूर्य से अल्प गति वाले ग्रह (मंगल, गुरु, शनि) सूर्य से कालाश तुल्य अन्तर पर (कालाश अन्तर जो ऊपर बताया है) पूर्व दिशा में और थोड़ी रात्रि रहने

पर उदय होते हैं सूर्य से अधिक गति वाला ग्रह चंद्र है। यह सूर्य से, अपने कालाश से अधिक होने पर पश्चिम दिशा में सध्या को उदय होता है। बुध, शुक्र, के लिये विशेष बात यह है कि ये सूर्य के अधिक पास हैं। ये दोनों दिशाओं (पूर्व और पश्चिम) में उदय और अस्त होते हैं। क्योंकि ये दोनों ग्रह वक्र होकर फिर सूर्य के कालाश तुल्य अंतर में आ जाने से इनका अस्त और उदय होता है अर्थात् दोनों ग्रह सूर्य से अधिक गति वाले होने के कारण अपने कालाश अंतर होने पर सूर्य के आगे पश्चिम में सध्या को उदय होते हैं फिर वक्र होकर सूर्य के पास आकर पश्चिम में ही इनका अस्त होता है। फिर वक्र गति ही से सूर्य के पीछे होकर अपने कालाश अंतर पर पूर्ण दिशा में थोड़ी रात्रि रहने पर उदय होते हैं फिर मार्गी होकर पूर्व में ही अस्त होते हैं।

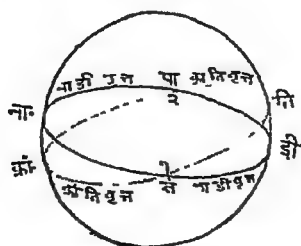
अस्त—सूर्य से अल्प गति वाले ग्रह (मंगल, गुरु, शनि) सूर्य से, अपने कालाश के भीतर होने से पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं और अधिक गति वाला ग्रह चंद्र अपने कालाश के भीतर सूर्य के समीप आ जाने पर पूर्व दिशा में अस्त होता है।

वक्री बुध शुक्र का कालाश 1° कम लेना अर्थात् बुध का कालाश 12° है तो वक्री बुध का 11° लेना। शुक्र का 9° है तो वक्री शुक्र का 8° लेना। वक्रोग्रह होने के कारण कालाश कम लिया जाता है।

अध्याय १२

सम्पात equinox

पहिले बता चुके हैं कि क्रांतिवृत्त और नाडीवृत्त दोनों पृथक्-पृथक् वृत्त हैं, जो एक दूसरे को $23^\circ 28'$ का तिरछा कोण बनाते हुए दो स्थानों में काटते हैं, जिससे दो पृथक्-पृथक् भाग हो जाते हैं। देखें चित्र सख्या ६१।



चित्र सख्या ६१—सम्पात बिन्दु

भाग (१) क्रांतिवृत्त का ऊपर का आधा भाग स० ति० प० और नाडीवृत्त का नीचे का आधा भाग स० डी० पा०।

भाग (२) क्रांतिवृत्त का नीचे का आधा भाग स० क्रा० पा० और नाडीवृत्त का ऊपर का आधा भाग स० ना० पा० ।

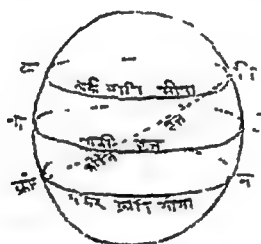
जहाँ एक दूसरे को काटते हैं वे दो बिन्दु स० और पा० सप्तात बिन्दु हैं ।

इनमें से १ स० को अयन मेष या सायन मेष या वसंत सम्पात Autumnal equinox कहते हैं । दूसरे को अयनतुला या सायनतुला या शरद सम्पात Aatumnal equinox कहते हैं ।

इस प्रकार सूर्य क्रांति वृत्त में घूमते हुए दो बार नाडीवृत्त को पार करता है, उस समय दिन रात बराबर होता है ।

क्रांतिवृत्त की वक्रता के ही कारण सूर्य ६ मास उत्तर और ६ मास दक्षिण को उदय होता है । इसी से सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन सज्ञा होती है ।

ज्यो ज्यो अयन बिन्दु के आगे बढ़ते हुए सूर्य जाता है त्यो त्यो दिन बढ़ता जाता है । सूर्य जब क्रांतिवृत्त के अंतिम छोर पर पहुँच जाता है तो वहाँ सूर्य की सबसे बड़ी क्रांति होती है और यह स्थान क्रांतिमीमा कहलाता है ।



चित्र संख्या ६२—क्रांतिवृत्त, नाडीवृत्त और क्रांतिसीमा

चित्र संख्या ६२ देखें । ऊपर बताया गया ति० और नीचे का क्रा० स्थान ही क्रांति सीमा है । ये स्थान नाडीवृत्त में 23° $26'$ की दूरी पर हैं ।

क्रांति सीमा Tropic

पृथ्वी के नकशे में ये दो छोटे छोटे वृत्त नाडीवृत्त के समानान्तर 23° $26'$ की दूरी पर खींचे गये हैं । उत्तर में कर्क की क्रांतिमीमा Tropic of cancer और दक्षिण में मकर की क्रांतिमीमा Tropic of capricorn कहलाती है । यही चित्र संख्या ६२ में समझाया गया है ।

सम्पात और अयन बिन्दुओं का स्पष्टीकरण

१ सायन मेष, उत्तर सम्पात, या वसंत सम्पात Vernal equinox—

सूर्य २१ मार्च को विषुववृत्त पर आता है, इसके उपरांत उत्तर गोलार्ध की ओर जाने

लगता है। इसे वसंत सम्पात कहते हैं। क्योंकि इसी समय वसंत ऋतु होती है और सायन-मेष संक्रमण होता है। इस समय सूर्य ठीक पूर्व को उदय होता है और दिन रात बराबर होती है। अर्थात् सूर्य प्रातः काल ठीक ६ बजे उदय होता है। नाडीवृत्त और क्रान्तिवृत्त एक दूसरे को काटते हैं उनका यह पहिला स्थान है। इस स्थान से ग्रहों का भोगाश और विपुवाश नापा जाता है।

२ सायन तुला—दक्षिण सम्पात या शरद सम्पात Autumnal equinox नाडीवृत्त और क्रान्तिवृत्त के एक दूसरे को काटने का यह दूसरा स्थान है। २१ सितम्बर के लगभग सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की क्रान्तिसीमा पर से लौट कर ६ मास में उत्तरी गोलार्द्ध की यात्रा समाप्त कर जिस सम्पात बिन्दु पर आता है उसे सायन तुला कहते हैं। इस समय सूर्य लौटकर विपुवृत्त पर आ जाता है और ठीक पूर्व में उगता है तथा दिन रात्रि बराबर होती है। इसके उपरांत सूर्य की दक्षिण गोल की यात्रा आरम्भ होती है। इसी से इसे दक्षिण सम्पात भी कहते हैं। और इसके बाद ही शरद ऋतु आरम्भ होती है। अर्थात् सूर्य उत्तर गोल में सायन मेष से मायन तुला तक रहता है और दक्षिण गोल में सायन तुला से सायन मेष तक।

३ ग्रीष्म क्रान्ति—दक्षिणायन बिन्दु Summer solstice

यह २१ जून के लगभग होता है जब सूर्य सायन मेष से चल कर उत्तर गोल यात्रा में वह इस क्रान्तिसीमा पर २१ जून के लगभग पहुँच जाता है, उस समय सूर्य की किरण कर्क रेखा पर समकोण बनाती है। इस समय सूर्य सबसे दूर रहता है और सूर्य के उदय अस्त का घेरा बहुत बड़ा होता है अर्थात् उस दिन, दिन मान सबसे बड़ा होता है। इसी को सायन कर्क संक्रमण कहते हैं। इसके उपरान्त सूर्य लौट कर २१ जून के लगभग उत्तर गोलार्द्ध की यात्रा समाप्त कर सायन तुला पर आता है। इस बिन्दु पर पहुँच कर सूर्य दक्षिण की ओर मुड़ता है और सूर्य दक्षिणायन हो जाता है इस कारण ग्रीष्म क्रान्ति को दक्षिणायन बिन्दु भी कहते हैं।

४ शरदक्रान्ति—उत्तरायण बिन्दु Winter solstice—यह २१ दिसम्बर को होता है, जब सूर्य विपुवरेखा से बहुत दूरी पर बहुत दक्षिण की ओर रहता है। यह क्रान्ति वृत्त की दक्षिण सीमा है। लगभग २२ दिसम्बर को जब सूर्य की किरणें मकर रेखा पर समकोण बनाती हैं उस समय सायन मकर संक्रान्ति होती है। इस समय सूर्य की दक्षिण क्रान्ति २३°-२८' होती है। उसी दिन सूर्य पूर्व बिन्दु के दक्षिण में प्रायः २५° पर उगता है। उस दिन से सूर्य उत्तर की ओर जाने लगता है। उस दिन, रात्रि (रात्रि मान) सबसे बड़ी होती है। इस बिन्दु पर पहुँच कर सूर्य उत्तर की ओर जाने लगता है तब उत्तरायण का आरम्भ होता है। इसी कारण इसे उत्तरायण बिन्दु कहते हैं।

अयनविन्दु आकाश में सदा एक ही जगह नहीं रहते, ये पश्चिम की ओर खिसकते रहते हैं। जिस नक्षत्र के पास आजकल उत्तरायण या दक्षिणायन होता है पुराने समय में उस स्थान में नहीं होता था। आजकल उत्तरायण का आरम्भ मूल के आधे भाग पर और दक्षिणायन का आरम्भ आर्द्रा के आरम्भ में होता है।

सूर्य की उत्तर-दक्षिण गति का स्पष्टीकरण

सूर्य जब २१ मार्च को उत्तर सम्पात पर आता है तो दिन रात बराबर होता है अर्थात् ६ वजे प्रातः काल ठीकपूर्व में उदय होता है और ठीक पश्चिम दिशा में अस्त होता है। इसके उपरान्त अवलोकन करेंगे तो प्रकट होगा कि सूर्य ठीक पूर्व विन्दु पर उदय नहीं हो रहा है। वह कुछ उत्तर की ओर बढ़ रहा है। सूर्य इस प्रकार ३ मास तक उत्तर की ओर बढ़ते ही जाता है और २१ जून को विषुव रेखा से सबसे अधिक दूरी पर चला जाता है। उस समय सबसे बड़ा दिन होगा। क्योंकि सूर्य इस समय सबसे दूर हो जाता है और पूर्व में बहुत दूर हट कर उत्तर को उदय होगा। पूर्व और उत्तर के बीच का जो अन्तर है उस अन्तर का लगभग ४ भाग सूर्य उत्तर को चला जाता है। यही क्रान्तिसीमा है। उस समय सूर्य पश्चिम में क्रान्तिसीमा पर ही डूबता दिखेगा।

इसके उपरान्त सूर्य विषुवरेखा को ओर जाने लगता है और २१ सितम्बर को फिर विषुववृत्त पर आ जाता है और उसी प्रकार उदय अस्त होगा जैसे २१ मार्च को होता है। उस समय दिन रात बराबर होती है। क्रान्ति सीमा में विषुववृत्त में सूर्य को आने में ३ मास लगते हैं। इस प्रकार ६ महीना में, जिसमें गर्मी की भी ऋतु सम्मिलित है, सूर्य अपनी पूरी यात्रा कर ठीक उसी जगह आ जाता है। सूर्य इस समय तक उत्तरी गोलार्द्ध में रहा और इसके उपरान्त दक्षिण गोलार्द्ध में आ जाता है।

सूर्य जब दक्षिण को जाने लगता है तो दिन छोटा होने लगता है। २१ दिसम्बर को जब सबसे छोटा दिन होता है, सूर्य दक्षिण क्रान्तिसीमा पर ३ मास की यात्रा कर पहुँच जाता है। दक्षिण में क्रान्तिसीमा में उदय अस्त होते दिखता है। उपरान्त ३ मास की ओर विषुववृत्त की ओर यात्रा कर २१ मार्च को विषुववृत्त पर फिर आ जाता है।

इस कारण जब सूर्य के उदय अस्त में अन्तर पड़ता है तो मध्याह्न (दोपहर) की ऊँचाई में भी अन्तर पड़ता है जिसके कारण दिन छोटे-बड़े होते हैं। जून के बीच सबसे अधिक ऊँचाई होती है इससे सबसे बड़ा दिन होता है। सूर्य के उदय काल पर दिन की लम्बाई छुटाई अवलम्बित है। सूर्य ज्यों ज्यों विषुव रेखा से उत्तर को जाता है दिन की लम्बाई बढ़ती जाती है।

पहिले सम्पात, अयन विन्दु, और सूर्य की उत्तर दक्षिण गति समझा चुके हैं इन्हीं के कारण भिन्न-भिन्न ऋतुएँ होती हैं।

सायन राशियाँ संक्रान्ति की तारीख एवं ऋतुएँ

उच्च नीच राशियाँ	राशि	सायन संक्रान्ति की तारीख	ऋतु	
उच्च	१ मेष	२१ मार्च	वसंत और ग्रीष्म की राशियाँ वर्षा और शरद की राशियाँ	ये ६ राशियाँ नाडी मंडल के उत्तर में हैं
"	२ वृष	१९ अप्रैल		
"	३ मिथुन	२० मई		
नीच	४ कर्क	२१ जून		
"	५ सिंह	२२ जुलाई		
"	६ कन्या	२२ अगस्त		
उच्च या नीच	राशि	सायन संक्रान्ति की तारीख	ऋतु	
उच्च	७ तुला	२३ सितम्बर	शरद और हेमन्त की राशियाँ शिशिर और वसंत की राशियाँ	ये ६ राशियाँ नाडी मंडल के दक्षिण में हैं
"	८ वृश्चिक	२३ अक्टूबर		
"	९ धन	२२ नवम्बर		
नीच	१० मकर	२१ दिसम्बर		
	११ कुम्भ	२० जनवरी		
	१२ मीन	१९ फरवरी		

जय सूर्य उपरोक्त ३ राशियों में से किसी में होता है तो उसकी क्रान्ति बढ़ती है और दूसरे ३ राशियों में होता है तो क्रान्ति घटती है। इस कारण पहिली उच्च राशियाँ और दूसरी नीच राशियाँ हैं।

अध्याय १३

सायन और निरयन

राशि ग्रह आदि २ प्रकार के हैं (१) सायन movable
(२) निरयन fixed zodiac

सायन—अयन सहित With Procession

निरयन—अयन रहित Without Procession

अयनाश—अयन के अंश। हिन्दुमत में माना हुआ प्रथम बिन्दु और शरद सम्पात के बीच जो अंतर है वह निश्चित बिन्दु से नापा जाता है, उसे अयनाश कहते हैं।

अयन Procession of equinoxes

अयन क्या है ? यह जानने के लिये सम्पातविन्दु का जानना आवश्यक है, जिसके विषय में पहिले अच्छी प्रकार समझा चुके हैं। नाडीवृत्त और क्रान्तिवृत्त एक दूसरे को जगह जगह काटते हैं, वे ही सम्पातविन्दु equinoctial points हैं। इनमें १ शरद सम्पात दूसरा वसंत सम्पात है। इन्ही दोनों विन्दुओं को अयन भी कहते हैं। इन्ही विन्दुओं पर सूर्य आने से दिन रात बराबर होता है।

इन सम्पात विन्दुओं की वक्र गति होनी है अर्थात् उल्टे चलते हैं। (जिस प्रकार राहु केतु उल्टे चलते हैं)। शरद सम्पात का विन्दु अपनी पूर्व स्थिति से पीछे हटता जा रहा है इसी कारण इसे वक्र गति कहते हैं। पहिले बता चुके हैं कि अयन विन्दु पश्चिम की ओर खिसक रहे हैं।

इस सम्पात विन्दु की पूर्व स्थिति, ज्योतिष शास्त्र में रेवती नक्षत्र से मानी है, परन्तु ज्योतिष चक्र (भचक्र) में सम्पात विन्दु मेष के प्रथम अंश से माना गया है।

इस सम्पात विन्दु की वार्षिक गति होती है और यही गति अयन चलन कहलाता है। इसे विपुवत्क्रान्ति—वलय पात चलन भी कहते हैं।

जहाँ इस मायन का उपयोग होता है उसे सायन (चलित ग्रह) movable zodiac कहते हैं। निरयन में स्थिर मेष के पहिले अंश से यह सम्पात विन्दु आरंभ होना मानते हैं और इसमें अयन का उपयोग नहीं होता इस कारण निरयन को स्थिर fixed zodiac कहते हैं।

इसी सम्पात की गति को अयनाग Procession कहते हैं। इस सम्पात का पूर्ण चक्र २५८६८ वर्ष में अर्थात् लगभग २६००० वर्ष में पूरा होता है। इस कारण इस प्रमाण से इसकी गति १ अंश चलने को ७२ वर्ष लगते हैं। अर्थात् १ वर्ष में प्रायः ५० विकला के हिमाव से अयन की गति होती है।

अयनाग सहित ग्रह—चलित ग्रह—सायन ग्रह—सायन मत

अयनाग रहित ग्रह—स्थिर ग्रह—निरयन ग्रह—निरयन मत

सायन मतको पाञ्चात्य लोग भविष्य कथन में उपयोग करते हैं और उनके पञ्चांग में सायन ग्रह दिये रहते हैं, परन्तु हिन्दू लोग प्रायः निरयन मत से ही भविष्य कथन करते हैं। कहीं कहीं महाराष्ट्र में भी सायन मतका भी उपयोग करते हैं।

जो कोई ग्रह से अयनाग मिलाकर ग्रह को सायन बनाकर सायन ग्रह का उपयोग करते हैं वे सायन मतके हैं और जो सायन में से अयनाग निकाल कर (घटा कर) उसे निरयन बनाकर या निरयन ग्रह हो तो बिना अयनाग मिलाए ही ग्रह का बहुधा उपयोग करते हैं वे निरयन मतके हैं।

सायन मतवालो का कहना है कि ग्रह को सायन बनाकर सायन ग्रह की स्थिति पर से जो फल कहा जायगा वह सच्चा निकलेगा । निरयन मतवालो का कहना है कि बिना अयनाश मिलाए ही ग्रह की स्थिति पर से जो फल कहा जायगा वह सच्चा उत्तरेगा । यही सायन और निरयन वाद है अर्थात् दोनों मतवालो में इस प्रकार मतभेद है ।

अयनाश का उपयोग निरयन मत में भी कई जगह होता है । जैसे भाव स्पष्ट करने के लिये निरयन सूर्य में अयनाश मिलाकर उसे सायन सूर्य बनाकर उस पर से लग्न साधन करते हैं और फिर सायन लग्न निकलने पर अयनाश घटाकर निरयन ग्रहण करते हैं । अयनाश का उपयोग आगे जन्म कुडली आदि बनाने के गणित में काम पड़ेगा इस लिये इसको जानना आवश्यक है ।

किसी वर्ष के अयनाश निकालने की ग्रह लाघव मत के अनुसार सरल रीति —

शाके ४४४ में रेवती का तारा सम्पात विन्दु पर था । उस समय पर से किसी वर्ष का अयनाश निकालने के लिये, इष्ट शाका में ४४४ घटाना, इसके घटाने से जो शेष बचे वही अयनाश की कला होती है । उनमें ६० का भाग देकर उनके अश वनालों तो वही अयनाश वर्ष आरम्भ का होगा ।

अयनाश — (इष्ट शाका—४४४)— ६० = अयनाश

जैसे शाका १७६९ का अयनाश निकालना है तो शाका में ४४४ घटा कर शेष में ६० का भाग दिया तो उत्तर अश कला में अयनाश आता है ।

इष्ट शाका १७६९ ६०) १३२५ (२२° उत्तर २२-६ अश कला यह वर्ष आरम्भ का अयनाश हुआ ।

४४४	१२०
शेष १३२५	१२५
	१२०
	५

अध्याय १४

कुछ प्रारम्भिक ज्ञान होने के उपरान्त यही इच्छा होती है कि हमें पचाङ्ग देखना आ जावे । पंचाङ्ग के मुख्य ५ अंग (१) तिथि, (२) वार, (३) नक्षत्र, (४) योग, और (५) करण, होने से उसे पचाङ्ग कहते हैं । ये सब क्या है यह बतलाने के उपरान्त पचाङ्ग देखना बतायेंगे । पचाङ्ग के उपरोक्त ५ अंगों के अतिरिक्त सम्बत्सर, मास, अयन, ऋतु, ग्रह स्थिति, दिनमान सूर्योदय आदि कई और आवश्यक विषय भी

अतः पंचाङ्ग में दिये रहते हैं। इन सबको पहिले समझ लेना चाहिये। वर्ष प्रमाण आदि जानने के पूर्व काल प्रमाण प्रत्येक को जानना आवश्यक है।

काल प्रमाण Division of Time

वृटि—कमल के कोमल से कोमल १ पत्र में अति नुकीली सुई चुभाने में जो समय लगता है उसे वृटि कहते हैं।

निमेष—पलक झपकाने में जो समय लगता है उसे निमेष कहते हैं।

गुरु अक्षर—एक गुरु अक्षर के उच्चारण में जो समय लगे वह गुरु अक्षर है।

प्राण—एक गुरु अक्षर के उच्चारण में जो समय लगे उसके १० गुने समय को प्राण कहते हैं।

भगण काल—कोई ग्रह १ भगण (३६०°) चक्कर पूरा करने में जो समय लगावे।

सावन दिन—एक दिन सूर्योदय होने के उपरान्त दूसरे दिन के सूर्योदय होने तक का जो समय है वह सावन दिन कहलाता है।

१०० वृटि=१ लव=१ तत्पर

३० लव=१ निमेष

१० गुरु अक्षर=१ प्राण=१ असु

४५ निमेष=१ प्राण

६ प्राण=१ पल=विनाडी=विघटिका
या=विघटी

१० विपल=१ प्राण या असु

६० विनाडी=१ नाडी=घटी
[पल]=घडी-दंड

६० नाडी=१ नाक्षत्र दिन
[घटी]=अहोरात्रि=१ दिन रात

७३ घटी=१ प्रहर

८ प्रहर=२४ घण्टा [होरा]
=१ दिन रात

२ घटी=१ मुहूर्त

३० मुहूर्त=१ दिन रात

७ दिन=१ सप्ताह

३० दिन=१ मास

१२ मास=१ वर्ष

३० नाक्षत्र अहोरात्रि=१ सावन मास

३० सावन दिन=१ सावन मास

३० चान्द्र तिथि=१ चान्द्र मास

१ सक्काति से दूसरी
सक्काति तक } =१ सौर मास

१२ मास [१ वर्ष]=१ दिव्य दिन

३६० वर्ष=१ दिव्य वर्ष

६० तत्प्रति विकला=१ प्रतिविकला

६० प्रतिविकला=१ विकला

६० विकला=१ कला

६० कला=१ अश

३० अंश=१ राशि

१२ राशि=१ भचक्र=भगण=ज्योतिष
चक्र

६० तत्परस=१ परस	६० विपल=१ पल=२४ सेकण्ड
६० परस=१ विलिसा	६० पल=१ घडी=२४ मिनट
६० विलिसा=१ लिप्ता	६० घडी=१ दिन रात्रि=२४ घण्टा
६० लिप्ता=१ विघटिका=पल	२१/२ विपल=१ सेकण्ड
६० विघटिका=१ घटिका=दंड	२१/२ पल=१ मिनट
६० घटिका=१ दिन रात्रि	२१/२ घडी=१ घण्टा
६० अनुपल=१ विपल=३/४ सेकण्ड	१११/४ निमेष=१ सेकण्ड
	१ असु [प्राण]=४ सेकण्ड

स्मरण रहे कि अंग्रेजी समय घण्टा मिनट में रहता है। वह अर्द्ध रात्रि के १२ वजे के उपरान्त से आरम्भ होता है और हिन्दू समय घडी पल में सूर्योदय के उपरान्त से आरम्भ होता है।

सूर्योदय का समय प्रत्येक पचाङ्ग में घण्टा मिनट में दिया रहता है। इष्ट समय यदि घण्टा मिनट में हो तो सूर्योदय का समय घटा देने से सूर्योदय के बाद के घण्टा मिनट निकल आवेंगे। जैसे ८ वजे दिन किसी बालक का जन्म है। पचाङ्ग में देखा उस दिन ६ वजे प्रातः सूर्योदय है। ८ घण्टा में से ६ वजे सूर्योदय के घटाये तो शेष २ घण्टा बचे। अब २ घण्टा के घडी पल बना लो। $2 \times 24 = 48$ घडी हुई। वस यही सूर्योदय के उपरान्त का अपना समय घडी पल में हुआ। इसी प्रकार जहाँ घडी पल में समय दिया हो आवश्यक होने पर उसके घण्टा मिनट बना लो।

नाप का प्रमाण Measurement

६० तत्प्रति अंगुल=१ प्रति अंगुल=व्यांगुल

६० व्यांगुल=१ अंगुल

नवीन नाप	प्राचीन नाप	अंग्रेजी मील और योजन का मिलान
२१/२ इंच=१ गिरह	८ जब की चोडाई=१ अंगुल	यदि ११/२ फुट का १ हाथ
४ गिरह=१ बीता	२४ अंगुल=१ हाथ	माना जावे तो
४ बीता १ गज	४ हाथ=१ दण्ड	१ दण्ड=२ गज
१२ इंच १ फुट	२००० दण्ड=१ कोस	१ कोस=४००० गज
३ फुट=१ गज	४ कोस=१ योजन	अर्द्ध कोस [मील]=२००० गज
१७६० गज=१ मील	१० हाथ=१ बाँस	अंग्रेजी मील=१७६० गज
२ मील=१ कोस		दोनो का अंतर=२४० गज

१ नाट Knot = अक्षाण
की १ कला

१ नाट=१०१५ साधारण
मील=२०२८ गज

अंग्रेजी मील २४० गज छोटा है ।

इस प्रकार

४ कोस=१ योजनामें=१९२०

गज या मील-गज

१-१६० का

अन्तर पड़ेगा

∴ १ योजना=१६ $\frac{1}{8}$ मील

या=मील-गज

६-१६०

[१] युग प्रमाण

काल प्रमाण जानने के उपरान्त युग प्रमाण भी जानना चाहिये, क्योंकि पचाङ्ग में दिया रहता है कि कलियुग के इतने वर्ष बीत गये हैं इत्यादि ।

कलियुग ४३२००० वर्ष का होता है । कलियुग का दूना द्वापर, तिगुना त्रेता, चौगुना सतयुग होता है । इन ४ युग का १ महायुग होता है । ७१ महायुग का १ मन्वन्तर और १००० महायुग का १ कल्प या ब्रह्मा का एक दिन होता है । ३६० कल्प का १ वर्ष ब्रह्मा का होता है । प्रत्येक मन्वन्तर के आदि और अंत में सतयुग प्रमाण की १ मघि होती है । मघि को प्रलय काल भी कहते हैं । १५ सघि समेत एक मन्वन्तर का १ कल्प होता है । ब्रह्मा की आयु ३६० कल्प×१०० वर्ष की होती है ।

सतयुग=१७२८००० वर्ष	मनु १४ हैं उनके नाम	वर्तमान कल्प के
त्रेता=१२९६००० ,,	१ स्वायम्भुव	आरम्भ से ६ संधियों
द्वापर=८६४००० ,,	२ स्वरोचिष	समेत ६ मनु व्यतीत
कलियुग=४३२००० ,,	३ उत्तमज [औत्तमि]	हो चुके हैं उनके नाम—
१ महायुग=४३२०००० वर्ष	४ तामस	[१] स्वायम्भुव मनु
७१ महायुग=१ मन्वन्तर=	५ रैवत	[२] स्वरोचिष ,,
३०६७२०००० वर्ष	६ चाक्षुष	[३] उत्तमज ,,
१००० महायुग=१ कल्प	७ वैवस्वत	[औत्तमि] ,,
४३२००००००० वर्ष	८ सार्वणि	[४] तामस ,,
= ब्रह्मा का १ दिन	९ दक्ष सार्वणि	[५] रैवत ,,
३६० कल्प=१ वर्ष ब्रह्मा का	१० ब्रह्मा ,,	[६] चाक्षुष ,,
आयु १०० वर्ष	११ धर्म ,,	इस समय सातवाँ
प्रत्येक मन्वन्तर के आदि और	१२ रुद्र ,,	वैवस्वत मनु वर्तमान

सृष्टि आरम्भ होने से वर्तमान कलियुग आरम्भ होने तक १९७२९४४००० वर्ष या ईसा के जन्म समय तक (सन् ईस्वी आरम्भ होने तक)=१९७२९४७१०२ वर्ष हो चुके हैं ।

इसके आगे वर्तमान सन ईस्वी जोड़ दो तो वर्तमान सन ईस्वी तक सृष्टि आरम्भ होने का वर्ष निकल आयागा ।

या द्वापर तक के वर्ष १९७२९४४००० में ३०४५ और जोड़ दो तो सम्मत आरम्भ होने तक का सृष्टि आरम्भ का समय निकल आयागा ।

सन् ईस्वी के ३१०२ वर्ष पहिले कलियुग आरम्भ हुआ था । सन् ईस्वी आरम्भ होने के ५७ वर्ष पहिले विक्रम सम्मत प्रचलित हुआ था । इस प्रकार [३१०२-५७] = ३०४५ वर्ष हुए । ये वर्ष, सम्मत के आरम्भ होने के समय तक के कलि के गत वर्ष हुए । द्वापर तक के वर्ष १९७२९४४००० } इनने वर्ष सृष्टि आरम्भ से सम्मत आरम्भ सम्मत आरम्भ तक कलि वर्ष + ३०४५ } तकके हुए ।

योग १९७२९४७०४५

इसमें इष्ट सम्मत और जोड़ दो तो इष्ट सम्मत तक के वर्ष प्राप्त होंगे ।

कलियुग सन् ईस्वी के ३१०२ B C (बी. सी) [इतने वर्ष पहिले] आरम्भ हुआ था । सम्मत २००० में ५०४४ वर्ष कलि के बीत चुके और ८२६९५६ वर्ष व्यतीत होने को छेप रहे । ता० १८ फरवरी ३१०२ बी सी [ईसा के जन्म के पहिले] अर्धरात्रि से कलियुग आरम्भ हुआ था । भाद्रपद मास, कृष्णपक्ष १३ रविवार आश्लेषा नक्षत्र व्यतीपात योग में अर्द्धरात्रि के समय कलियुग की उत्पत्ति हुई थी ।

इस प्रकार यह कलियुग का प्रथम चरण है, ब्रह्मा का दूसरा पहर है, श्वेत वाराह कल्प है और वैवस्वत मन्वन्तर है । जब कलियुग आरम्भ हुआ था सूर्य चन्द्र आदि सब ग्रह एक ही राशि पर थे ।

विक्रमादित्य ने ५७ बी सी में पहिले विदेशियों को भारत से भगाया था, उस समय ये विक्रम सम्मत चला है । ईसा के जन्म के ७८ वर्ष के उपरांत शालिवाहन राजा ने शाका चलाया है ।

[२] वर्ष प्रमाण—

वर्ष

शाके + ७८ वर्ष = सन् ईस्वी
सम्मत—५७ „ „ „
सन् ईस्वी + ५७ „ = सम्मत
, - ७८ = शाका
सम्मत—१३५ = शाका

सन् ईस्वी—५८३ = सन् हिजरी
सन् हिजरी—१० = सन् फसली
सन् फसली—१ = वगला सन्

विक्रम सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है। सन् ईस्वी से सम्वत् बनाने में यह ध्यान रहे कि सम्वत् मार्च के महीना में बदल जाता है और पूस मास में सन् बदलता है। इस प्रकार एक सम्वत् में २ सन् या १ सन् में २ सम्वत् आ जाते हैं। इस कारण मास का विचार कर सन् या सवत् का निर्णय करना चाहिये। अर्थात् सम्वत् में ५७ घटाने से जो सन् आता है वह वर्ष आरम्भ का सन् होता है। आगे पूस में सन् बदल कर दूसरा सन् लग जाता है। जैसे सम्वत् २००२-५७=१९४५ सन् ईस्वी, यह सन् सम्वत् के आरम्भ में होगा और सम्वत् २००२ के पूस मास में सन् बदल कर १९४६ सन् हो जायगा।

वर्ष मान - वर्ष ४ प्रकार के हैं

दि० घ० पल = सूर्य १२ राशियों में १ वार घूम
[१] सौर वर्ष = ३६५ १५ ३० लेने से होता है। इस प्रकार १२ सौर मास का १ वर्ष होता है।

दि० घ० पल = शुक्ल प्रतिपदा से अमावस तक १२
[२] चाद्र वर्ष = ३५४ ३० ० मास का या मलमास होने से १३ मास का १ वर्ष होता है।

[३] सावन वर्ष = ३६० सावन दिन का=१२ सावन मास का

दि० घ० पल=१२ नाक्षत्र मास का १ वर्ष

[४] नाक्षत्र वर्ष = ३२४ ० ०

सम्वत्सर

पंचांग में सम्वत्सर का नाम दिया रहता है। सकल्प तर्पण आदि में जिस का उपयोग होता है और इससे फल भी विचारते हैं।

सम्वत्सर ६० होते हैं। किसी शाका में २४ जोड़ कर ६० का भाग देने से जो शेष बचे उसी क्रमानुसार सम्वत्सर का नाम होता है। जैसे शाका १८५६+२४-६०=१८८० = शेष २०=२० व्यय नाम का सम्वत्सर हुआ या सम्वत् + ६-६० = शेष सम्वत्सर। जैसे सम्वत् $\frac{१९६३}{१९६३} + ६ = \frac{३६००}{३६००} =$ शेष २० = व्यय सम्वत्सर।

इसके अनुसार सम्वत्सर होता है, परन्तु कभी २ एक सम्वत् में २ सम्वत् आ जाते हैं। सम्वत् १९६३ में २२ वा सर्वधारी सम्वत्सर के उपरान्त २३ वा विरोधी सम्वत्सर भी उसी वर्ष लग गया था, जिससे १ अधिक हो जाता है। वास्तव में गुरु की गति के अनुसार गणित से सम्वत्सर निकाले जाते हैं। यहाँ तो सम्वत्सर निकालने की मोटी रीति दी है।

सम्बत्सर के नाम

१ प्रभव	१६ चित्रभानु	३१ हेमलम्बी	४६ परिधावी
२ विभव	१७ सुभानु	३२ विलम्बी	४७ प्रमादी
३ शुक्ल	१८ तारण	३३ विकारी	४८ आनन्द
४ प्रमोद	१९ पार्थिव	३४ शार्वरी	४९ राक्षस
५ प्रजापति	२० व्यय	३५ प्लव	५० नल
६ अगिरा	२१ सर्वजित्	३६ शुभकृत्	५१ पिंगल
७ श्रीमुख	२२ सर्वधारी	३७ शोभन	५२ कालयुक्त
८ भाव	२३ विरोधी	३८ क्रोधी	५३ सिद्धार्थी
९ युवा	२४ विकृति	३९ विम्बावसु	५४ रौद्र
१० घाता	२५ खर	४० पराभव	५५ दुर्मति
११ ईश्वर	२६ नन्दन	४१ प्लवग	५६ दुद्रुभि
१२ बहुधान्य	२७ विजय	४२ कीलक	५७ रुधिरोग्गारी
१३ प्रमाथी	२८ जय	४३ सौम्य	४८ रक्ताक्षी
१४ विक्रम	२९ मन्मथ	४४ साधारण	५९ क्रोधन
१५ वृष	३० दुर्मुख	४५ विरोधकृत्	६० क्षय

जैसे मन्वत् २००३ + ६ = २०१२ ÷ ६० = शेष ३२ + १ = ३३ विकारी सम्बत्सर ।
गुरु मन्व्यभगति जितने समय में १ राशि चलता है उसे सम्बत्सर कहते हैं । गुरु के १
भगण में १२ सम्बत्सर या ४३३२ ३२०६ सावन दिन होते हैं । या १ सम्बत्सर में
३६१ ०२६७२ सावन दिन होते हैं ।

[३] अयन

अयन २ होते हैं १ उत्तरायण २ दक्षिणायन

१ उत्तरायण = मकर सन्क्राति से आरम्भ होता है और मिथुन सन्क्राति की समाप्ति तक
रहता है । इसमें दिन क्रम क्रम से बढ़ता है ।

२ दक्षिणायन -- कर्क सन्क्राति से लेकर धनु सन्क्राति के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य
कहलाता है । इसमें रात्रि क्रम क्रम से बढ़ती है । इसमें जो सन्क्राति की राशियां बताई
हैं वे सायन नहीं हैं अर्थात् निरयन हैं ।

[४] गोल

गोल २ हैं । आकाश के २ भाग इस प्रकार किए जाय कि ऊपर भाग के मध्य में
आकाश का उत्तर ध्रुव हो और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिण ध्रुव हो तो पहिले को
उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहेंगे ।

सायन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या ६ ये राशियाँ उत्तर गोल में हैं और शेष ६ राशियाँ सायन तुला, वृश्चिक, धन, मकर कुम्भ और मीन ये ६ राशियाँ दक्षिण गोल में हैं ।

[५] ऋतुएँ

१२ मास में ६ ऋतुएँ होती हैं ।

अयन	ऋतु	सूर्य	चन्द्रमास
१ उत्तरायण	१ शिशिर	मकर-कुम्भ	माघ-फाल्गुन
"	२ वसन्त	मीन-मेष	चैत्र-वैशाख
"	३ ग्रीष्म	वृष-मिथुन	ज्येष्ठ-अषाढ
२ दक्षिणायन	४ वर्षा	कर्क-सिंह	श्रावण-भाद्रपद
"	५ शरद	कन्या-तुला	आश्विन-कार्तिक
"	६ हेमन्त	वृश्चिक-धन	मार्गशीर्ष-पौष

अध्याय १५

(६) मास और पक्ष विचार (Month and fortnight)

मास ४ प्रकार के हैं—

१ चान्द्रमास = शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक १ चान्द्रमास है ।

२ सौरमास = सूर्य की १ संक्राति से दूसरी संक्रान्ति तक ।

सूर्य जब १ राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है उस समय दूसरी राशि की संक्रान्ति होती है । जैसे मेष राशि के बाद सूर्य वृष राशि में जिस दिन आया उसी दिन वृष की संक्रान्ति कहलायगी ।

३ सावन मास = ३० सावन दिन = सूर्य के एक उदय से दूसरे उदय तक के समय को १ सावन दिन कहते हैं । इस प्रकार ३० दिन का १ सावन मास होता है । सावन दिन यह नाक्षत्र दिन से ४ मिनट बड़ा होता है । सावन दिन का मान समान नहीं होता, इस कारण मध्यम सावन दिन का मान लिया जाता है और उसी का समय बडियो से जाना जाता है ।

४ नाक्षत्र मास = अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में चन्द्र एक बार पूरा घूम लेता है तब चन्द्र मास होता है ।

चन्द्र के बारह मास के नाम

१ चैत्र [चैत्र]	४ आपाड [आमाड]	७ आश्विन [कुआर]	१० पौष [पूस]
२ वैशाख	५ श्रावण [सावन]	८ कार्तिक [कार्तिक]	११ माघ
३ ज्येष्ठ [जेठ]	६ भाद्रपद [भादो]	९ मार्गशीर्ष [अग्रहन]	१२ फाल्गुन [फागुन]

इन महीनों के उपरोक्त नाम पड़ने का कारण यह है कि इन महीनों की पूर्णिमा के लगभग ये नक्षत्र पड़ने हैं ।

क्रम	चन्द्रमास	नक्षत्र	क्रम	चन्द्रमास	नक्षत्र	क्रम	चन्द्रमास	नक्षत्र
१	चैत्र	चित्रा	५	श्रावण	श्रवण	९	मार्गशीर्ष	मृगशिर
२	वैशाख	विशाखा	६	भाद्रपद	भाद्रपद	१०	पौष	पुष्य
३	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	७	आश्विन	अश्विनी	११	माघ	मघा
४	आषाढ	आषाढा	८	कार्तिक	कृत्तिका	१२	फाल्गुन	फाल्गुनी

चन्द्र मास २ प्रकार के हैं ।

१ जमान्त मास = शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक १ मास होता है । यह दक्षिण में और महाराष्ट्र देश में चालू है ।

२ पूर्णिमान मास = कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक १ मास यह उत्तर भारत में चालू है ।

दोनों प्रकार के मास में कोई अन्तर नहीं आता, क्योंकि एक जगह पूर्णिमा या अमावस्या हुई तो सर्वत्र ही उन दिन पूर्णिमा या अमावस्या अवश्य होगी । केवल मास गणना में कृष्ण पक्ष में अपने यहाँ १ मास का अन्तर पड़ जाता है । जैसे अपने यहाँ चैत्र कृष्णपक्ष हुआ तो महाराष्ट्र लोग उसे फाल्गुन कृष्ण पक्ष कहेंगे अर्थात् कृष्ण पक्ष में अपने मास में १ मास कम महाराष्ट्र लोगों का मास होता है । मराठी पचास मिले तो कृष्णपक्ष में १ मास बढ़ा कर लेना चाहिये । परन्तु शुक्ल पक्ष में दोनों प्रकार के पञ्चांग में कोई अन्तर नहीं पड़ता ।

बंगला मास

सूर्य की निरयन सक्रांति में आरम्भ होता है और सेपाक (मेघ की सक्रान्ति) से नया बंगला सन् आरम्भ होता है । मीनार्क से चैत्र मास आरम्भ होता है और सेपाक में वैशाख मास होता है । जब वर्ष आरम्भ होता है तब सक्रान्ति जिस दिन होती है

उसके दूसरे दिन से वगला की पहली तारीख (तिथि) गिनी जाती है । किसी महीने में २९, ३०, ३१ या कभी ३२ दिन पड़ जाते हैं ।

अंग्रेजी महीनों के नाम

क्रम	अंग्रेजी दिन	चान्द्रमास	क्रम	अंग्रेजी दिन	चान्द्रमास	क्रम	अंग्रेजी दिन	चान्द्रमास
	महीना			महीना			महीना	
१	जनवरी ३१	पूस	५	मई ३१	वैशाख	९	सितम्बर ३०	भाद्रपद
२	फरवरी २८	माघ	३	जून ३०	ज्येष्ठ	१०	अक्टूबर ३१	आश्विन
३	मार्च ३१	फाल्गुन	७	जुलाई ३१	आषाढ	११	नवम्बर ३०	कार्तिक
४	अप्रैल ३०	चैत्र	८	अगस्त ३१	श्रावण	१२	दिसम्बर ३१	मार्गशीर्ष

प्लुत वर्ष=Leap year लीप इयर=मे फरवरी २९ दिन की होती है । जिस सन् में ४ का भाग पूरा लग जाय या सदी Century में ४०० का भाग पूरा लग जावे तो उसे प्लुत वर्ष कहते हैं । शेष वर्षों में फरवरी २८ दिन की होती है ।

मुसलमानी महीनों के नाम अर्थात् हिजरी सन् के महीने

१ मुहर्म्म	५ जमादि उल अब्बल	९ रमजान
२ सफर	६ जमादिउल आखर (सानी)	१० सब्वाल
३ रबिउल अब्बल	७ रज्जब	११ जीकाद
४ रबिउल आखर (सानी)	८ सावान (शबवान)	१२ जिल हिज्ज

चाद दिखने से महीना आरम्भ होता है और इनमें लौद का वर्ष या अधिक मास नहीं होता । इस कारण प्रत्येक तीसरे वर्ष इनके महीनों से अन्तर पड़ता रहता है अर्थात् कभी मुहर्म्म जाड़े में कभी वरसात में कभी गरमी में पड़ता है । मुहर्म्म की १ तारीख से हिजरी सन् आरम्भ होता है और चाद दिखने के दूसरे दिन महीने की पहली तारीख होती है । कभी २९ दिन कभी ३० दिन का महीना चन्द्र की तिथि की घटा-वढी के अनुसार होता है ।

फसली सन् में महीना प्रत्येक कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होता है और रमजान महीना से नया सन् आरम्भ होता है । इसमें भी चन्द्र तिथि के अनुसार कभी २९ कभी ३० दिन हो जाते हैं ।

सौर मास और संक्रांति

सूर्य जब १ राशि के अन्त में जाकर दूसरी राशि में सक्रमण करता है (जाने लगता है) तब उसे संक्रांति कहते हैं । अर्थात् जब २ राशियों की संधि पर सूर्य आता है तब आगे की राशि की संक्रांति होती है । इस प्रकार प्रत्येक सौर मास में एक संक्रांति

होती है। जिस राशि पर सूर्य जाता है उस राशि की संक्रान्ति कहलाती है। जैसे घन का अंत होने पर सूर्य मकरराशि में जाता है तो वह मकर-संक्रान्ति कहलावेगी। अर्थात् सूर्य ने मकर राशि में सक्रमण किया ऐसा कहेंगे।

मेघ से तुला संक्रान्ति को विषुव संक्रान्ति कहते हैं।

कर्क से मकर संक्रान्ति को अयन संक्रान्ति कहते हैं।

अधिक मास

जिस चान्द्र मास में सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती उसे अधिक मास कहते हैं। अर्थात् जब दो पक्ष में संक्रान्ति नहीं होती तो उसे अधिक मास कहते हैं। जैसे सम्बत् १९९९ में वैशाख कृष्ण १३ (ता० १३ अप्रैल) को मेघ संक्रान्ति हुई। ज्येष्ठ कृष्ण १४ को (ता० १४ मई) वृष की संक्रान्ति हुई। इसके उपरान्त फिर (ता० १४ जून) शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मिथुन राशि पर सूर्य गया अर्थात् मिथुन की संक्रान्ति हुई। वृषार्क शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की १४ तिथि को था, उसके बाद अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष और फिर अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष बीत गया, परन्तु इन दोनों के बीच संक्रान्ति नहीं हुई। इस कारण ये दोनों पक्ष अधिक मास माने गये। इसके पहिले का ज्येष्ठ कृष्ण शुद्ध माना गया और फिर उसके बाद जो अधिक २ पक्ष बढ़े उनमें से १ का नाम अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पड़ा और उसके आगे फिर अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष माना गया। ये दोनों अधिक पक्ष व्यतीत हो जाने पर शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मिथुन की संक्रान्ति हुई। इससे वह शुद्ध ज्येष्ठ मास माना गया।

३२ मास १६ दिन ४ घड़ी बीतने पर अधिक मास होता है। अर्थात् तीसरे वर्ष अधिक मास होता है और उस वर्ष में १३ मास हो जाते हैं।

अधिक मास को मल मास या पुरुषोत्तम मास कहते हैं। चन्द्र मास के गणित से वर्ष में ३५४ दिन ९ घंटे और सूर्य मास के वर्ष में ३६५ दिन ६ घंटे प्राय होते हैं। इस कारण सूर्य और चन्द्र के दिनों का अंतर अधिक मास होने से बराबर हो जाता है।

क्षय मास

जिस चान्द्र मास के २ पक्ष में २ संक्रान्ति होती है उसे क्षयमास कहते हैं। क्षय मास केवल कार्तिक आदि ३ महीनों में पड़ता है और महीनों में नहीं पड़ता। जिस वर्ष क्षय मास होता है उस वर्ष एक वर्ष के भीतर २ अधिक मास होते हैं।

यह कई वर्षों में पड़ता है। यदि भाद्रपद अधिकमास होगा तो सूर्य की गति अधिक होने से मार्ग शीर्ष में २ संक्रान्ति वाला क्षयमास होगा और सूर्य की गति अल्प हो जाने के कारण चैत्र मास भी अधिक होगा।

जिस सम्बत् मे क्षय मास होता है उसके १४१ या १६ वर्ष उपरान्त पुन क्षयमास होना सम्भव होता है अर्थात् कभी १४१ वर्ष में कभी १६ वर्ष में संभव होता है ।

जैसे सम्बत् ९७४ मे क्षय मास होकर पुन आगे सम्बत् (९७४ + १४१) - १११५ में और (१११५ + १४१) = १२५६ सम्बत् मे क्षय मास होगा, इसी प्रकार आगे और भी जानें । भविष्य मे सम्बत् २०२० में क्षय मास होगा ।

(७) पक्ष

चान्द्र मास मे २पक्ष=(पखवाडा या पदरवाडा) होते हैं । जब सूर्यास्त के उपरांत कुछ समय तक अन्धेरी रात आ जाती है या सम्पूर्ण रात भर या रात के कुछ भाग तक ही सूर्यास्त के बाद अंधेरा रहे उसे कृष्ण पक्ष कहते हैं । जब सूर्यास्त के उपरान्त कुछ समय या सम्पूर्ण रात भर चन्द्र का प्रकाश रात्रि को रहे तब उसे शुक्ल पक्ष कहते हैं ।

कृष्णपक्ष=बदी । शुक्ल पक्ष=शुद्ध या सुदी ।

अध्याय १६

पंचाङ्ग के अङ्ग

तिथि—यह पंचाङ्ग का प्रथम अंग है । पंचाङ्ग में पहिले तिथि ही दी रहती है । चान्द्रमास की तिथियाँ ३० होती हैं ।

१ प्रतिपदा (परिवा)	५ पचमी (पाँचें)	१० दशमी (दसैं)	१४ चतुर्दशी (चौदस)
परमा या पडिवा	६ षष्ठी (छठें)	११ एकादशी	१५ पूर्णिमा (पूनों)
२ द्वितीया (दोज)	७ सप्तमी (सातें)	(ग्यारस)	३० अमावस्या
३ तृतीया (तीज)	८ अष्टमी (आठें)	१२ द्वादशी (बारस)	(अमावस)
४ चतुर्थी (चौथ)	९ नवमी (नमें)	१३ त्रयोदशी (तेरस)	या अमावास्या

तिथियाँ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिनी जाती हैं और १५ तिथि पूर्णिमा को होती हैं, इस कारण पूर्णिमा के स्थान में १५ तिथि लिखते हैं । इसके उपरान्त कृष्ण पक्ष की तिथियाँ आरम्भ होती हैं । वे भी प्रतिपदा से आरम्भ होकर अमावस्या तक गिनी जाती हैं । परन्तु अमावस्या को ३० वी तिथि कहते हैं । अमावस्या के स्थान ३० तिथि लिखी जाती है । जहाँ ३० तिथि लिखी हो वहाँ अमावस्या समझें ।

जिस दिन सूर्य और चन्द्र एक स्थान में आ जाते हैं तब अमावस्या होती है अर्थात् सूर्य के पास चन्द्र आ जाता है (अस्त हो जाता है) तब अमावस्या होती है। गणित करने से जिस समय सूर्य और चन्द्र का पूर्व पश्चिम अन्तर शून्य हो जाता है उसी समय अमावस्या तिथि होती है।

सूर्य की गति से चन्द्र की गति अधिक है। जब दोनों का अन्तर बढ़ते लगता है तो १ तिथि का आरम्भ होने लगता है। अर्थात् प्रतिपदा तिथि का आरम्भ होने लगता है, जब वह बढ़ते-बढ़ते बारह अंग का अन्तर हो जाता है तो प्रतिपदा तिथि पूरी हो जाती है। 360° एक चक्र में होते हैं — 30 तिथि $= 12^\circ = 1$ तिथि। अर्थात् सूर्य चन्द्र में जब 12 अंग का अन्तर पड़ता है तो १ तिथि होती है।

यह अन्तर (अर्थात् १ तिथि) मध्यम मान से ५९ घण्टा ३ पल का होता है। चान्द्रमान $29\frac{1}{2}$ दिन का होता है, जिसमें 30 तिथियाँ व्यतीत होती हैं। इस प्रकार 12 मान में 35.4 दिन हुए जिसमें 360 तिथियाँ होती हैं अर्थात् तिथियों का क्षय वृद्धि आदि होकर ६ दिन कम हो जाते हैं।

चन्द्र गति कभी ६६ घटी से घटते घटते ५० घटी तक कम हो जाती है। जब तिथि का मान ६० घटी से अधिक होता है तो वृद्धि तिथि और ६० घटी से कम होता है तो क्षय तिथि होती है।

वृद्धि तिथि

जैसे सोमवार को ५८ घटी तक द्वितीया है। 12 अंग अन्तर होने में चन्द्र की गति के अनुसार तृतीया पूर्ण होने को ६५ घटी लगी। सोमवार को ५८ घटी के उपरांत द्वितीया व्यतीत होकर शेष में तृतीया रहेगी। फिर मंगलवार को सब दिन अर्थात् ६० घटी तृतीया रही और बुध को सूर्योदय के अनन्तर ३ घटी और तृतीया रही। इस प्रकार सोमवार, मंगलवार और बुधवार को मिला कर ६५ घटी तृतीया रही। इसके उपरांत चतुर्थी आरम्भ हुई।

पचाग में सोमवार को द्वितीया ५८ घटी लिखा होगा। मंगल की और बुध को भी तृतीया लिखा रहेगा।

सूर्योदय के उपरान्त वह तिथि चाहे १ घटी क्यों न हो, जो तिथि सूर्योदय पर होगी वही तिथि पचाग में लिखी रहेगी। जैसे बुधवार को ३ घटी तक तृतीया है तो भी उस दिन तृतीया ३ घटी लिखी रहेगी। इसमें समझ जाना चाहिये कि सूर्योदय के उपरान्त ३ घटी तक तृतीया तिथि थी उसके उपरांत चतुर्थी तिथि आरम्भ हुई।

इस प्रकार जब दो दिन एक ही तिथि पचाग में लिखी देखो तो उसे वृद्धि तिथि जानो।

क्षय तिथि

मान लो सोमवार को सूर्योदय के अनंतर २ घड़ी दशमी है। पंचाग में उस दिन २ घड़ी लिखा होगा। इसके बाद एकादशी तिथि मान लो ५५ घटी रही फिर द्वादशी आरंभ हुई, तो सोमवार को पूरे ६० घटी में २ घटी दशमी के गये, बचे ५८ घटी। इसमें ५५ घटी एकादशी के गये तो ३ घटी द्वादशी के बचे तो उस दिन ३ घटी ही द्वादशी रही। दूसरे दिन मंगलवार को भी शेष द्वादशी रहेगी ही। इस कारण मंगलवार को द्वादशी तिथि पंचाग में लिखी मिलेगी। परन्तु एकादशी तिथि पंचाग में लिखी हुई न मिलेगी। परन्तु ऊपर बताई रीति से जान सकते हो कि ग्यारस कब से कब तक रही। ऐसा नहीं समझना कि पंचाग में ग्यारस नहीं लिखा तो ग्यारस है ही नहीं। सूर्योदय पर जो तिथि किसी भी दिन पंचाग में नहीं बताई गई वह क्षय तिथि समझना।

पूर्णिमा और अमावस्या के नाम

तिथि	चतुर्दशी मिश्रित	प्रतिपदा मिश्रित
अमावस्या ३०	सिनी	ऊहू
पूर्णिमा १५	अनुमति	राका

(२) वार (दिन) Day

यह पंचाग का दूसरा अंग है। पंचाग में तिथि के पास वार दिया रहता है। वार ७ है

क्रम	वार नाम	फारसी नाम	अंग्रेजी नाम
१	रविवार=सूर्यवार (इतवार) आदित्यवार	एक संवा	Sunday
२	चंद्रवार (सोमवार)	दुसवा (पीर)	Monday
३	भौमवार (मंगलवार)	शि संवा	Tuesday
४	बुधवार	चहार संवा	Wednesday
५	गुरुवार (बृहस्पतिवार)	पज संवा (जुमेरात)	Thursday
६	भृगुवार (शुक्रवार)	जुमा	Friday
७	शनिवार (शनीचर)	संवा	Saturday

ये दिन के नाम ग्रहों के ऊपर से पड़े हैं। जिस ग्रह का होरा प्रातः काल होता है उसी ग्रह के नाम से उस दिन का नाम पड़ता है। पृथ्वी भर में सर्वत्र इसी क्रम से ही दिन माने जाते हैं और ७ दिन होते हैं।

ग्रहों का होरा

आकाश में पृथ्वी से अधिक दूरी के क्रम से इस प्रकार ग्रहों की स्थिति है—
(१) शनि, (२) गुरु, (३) मंगल, (४) रवि, (५) शुक्र, (६) बुध, (७) चंद्र । अर्थात् पृथ्वी से सबसे पास चंद्र है फिर उससे कुछ दूर बुध, फिर शुक्र, फिर रवि, मंगल, गुरु और शनि क्रम से एक दूसरा ग्रह अधिक दूरी पर है । होरा के विचार में उपर्युक्त ग्रहों का क्रम जिसमें आदि शनि है लिया है, क्योंकि पृथ्वी से शनि सबसे अधिक दूरी पर है चित्र स० ४ देखें ।

१ होरा एक घंटे का होता है इस कारण होरा Hour) को घंटा भी कहते हैं । दिन रात में २४ घंटा होते हैं । इस प्रकार दिन रात में २४ होरा हुए । ७ ग्रहों का प्रभाव क्रमशः एक २ होरा में होता है=२४ होरा ÷ ७ ग्रह=३ $\frac{३}{७}$ । अर्थात् २४ घंटा में ७ ग्रह के पूरे ३ चक्कर होकर शेष ३ होरा (घंटे) बच रहते हैं, जिसमें प्रति ग्रह १ घंटा के हिसाब में ३ ग्रह और भोग सकते हैं । इस प्रकार ३ ग्रह और भोग चुकते हैं । इस प्रकार (२४ घंटा पूरे होने पर) चौथे ग्रह के होरा में दूसरे दिन का आरम्भ होता है ।

जैसे प्रातः शनि का होरा था शनि से दूसरा गुरु, तीसरा मंगल का होरा शनिवार के २४ घंटा में व्यतीत हो गये । अब दूसरे दिन प्रातः काल चौथा ग्रह (शनि से चौथा रवि है) रवि का होरा आया । उस दिन प्रातः काल रवि का होरा था, इस कारण उस दिन का नाम रविवार पड़ा ।

इसके बाद रवि में चौथा चंद्र है । इसमें रविवार के दिन भर के बाद दूसरे दिन प्रातः चंद्र का होरा आयगा, इसलिये उस दिन का नाम चंद्रवार (सोमवार) होगा । अब सोमवार के बाद चौथा ग्रह (१ चंद्र, २ शनि, ३ गुरु) चौथा मंगल हुआ तो दूसरे दिन प्रातः काल मंगल का होरा होने से मंगलवार दिन का नाम पड़ा । मंगल से चौथा ग्रह (१ मंगल, २ रवि, ३ शुक्र और चौथा) बुध है तो दूसरे दिन बुधवार होगा । इसी प्रकार बुध में चौथा गुरु है, गुरु से चौथा शुक्र है, शुक्र से चौथा शनि है । इस क्रम में प्रातः काल जिस ग्रह का होरा होता है उसी ग्रह के नाम पर से वार का नाम पड़ता है ।

इष्ट घड़ी के घंटा बना लो, उसमें ७ का भाग दो जो शेष बचे उतनी सख्या उस दिन के प्रातः समय के होरा से, उस दिन को १ गिनते हुए शेष सख्या तक गिनो, जिस ग्रह का होरा आवे उस समय वही होरा होगा ऐसा जानना ।

जैसे २५ घड़ी दिन चढ़े पर कौन होरा होगा देखना है । २५ घड़ी=१० घंटा । उस दिन मानो मंगलवार था तो १० में ७ का भाग दिया शेष ३ बचा, मंगल का दिन था ।

इससे मंगल से गिना तो (१) मंगल, (२) रवि, (३) तीसरा शुक्र आया । इस कारण उस समय शुक्र का होरा होगा ऐसा जानना ।

नीचे दिये हुए चक्र से प्रगट होगा कि सूर्योदय के उपरान्त इष्ट घड़ी पर किस दिन कौन होरा होगा । घड़ी पल में समय दिया हो तो घड़ी पल में (घटा बनाने को) ३ का गुणा कर ७ का भाग दो शेष जो बचे वही होरा होगा ।

इष्ट घड़ी $\times \frac{3}{7} = ७ =$ शेष ग्रह का होरा जैसे इष्ट घड़ी ४० है गुरुवार का दिन है $\frac{४० \times ३}{७} = १६ = ७ =$ शेष २, दिन गुरुवार था तो गुरु से २ गिना । १ गुरु २ मंगल आया इस कारण उस समय मंगल का होरा हुआ । इसी के अनुसार नीचे चक्र से इष्ट घड़ी का होरा जान सकते हो । यदि समय घटा में हो तो इसी चक्र से घटा के अनुसार भी होरा जान सकते हो ।

होरा चक्र—

किस घड़ी तक	रवि वार	चंद्र वार	मंगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार	घंटा तक
२॥ २० ३७॥ ५	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	१ ८ १५ २२
५ २२॥ ४० ५७॥	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	२ ९ १६ २३
७॥ २५ ४२॥ ६०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	३ १० १७ २४
१० २७॥ ४५ ०	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	४ ११ १८ ०
१२॥ ३० ४७॥ ०	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	५ १२ १९ ०
१५ ३२॥ ५० ०	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	६ १३ २० ०
१७॥ ३५ ५२॥ ०	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	७ १४ २१ ०

यहाँ दिया घटा का समय सूर्योदय से लेना अर्थात् घड़ी के समय में सूर्योदय घटा कर लेना ।

इस चक्र से प्रगट होगा कि शनि, गुरु, मंगल, रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र इस क्रम से ग्रह का होरा होता है । रविवार को रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल का दिन, रात में ३ बार पूरा चक्र होकर शेष रात्रि में ३ और ग्रह का होरा बुध का होरा

तक होता है। बुध के बाद चन्द्र है इस कारण दूसरे दिन प्रातः चन्द्र का होरा होने से दूसरे दिन का नाम चन्द्रवार पड़ा। इसी प्रकार और ग्रहों के सम्बन्ध में जानना।

(३) नक्षत्र

यह पंचांग का तीसरा अंग है।

नक्षत्र २७ हैं और अभिजित मिलाकर २८ नक्षत्र होते हैं, परन्तु पंचांग में २७ ही नक्षत्र दिये रहते हैं।

क्रांति प्रदेश के २७ समान भाग करने से प्रत्येक भाग $१३^{\circ}-२०'$ का, १ नक्षत्र होता है। इस कारण चंद्रमा को $१३^{\circ}-२०'$ चलने में जो समय लगता है उसे नक्षत्र या दिन नक्षत्र कहते हैं। यहाँ नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र जानना।

मध्यम मान से चन्द्र नक्षत्र ६० घ ४३ पल का होता है। कभी २ इससे कम या अधिक का मान हो जाता है। इसी २३ नक्षत्र मिलकर चन्द्र को १ राशि होती है। प्रत्येक पंचांग में नक्षत्र के अतिरिक्त चन्द्र किस राशि में है यह भी दिया रहता है।

जिस प्रकार चन्द्र इन २७ नक्षत्रों पर से चलता है उसी प्रकार सूर्यादि ग्रह भी इन्हीं नक्षत्रों पर से चलते हैं। जिस प्रकार चन्द्र एक नक्षत्र एक दिन में चल लेता है उसी प्रकार सूर्य १३ या १४ दिन में एक नक्षत्र को पार कर करता है, ये सूर्य नक्षत्र कहलाते हैं। जब आर्द्रा पर सूर्य आता है तो वर्षा ऋतु का आरम्भ समझा जाता है। खेती के सम्बन्ध से किसान इन नक्षत्रों पर विशेष ध्यान देते हैं। सूर्य नक्षत्र को महा-नक्षत्र भी कहते हैं।

जिस दिन जिस नक्षत्र पर सूर्य जाता है वह पंचाङ्ग में लिखा रहता है। जैसे आर्द्रार्क=आर्द्रा + अर्क (सूर्य)=अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र पर उस दिन सूर्य गया। किस घड़ी पल पर उस नक्षत्र में प्रवेग किया वह भी दिया रहता है।

इसी प्रकार बुध, मंगल, गुरु आदि ग्रह भी किसी नक्षत्र पर पहुँचते हैं तो उस नक्षत्र पर पहुँचने का दिन समय आदि भी पंचाङ्ग में दिया रहता है। उस नक्षत्र के किस चरण में वह ग्रह आया है यह भी दिया रहता है।

ऊपर सूर्य का जो सौर नक्षत्र बताया है, उसके अतिरिक्त पंचाङ्ग में मायन सूर्य जिस नक्षत्र पर आया है वह भी दिया रहता है। कौन ग्रह किस राशि में है पंचाङ्ग में दिये रहते हैं। किसी पंचाङ्ग में दैनिक, किसी में साप्ताहिक दिये रहते हैं। २३ नक्षत्र की एक राशि होती है, इससे नक्षत्रों के प्रमाण से ग्रहों की राशि भी निकल

आती है। पचाङ्ग मे स्पष्ट ग्रह के अतिरिक्त कुण्डली चक्र भी दिये रहते हैं। इस प्रकार ग्रहों के सम्बन्ध की प्रत्येक सूचनाएँ पचाङ्ग मे दी रहती हैं।

(४) योग

यह पचाङ्ग का चौथा अंग है।

योग २७ है। चन्द्र और सूर्य की गति मे जब $१३^{\circ}-२०''$ का अंतर पडता है तब एक योग होता है। $३६०^{\circ}-२७ = १३^{\circ}-२०' = १$ योग। परन्तु नक्षत्र के प्रमाण से इन योगों का आकाश की स्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं है। योग केवल सूर्य चन्द्र का अन्तर बतलाते हैं।

२७ योगों के नाम

१ विष्कम्भ	८ धृति	१५ वज्र	२२ साध्य
२ प्रीति	९ शूल	१६ सिद्धि	२३ शुभ
३ आयुष्मान	१० गड	१७ व्यतीपात	२४ शुक्ल
४ सौभाग्य	११ वृद्धि	१८ वरीयान	२५ ब्रह्म
५ शोभन	१२ ध्रुव	१९ परिघ	२६ ऐन्द्र
६ अतिगड	१३ व्याघात	२० शिव	२७ वैधृति
७ सुकर्मा (सुकर्म)	१४ हर्षण	२१ सिद्ध	

(५) करण

यह पचाङ्ग का पाँचवाँ अंग है।

करण यह तिथि का आधा भाग है (१) तिथि के पूर्वार्द्ध अर्थात् पहिले आधे भाग मे एक करण और उत्तरार्द्ध (अन्त के आधे भाग मे) दूसरा करण होता है। इस प्रकार १ तिथि मे २ करण होते हैं।

१ चान्द्रमास मे ३० तिथि और ६० करण होते हैं। सूर्य और चन्द्र के बीच ६° का अन्तर पडने पर १ करण होता है। करण कुल ११ हैं उनके नाम ये हैं।

चर करण—(१) वव, (२) बालव, (३) कौलव, (४) तैतिल, (५) गर, (६) वणिज, (७) विष्टि।

स्थिर करण—(८) शकुनि, (९) चतुष्पद, (१०) नाग, (११) किस्तुज।

पूर्वार्द्ध=पूर्व दल पहिला आधा भाग) उत्तरार्द्ध=परदल (अन्त का आधा भाग)।

किस करण मे कौन-कौन तिथि होती है नीचे चक्र मे दिया है—

पक्ष	करण	किंस्तुघ्न	वव	वालव	कोलव	तैतिल	गरल	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग
शुक्ल पक्ष पूर्व दल	१	५, १२	२, ६	६, १३	३, १०	७, ४	४, ११	५, १५	०	०	०	
की तिथि उत्तर,,	०	१, ५, १५	५, १२	२, ६	६, १३	३, १०	७, १४	४, ११	०	०	०	तिथियाँ
कृष्ण पक्ष पूर्व	०	४, ११	१, ५	५, १२	२, ६	६, १३	३, १०	७, १४	०	३०	०	
की तिथि उत्तर,,	०	७	४, ११	१, ५	५, १२	२, ६	६, १३	३, १०	१४	०	३०	

चक्र मे जो अङ्क दिये है ये तिथियों के अङ्क है। १५ से पूर्णिमा, ३० से अमावस्या ममज्ञाना। ऊपर के चक्र से प्रगट होगा कि शुक्ल प्रतिपदा को पहिले किंस्तुघ्न फिर वव करण होता है। शुक्ल द्वितीया को वालव फिर कोलव होता है। १५ पूर्णिमा को पहिले चतुष्पद फिर नाग होता है।

इन्ही को अच्छे प्रकार मे समझाने के लिए किस तिथि में कौन करण होता है यह तिथि के अनुसार करण नीचे दिये है।

शुक्ल तिथि	१	२-६	३-१०	४-११	५-१२	६-१३	७-१४	८-१५	×	×
पूर्व दल	किंस्तुघ्न	वालव	तैतिल	वणिज	वव	कोलव	गरल	विष्टि	विष्टि	चतुष्पद
पर दल	वव	कोलव	गरल	विष्टि	वालव	तैतिल	वणिज	वव	शकुनि	नाग
कृष्ण तिथि	×	१-८	२-६	३-१०	४-११	५-१२	६-१३	७	१४	३०

भद्रा—विष्टि करण का दूसरा नाम है, जो शुभ कार्यों मे अनिष्ट कारक होती है। यह केवल मूर्ख आदि मे विचारणीय है।

पचाङ्ग मे किसी तिथि के पूर्वार्द्ध मे जो करण होता है प्राय वही किस समय तक रहेगा दिया रहता है। इसके बाद जो दूसरा करण जाना चाहिये वह नहीं दिया रहता। इस चक्र मे ममज्ञ में आ जावेगा कि किस तिथि के उत्तरार्द्ध में कौन करण होगा।

(६) दिनमान—सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन की अवधि को दिनमान कहते हैं। इससे प्रगट होता है कि दिन कितने घड़ी पल तक है। अर्थात् दिन कितने घड़ी पल लम्बा है।

दिन रात मे ६० घडो होती है=(६० घटी-दिनमान)=रात्रिमान।

प्रतिदिन दिनमान घटता-बढता रहता है। २१ मार्च से प्रतिदिन बढते-बढते ता० २१ जून को सबसे बडा दिन होता है। उसके उपरान्त घटना आरम्भ होता है। इसको पहिले समझा चुके है।

अक्षाश के अनुसार भी प्रत्येक स्थान मे दिन छोटा-बडा होता है। इसके विषय में भी यहाँ कुछ बतला देना है।

जब सूर्य उत्तर गोल मे होता है तब पृथ्वी के ध्रुव प्रदेश में ६ मास तक बराबर सूर्य दिखलाई देता है। उस समय दक्षिण ध्रुव पर ६ मास बराबर अन्धकार रहता है। जब सूर्य दक्षिण गोल मे होता है तो इसके विरुद्ध होता है अर्थात् दक्षिण ध्रुव मे ६ महीने का दिन और उत्तर ध्रुव मे ६ महीने की रात्रि रहती है।

उत्तर और दक्षिण ध्रुव के बीच में दोनों ध्रुवों से बराबर 90° पर पृथ्वी की मध्य रेखा होती है। मध्य रेखा के स्थान को निरक्ष देश भी कहते हैं, क्योंकि वहाँ पर अक्षांश शून्य होता है। निरक्ष देश में १२ घंटे का दिन और १२ घंटे की रात्रि होती है। मध्य रेखा से अक्षांशों की दूरी के अनुसार परम दिन रात्रि में अन्तर पडता है। मध्य रेखा से ६६° उत्तर के देश मे सबसे बडा दिन २४ घण्टे का और ७०° अंश पर सबसे बडा दिन २ मास का, ७८° अंश पर ४ मास का और 90° पर (ध्रुव देश में) परम दिन (सबसे बडा दिन) ६ मास का होता है। दूसरी ओर दक्षिण गोल मे ठीक इसके विरुद्ध होता है अर्थात् जब उत्तर गोल मे सबसे बडा दिन, जिस मान का होगा तो दक्षिण गोल मे उसी मान की सबसे बड़ी रात्रि होगी।

सायन सूर्य मेष पर जब आता है तब दिन रात्रि बराबर होती है। जब सूर्य सायन कर्क पर आता है तो सबसे बडा दिन और सबसे छोटी रात्रि होती है। जब सूर्य सायन तुला पर जाता है तब फिर दिन रात्रि बराबर होती है, जब सायन मकर पर आता है तो सबसे बड़ी रात्रि और सबसे छोटा दिन होता है। यह उत्तर गोल मे होता है और दक्षिण गोल मे इसके विपरीत होता है।

अंशों के अनुसार देशों का परम दिन का प्रमाण छोटा बडा होता है। ज्यो ज्यो अक्षांश बढता जायगा महा दिन (परम दिन) का प्रमाण बढता जायगा। महादिन का प्रमाण अक्षांशों के अनुसार नीचे चक्र मे दिया है।

अक्षांश के अनुसार महादिन चक्र

लघु भू	अक्षांश ने	तक	परम दिन- मान	लघु भू	अक्षांश से	तक	परम दिन- मान
मेखला	अंश	कला	अंश कला घं० मि०	मेखला	अंश	कला	अंश कला घं० मि०
१	१	०	८ ३४ १२ ३०	१६	६२	२६	६३ २२ २० ०
२	८	३४	१६ ४४ १३ ०	१७	६३	२२	६४ १० २० ३०
३	१६	४४	२४ १२ १३ २०	१८	६४	१०	६४ ५० २१ ०
४	२४	१२	३० ४८ १४ ०	१९	६४	५०	६५ २२ २१ ३०
५	३०	४८	३६ ३१ १४ ३०	२०	६५	२२	६५ ४८ २२ ०
६	३६	३१	४१ २४ १५ ०	२१	६५	४८	६६ ५ २२ ३०
७	४१	२४	४५ ३२ १५ ३०	२२	६६	५	६६ २१ २३ ०
८	४५	३२	४९ २ १६ ०	२३	६६	२१	६६ २९ २३ ३०
९	४९	२	५१ ५९ १६ ३०	२४	६६	२९	६६ ३२ २४ ०
१०	५१	५९	५४ ३० १७ ०	२५	६६	३२	६७ १८ १ १ महीना
११	५४	३०	५६ ३८ १७ ३०	२६	६७	१८	६९ ३३ २ "
१२	५६	३८	५८ २७ १८ ०	२७	६९	३३	७३ ५ ३ "
१३	५८	२७	५९ ५९ १८ ३०	२८	७३	५	७७ ४० ४ "
१४	५९	५९	६१ १८ १९ ०	२९	७७	४०	८२ ५९ ५ "
१५	६१	१८	६२ २६ १९ ३०	३०	८२	५९	९० ० ६ "

अध्याय १७

पचाग में मुहूर्त आदि के सम्बन्ध से इतर विषय भी दिये रहते हैं उनके सम्बन्ध में निम्नित ज्ञान यहाँ कराया जाता है ।

पचाग में सिद्ध योग क्रकच योग आदि दिये रहते हैं वे नव मुहूर्त से सम्बन्ध रखते हैं । मुहूर्त का स्वतंत्र विषय है यहाँ तो बहुत ही संक्षेप में आवश्यक बातें दी जाती हैं, जिनका उल्लेख कभी पचाग में आता है तो नया विद्यार्थी विचार में पड़ जाता है कि ये क्या हैं, इस कारण यहाँ समझाया जाता है ।

पंचक

जब चन्द्र कुम्भ और मीन राशियों में होता है तो पंचक होता है। अर्थात् जब धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्द्ध (अन्त का आधा भाग) और शतभिषा, पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद और रेवती नक्षत्र पर चन्द्र होता है तो पंचक कहलाता है।

इस पंचक में काम करने का फल पचगुना होता है अर्थात् पचगुनी हानि होती है। घर छाना, प्रेत दाह, घास लकड़ी आदि इकट्ठा करना, खाट बुनना, चुल्हा बनाना आदि कार्य पंचक में करना मना है, क्योंकि कहा जाता है कि पंचक में कोई काम करने से पाँच बार वही काम करना पड़ेगा। आवश्यक कार्य प्रेत दाह आदि करना होता है तो उसका फल कम करने को पृथक् विधान बताया गया है। दक्षिण यात्रा में भी यह वर्जित है।

द्विपुष्कर और त्रिपुष्कर योग

मृत्यु, विनाश, वृद्धि आदि का फल इसमें दुगुना या तिगुना होता है जैसे त्रिपुष्कर में कोई वस्तु घुमे तो ३ वस्तु घुमेगी। द्विपुष्कर में कोई हानि हो तो २ बार हानि होगी। इसी प्रकार सदा विचार होता है। अर्थात् द्विपुष्कर में हानि या लाभ दुगुना और त्रिपुष्कर में तिगुना होता है।

द्विपुष्कर योग			त्रिपुष्कर योग			
तिथि	वार	नक्षत्र	तिथि	वार	नक्षत्र	तिथि, वार
२	शनिवार	धनिष्ठा	२	शनिवार	विशाखा	और नक्षत्र जब
७	मंगलवार	चित्रा	७	मंगलवार	उ० फाल्गुनी	तीनों इस प्रकार
१२	रविवार	मृगशिर	१२	रविवार	पूर्व भाद्र०, पुनर्वसु	हो तब ये योग
					कृत्तिका, उत्तराषाढा	होते हैं ।

मुहूर्त—दिनमान = १५ = १ मुहूर्त

मुहूर्त लगभग २ घड़ी का होता है। दिनमान के प्रमाण से उसका १५ वा भाग करना तब एक मुहूर्त होता है। दिनमान के प्रमाण से मुहूर्त २ घड़ी से कम या अधिक भी हो जाता है। दिन में १५, रात में १५, सब ३० मुहूर्त दिन रात में होते हैं।

मुहूर्त चक्र

वार	रविवार	चंद्रवार	भौमवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
कुलिक (दुर्मुहूर्त)	१४ वाँ	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कटक	६	४	२	१४	१२	१०	८
यमार्द्ध	७	९	३	९	१५	५	१

जैसे रविवार को १४ वा मुहूर्त कुलिक है, ८ वा मुहूर्त कालवेला है, १० वा यमघट है इत्यादि इस चक्र के अनुसार जानो । इस चक्र में यह बताया है, कौन वार को गिनती में कौन से मुहूर्त का क्या नाम है ।

मुहूर्त निकालना ।

वर्तमान वार से गनि तक गिनो	२२=कुलिक	} ये मुहूर्त शुभकार्य में वर्जित हैं ।
“ बुधवार “ “	× २=कालवेला	
“ गुरुवार “ “	× २=यमघट	
“ मंगल “ “	× २=कटक	

जैसे रविवार है शनिवार तक गिना=७×२=१४ वा मुहूर्त कुलिक हुआ ।

कालवेला में यात्रा करने से मृत्यु, विवाह में स्त्री विधवा हो, व्रतबन्ध में यह योग हो तो ब्रह्महत्या होती है । इससे सब कार्यों में कालवेला वर्जित है ।

यमार्द्ध - वारवेला

दिन में ४ प्रहर होते हैं । १ प्रहर=लगभग ८ घड़ी का होता है ।

यमार्द्ध=१ प्रहर=४ घड़ी

दिनमान=८=यमार्द्ध घटी दिन की

रात्रिमान=८= “ “ रात्रि की

दिन मान कभी-कभी २, १६ घटी का होता है । इस कारण उपरोक्त विचार में यमार्द्ध ४ घटी का बताया है परन्तु दिन मान के ठीक विभाग करने से दिनमान की और रात्रिमान से रात्रि की यमार्द्ध की घटी निकल आती है । दिन रात में सब मिलाकर ८ यमार्द्ध होते हैं । यमार्द्ध को ही वारवेला कहते हैं । इसमें दिन और रात का पृथक् २ चौघडिया दिया रहता है और उस चौघडिया का नाम भी दिया रहता है । उसका फल नाम सदृश होता है । नीचे चौघडिया दिया है उसमें चौघडिया का नाम सकेताक्षर में दिया है वे ये हैं ।

च=चर अ=अमृत शु=शुभ उ=उद्वेग ला=लाभ का=काल रो=रोग ।

ये ७ ही है नाम सदृश इनका फल होता है । दिन मे ७ यमार्द्ध होते हैं फिर आठवें यमार्द्ध मे वही पहिला मुहूर्त आता है । इस प्रकार आगे क्रमानुसार सब मुहूर्त होते हैं ।

दिन का चौघड़िया

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार
उ	अ	रो	ला	शु	च	का
च	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	च	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	च	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	च	का

रात का चौघड़िया

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार
च	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	च	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	च	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	च	का
च	का	उ	अ	रो	ला	शु

इतवार के दिन को पहिले यमार्द्ध मे उद्वेग, दूसरे मे चर, तीसरे मे लाभ इत्यादि क्रमानुसार मुहूर्त यमार्द्ध मे भोगते हैं । जैसे मंगलवार को दिनमान २९ घ-२० प है - ८=१ यमार्द्ध ३ घ ४० प का हुआ । मान लो इष्ट ८ घड़ी है तो ७-२० तक २ यमार्द्ध पूरे होकर तीसरा यमार्द्ध वर्तमान है । मंगल वार को तीसरा=च=चर मुहूर्त हुआ । इसी प्रकार मुहूर्त निकाल लेना ।

राहु वारवेला और कालवेला

यमार्द्ध पर से और भी विचार

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार	वार
यमार्द्ध-राहु का वारवेला	४ चौथा	७	२	५	८	३	६
दिन का कालवेला	५ वा	२	६	३	७	४	१-८
रात्रि	॥	॥	६ छठा	४	२	७	५
							३ १-८

यहाँ बताया है कि किस दिन के कौन से यमार्द्ध में राहु का वारवेला होता है और दिन के या रात्रि के कौन से यमार्द्ध को कालवेला कहते हैं।

नक्षत्र विषघटी

४-४ घटी की विषघटी होती है।

नीचे नक्षत्रों के आगे विषघटी दी है उससे ४ घटी आगे तक विषघटी रहती है।

नक्षत्र विषघटी चक्र

क्रम	नक्षत्र	घटी	क्रम	नक्षत्र	घटी	क्रम	नक्षत्र	घटी	क्रम	नक्षत्र	घटी
१	अश्विनी	५०	८	पुष्य	२०	१४	स्वाती	१४	२२	श्रवण	१०
२	भरणी	२४	९	आश्लेषा	३२	१६	विशाखा	१४	२३	घनिष्ठा	१०
३	कृत्तिका	३०	१०	मघा	३०	१७	अनुराधा	१०	२४	शतभिषा	१८
४	रोहिणी	४०	११	पूर्वा	२०	१८	ज्येष्ठा	१४	२५	पूर्वा	१६
५	मृगशिर	१४	१२	उषा	१८	१९	मूल	५६	२६	उषा	२४
६	आर्द्रा	२१	१३	हस्त	२१	२०	पूर्वा	२४	२७	रेवती	३०
७	पूर्वफाल्गु	३०	१४	चित्रा	२०	२१	उषा	२०			

जैसे अश्विनी नक्षत्र में ५० घड़ी उपरांत ४५ घड़ी तक या रेवती में ३० घड़ी उपरांत ३४ घड़ी तक उस नक्षत्र में विषघटी होती है। इसका विचार नक्षत्र की घटियों पर से करना। नक्षत्र जब से आरम्भ हो उसके बाद ये घटियाँ गिन कर विषघटी निकाल लेना।

वार विषघटी

वार	सूर्यवार	चन्द्रवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
घटी	२०	२	१२	१०	७	५	२५

तिथि विषघटी

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी	१५	५	८	७	७	११	४	८	७	११	३	१३	१४	७	८

विषघटी नक्षत्र वार या तिथि में पूरी ४ घड़ी तक रहती है। ये शुभ कार्यों में वर्जित है।

यदि नक्षत्र आदि में पूरा ६० घटी का मान न हो तो अनुपात से (त्रैराशिक से) घटी निकाल लेना चाहिये और तिथि या वार नक्षत्र आरम्भ होने के बाद इतनी घटी (जो विषघटी में बताई है) गिनो, उसके आगे ४ घटी तक और विषघटी रहेगी।

विषघटी दोष नाश—यदि चन्द्र केन्द्र या त्रिकोण में बली हो या लग्नेश शुभ ग्रह युक्त हो तो विषघटी का दोष नहीं लगता।

गंड

राशि चक्र में किसी राशि के साथ किसी नक्षत्र का भी अन्त होता तो उस स्थान को गंड कहते हैं अर्थात् जहाँ दोनों का अन्त हो (केवल १ का नहीं)।

जैसे—(१) मेष राशि के आरम्भ और मीन राशि के अन्त का सन्धि स्थल=गंड है।

(२) कर्क राशि और आश्लेषा के अन्त पर व सिंह राशि और मघा के आरम्भ में।

(३) वृश्चिक राशि और ज्येष्ठा के अन्त पर व धन राशि और मूल के आरम्भ में।

इन तीनों गंड का नाम १ सधा गंड, २ रात्रि गंड, ३ दिवा गंड।

गंडात [नक्षत्र]

नक्षत्र	मघा, आश्लेषा	मूल, ज्येष्ठा	अश्विनी और रेवती
घटी	२+२=४ घटी	२+२=४ घटी	२+२=४ घटी

इन नक्षत्रों के आदि की २ घटी और अन्त की २ घटी इस प्रकार ४ घटी का एक [प्रत्येक] गंडात होता है।

मूल—जन्म समय में मूल लगे हैं या नहीं इसका विचार।

ऊपर जो ६ नक्षत्र गंडात के बताये गये हैं उन्हीं में मूल लगते हैं। वे नक्षत्र ये हैं १ आश्लेषा, २ मघा, ३ ज्येष्ठा, ४ मूल, ५ रेवती, ६ अश्विनी।

इन नक्षत्रों में बालक का जन्म होने से मूल लगता है। मूल भी कई प्रकार के है। गढात में बालक का जन्म हो तो पिता को कुछ समय तक बालक का मुख न देखना चाहिये। जब मूल की शान्ति कराने का समय हो जावे तब शान्ति कराकर मुख देखने का विधान है। इसका विचार फलित और मुहूर्त खण्ड में विशेष प्रकार से मिलेगा।

भद्रा

विशिष्ट करण को भद्रा कहते हैं यह शुभ कार्य में वर्जित है। विप, घात, तान्त्रिक कार्य में भद्रा में कार्य करने का विचार होता है। युद्ध, राजदर्शन, वैद्य बुलाना, जल तरना, शत्रु उच्चाटन, स्त्री सेवन, यज्ञ कार्य में इसका विचार करना पड़ता है।

इन तिथियों में भद्रा होती है—

पक्ष	शुक्ल पक्ष	कृष्णपक्ष
तिथि	८, १५, ४, ८	३, १०, ७, १४
	पूर्वार्द्ध	परार्द्ध

तिथि के आधे भाग में ही भद्रा होती है। इसका मोटा प्रमाण ३० घंटी का होता है। भद्रा के आरम्भ और अन्त समय [घंटी पल] पचाइ में दिया रहता है।

अग में भद्रा का वास इस प्रकार समझा जाता है

अंग	मुख	कठ	छाती	नाभि	कटि	पुच्छ
घंटी	५	१	११	४	६	३
फल	कार्यनाश	मरण	धननाश	वृद्धिनाश	कलह	विजय

वृश्चिकी भद्रा=शुक्ल पक्ष की भद्रा=कोई रात्रि की भद्रा को ही वृश्चिकी कहते हैं।

सर्पिणी " =कृष्ण " = " दिन " " सर्पिणी "

आवश्यक कार्य में सर्प का मुख और वृश्चिक की पूछ का एक भाग त्याग कर कार्य कर सकते हैं।

चन्द्र की राशि के अनुसार भद्रा का वास

चन्द्रराशि	लोक	फल	विशेष
१, २, ३, ८,	स्वर्ग	शुभ	धन धान्य मिले
६, ७, ९, १०,	पाताल	शुभ	धन प्राप्ति
४, ५, ११, १२,	मृत्यु	अशुभ	कार्य सिद्ध नहीं हो।

तिथि और नक्षत्र आदि के योग—

योग	ति १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०
१ तिथि स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	शेषनाग	कार्तिकेय	रवि	शिव	दुर्गा	काल	विक्रदेवा	विष्णु	काम	शिव	चन्द्र	पितर
२ तिथि सजा	नदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	न०	भ	ज	रिक्ता	पू.	नदा	भ	जया	रिक्ता	पूर्णा	
३ शून्य लग्न (विषमतिथिमे)	तुला		सिंह		मि		घन		कर्क		घन		मोन		वृष	
४ निश्चित नक्षत्र	उ पा अनु	तीनो	मकर	मघा	कन्या	रो	हस्त	पू भा	कृ	सिंह	मोन	रोहणी	अ.	चि.स्वा.		
	उत्तरा						मूल									

[७]

पञ्चरन्ध्र तिथि	तिथि	४	६	८	९	१२	१४
दोनो पक्ष की वर्जित घटी ..	घटी	(८)	(९)	(१४) (२५)	(१०)	(५)	
६ दश तिथि } सूर्य राशिनी	घन मोन	वृष कुम्भ	मेघ कर्क	मि. कन्या	सिंह वृ.	तुला मकर	
७ शुभ कार्य मे वर्जित योग }		हस्त मृग रवि सोम	अ. मङ्गल बुध	अनु. गुरु	पुष्य शुक्र	रेवती रोहणी शनि	
८ दश योग	बुध	मङ्गल गुरु	शुक्र	शनि	शुक्र	सोम	रवि
९ विप योग	बुध	रवि	सोम	म	गुरु	शुक्र	शनि
१० हुताशन योग			सोम	मङ्गल बुध	गुरु	शुक्र	रवि
११ ज्वालामुखी		अनु.	उत्तरा मघा		रोहिणी कृ.		

ये योग शुभ कार्य में वर्जित है नाम सदृश फल होता है । पक्षरक्ष को तिथि की वर्जित घटी छोड़कर उसकी दोष घटी ले सकते है ।
मास तिथि नक्षत्र योग—

योग	चैत्र	वैशाख	जेष्ठ	अषाढ	श्रावण	भाद्रो	कुँवार	कार्तिक	अगस्त	पूस	माघ	फागुन
१ शून्य तिथि दोनों पक्षकी ८-९	१२	१४	६	२-३	१-२	१०-११	५	७-८	४-५	५	६	३-४
शून्यतिथि कृष्ण पक्ष		१३	७				१४					
शून्यतिथि शुक्लपक्ष												
२ शून्य नक्षत्र	अ रां. चि. स्वा. ज. पा. पू. पा. ज. पा. श. पू. मा. म.	पुष्य ध. श्र. रे.	कृ. चि. अ. हं. मू.	ज्ये.								
३ शून्य राशि	कुम्भ मीन मृग मि. मे.	कन्या वृ. तुला धन कर्क	मकर सिंह									
४ मन्वादि तिथि	शुक्ल ३-१५	शु १४ १०-१५ ३०-८ ३	शु ९ १५-१२ ७ ११									
५ युगादि तिथि	शुक्ल ३ त्रेता द्वापर सतयुग कलियुग	कृ. १३ शु. ९	कृ. ३									

शून्य तिथियो को मास दाय तिथि भी कहते है । शून्य नक्षत्र राशि और मन्वादि तिथि और युगादि तिथि शुभ कार्य में वर्जित है धन नाशक है ।

तिथि वार नक्षत्र के योग=चर योग

योग	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
१ सिद्धि योग		— तिथि	जया (३, ८, १३)	भद्रा (२, ७, १२)	पूर्णा (५, १०, १५)	नदा (१, ६, ११)	रिक्ता (४, ९, १४)	सब दोपों को नाश करता है }
२ मृत्यु योग { अधमयोग }	नदा	भद्रा	नदा	जया	रिक्ता	भद्रा	पूर्णा	घातक है । शुभ कार्य में वर्जित है ।
३ दध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उ. पा	घनि	उ. फा.	ज्ये	रेवती	शुभकार्य में वर्जित ।
४ क्रकच योग	ति. १२	११	१०	९	८	७	६	तिथि वार मिल कर १३ होने से यह योग होता है शुभ में वर्जित है
५ सम्बर्तक योग	सप्तमी	—	—	प्रति	—	—	—	सदा वर्जित
६ दग्ध योग	ति. १२	११	५	३	६	८	९	
७ विष योग	„ ४	६	७	२	८	९	७	
८ हुताशन योग	„ १२	६	७	८	९	१०	११	
९ यमघट योग	मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृत्ति	रोहि	हस्त	शुभ कार्य, यात्रा में वर्जित
१० उत्पात योग	विशा	शत	घनि.	रेवती	रोहि	पुष्य	उ. फा.	
११ मृत्यु नक्षत्र	ज्ये	उ. भा	पू. भा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	
१२ यमद्वष्ट योग	मघा	मूल	कृ	पू. षा	रेव	रोहि	श्रवण	शुभ कार्य में वर्जित
	घनि	विशा	भ	पुन०	अश्वि	अनु	शत	
१३ चर योग	पू. पा	आर्द्रा	वि	रो	पुष्य	म	मूल	
१४ मूलवज्र योग	भरणी	चि	उ. पा	घनि	उ. फा.	ज्ये	रेव	
१५ अमृतसिद्धि	„ हस्त	मृग	अश्वि	अनु	पुष्य	रेवती	रोहि	
१६ सर्वार्थसिद्धि	„ हस्त	श्र	अश्वि	रोहि	रेवती	रे	श्र	
	मूल	रोहि	उ. भा	अनु	अनु	अनु	रोहि	इन में सब कार्य को सिद्धि होती है
	तीनो	मृग.	कृ	हस्त	अश्वि	अश्वि	स्वा	
	उत्तरा	पुष्य	श्ले	कृ	पुष्य	पुन		
	पुष्य	पुष्य	श्ले	कृ	पुष्य	पुन		
	अश्वि	अनु		मृग	पुन०	श्रवण		

तिथि वार या नक्षत्र के योग से विशेष योग बनते हैं। सिद्धि योग को छोड़ कर और सब अशुभ योग हैं।

(१) सिद्धि योग, (१५) अमृत सिद्धि योग (१६) सर्वार्थ सिद्धि योग, सर्व दोष नाशक और कार्य सिद्ध करते हैं। (२) मृत्युयोग, घातक तिथियाँ हैं और सब अशुभयोग शुभ कार्यों में वर्जित हैं। (४) क्रकच योग में तिथि और दिन मिलकर १३ होने से शुभ कार्य में वर्जित हैं।

(५) मन्वर्तक योग सदा वर्जित है।

उपरोग मृत्युयोग में १२ घटी और यम घट में ८ घटी वर्जित करना १ उपर्युक्त अशुभ योगों में आवश्यक होने पर मध्याह्न के उपरान्त कार्य करने में अशुभता घट जाती है। यदि चन्द्र शुभ हो तो मृत्यु, क्रकच, दग्ध आदि योगों का अशुभ फल नहीं होता। विशेष कर यात्रा में इसका विचार होता है। दुष्ट योग और सिद्ध योग एक साथ पड़े तो अच्छा योग होकर दुष्ट फल को नष्ट करता है।

आनन्द आदि योगों का ज्ञान और फल

आनन्द आदि २८ योग हैं

क्रम	नाम	फल	क्रम	नाम	फल
१	आनन्द	सिद्धि	८	श्रीवत्स	सीमाग्य सम्पत्ति
२	कालदंड	मृत्यु	९	वज्र	धन
३	धूम्र	अनुख	१०	मृदंग	लक्ष्मी धन
४	घ्राता	सीमाग्य	११	धन	राज्यमान
५	सीम्य	बहुत नुख	१२	मित्र	पुष्टि
६	ध्वाध	धन नाश	१३	मानन	सीमाग्य
७	केतु	सीमाग्य	१४	पद्म	वनागम

क्रम	नाम	फल	क्रम	नाम	फल
१५	लुम्ब	धन धन	२२	ममल	धन धन
१६	उत्पात	प्राण नाश	२३	गद	अक्षय विद्या
१७	मृत्यु	मृत्यु	२४	मातंग	कुलवृद्धि
१८	काण	क्लेश	२५	रक्ष(राक्षस)	महाकष्ट
१९	मित्र	कार्यसिद्ध	२६	चर	कार्यमित्र
२०	शुभ	कल्याण	२७	सुस्विर	ग्रहारभ
२१	अमृत	राज सम्मान	२८	प्रवर्धमान	विवाह

इन योगों को जानने की रीति

रवि को अश्विनी से, सोमवार को मृगशिर में, मंगल वार को आश्लेषा से, बुधवार को हस्त में, गुरुवार को अनुराधा में, शुक्रवार=उ पा , शनि=शतभिषा से गिने तो आनन्द आदि योग मिलता है। इसमें अभिजित भी गिना जाता है। नीचे चक्रमे यही समझाया है।

आनन्द आदि योग चक्र—

योग क्रम	रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
क्रम	नक्षत्र	न०	न०	न०	न०	न०	न०
१ १-	अश्विनी	५	६	१३	१७	२१	२५
२ २-	भरणी	६	१०	१४	१८	२२	२६
३ ३-	कृत्तिका	७	११	१५	१९	२३	२७
४ ४-	रोहिणी	८	१२	१६	२०	२४	२८
५ ५-	मृगशिर	९	१३	१७	२१	२५	१
६ ६-	आर्द्रा	१०	१४	१८	२२	२६	२
७ ७-	पुनर्वसु	११	१५	१९	२३	२७	३
८ ८-	पुष्य	१२	१६	२०	२४	२८	४
९ ९-	आश्लेषा	१३	१७	२१	२५	१	५
१० १०-	मघा	१४	१८	२२	२६	२	६
११ ११-	पूर्वाषाढा	१५	१९	२३	२७	३	७
१२ १२-	उषा	१६	२०	२४	२८	४	८
१३ १३-	हस्त	१७	२१	२५	१	५	९
१४ १४-	चित्रा	१८	२२	२६	२	६	१०
१५ १५-	स्वाती	१९	२३	२७	३	७	११
१६ १६-	विशाखा	२०	२४	२८	४	८	१२
१७ १७-	अनुराधा	२१	२५	१	५	९	१३
१८ १८-	ज्येष्ठा	२२	२६	२	६	१०	१४
१९ १९-	मूला	२३	२७	३	७	११	१५
२० २०-	पूर्वाषाढा	२४	२८	४	८	१२	१६
२१ २१-	उषा	२५	१	५	९	१३	१७
२२ २२-	अभिजित	२६	२	६	१०	१४	१८
२३ २३-	श्रवण	२७	३	७	११	१५	१९
२४ २४-	धनिष्ठा	२८	४	८	१२	१६	२०
२५ २५-	शतभिषा	१	५	९	१३	१७	२१
२६ २६-	पूर्वाभा	२	६	१०	१४	१८	२२
२७ २७-	उषा भा.	३	७	११	१५	१९	२३
२८ २८-	रेवती	४	८	१२	१६	२०	२४

विवरण—

योग का क्रम आरम्भ में जो दिया है वह योग का क्रमानुसार अंक है। उस क्रम में कौन योग आता है ऊपर दिया है। दिन के नीचे जो अंक है वे नक्षत्र के क्रम के अंक हैं। इष्ट दिन जो चन्द्र नक्षत्र हो उस नक्षत्र के क्रम का अंक उस दिन के नीचे जहाँ मिलेगा उसके बाईं ओर जो योग का अंक होगा वही क्रम के अनुसार, उस दिन योग होगा।

जैसे मंगलवार को पुष्य नक्षत्र है तो उस दिन कौन सा योग होगा जानना है।

पुष्य नक्षत्र के क्रम का अंक ८ है। मंगलवार के नीचे ८ अंक खोजने से प्रकट हुआ कि सब के अन्त में ८ दिया है। ८ के बाईं ओर योग देखा तो योग का क्रम २८ मिला। २८ वाँ योग प्रवर्तमान होता है, इससे प्रकट हुआ कि उस दिन यह योग था। उसका फल विवाह है अर्थात् अच्छा फल है, आनन्द-का दिन है।

सूर्य नक्षत्र के विशेष नाम

अश्विनी से लेकर ४ नक्षत्र तक अंतरंग इसके उपरान्त ३ नक्षत्रों की बहिरंग सज्ञा है। इसके उपरान्त ४ नक्षत्र फिर अंतरंग कहलावेंगे। इसी क्रम में वर्तमान सूर्य नक्षत्र तक गिनकर देखना कि वर्तमान नक्षत्र अंतरंग है या बहिरंग।

अंतरंग में बाहर से घर में लाना, बहिरंग में घर से बाहर ले जाना। पशु आदि आदि को अंदर लाना या बाहर भेजना इसके अनुसार मुहूर्त में विचार होता है।

सूर्य नक्षत्र-संख्या

संज्ञा	नक्षत्र					
अंतरंग नक्षत्र	अश्वि भ क रो	पुष्य श्ले म पूषा	स्वा वि अनु ज्ये	अभि श्र ध शत		
बहिरंग ,,	मृग, आर्द्रा पुन०	उषा ह चित्रा	मू. पूषा उषा	पूषा उभा. रे.		

समय विभाग संज्ञा

१ दिन में=१५ मुहूर्त। १ मुहूर्त=लगभग २ घड़ी का।

दिन विभाग	प्रातः काल	मगध	मध्याह्न	अपराह्न	सायंकाल
घड़ी तक	सूर्योदय से	उपरान्त	उपरान्त	उपरान्त	उपरान्त
३ घड़ी तक	३ मुहूर्त तक	३ मुहूर्त तक	३ मुहूर्त तक	३ मुहूर्त तक	
सूर्य अस्त में	(साय) सध्या	प्रदोष	महानिशा	उषाकाल	अरुणोदय
समय	३ घड़ी तक	उपरान्त	३ अर्द्ध रात्रि की	५५ घड़ी	५७ घड़ी
			मुहूर्त तक	मध्य की २	घड़ी में
					में

५८ घड़ी के उपरान्त सूर्योदय, सूर्योदय से ३ घड़ी तक प्रातः सध्या और सूर्यास्त से ३ घड़ी तक साय सध्या भी कहलाती है।

अध्याय १८

पंचाङ्ग कैसे देखना और उपयोग

जिस सम्बत् का वह पंचाङ्ग होता है आरम्भ में ऊपर की ओर वह सम्बत् और शाका दिया रहता है। प्रत्येक पृष्ठ पर चाद्र मास पक्ष ऋतु अयन और गोल भी दिया रहता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी महीने का नाम और सन् ऊपर दाहिनी ओर दिया रहता है।

चैत्र शुक्ल से वर्ष आरम्भ होता है। उसमें नीचे कई प्रकार की खड़ी पक्तियाँ दी रहती हैं। उनमें से प्रत्येक को समझाते हैं।

[१] तिथि—आरम्भ में तिथि रहती है। शुक्ल पक्ष में १ से १५ तक और कृष्ण पक्ष में १ से १४ और ३० (अमावस्या) दी रहती है। बीच में जो तिथि हानि होती है वह पंचाङ्ग में नहीं दी रहती। जो तिथि वृद्धि होगी वह २ बार लिखी मिलेगी। १५ तिथि को पूर्णिमा और ३० को अमावस्या सदैव समझना।

[२] वार—उसके आगे की पक्ति में वार दिया रहता है। वार का नाम सकेताक्षर में लिखा रहता है। र=रविवार या सू=सूर्यवार (रविवार=इतवार), च=चंद्रवार (सोमवार), म=मंगलवार या भौ=भौमवार, बु=बुधवार, गु=गुरुवार या बृ=बृहस्पति-वार (गुरुवार), शु=शुक्रवार या भृ=भृगुवार (शुक्रवार), श=शनिवार, इस प्रकार दिन का नाम पढ़ लेना। उस तिथि को कौन वार है या वार के अनुसार उस दिन कौन तिथि है जान लेना।

[३] घड़ी-पल—आगे की पक्ति में तिथि की घड़ी पल दिया है। पहिली पक्ति में जो तिथि दी है वह, कितने घड़ी पल तक है इससे प्रगट होता है। सूर्योदय के उपरान्त उतने घड़ी पल तक वह तिथि रहेगी ऐसा समझना। जैसे, ४१श०।४-१२ दिया है, इससे प्रगट होता है कि शनिवार को चौथ सूर्योदय के उपरान्त ४ घड़ी १२ पल तक है। उसके उपरान्त उसी दिन पचमी लग जायगी। वह पंचमी कब तक रहेगी उसके आगे दिन में लिखा होगा जैसे ५।र०।८-४८ अर्थात् इतवार को सूर्योदय उपरान्त ८ घड़ी ४८ पल तक पचमी रहेगी। इसके उपरान्त इतवार को ही छट लग जायगी।

पंचाङ्ग में जो घड़ी पल दिया रहता है उसके घटा मिनट बनालो तो प्रगट हो जायगा कि सूर्योदय के उपरान्त उतने घण्टा मिनट तक वह तिथि रहेगी। उसमें सूर्योदय का समय जोड़ दो तो घड़ी के अनुसार उस तिथि के अन्त होने का समय जाना जा सकता है। पंचाङ्ग में ही सूर्योदय का समय दिया रहता है। जहाँ सूर्य उदय दिया है सकेताक्षर सू उ लिखा रहता है।

जैसे शनिवार को चौथ ४ घ० १२ प० है ४ घड़ी $\times \frac{3}{4} = १$ घ० ३६ मि०
मान लो उस दिन ६ वजे सूर्योदय था तो १२ पल $\times \frac{3}{4} = \frac{४-४८}{४-४८}$
४ घ० १२ प० के १ घ० ४० मि० ४८ से० योग १-४०-४८
हुए। इनमें सूर्योदय के ६ घंटा जोड़े तो ७ घ० + सूर्योदय ६-०-०
४० मि० ४८ में० हुए। इस समय तक उमा योग ७-४०-४८
दिन चौथ तिथि रहेगी।

घड़ी पल के घण्टा मिनट और घण्टा मिनट के घड़ी पल बनाने का अभ्यास कर लेना चाहिये, क्योंकि इसका अधिक काम पड़ता है। घड़ी पल के घण्टा मिनट या घण्टा मिनट के घड़ी पल बनाने का चक्र आगे दिया है। इस चक्र में घड़ी आदि के घण्टा आदि बनाने का एक चक्र है और घण्टा आदि के घड़ी पल बनाने का दूसरा चक्र है। पहिले चक्र में जो घड़ी दिया है उसका उत्तर घण्टा मिनट में आयगा, यदि पल है तो उत्तर मिनट सेकण्ड में आयगा। विपल है तो सेकण्ड में उत्तर आयगा।

इसी प्रकार दूसरे चक्र में दिया हुआ घण्टा का उत्तर दिन घड़ी पल में, मिनट का घड़ी पल में और सेकण्ड का पल विपल में उत्तर आयगा।

जैसे ११ घं० १० मिनट ८ से०	३१ घड़ी ४० पल ५ विपल
११ घंटा= दिन-घड़ी-पल वि०	३१ घड़ी= घ० मि० से०
०-२७-३०-०	१२-२४-०
१० मिनट= ०-२५-०	४० पल= १६-०
८ सेकण्ड= ०-२०-०	५ विपल= २-०
योग=०-२७-५५-२०-०	योग= १२-४०-२
=०दिन २७ घड़ी २५ पल २० विपल	=१२ घण्टा ४० मि० २ से०

यदि अपने पास यह तुलनात्मक चक्र बना कर रख लो तो अच्छा होगा।

घंटा और घड़ी का तुलनात्मक चक्र—

घड़ी के घटा						घंटा की घड़ी					
घड़ी=घंटा	मिनट	घड़ी=घंटा	मिनट	घंटा=दिन	घड़ी पल	घंटा=दिन	घड़ी पल	घंटा=दिन	घड़ी पल	घंटा=दिन	घड़ी पल
पल=मिनट	सेकेण्ड	पल=मिनट	सेकेण्ड	मिनट=घड़ी	पल	विपल	मि =घड़ी	पल	विपल	मि =घड़ी	पल
वि.=से.	X	वि.=से	X	सेकेण्ड=पल	वि	X	से =पल	वि	X	से =पल	वि
१	०	२४	३१	१२	२४	१	०	२	३०	३१	१
२	०	४८	३२	१२	४८	२	०	५	०	३२	१
३	१	१२	३३	१३	१२	३	०	७	३०	३३	१
४	१	३६	३४	१३	३६	४	०	१०	०	३४	१
५	२	०	३५	१४	०	५	०	१२	३०	३५	१
६	२	२४	३६	१४	२४	६	०	१५	०	३६	१
७	२	४८	३७	१४	४८	७	०	१७	३०	३७	१
८	३	१२	३८	१५	१२	८	०	२०	०	३८	१
९	३	३६	३९	१५	३६	९	०	२२	३०	३९	१
१०	४	०	४०	१६	०	१०	०	२५	०	४०	१
११	४	२४	४१	१६	२४	११	०	२७	३०	४१	१
१२	४	४८	४२	१६	४८	१२	०	३०	०	४२	१
१३	५	१२	४३	१७	१२	१३	०	३२	३०	४३	१
१४	५	३६	४४	१७	३६	१४	०	३५	०	४४	१
१५	६	०	४५	१८	०	१५	०	३७	३०	४५	१
१६	६	२४	४६	१८	२४	१६	०	४०	०	४६	१
१७	६	४८	४७	१८	४८	१७	०	४२	३०	४७	१
१८	७	१२	४८	१९	१२	१८	०	४५	०	४८	२
१९	७	३६	४९	१९	३६	१९	०	४७	३०	४९	२
२०	८	०	५०	२०	०	२०	०	५०	०	५०	२
२१	८	२४	५१	२०	२४	२१	०	५२	३०	५१	२
२२	८	४८	५२	२०	४८	२२	०	५५	०	५२	२
२३	९	१२	५३	२१	१२	२३	०	५७	३०	५३	२
२४	९	३६	५४	२१	३६	२४	१	०	०	५४	२
२५	१०	०	५५	२२	०	२५	१	२	३०	५५	२
२६	१०	२४	५६	२२	२४	२६	१	५	०	५६	२
२७	१०	४८	५७	२२	४८	२७	१	७	३०	५७	२
२८	११	१२	५८	२३	१२	२८	१	१०	०	५८	२
२९	११	३६	५९	२३	३६	२९	१	१२	३०	५९	२
३०	१२	०	६०	२४	०	३०	१	१५	०	६०	२

(४) नक्षत्र-इसके उपरान्त नक्षत्र दिये रहते हैं । नक्षत्रों का नाम संकेताक्षरों में दिये रहते हैं । जैसे अ=अश्विनी, भ=भरणी, कृ=कृत्तिका इत्यादि । इन नक्षत्रों के नाम अच्छी प्रकार स्मरण रखना चाहिये । सब का नाम क्रम पूर्वक दिये रहते हैं । इसमें अभिजित नहीं रहता, २७ ही नक्षत्र दिये रहते हैं ।

कभी कभी एक ही संकेताक्षर के २ नक्षत्र होते हैं, परन्तु किसके बाद कौन नक्षत्र आता है स्मरण रखोगे तो भूल नहीं होगी । जैसे आ=आर्द्रा के बाद पु=पुनर्वसु, इसके बाद पु=पुष्य । इसी प्रकार पूर्वा और उत्तरा ३ बार आता है । कही कही पूर्वा को पू० और उत्तरा को उ० ही दिया रहता है । यदि क्रम स्मरण रहे तो कभी भूल नहीं होगी । जैसे मघ के बाद फाल्गुन आता है उसी प्रकार म=मघा के उपरांत पू=पूर्वा फाल्गुनी, उ=उत्तरा फाल्गुनी आते हैं । जिस प्रकार जेठ के बाद असाढ़ आता है उसी प्रकार ज्येष्ठा और मूल के बाद पूर्वाषाढा आता है । ज्ये=ज्येष्ठा, मू=मूल, के बाद, पू=पूर्वाषाढा, उ=उत्तराषाढा होगा । श्रवण के बाद भाद्रपद मास आता है उसी प्रकार श्रवण धनिष्ठा शतभिषा के उपरांत पूर्वा भाद्रपद आयगा । श्र श्रवण, ध=धनिष्ठा ण=शतभिषा, पू=पूर्वाभाद्रपद, उ=उत्तरा भाद्रपद है । अंत में रे रेवती आती है, अश्विनी और अनुराधा दोनों के लिये अ० लिखते हैं । रेवती के बाद अ=अश्विनी, विशाखा के बाद अ=अनुराधा होता है । कभी कभी अनुराधा को ऽनु भी लिख देते हैं ।

पंचाग में कभी-कभी एक नक्षत्र ६० घड़ी से अधिक रहने के कारण दूसरे दिन भी दिया रहता है । नक्षत्र के आगे घड़ी पल दिये हैं जिससे प्रगट होता है कि सूर्योदय उपरान्त वह नक्षत्र उस दिन उतने घड़ी पल तक रहेगा उसके बाद आगे के नक्षत्र का भोग समझना । जैसे सोमवार को मघा ६-५७ है तो सूर्योदय से ६ घ० ५७ प० बाद तक मघा नक्षत्र रहेगा, उसके बाद आगे का नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी उसी दिन लग जायगा । दित रात के ६० घड़ी में से ६-५७ घटा दो तो शेष ५३ घ० ३ पल तक उस दिन पूर्वा फाल्गुनी रहेगा । अब देखना है कि पूर्वा फाल्गुनी कब तक और है । उसके आगे दिन मंगलवार को देखा तो पूर्वा फा० १३।२४ लिखा है अर्थात् मंगलवार को पू० फा० इतना और है । पू० फा० सोमवार को (५३-३) + मंगलवार को (१३-२४) = योग ६६ घ० २७ प० यह पूर्वा फाल्गुनी के पूरे भोग का मान हुआ । इसे भभोग अर्थात् पूर्ण नक्षत्र का भोग कहते हैं । पूर्ण नक्षत्र की जितने घड़ी पल भोग हो उसे भभोग या सर्वर्ष भी कहते हैं । जितना नक्षत्र व्यतीत हो चुका अर्थात् भुक्त हो चुका उसे भयात (भभुक्त) या भुक्तर्ष या गतर्ष कहते हैं । भोगने को जो घड़ी पल शेष रहे उसे भोग्य या भोग्यर्ष कहते हैं । ऋक्ष=नक्षत्र । भुक्त + भोग्य=भभोग=सर्वर्ष=पूरा नक्षत्र । भुक्त=भयात भुक्तर्ष=गतर्ष=जितनी घड़ी व्यतीत हो गई । भोग्य=भोग्यर्ष=जितनी घड़ी व्यतीत होने को शेष रही ।

(५) योग--इसके आगे योगों के नाम दिये रहते हैं। योगों के नाम पहिले दे चुके हैं। पंचाग में योग के नाम का संकेताक्षर दिया रहता है। उनका क्रम स्मरण रखने से जाना जा सकता है कि संकेताक्षर किस नाम का सूचक है। इसमें कई जगह भूल हो जाना संभव है—जैसे हर्षण के बाद व=वज्र, व्यतीपात के बाद व=वरीयान। साध्य के बाद शु=शुभ, फिर शु=शुक्ल। वज्र के बाद सि=सिद्धि, शिव के बाद सि=सिद्ध। ऽगं अतिगडा। ऐसी अवस्था में आगे पीछे के संकेताक्षर देख कर बीच में कौन योग है जान सकते हो।

पंचाग में क्रम देखते समय इसका भी ध्यान रहे कि बीच के कोई योग तो नहीं छूट गये। क्योंकि जो योग सूर्योदय पर होगा वही पंचाग में बताया जाता है। उसके आगे का और कोई योग भुक्त हुआ हो तो नहीं दिया रहता। परन्तु कोई कोई पंचाग वाले उसकी घड़ी पल भी दे देते हैं। जैसे शनिवार को व० २-३९। इतवार को वि० १-९ सोमवार को आ० ४८-५७। अर्थात् शनिवार को वैधृति योग २-३९ है। इतवार को विष्कम्भ १-९ है। इसके बाद प्रीति योग लगा, परन्तु पंचाग में प्रीति योग नहीं दिया केवल ५३-१५ दिया है। इससे प्रगट होता है कि प्रीति योग ५३-१५ तक है, उपरान्त आयुष्मान् योग लगा और सोमवार को वही आयुष्मान् ४८-५७ तक है। इस घड़ियों के पिछली बताई रीति से घटा मिनट बनाकर घड़ी का समय बना लो।

(६) करण—किसी किसी पंचाग में दोनों करण दिये रहते हैं। पूर्व में जो करण है उसका नाम फिर उसकी घड़ी पल उपरान्त दूसरा करण (जो उत्तरार्द्ध में आता है) वह भी दिया रहता है और उसके घड़ी पल दिये रहते हैं। परन्तु अधिकतर पञ्चागों में एक ही करण दिया रहता है। सूर्योदय पर जो तिथि होती है उसी तिथि का करण चाहे वह पूर्वार्द्ध या परार्द्ध का हो दिया रहता है। जैसे पञ्चाग में शुक्ल ७ (सप्तमी) ०-९ दिया है तो सप्तमी के अंत का (उत्तरार्द्ध) करण वणिज होता है वह व १०-९। दिया रहेगा। क्योंकि ०-९ पर तो तिथि का ही अन्त होने से करण का भी अन्त हो जायगा। मान लो कृष्ण ३ मंगलवार ४४-३७ तिथि दी है तो तीज को पूर्वार्द्ध में वणिज है वह दिया है व० १२-३५=वणिज करण का भोग्यपूर्ण तिथि का आधा दिया है वह इस प्रकार है। द्वितीया ४०-३९ सोमवार को थी ६०-(४०-३९)=१९-२१ तीज सोमवार को +४४-३७ तीज मंगल को=६३-५८ पूरी तीज=आधा ३१-५९ हुआ। मंगलवार को शेष तीज पंचाग में (४४-३७)—(३१-५९) आधा १ करण=शेष १२-३८। यह १२-३८ पहिले करण का और भोगने को रहा। इस कारण पञ्चाग में व १२-३८ दिया है—४४-३७

१२-३८ भुक्त करण

शेष ३१-५९=आगे का विष्टि करण परार्द्ध में होगा।

(७) दिनमान — इसके आगे पञ्चांग में दिनमान दिया रहता है । किसी-किसी पञ्चांग के अन्त में और किसी में पहिले इसे दे देते हैं । सूर्योदय से सूर्य अस्त तक जितने घड़ी पल होते हैं यही दिनमान में दिया रहता है । ६० घटी से दिनमान घटाने से रात्रि मान होता है ।

(८) चन्द्र—आगे चन्द्र की स्थिति दी रहती है । प्रत्येक राशि में चन्द्र कब आता है और कब तक रहता है यह दिया रहता है । पञ्चांग में चौथ शनिवार को वृ २९-२५ (चन्द्र) दिया है । इसका अर्थ यह है कि वृपराशि पर चन्द्र २६ घ० २५ प० के उपरान्त आवेगा । यहाँ जो घड़ी पल राशि के आगे दिया रहता है उससे समझना कि उस राशि पर उतने घड़ी पल के उपरान्त चन्द्र आयगा । रविवार को वृष पर दिन और रात्रि भर चन्द्र रहा, इसलिए पञ्चांग में केवल वृष दिया है । या कोई राशि का नाम भी नहीं देते, इससे समझना अभी ऊपर बताई राशि पर ही चन्द्र है । सोमवार को मि० १९-२० लिखा है अर्थात् सोमवार को १९-२० तक वृष का ही चन्द्र रहेगा, उसके उपरान्त उसी समय से मिथुन राशि पर चन्द्र आवेगा । इसमें राशि के नाम सकेताक्षर से कभी-कभी दिये रहते हैं जिनसे ही राशिका नाम जान लेना । पहिले का और आगे का सकेताक्षर पढ़ लेने से बीच का सकेताक्षर समझ में आ जाता है ।

(९) सूर्यस्पष्ट—इसके उपरान्त मिश्रकालीन या प्रातःकालीन स्पष्ट सूर्य दिया रहता है । उस दिन प्रातःकाल या मिश्रकाल पर सूर्य की स्थिति दी रहती है, अर्थात् सूर्य उस समय ठीक किस स्थान पर (किस राशि, अश, कला, विकला पर) है दिया रहता है । इसके आगे सूर्य की प्रतिदिन की गति दी रहती है । प्रतिदिन ६० घड़ी में कितने कला विकला चलता है यह गति दी रहती है । जैसे सूर्य ६-१२-१८-२८ दिया है तो ६ राशि, १२ अश, १८ कला, २८ विकला पर सूर्य उस समय है ऐसा समझना । गति ६०-७ दी है तो सूर्य की दिन-रात्रि की गति ६० कला ७ विकला समझना । ग्रहों की गति प्रायः कला विकला में दी रहती है ।

किसी पंचाङ्ग में मिश्र मान दिया रहता है और प्रातःकाल का सूर्य न देकर मिश्रकालीन सूर्य दिया रहता है ।

मिश्रकाल—यह पंचाङ्ग में दिये हुए ग्रहों का इष्टकाल है जो प्रायः अर्द्धरात्रि समय का दिया रहता है ।

अर्द्धरात्रि का इष्ट जानना = (३० + दिनमान २) या (६० - रात्रिमान २) मान लो दिनमान ३४-४ है तो दिनार्द्ध=१७ २ हुआ + ३०=४७ घड़ी २ पल या (६० - ३४-४ दिनमान) = २५-५६ रात्रिमान = रात्रि अर्द्ध १२-५८ ६० - (१२-५६ रात्रि अर्द्ध) = ४७ घड़ी २ पल ।

इसलिये रात्रि अर्द्ध का इष्ट = ४७-२ हुआ, यही साधारण प्रकार से मिश्रमान हुआ। पंचाङ्ग में उस दिन का ठीक मिश्रमान गणित से निकाल कर दिया रहता है। किसी पंचाङ्ग में प्रतिदिन का मिश्रमान नहीं दिया रहता।

अर्द्ध रात्रि के लगभग (मिश्रकाल) में जो सूर्य की ठीक स्थिति होगी वह मिश्र कालीन सूर्य स्पष्ट किसी-किसी पंचाङ्ग में दिया रहता है। प्रातः काल या मिश्रकाल के सूर्य को अपने इष्टकाल (समय) का गणित से बनाना पड़ता है तब इष्ट कालीन सूर्य स्पष्ट कहलाता है। सूर्य दिन रात में जितनी कला विकला चलता है और सूर्योदय से या मिश्र काल से इष्ट तक का अन्तर निकाल कर उस अन्तर की चाल गणित से निकाल कर पंचाङ्ग में दिये हुए सूर्य में जोड़ने से इष्टकालीन सूर्य स्पष्ट बनता है। इसका गणित उदाहरण सहित गणित खण्ड में मिलेगा।

(१०) इसके उपरान्त प्रतिदिन के सूर्योदय और सूर्यास्त का समय घण्टा मिनट में दिया रहता है।

दिनमान से सूर्योदय या अस्त सरलता से निकल सकते हैं। दिनमान को आधा कर घण्टा मिनट बना लो तो सूर्य अस्त का समय होगा। इसे १२ घण्टा में घटा दो तो उदय का समय घण्टा मिनट में निकल आवेगा। जैसे दिनमान २६ घं० १८ प०=

२=१३ घं० ६ प०=५ घं० १५ मि० ३६ से०	१२-०-०
सूर्यास्त। १२ घण्टे में से सूर्यास्त घटाया तो	५-१५-३६ सूर्यास्त
६ घं० ४४ मि० २३ से० सूर्योदय हुआ।	६-४४-२४ सूर्योदय

(११) अन्त में मुसलमानी तिथि, बंगला तिथि, अंग्रेजी तारीख दी रहती है। अ=अंग्रेजी तारीख। फा=फारसी। बं=बंगला।

(१२) किसी-किसी पंचाङ्ग में विशेष योग भी दिये रहते हैं। किसी विशेष तिथि को विशेष दिन या नक्षत्र आदि पड़ने से कोई योग बन जाता है वही आनन्द योग, मृत्यु योग, चर योग, छत्र योग आदि दिये रहते हैं। इन योगों के विषय में पहिले समझा चुके हैं कि ये कब और किस प्रकार बनते हैं।

(१३) किसी-किसी पंचाङ्ग में सूर्य की उत्तर या दक्षिण क्रान्ति भी दी रहती है। और किसी-किसी में मिश्रकालीन दैनिक चद्र स्पष्ट भी दिया रहता है।

(१४) अन्त में एक सूचनापत्र सदृश प्रत्येक दिन के सम्बन्ध में कोई विशेष बात आने पर लिख दी जाती है। जैसे परवा (परिवा) या दोज को जब चद्र दिखेगा तो उस दिन चद्रदर्शन लिखा रहता है। कोई पर्व त्यौहार आदि होता है या कोई जयंती होती है तो वह भी लिख दिया जाता है। अंग्रेजी महीना का अन्त होने पर

दूसरा आरम्भ होने वाला महीना या सन् बदलता है तो नया सन् इत्यादि आवश्यक बातें लिखी रहती है ।

पर्व दिन के अतिरिक्त ग्रहों के योग आदि भी दिये रहते हैं । सूर्यादि ग्रह जब १ राशि या एक नक्षत्र में दूसरी राशि या नक्षत्र पर जाते हैं तो उस दिन उसका समय भी दिया रहता है । इसके अतिरिक्त ग्रहों के उदय अस्त, ग्रहों का वक्रा मार्ग होना, ग्रहण आदि और भी ग्रहों के सम्बन्ध की पूरी सूचना रहती है और आवश्यक मुहूर्त या विवाह लग्न आदि सम्बन्ध की सूचनाएँ भी रहती हैं ।

कुछ मकेताक्षरो को भी समझ लेना चाहिये जिनका यहाँ उपयोग होता है । सायन मेपेऽर्क ८-२४ सायन सूर्य की मेप की संक्रान्ति ८ घ० २४ पल पर होगी । मेपे चार्क ३०-४२ = निरयन सूर्य की मेप की संक्रान्ति ३० घ० ४२ प० पर होगी । मियुने रवि ६-४८ = निरयन सूर्य मियुन पर ६-४८ पर गया । रोहिण्या बुध ५३-२६ बुध रोहिणी नक्षत्र पर ५३-२६ में गया । धनिष्ठाया १ चरणे बुध ४७-११ = बुध धनिष्ठा के पहिले चरण में ४७-११ पर गया । शतभिषाया २ चरणेऽर्क = निरयन सूर्य शतभिषा नक्षत्र के दूसरे चरण में गया । धनिष्ठायास्तृतीयचरणे स कुम्भेऽर्क = धनिष्ठा के तीसरे चरण में कुम्भराशि पर निरयन सूर्य की संक्रान्ति हुई । वक्रा भीम ६-५ = ६-५ मंगल वक्रा हुआ । बुधास्त पश्चिममें = बुध पश्चिम में अस्त हुआ । सकेताक्षरो को एक बार समझ लेने पर फिर अडचन न होगी और ध्यान से देखते-देखते सब समझ में आने लगेगा ।

उ=उपरान्त, या=यावत् (इतने समय तक) भ० १५-४० या=भद्रा १४-४० तक रहेगी । भ० २४-३९ उ भद्रा २४-३९ के उपरान्त होगी ।

(१५) पचाङ्ग के नीचे की ओर गोचर ग्रह कुडली और साप्ताहिक मिथ्रकालीन या प्रातःकालीन ग्रह स्पष्ट और प्रत्येक ग्रहों की दैनिक गति भी दी रहती है । किसी-किसी पञ्चाङ्ग में दैनिक (प्रतिदिन के) ग्रह स्पष्ट भी दिये रहते हैं ।

ग्रह स्पष्ट—जब किसी विशेष समय पर गणित द्वारा प्रत्येक ग्रहों की गति के विचार में गणित कर ग्रह की ठीक स्थिति निकाल कर रखते हैं तो उससे प्रगट होता है कि कौन-कौन ग्रह उस समय कहाँ-कहाँ पर हैं । और इसे ही उस समय का ग्रह स्पष्ट कहते हैं ।

इष्टकाल—कोई समय को, जिस समय के सम्बन्ध में अपने को विचारना है उसे इष्ट समय का काल (इष्टकाल) कहते हैं । जैसे सूर्योदय के बाद ४ घड़ी पर किसी ने कोई प्रश्न पूछा तो उस समय का इष्टकाल ४ घड़ी हुई ।

पञ्चाङ्ग में कोई ग्रह मिश्रकाल ४४-३६ के दिये हैं तो कहा जायगा कि इष्टकाल ४४-३६ के ग्रह स्पष्ट है। यदि प्रातः काल के ग्रह स्पष्ट दिये हैं तो इष्ट ०-० का ग्रह स्पष्ट समझा जायगा।

किसी पञ्चाङ्ग में इस प्रकार ग्रह स्पष्ट दिये हैं।

फाल्गुन कृष्ण ८ रवौ मिश्रमान ४४-३६—

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	८	८	९	२	११	१	४	१०
१६	१	२६	२२	२०	१४	१३	५	५
१९	२७	६	१०	४८	१०	८	४	४
५९	२४	२४	४९	२०	४३	३४	२५	२५
६०	८५	१४३	८९	३	७३	२	३	३
१६	११	५५	५६	१३	४४	२२	११	११
व मा								

गोचर ग्रहाः

१२ शु	१० बु
१	११ के. सू.
२ श	९ म च
३ गु	४ रा
४	६ ङ

पंचांग में यहाँ फाल्गुन कृष्ण अष्टमी रविवार के इष्ट ४४-३६ का ग्रह स्पष्ट दिया है। ग्रहों की स्थिति इस प्रकार समझना—

ग्रह	राशि	अंश	कला	वि०	कला वि०
सूर्य	१०	१६	१९	५९	पर है गति ६० १६ है
चंद्र	८	१	२७	२४	,, ,, ८५१ ११ ,,
मंगल	८	२९	६	२४	,, ,, ४३ ५५ ,,
बुध	९	२२	१०	४९	,, ,, ८९ ५६ ,,
गुरु	२	२०	४८	२०	,, ,, ३ १३ ,, व=वक्री
शुक्र	११	१४	१०	४३	,, ,, ७३ ४४ ,, मा=मार्गी
शनि	१	१३	८	३४	,, ,, २ २२

इसी प्रकार राहु केतु का भी समझना। जहाँ व लिखा है वहाँ ग्रह की मार्गी गति का अंत होकर वह ग्रह वक्री हुआ है। मा=वक्री गति का अंत होकर वह ग्रह मार्गी हुआ है ऐसा समझना।

यहाँ जो ग्रहों की गति दी है वह दिन रात्रि अर्थात् ६० घड़ी की प्रतिदिन की है। यह गति सदा बदलती रहती है। ग्रह कभी वक्री कभी मार्गी हो जाते हैं। ग्रह के नीचे संकेताक्षर में यह ऊपर बताये अनुसार लिखा रहता है। जिसमें वक्री या मार्गी कुछ भी

न लिखा हो उस ग्रह को मार्गी समझो, परन्तु राहु केतु सदा वक्री रहते हैं। किसी पचांग में ग्रह उदय हैं या अस्त हैं यह भी ग्रह के नीचे दिया रहता है, उ=उदय, अ=अस्त, जिनके सकेताक्षर हैं।

ग्रह स्पष्ट के एक ओर गोचर ग्रह कुंडली दी रहती है। यह कुंडली आकाश का नक्शा है जिसके विषय में आगे समझाया जायगा। पचांग में मिश्रकालीन या प्रातः कालीन ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं उन्ही के अनुसार उसके समीप ही कुंडली में स्थूल रूप से ग्रह दिये रहते हैं।

इस कुंडली में १२ राशि के १२ कोठे हैं और उनमें १-२-३ आदि क्रमानुसार राशियों के सूचक अक्षर लिखे रहते हैं। जैसे १ से मेष, ८ से वृश्चिक इत्यादि। ग्रह जिस राशि पर है उसी राशि के कोठे में वह ग्रह लिख दिया जाता है। जैसे ऊपर ग्रह स्पष्ट देखो सूर्य रा० १०°-१६°-१६-५६ पर है अर्थात् १० राशि व्यतीत होकर ग्यारहवीं राशि के १६° पर सूर्य है, अर्थात् सूर्य ग्यारहवीं राशि (कुम्भ राशि) पर है। जहाँ ११ का अक्षर कुंडली में होगा वहाँ सूर्य का सकेताक्षर सू० लिख देंगे। सूर्य प्रधान ग्रह है वह जिस राशि पर रहता है उसी राशि को ऊपर की ओर बीच में लग्न के स्थान पर पञ्चांग में लिखने की प्रथा है। चन्द्र धन का है ९ अक्षर जहाँ है उस कोठे में लिखा। मंगल भी नववीं राशि धन का है ६ में लिखा। बुध मकर का है १० में लिखा। गुरु मिथुन का है ३ में, शुक्र मीन का है १२ में, शनि वृष का है २ में, राहु सिंह का है ५ में, केतु कुम्भ का है ११ में सूर्य के साथ लिखा है। इसी प्रकार कुंडली में ग्रह भरने की रीति अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिये।

कई पञ्चांगों में गोचर ग्रह स्पष्ट जहाँ दिया रहता है उसमें चन्द्र नहीं दिया रहता तो पचांग में उस तिथि को चन्द्र किस राशि पर है यह देखकर गोचर कुंडली में भर देते हैं।

इसी प्रकार प्रति सप्ताह पृथक्-पृथक् गोचर कुंडली और ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं जो लगभग अष्टमी और अमावस्या या पूर्णिमा के होते हैं।

(१६) दैनिक लग्न होरा सारिणी (होरा=घण्टा)

किसी-किसी पञ्चांग में तिथि पत्र के नीचे दैनिक लग्न होरा सारिणी भी दी रहती है, जैसे काशी या जबलपुर आदि के पञ्चांग में दिया रहता है। सब के नीचे १ चक्र बना रहता है उसमें १५ तिथि और चार ऊपर लिखा रहता है। उसके बायीं ओर वाजू से लग्न की राशियों के नाम और उसके आगे दिन और रात का समय घण्टा मिनट में दिया रहता है। इससे प्रगट होता है कि वह लग्न कितने बजे तक रहेगी। जैसे तिथि

१ गुरुवार मीन ६ घण्टा २६ मिनट=मीन-लग्न ६ वज कर २६ मिनट तक गुरुवार को रहेगी, उसके बाद मेष लग्न आरम्भ होगी। इस सारिणी से देखकर जान सकते हो कि उस समय कौन लग्न है। रात्रि की लग्न के ऊपर रा=(रात्रि) लिख दिया जाता है।

पूर्व में सितिज पर जो राशि उदय हो रही है उसी को लग्न कहते हैं। २४ घण्टा में सब राशिया पृथ्वी के चारों ओर घूम लेती हैं इस कारण प्रत्येक लग्न स्थूल मान से लगभग २ घण्टे की हुई। परन्तु इससे किसी का कम किसी का अधिक प्रमाण होता है।

किसी-किसी पंचांग में लग्न प्रारम्भ होने का समय होरा लग्न सारिणी में दिया रहता है। वहा लग्न के नाम के आगे “प्र०” (प्रवेश) लिखा रहता है। वह लग्न प्रवेश करने का समय है। किसी में दिन रात्रि न लिख कर मध्याह्न के उपरान्त (१२ वजे के ऊपर) रेलवे के समय के अनुसार १३, १४, १५ आदि २४ वजे तक लिखा रहता है। जरा ध्यान देने से सब समझ में आने लगेगा। लग्न के विषय में आगे सम-झाया जायगा।

तिथिपत्र के आगे पीछे पञ्चांग में कई उपयोगी चक्र मुहूर्त आदि विषय के दिये रहते हैं उन सब विषय का वर्णन क्रमशः उपयुक्त स्थान में करेंगे।

विवाह के १० महादोष होते हैं जो विवाह का मुहूर्त विचारने में काम आते हैं। जहाँ विवाह का मुहूर्त दिया रहता है उन दोषों के क्रमानुसार वह मुहूर्त जो दोष से रहित है अर्थात् शुद्ध है उसके लिए। (खड़ी लकीर) और जो दोष युक्त है S (वेड़ी लकीर) पञ्चांग में दी रहती है इसका वर्णन मुहूर्त खण्ड में मिलेगा।

(१७) पञ्चांग अब जगह-जगह से प्रकाशित होने लगे हैं। उन पञ्चांगों में उस स्थान के अक्षांश और देशान्तर के अनुसार समय निकाल कर दिया रहता है। यही कारण है कि एक स्थान के पञ्चांग का समय दूसरे स्थान के पञ्चांग के समय से मिलान करने पर कुछ अन्तर पड़ जाता है, क्योंकि एक स्थान में जो समय दिया रहता है वह प्रत्येक स्थान में नहीं रहता, अर्थात् दूसरी जगह में अक्षांश देशान्तर के अनुसार उस समय में अन्तर पड़ जाता है। इस कारण अपने स्थान के समीप का पञ्चांग खरीदना चाहिये।

पञ्चांग परिवर्तन

किसी स्थान के पञ्चांग में दिये हुए समय से अपने स्थान के समय का अन्तर जान लेना चाहिये। उसके जानने की स्थूल रीति यहाँ दी है।

अपने स्थान का देशान्तर मालूम करो। मुख्य-मुख्य स्थानों की देशान्तर सारिणी किसी-किसी पञ्चांग में दी रहती है, उससे या किसी स्कूल के नक्शे से मालूम कर लो।

जहाँ का पञ्चाग बना है वहाँ का देशान्तर और अपने यहाँ के देशान्तर में अन्तर निकालो और देखो पञ्चाग के स्थान से अपना देशान्तर अधिक है या कम है ।

नकशो मे देशान्तर ग्रीनविच (इंगलैंड) से दिया रहता है । परन्तु भारतवर्ष के पञ्चागो में उज्जैन से देशान्तर दिया रहता है । इस प्रकार किसी भी एक स्थान के देशान्तर का अन्तर नाप लो, फिर दोनो देशान्तरो का अन्तर निकालो । वह अन्तर अंशों में दिया हो तो उसके घड़ी पल बना लो । पञ्चाग के स्थान से अपना स्थान पूर्व में हो तो— (घन=जोड़ना), पश्चिम में हो तो — (ऋण=घटाना) । इस प्रकार पञ्चाग के समय मे जोड़ने या घटाने से जो समय प्राप्त होगा वह स्थानिक समय होगा ।

देशान्तर अंश में दिया हो उसके घण्टा मिनट या घड़ी पल बनाना—

१५ अंश = १ घण्टा = २॥घड़ी १ अंश = ४ मिनट = १० पल

१५ कला = १ मिनट = २॥पल १ कला = ४ सेकण्ड = १० विपल

१५ विकला=१ सेकण्ड=२॥ विपल १ विकला= $\frac{1}{4}$ सेकण्ड = १० अनुपल
= $\frac{1}{2}$ विपल

जैसे पूना के पञ्चाग में एकादशी ४० घ० १० पल है । बम्बई मे एकादशी का मान जानना है । बम्बई पूना से पश्चिम मे है और दोनो के देशान्तर का अन्तर १ अंश है । १अंश—४ मिनट = १० पल । बम्बई पश्चिम में होने से यह अंतर ऋण होगा । = -१० पल । पूना में ४० घ० १० पल है, इससे १० पल घटाय़ा तो ४० घ० १० पल रहे । इस प्रकार बम्बई में एकादशी का मान ४० घ० ० प होगा । अर्थात् पूना के मान में १० पल घटा देने से बम्बई का मान होगा । काशी में २०-४० एकादशी है तो जवल्पुर में क्या होगा ? । जवल्पुर ३° पश्चिम है । ३५.१०=३० पल ऋण= २०-१० का मान जवल्पुर में एकादशी का होगा । अर्थात् काशी के मान में ३० पल घटा देने से जवल्पुर का मान प्राप्त हुआ । इसी प्रकार नक्षत्र योग आदि का मान स्थानिक समय का निकाल लेना ।

परन्तु स्मरण रहे पंचाग मे तिथि आदि का मान घटी पल में मध्यम सूर्योदय से दिया रहता है । उसमे स्पष्ट और स्थानिक ठीक समय बनाने के लिये देशान्तर सस्कार के अतिरिक्त विशेष सस्कार करना पडता है, क्योंकि समय भी कई प्रकार के होते हैं । मध्यम समय Mean Time, स्टैन्डर्ड समय Standard Time (रेलवे आदि का समय) स्थानिक समय Local Time (जो घूप घड़ी के अनुसार होता है और प्रत्येक स्थान का पृथक्-पृथक् समय होता है) । स्टैन्डर्ड समय (घड़ी के अनुसार घटा मिनट) सारे भारतवर्ष के लिये एक ही समय है जो ग्रीन विच से ५॥ घंटा अधिक होता है । यह ८५.३° देशान्तर का समय है । मध्यम समय सूर्य के अनुसार निकाला जाता है ।

इस प्रकार स्थानिक समय निकालकर उसके अनुसार देशान्तर संस्कार के अतिरिक्त उस समय में और भी जोड़ना घटाना पड़ता है और चर संस्कार भी करना पड़ता है। यह विषय कुछ कठिन होने से यहाँ नहीं दिया गणित खड में मिलेगा। यहाँ तो प्रारम्भिक ज्ञान के लिये स्थूल रीति दी है।

अध्याय १६

अंग्रेजी पंचांग Almanac या Ephemeris

पिछली वताई हुई वाते समझ लेने पर पंचांग देखना अच्छी तरह आ जायगा। परन्तु अंग्रेजी पचाग देखने के लिए कई नवीन वातो की आवश्यकता पड़ेगी, उनको भी संक्षेप से बता देना आवश्यक है।

इंग्लैंड में ग्रीन विच की वेधशाला के आधार पर अंग्रेजी पचाग (एफेमरीज) *Raphel's Astronomical Ephemeris* अंग्रेज में प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है जिसमें ग्रहों के सम्बन्ध में अनेक सूचनाएँ और दैनिक ग्रह स्पष्ट दिया रहता है। उसमें हर्शल और नेपच्यून की स्थिति भी दी रहती है। ग्रहों के स्थान पर केवल उनके चिन्हों का उपयोग होता है। यहाँ के पंचाग सरीखी कई उपयोगी वातें उस पंचाग में दी रहती हैं। अंग्रेजी पंचाग को 'अलमनक' कहते हैं।

उज्जैन की वेधशाला से भी एक एफेमरीज प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है। उसमें भारतवर्ष के स्टैन्डर्ड टाइम के दैनिक ग्रह स्पष्ट और विविध ग्रह योग दिये रहते हैं। ग्रहों की ठीक स्थिति जानने के लिये अच्छे ज्योतिषी उनका उपयोग करते हैं।

सावन दिन apparent day

जब सूर्य मध्याह्न (दोपहर) आता है और धूमकर फिर दूसरे दिन उदय होकर मध्याह्न पर आने में जो समय लगता है वह सावन कहलाता है। कोई सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को सावन दिन कहते हैं। सावन दिन का मान कम ज्यादा होता रहता है। इस पर से सावन दिन का मध्यम मान निकाला जाता है।

मध्यम काल Mean Time

अपने इस सावन दिन के मध्यम काल को २४ घंटा या ६० बड़ी का मानते हैं।

सूर्य की मध्यम गति $५९'-८''$ प्रतिदिन रात में जानकर एक मध्यम रवि विधुवृत्त में धूमता है ऐसा मान लेते हैं। यह मध्यम रवि मध्याह्न में आकर फिर

अस्त होता है और दूसरे दिन उदय होकर फिर मध्याह्न में आता है। इस प्रकार एक बार मध्याह्न से दूसरे दिन के मध्याह्न में फिर आने तक मध्यम मान से २४ घंटा लगते हैं। इसी समय को मध्यम काल कहते हैं।

स्पष्ट काल Apparent Time

सूर्य को देखकर जो स्पष्ट समय समय पड़ता है वही स्पष्ट काल कहलाता है।

नाक्षत्र दिन=(नाक्षत्र काल) Side real day

तारों की दैनिक गति पृथ्वी की गति के कारण जान पड़ती है कि तारे ऊगते हैं और फिर सिर पर आते हैं फिर डूब कर उदय होते हैं। इसी प्रकार तारा या कोई नक्षत्र उदय होने या मध्याह्न पर आने से दूसरे दिन फिर उदय होने या मध्याह्न पर आने तक जो समय लगता है उसे नाक्षत्र दिन और नाक्षत्र दिन के समय को नाक्षत्र काल Side real time कहते हैं।

इस नाक्षत्र काल को साधारण प्रकार से २४ घंटा या ६० घड़ी का मान लो तो काम चल जायगा।

वेधशाला Observatory में नाक्षत्रकाल देखने की एक घड़ियाल रहती है। पहिले बता चुके हैं कि नक्षत्र का उदय होना या अस्त होना पृथ्वी की दैनिक गति के कारण है। यह काल सावन मान से २३ घ. ५६ मि ४०.९०६ से. का होता है। इस प्रकार नाक्षत्र दिन का मान बराबर एक समान रहता है। सावन दिन सरीखा कम ज्यादा नहीं होता। इस प्रकार नक्षत्र से सावन का भी ज्ञान सूक्ष्म प्रकार से हो सकता है।

मध्यम रवि Mean Sun

सूर्य की गति प्रतिदिन बदलती है परन्तु अपनी घड़ियों की गति प्रतिदिन एक समान रहती है गति कम ज्यादा नहीं होती। इस कारण घड़ी से जिस प्रकार मध्यम समय दीखता है उसी प्रकार मध्यम रवि या मध्यम काल समझना चाहिये।

जैसा मध्यम रवि मध्यम काल बतलाता है उसी प्रकार घड़ी भी मध्यम काल बतलाती है। मध्यम काल से इच्छित काल निकाला जा सकता है।

मध्यम रवि आकाश में नहीं दीखता, परन्तु गणित से उसकी गतियों का मध्यम मान के प्रमाण से मान निकालते हैं। मध्यम रवि का उदय ठीक ६ वजे प्रातः, १२ वजे मध्याह्न और संध्या ६ वजे सदैव मानते हैं। इस मान में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

मध्यम रवि का होरात्मक काल या नाक्षत्र काल Side real Time

अंग्रेजी पञ्चाङ्ग में यह काल महत्व का दिया रहता है। यह काल किसी विशेष तारीख को क्या होता है, आगे दिया है। इस काल को अशो में परिवर्तन कर देने पर उसे मध्यम रवि का होरात्मक विपुवाश कहेंगे।

विषुववृत्त के पूरे वृत्त के ३६० अंशों को २४ घण्टों में बाँटो तो १ घण्टा=१५° या ४ मिनट=१° पड़ा। विषुवाश (विषुव रेखा के अंशों को) अंश कालादि में न बना कर उसे घण्टा मिनट में बना लेते हैं और पञ्चाङ्ग में यही प्रतिदिन का नाक्षत्र काल घण्टा मिनट में दिया रहता है। यह होरात्मक नाक्षत्र काल प्रतिदिन प्रायः ४ मिनट के हिसाब से बढ़ता है। इस प्रकार १५ दिन में १ घण्टा बढ़ जाता है। अग्नेजी पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन का नाक्षत्र काल दिया रहता है। यह भावसाधन आदि के काम आता है। यहाँ यह नाक्षत्र काल किस तारीख को लगभग कितने घण्टे का रहता है, आगे दिया है उस पर से किसी भी दिन का नाक्षत्र काल निकाल सकते हो। नाक्षत्र काल और तारों का विषुवाश जानने से और तारों को पहिचान लेने से रात को देख कर लगभग ठीक समय भी जान सकते हैं। २२ मार्च को नाक्षत्र काल शून्य होता है।

दोपहर (१२ बजे) का नाक्षत्र काल नीचे दिया है।

तारीख	महीना	घंटा	ता०	महीना	घंटा	ता०	महीना	घंटा	ता०	महीना	घंटा	ता०
५	जनवरी	१९	६	अप्रैल	१	७	जुलाई	७	६	अक्टूबर	१३	
२०	"	२०	२१	"	२	२२	"	८	२१	"	१४	
४	फरवरी	२१	७	मई	३	६	अगस्त	९	५	नवम्बर	१५	
२०	"	२२	२२	"	४	२१	"	१०	२०	"	१६	
७	मार्च	२३	६	जून	५	५	सितम्बर	११	६	दिसम्बर	१७	
२२	"	२४=०	२१	"	६	२०	"	१२	२१	"	१८	

यदि अग्नेजी पञ्चाङ्ग न हो और नाक्षत्र काल निकालना हो तो इस चक्र से निकाल सकते हो।

मान लो ५ अप्रैल दोपहर का ना० का० जानना है।

ऊपर २१ अप्रैल का नाक्षत्र काल २ घण्टा दिया है=२ घ०-० मि०

२१ तारीख से ५ अप्रैल तक अन्तर (२१.५)-१६ दिन

$$\left. \begin{array}{l} १ \text{ दिन में } ४ \text{ मिनट तो } १६ \text{ दिन में } = (१६ \times ४) \text{ मि०} \\ ६४ \text{ मिनट} = \end{array} \right\} = १-४ \text{ घण्टाया} \\ \qquad \qquad \qquad = १ \text{ घण्टा } ४ \text{ मि०} \quad \left\} \text{ शेष } ०-५६$$

यह पिछले समय का है, इससे २१ अप्रैल के समय में अन्तर का समय घटाना पड़ेगा। इसलिये ५ अप्रैल के दोपहर को ना० का०=० घण्टा ५६ मि० हुआ। यह समय घण्टा मिनट सेकण्ड में निकलता है।

यह स्थूल रीति है। सूक्ष्म रीति से नाक्षत्र काल अग्नेजी पञ्चाङ्ग में दिया रहता है। किसी पुराने अग्नेजी पञ्चाङ्ग में जिस तारीख महीने का नाक्षत्र काल चाहिये उसी तारीख और महीने में जो नाक्षत्र काल मिले उससे काम चल जायगा, क्योंकि नाक्षत्र काल में अधिक अन्तर नहीं पड़ता, प्रायः मिलता-जुलता समय रहता है।

अध्याय २०

कुंडली विचार

आकाश में जो राशियाँ और ग्रहों की स्थिति हैं उसका ही नक्शा कुंडली है। अर्थात् कुंडली आकाश का नक्शा है और उसमें प्राप्त होता है कि कौन ग्रह उस समय कहा थे।

केवल कुंडली चक्र देखने से ही समय, तिथि, पक्ष, मास, वर्ष आदि जन्म समय का या इष्ट समय का जिस समय की वह कुंडली बनी हो, जाना जा सकता है। इसी कारण जन्म की तिथि आदि एवम् स्थान भी निश्चित कर उसके अनुसार ठीक गणित करके शुद्ध कुंडली चक्र बनाया जाता है। इस कुंडली चक्र पर से जीवन की घटनाएँ और जीवन सम्बन्ध से विविध ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस कारण कुंडली क्या है और कैसे बनती है, अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

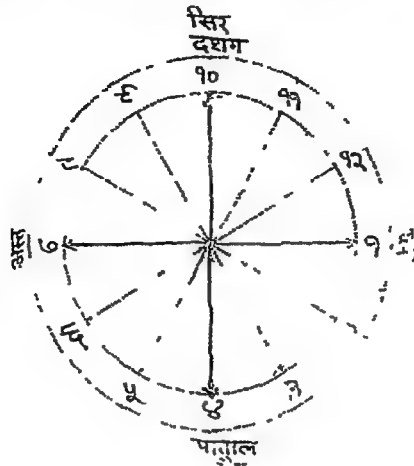
जैसे पृथ्वी का नक्शा बनाने में उत्तर सदैव ऊपर की ओर रहता है वैसे कुंडली में नहीं होता। आकाश के नक्षत्रों (कुंडली) में पूर्व दिशा ऊपर को रखते हैं, क्योंकि पूर्व दिशा बहुत महत्व की है। यही लग्न का स्थान है जो कुंडली में मुख्य वस्तु है।

जब पूर्व दिशा ऊपर रहती है तो पश्चिम दिशा नीचे की ओर रहेगी। सूर्य जहाँ उदय होता है वह पूर्व और जहाँ अस्त होता है वह पश्चिम दिशा होती है।

आकाश के नक्षत्रों में ठीक १२ विभाग किये गये हैं। इस प्रकार पूरे ३६०° के चक्र के १२ विभाग करने से प्रत्येक विभाग ३०° का होता है। इस प्रकार पूर्व दिशा (लग्न) से आरम्भ होकर जो स्थान सिर पर आता है वह दशम स्थान का दशम भाग कहलाता है, जैसे चित्र सख्या ६३ में बताया है। दशम स्थान को दक्षिण दिशा समझो। पाताल अर्थात् पैर के नीचे का स्थान चतुर्थ स्थान कहलाता है उसे उत्तर दिशा समझो।

साधारण प्रकार में पूर्व दिशा ऊपर को रखो तो चित्र सख्या ६४ के अनुसार बनता है। इस चित्र में दिशाओं के विभाग करने से जिस प्रकार दिशाएँ होती हैं वह भी बताया है। इस चक्र में घड़ी के अनुसार १२ राशियों के अक्ष लिख दिये गये हैं। इनमें १२ राशियों के नाम न लिखकर उसके क्रम की सख्या लिख दी गई है, जैसे मेष के लिये १, वृष २, मिथुन ३ इत्यादि। ये अक्ष पूर्व से लिखना आरम्भ कर बाईं ओर से क्रमानुसार लिखे जाते हैं जैसा चित्र ६४ में बताया है। यही आकाश का नक्शा है। इसमें केवल जो ग्रह जहाँ पर हैं लिखने को रह गये हैं, उनके लिखने की रीति आगे समझाई जायेगी।

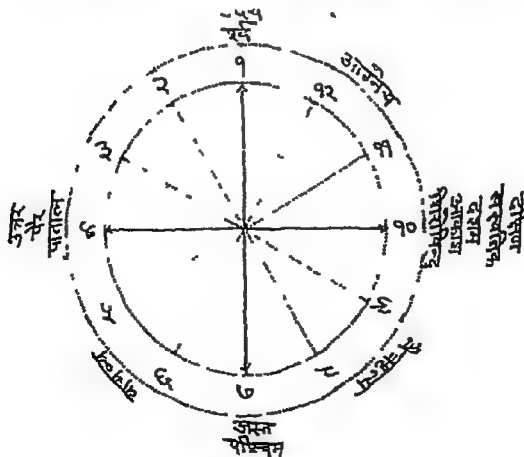
इस नकशा को देखने से प्रगट होगा कि इसमें जो १ (मेष राशि) बतलाई गई है वह सूर्य का उदय स्थान है । ठीक उसके सामने पश्चिम में अस्त स्थान पर ७ (तुला



चित्र संख्या ३३

आकाश में भाव स्थान

राशि) हैं। दक्षिण में ख स्वस्तिक अर्थात् सिर के ऊपर का आकाश का भाग या मध्यान्ह में १० (घन राशि) है । उत्तर में पैर के नीचे (पाताल में) या अर्द्ध रात्रि



चित्र संख्या ६४

आकाश की दिशाएँ और कुंडली चक्र

स्थान में ४ (कर्क राशि) दी है । इस प्रकार ४ स्थान निश्चित हो जाने पर इनकी विदिशाओं के कोण स्थान में भी राशियाँ हैं । जैसे २ (वृष राशि) के सामने ८ (वृश्चिक राशि) ३ (मिथुन राशि) के सामने ९ (धन राशि), ५ (सिंह राशि) के सामने ११ (कुम्भ राशि) और ६ (कन्या राशि) के सामने १२ (मीन राशि) आती है । इस प्रकार ये राशियाँ एक दूसरे में ६-६ राशियों के अन्तर पर $(१८०^{\circ}$ के अन्तर पर) हैं । एक दूसरे के सामने है अर्थात् सामने की राशि १८०° के अन्तर पर होती है । ये राशियाँ सदा चलायमान हैं । (पृथ्वी की गति के कारण चलायमान दिखती हैं) अर्थात् जो सिर के ऊपर राशि है उसके आगे की राशि पूर्व की ओर मिलेगी । पूर्व में जो राशि है उसके आगे की राशि क्षितिज के नीचे अर्थात् उत्तर की ओर मिलेगी । जैसे पूर्व में मेष राशि है तो उसके आगे उत्तर की ओर जाने में (क्षितिज के नीचे), २ (वृष राशि), ३ (मिथुन) आदि मिलेंगी । और ठीक उत्तर में ४ (कर्क) रहेगी । इससे यह समझ लेना चाहिये कि जो राशि पश्चिम (अस्त) में है उसके आगे क्रमानुसार राशियाँ दक्षिण (मिर) पर से होते हुए, पूर्व (उदय स्थान) की ओर घूमते हुए उत्तर (पाताल) की ओर जाती हैं । अर्थात् राशियाँ पश्चिम में पूर्व की ओर क्रमानुसार स्थित हैं । परन्तु घूमते समय राशियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर जाती हैं जैसा चित्र सख्या ५ में बताया है, जैसे मेष उदय होकर पश्चिम की ओर बढ़ेगा तब उस उदय स्थान पर वृष आयेगा ।

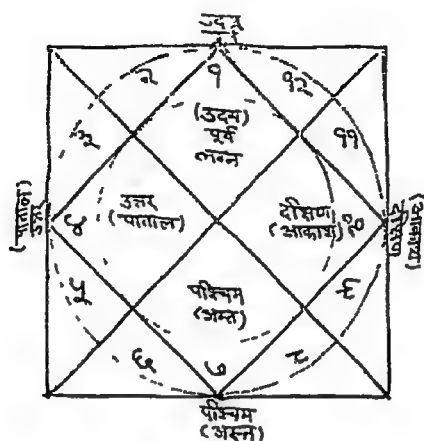
इसी को दूसरे प्रकार में आकाश का नक्शा बनाकर समझाते हैं । पहिले जो गोल चक्र में आकाश का नक्शा बनाया था उसमें एक दूसरे को काटने वाली दिशा सूचक जो लकीरों पर ४ स्थान बनाये गये हैं वे ये हैं १-४-७-१० वहाँ ये राशियाँ बनाई गई हैं । इन्हीं स्थानों का नाम केन्द्र स्थान (बीच के स्थान) है ।

जिस प्रकार गोल चक्र में १-४-७-१० राशियाँ केन्द्र में हैं (चित्र सख्या ६५ देखो) उसी प्रकार चौकोर नक्शे में भी चारों केन्द्र स्थान आ जाते हैं और यहाँ भी चारों स्थानों के नाम केन्द्र स्थान हैं । चारों केन्द्र स्थान के अतिरिक्त उन दिशाओं के कोण स्थान भी यहाँ कोण में आ गये हैं, जिसमें समझ में अब आ जायगा कि चित्र ६४ में बनाया हुआ गोल नक्शा और इस चित्र ६५ के चौकोर नक्शा में कोई अन्तर नहीं है । यही कुडली आकाश का नक्शा है ।

इसमें भी १ के सामने ७ (६ राशि $= १८०^{\circ}$ का अन्तर पर), ४ के सामने १०, २ के सामने ८, ३ के सामने ९, ५ के सामने ११, ६ के सामने १२ हैं । इस प्रकार १ राशि के सामने जो राशि होगी वह ६ राशि के अन्तर पर होती है । यहाँ भी मेष राशि पूर्व में है वह उदय स्थान है, तुला पश्चिम में है वह अस्त का स्थान है । मकर राशि

दक्षिण में है वह सिर के ऊपर का (आकाश) और कर्क राशि उत्तर में है वह पैर के नीचे का स्थान (पाताल) है ।

पूर्व में जो उदय स्थान है इसी स्थान को लग्न कहते हैं । जो राशि उस समय पूर्व में हो उसे ही लग्न या उदय लग्न कहते हैं और उस स्थान को लग्न स्थान कहते हैं । कुंडली-चक्र चित्र ६५ में जहाँ मेघ राशि का सूचक अंक १ लिखा है वही लग्न स्थान है ।



चित्र संख्या ६५

आकाश का चीकोर चित्र और कुंडली चक्र

लग्न (राशिया) सदैव पृथ्वी की गति के अनुसार घूमते रहती है । कभी लग्न में वृष, कभी मिथुन, कभी कोई राशि रहती है । इस कारण जो राशि जन्म समय उदय हो रही हो उसे ही लग्न कहते हैं और उस राशि को कुंडली चक्र में पूर्व के स्थान में रख देते हैं ।

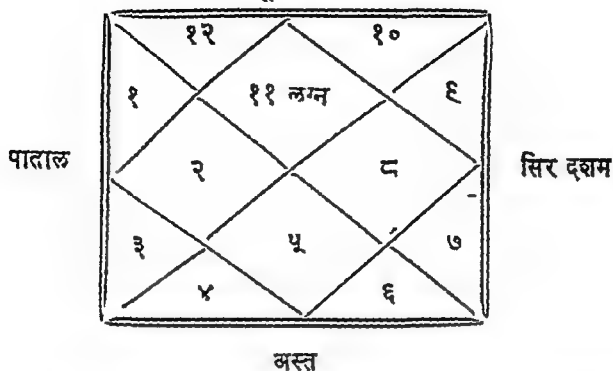
मान लो किसी का जन्म कुम्भलग्न में हुआ है अर्थात् पूर्व में उस समय कुम्भ राशि उदय हो रही थी । कुम्भ लग्न की ११ वी राशि है तो लग्न स्थान (पूर्व) में इस ११ के अंक को रख देते हैं और उसके आगे के अंक क्रमशः बाईं ओर से रखते जायेंगे जैसे ११ के आगे १२ फिर १ कोने में रखा, फिर पाताल में २, फिर कोण में ३ और ४, अस्त में ५ फिर कोण में ६-७ और दशम स्थान (सिर स्थान) में ८ फिर कोण में ९-१० लिख देंगे देखो चित्र संख्या ६६ । इसे ही लग्न कुण्डली कहेंगे । इसमें केवल ग्रहों का भरना रह गया है । यह ग्रह रहित लग्न कुण्डली हुई ।

अब ध्यान में आ गया होगा कि जो राशि उदय स्थान में हो अर्थात् उदय हो रही हो उसे लग्न स्थान में रखकर बाईं ओर से लग्न के आगे की राशि क्रमशः एक-एक

चित्र संख्या ६६

लग्न कुंडली

पूर्व उदय



कोठे में एक-एक राशि लिखते जाओ तो पूरी लग्न-कुण्डली बन जायगी । इससे यह भी प्रगट हुआ कि लग्न में राशियाँ सदैव बदलती रहती हैं ।

भाव स्थान

पहिले बता चुके हैं कि पूर्व में जो राशि हो उसे उदय लग्न या लग्न कहते हैं । इसी प्रकार लग्न के आगे के प्रत्येक स्थानों के भिन्न-भिन्न नाम हैं जिनके स्थान और नाम जानना आवश्यक है । (१) जहाँ सूर्य उदय होता है वह उदय लग्न या लग्न (२) जहाँ सूर्य अस्त होता है वह अस्त लग्न या सप्तम लग्न=सप्तम स्थान या सप्तम भाव है । (३) जहाँ पाताल है वह चतुर्थ लग्न=चतुर्थ भाव या चतुर्थ स्थान है । (४) आकाश (सिर के ऊपर) दशम लग्न = दशम भाव या दशम स्थान है । ये चारों केन्द्र स्थान कहलाते हैं ।

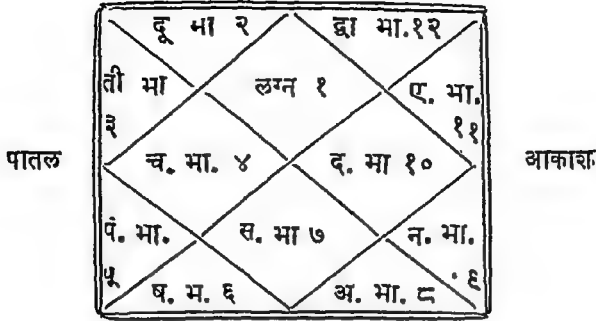
(५) लग्न के आगे कोण में दूसरे स्थान को=द्वितीय स्थान या द्वितीय भाव (६) तीसरे घर को तृतीय या तृतीय भाव (७) पाताल के आगे कोण में पाँचवा घर=पंचम स्थान या पंचम भाव (८) छठे को षष्ठ स्थान या षष्ठ भाव (९) अस्त के आगे कोण में अष्टम स्थान या अष्टम भाव (१०) नवम को नवम स्थान या नवम भाव (११) दशम के आगे कोण में एकादश को एकादश स्थान या एकादश भाव (१२) बारहवें को द्वादश स्थान या द्वादश भाव कहते हैं । देखो चित्र संख्या ६७ । ये भाव के स्थान स्थिर हैं अर्थात् इन स्थानों में कभी परिवर्तन नहीं होता । ये ही स्थान भाव स्थान कहलाते हैं । भाव स्थिर हैं परन्तु इन भावों में आने वाली राशियाँ सदा चलती रहती हैं ।

[११८]

चित्र सख्या ६७

आकाश में द्वादश भाव

उदय



अस्त

अब इन्ही स्थानों को फिर से क्रम पूर्वक समझाते हैं। देखो चित्र सख्या ६८ (१) जहाँ सूर्य उदय होता है वह उदय स्थान है इसी को लग्न कहते हैं। यहाँ कुडली में कुम्भ राशि लग्न में है। (२) आगे द्वितीय स्थान है इसमें मीन राशि है, (३) तृतीय स्थान में मेष राशि है, (४) चतुर्थ में वृष राशि, (५) पंचम में मिथुन राशि, (६) षष्ठ में कर्क राशि (७) सप्तम भाव में सिंह राशि, (८) अष्टम भाव में कन्या राशि, (९) नवम भाव में तुला राशि, (१०) दशम भाव में वृश्चिक राशि (११) एकादश भाव में धन राशि और (१२) द्वादश भाव में मकर राशि है।

चित्र सख्या ६८

लग्न कुडली

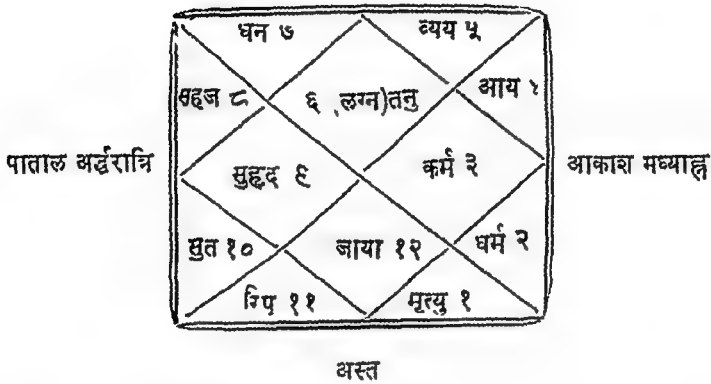


एक और उदाहरण देकर समझाते हैं देखो चित्र संख्या ६९ की भाव सूचक कुंडली । यहाँ इस समय कन्याराशि उदय स्थान में है अर्थात् कन्यालग्न उदय हो रही है । इससे लग्न में कन्या राशि का अंक ६ रखा, (२) दूसरे में तुला, (३) तीसरे में

चित्र संख्या ६९

भाव नाम सूचक कुंडली

उदय



वृश्चिक, (४) चौथे भाव में धन, (५) पंचम स्थान में मकर, (६) षष्ठ में कुम्भ, (७) सप्तम में मीन, (८) अष्टम में मेष, (९) नवम में वृष, (१०) दशम में मिथुन, (११) एकादश में कर्क, (१२) द्वादश भाव में सिंह राशि है ।

इसी प्रकार राशियों में परिवर्तन तो होता रहता है परन्तु भाव (स्थान) में कोई परिवर्तन नहीं होता ।

इन सब भाव या स्थानों के विशेष नाम भी हैं जिनको भूलना नहीं चाहिये । स्थान के विशेष नाम चित्र संख्या ६९ की कुंडली में बताया है ।

भाव स्थान के नाम (१) लग्न=तनु स्थान (शरीर) (२) द्वितीय धन स्थान, (३) तृतीय=सहज=भातृ या पराक्रम, (४) चतुर्थ=सुहृद या सुख, (५) पंचम=सुत, (६) षष्ठ=रिपु, (७) सप्तम=जाया, (८) अष्टम=मृत्यु, (९) नवम=धर्म, (१०) दशम=कर्म, भाग्य, (११) एकादश=आय, (१२) द्वादश=व्यय (खर्च) । इन्हीं द्वादश स्थानों को द्वादश भाव कहते हैं । ये भाव आगे समझाये जायेंगे ।

द्वादश भावों के नाम पड़ने का कारण

(१) तनु—जिस लग्न का जन्म समय उदय होता है उसका शरीर के साथ उदय होने के कारण शरीर या तनुभाव नाम पडा ।

(२) धनभाव—शरीर की रक्षा के लिये अन्न वस्त्र आदि द्रव्य आदि प्राप्त करने का विचार मन मे उत्पन्न होता है इस कारण तनुभाव से दूसरे भाव का नाम धन पडा ।

(३) सहज—''धन प्राप्ति कर उसकी रक्षा के लिये पराक्रम करना पडता है और इस पराक्रम मे सहायता देने वाले और धन का वटवारा करने वाले सहोदर होते हैं । इससे इसका नाम पराक्रम और सहज पडा ।

(४) सुख—''पराक्रम होने पर घर और भाई आदि वंधुओ के सुख की भावना मन मे उत्पन्न होती है । इससे इस नाम का गृह वंधु और सुख पडा ।

(५) सुत—''ग्रह वन्धु और सुख मिलने पर पुत्र विद्या आदि प्राप्त करने की भावना हृदय मे उत्पन्न होती है । विषय सुख की अपेक्षा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना श्रेष्ठ है । ग्रहज्ञान विद्या से होता है इससे इसका नाम पुत्र और विद्या पडा ।

(६) रिपु—''सुत प्राप्ति का विचार होने पर इसका साधन विवाह है, इससे सन्तान के लिए विवाह करने का विचार होता है । रोगी होने से विवाह नही हो सकेगा । इससे शरीर को रोगहीन बनाने का विचार उत्पन्न होता है । इसमे इस भाव का नाम रोगभाव पडा । रिपु भी रोगरूप है और कार्य मे बाधक होता है । इससे इसका नाम रिपुभाव भी पडा ।

(७) जाया भाव—रोग से निवृत्ति होने पर विवाह के लिए स्त्री प्राप्ति का विचार उत्पन्न होता है । इससे इसका नाम जाया [स्त्री] पडा ।

(८) मृत्यु भाव—स्त्री मिलने के उपरान्त मृत्यु से रक्षा के लिये आयु बढ़ाने का विचार उत्पन्न होता है । इस कारण इसका नाम मृत्यु पडा ।

(९) धर्म भाव—धर्म करने से ही आयु बढ़ती है और मृत्यु दूर होती है । इससे इसका नाम धर्म पडा ।

(१०) कर्म भाव—धर्म की वढती के लिए यज्ञ भजन पूजन आदि कर्म और कर्म की रक्षा के लिए पिता या राज्य का सहाय लेना पडता है । इसमे यह कर्मभाव हुआ ।

(११) आय—कर्म करने के लिए धन आदि के लाभ की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं । इस कारण इसे लाभ या आय भाव कहते हैं ।

(१२) व्यय—लाभ होने पर उस धन को किस प्रकार व्यय करना ऐसा विचार उत्पन्न होता है । इससे इसका नाम व्यय भाव पडा ।

अध्याय २१

कुंडली बनाने के लिए लग्न निकालना

कुंडली बनाने के प्रथम यह जानने की आवश्यकता है कि कौन लग्न है । और इस समय जो लग्न है वह किस प्रकार जान सकते हैं ? क्योंकि विना जन्म-समय की लग्न जाने कुंडली नहीं बन सकती । इस कारण जन्म-तिथि, महीना, सन-ईस्वी (या तिथि वार मास सम्बत) और जन्मसमय और जन्मस्थान अवश्य मालूम होना चाहिए । विना समय और तिथि आदि के जाने, लग्न नहीं मालूम हो सकती । कुंडली में लग्न बहुत महत्व की है, क्योंकि यदि लग्न में अन्तर पड़ जायगा तो कुंडली के फल कहने में बहुत अन्तर पड़ेगा । जितना ही अधिक सूक्ष्म समय होगा उतनी ही सूक्ष्म लग्न निकाली जा सकती है ।

गणित द्वारा सूक्ष्म लग्न निकालने में नवीन विद्यार्थी को आरम्भ में कठिनाई जान पड़ेगी । इस कारण पहिले उनका मित्रात बता देते हैं । सूक्ष्म रूप में लग्न निकालने की विधि गणित खण्ड में मिलेगी । यहाँ प्रारम्भिक ज्ञान के लिए लग्न निकालने की स्थूल रीति बतायेंगे, क्योंकि स्थूल रीति में लग्न निकालना सरल है, इसी कारण पहिले उसे उदाहरण देकर समझायेंगे ।

लग्न जानने के पहिले यह जान लेना आवश्यक है कि सूर्य कहाँ पर अर्थात् किस राशि पर है । यह पचाग में दिया रहता है । किसी किसी पचाग में प्रातः काल का, किसी में मित्र कालीन सूर्य स्पष्ट दिया रहता है । मित्र काल की जो घड़ी पत्र दी है उस समय पर सूर्य किस राशि के किनारे अथ कला विकला पर है यह देखो । जिस राशि पर सूर्य होगा, पचाग देखने में प्रगट हो जायगा । यदि दैनिक सूर्य स्पष्ट पचाग में नहीं दिया है तो सूर्य की सञ्क्रांति कौन है और कब हुई पंचाग में देखो । जहाँ मेपेऽर्क वृषेऽर्क इत्यादि लिखा होगा वहाँ घड़ी पल भी लिखी होगी, उसमें प्रगट होगा कि अमुक तिथि को अमुक समय पर अमुक सञ्क्रांति हुई है । जिस राशि पर सूर्य आता है उसी राशि की सञ्क्रांति भी कहलाती है, इसी कारण राशि के आगे अर्क लिखा रहता है ।

सूर्य एक राशि पर लगभग एक मास रहता है और प्रतिदिन लगभग १ अंश अनुमान में चलता है । ज्योतिषी को मदैव ध्यान में रखना चाहिए कि आजकल कौन राशि पर सूर्य है, और उस राशि पर कब सूर्य आया था (कब सञ्क्रांति हुई थी) ।

मान लो श्रावण कृष्ण २ को पचाग में कर्क चार्क ३४।२ लिखा है । इस समय से कर्क राशि में सूर्य अथा । अपने को श्रावण की अमावस्या को सूर्य की स्थिति जानना है । अमावस्या तक १५ तिथियां होती हैं । गत २ तिथि घटाई तो शेष १३ दिन में १३°

सूर्य चला । इससे प्रगट हुआ कि सूर्य अभी कर्क का ही है, केवल १३° लगभग कर्क के अभी व्यतीत हुए हैं ।

जिस राशि पर सूर्य होता है वही राशि सूर्योदय पर होती है । ज्यो ज्यो सूर्य मध्याह्न की ओर बढ़ता है उसी के अनुसार उसके आगे की लग्नों का क्रमानुसार उदय होता रहता है । इस प्रकार लग्न में परिवर्तन होता रहता है ।

मान लो वृष राशि पर सूर्य है और समय प्रातः काल का है तो सूर्य उदय के साथ-साथ वृष लग्न भी प्रातःकाल उदय होगी तब उस समय कहेंगे कि वृष लग्न का उदय हुआ है । यदि ठीक उसी समय किसी का जन्म हुआ हो तो लग्न स्थान में हम वृष राशि का सूचक २ अंक लिख देंगे और आगे की राशियाँ क्रमशः एक-एक कोठे में रखकर आगे की पूरी १२ राशियाँ क्रमानुसार भर देने पर जन्म समय की ग्रह रहित लग्न कुण्डली बन जायगी । इस कुण्डली में वृष लग्न है ।

३	१
४	२ सू. (लग्न)
५	११
६	८
७	९
१२	१०

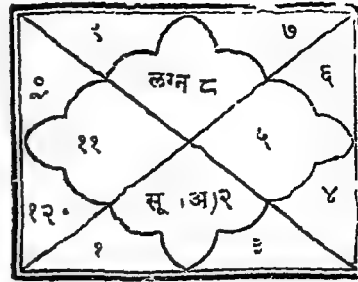
जब सूर्य ठीक सिर पर आता है तो हम कहेंगे कि सूर्य दशम स्थान पर आया है, क्योंकि सिर के ऊपर का ही नाम दशम स्थान है और मध्याह्न काल में सूर्य सिर पर आता है । मान लो किसी का जन्म ठीक दोपहर को हुआ है तो हम दशम स्थान में, सिर पर जो राशि हो उस राशि को रख देंगे, क्योंकि उस समय दशम स्थान में सूर्य होने से, सूर्य की वृष राशि भी दशम स्थान में रहेगी । यहाँ सूर्य वृष राशि का है तो दशम स्थान में वृष का

६	४
७	५ लग्न
८	२ सूर्य (दशम)
९	११
१०	१२
३	१

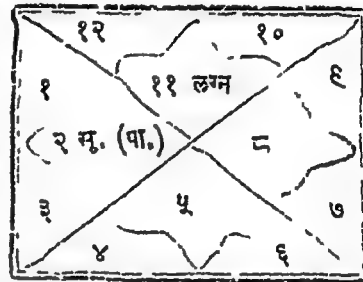
अंक २ लिखकर वहाँ सूर्य भी लिख देंगे और आगे की राशियाँ क्रम पूर्वक आगे के कोठों में भर देंगे जैसा यहाँ बताया है । इस कुण्डली में लग्न के स्थान में ५ अंक आया है यही पाचवी सिंह लग्न यहाँ पर जन्म लग्न हुई, और यही उस समय के जन्म की ग्रह रहित कुण्डली बन गई ।

जब सूर्य अस्त होने लगता है तो कहेंगे कि सूर्य अस्त स्थान अर्थात् सप्तम स्थान पर आया है । यदि उस समय किसी का जन्म हो तो सप्तम स्थान पर सूर्य जिस राशि

पर हो वह राशि लिख दो और आगे सब राशिया क्रमश भर दो तो ग्रह रहित लग्नकुण्डली बन जायगी। यहाँ पर वृष राशि का सूर्य है इस कारण सप्तम स्थान [अस्त] पर वृष का २ अंक लिखा और आगे की राशियाँ भर देने से लग्न स्थान में वृश्चिक राशि आई। इससे प्रगट हुआ कि उस समय वृश्चिक लग्न थी।



जब ठीक अर्द्ध रात्रि हो तो कहेंगे कि सूर्य पाताल [चतुर्थ स्थान] में है। यदि ठीक उस समय किसी का जन्म हो तो जिस राशि पर सूर्य हो उसे चतुर्थ स्थान में लिखकर आगे की शेष राशियाँ क्रमानुसार भर देंगे तो उस समय की ग्रह रहित कुण्डली बन जायगी। यहाँ वृष का सूर्य है तो २ को चतुर्थ स्थान [पाताल] में रखा और शेष राशियाँ क्रमानुसार भर देने पर लग्न में ११ कुम्भ राशि आई तो कहेंगे कि जन्मसमय कुम्भ लग्न थी और यहाँ ग्रह रहित जन्मकुण्डली होगी।



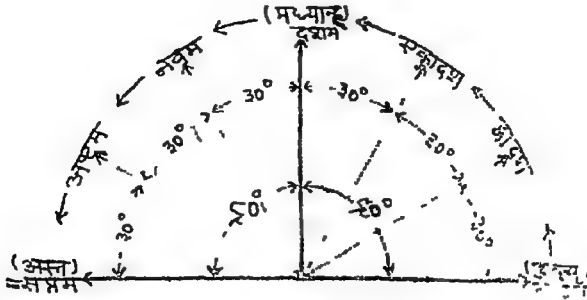
ऊपर के उदाहरण में सूर्य की स्थिति के अनुसार ठीक ठीक जन्म समय मिल जाने पर कुण्डली बना लेना सरल हो गया था।

यदि इनके अतिरिक्त और कोई समय में किसी का जन्म हो तो कैसे लग्न जानना, यहाँ बतलाते हैं।

पहिले बता चुके हैं कि एक चक्र में ३६०° और ४ समकोण होते हैं। सूर्य उदय से अस्त तक १८०° (६ राशिया) पार करता है। ३०-३० अंश की १ राशि होती है। उदय से मध्याह्न तक ९०° का कोण बनता है और सूर्य ३ राशियाँ पार करता है। इस प्रकार उदय से अस्त तक १८०°=६ राशि पार करता है। देखो चित्रसख्या ७०।

जब सूर्य उदय होता है तो लग्न पर होता है। मध्याह्न में दशम पर, संध्या को सप्तम पर होता है। इसी के अनुसार बीच के भाग कोण जान लेना। जैसे उदय से ३०° ऊपर सूर्य जाने पर द्वादश भाव में सूर्य पहुँचेगा। ३०° और ऊपर चढ़ने पर एकादश भाव में आवेगा। इसी प्रकार अस्त स्थान से ३०° ऊपर सूर्य है तो अष्टम स्थान में सूर्य है ऐसा कहेंगे। यदि सूर्य और ऊपर अस्त से ६०° पर मध्याह्न की ओर है या मध्याह्न से ३० अंश आगे बढ़ा है तो कहेंगे सूर्य नवम स्थान या नवम भाव में है।

आकाश के अर्द्ध गोलाकार को जो क्षितिज के ऊपर है ६ भागों में अनुमान से विभक्त कर लो और वे ६ भाव (स्थान) आकाश में कहाँ कहाँ है बताए हुए चित्र सख्या ७० के अनुसार अनुमान करो ।



चित्र सख्या ७०

आकाश में लग्न से अस्त तक भाव

यदि दिन है तो सूर्य को देखो और अनुमान करो कि किस भाव में है, जैसे सूर्य को देखकर कितना बजा होगा इसका अनुमान हो जाता है इसी प्रकार इसके भी अनुमान करने का अभ्यास कर लो । जिस भाव में सूर्य हो उस भाव में सूर्य लिख कर सूर्य की राशि भी लिख दो और आगे की राशियाँ सब क्रमानुसार भर दो तो उस समय की लग्न कुडली बन जायगी और लग्न के स्थान में जो राशि आवे उसे लग्न समझो ।

अब यह बात विचारने की है कि ६ राशियों में सूर्य उदय से अस्त तक प्रायः १२ घंटे में घूमता है, इससे एक राशि में लगभग २ घंटे का औसत पड़ा । जैसे सूर्य ६ वजे उदय हुआ तो १२ वें भाव में ८ वजे, ११ वें में १० वजे, दशम में १२ वजे, (दोपहर) नवम भाव में २ वजे, अष्टम में ४ वजे और सप्तम में ६ वजे सध्या को सूर्य पहुँचेगा ।

उदय काल के अनुसार समय बदलता रहता है । इस कारण सूर्य को देखकर भाव का अनुमान करना और जिस भाव में सूर्य दिखे उसी भाव में सूर्य रखकर सूर्य की राशि भी उसी भाव में लिख दो और क्रमशः आगे की राशियाँ भर दो तो ग्रह रहित लग्न कुडली बन जायगी ।

ऊपर ल न प्रकार २-२ घंटे का दिया है, परन्तु वास्तव में किसी लग्न का अधिक किसी का कम प्रमाण है परन्तु (१) मेष-मीन (२) वृष-कुम्भ (३) मिथुन-मकर [४] कर्क-धन, (५) सिंह-वृश्चिक (६) और कन्या-तुला इनका सदैव एक समान लग्न प्रमाण रहता है अर्थात् मेष और मीन का एक ही लग्न प्रमाण है । इसी प्रकार शेष २-२ राशियों की जोड़ी दी है उन दोनों का एक ही लग्न प्रमाण होता है ।

परन्तु यहाँ पर अविक खट-पट में न पड़कर स्थूल रूप से २-२ घण्टे का प्रत्येक राशि का उदय प्रमाण सिद्धान्त समझाने के लिए ही मान लिया है। सूक्ष्म रूप से इसका विचार गणित खण्ड में मिलेगा।

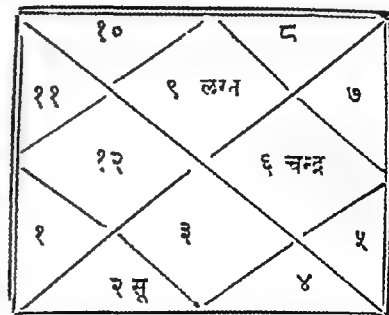
मान लो किसी का जन्म २ वजे रात का है। यदि ६ वजे सूर्योदय हुआ है तो सूर्योदय से $(१२-६)=६$ घण्टा दोपहर तक + १२ घण्टा आधी रात तक + २ घण्टा और = २० घण्टा हुआ या = २४ घण्टा अर्द्ध रात्रि तक + २ घण्टा = २६ घण्टा - ६ घण्टा सूर्योदय के = २० घण्टा $\div २ = १०$ राशि। १ राशि २ घण्टा में हुई तो २० घण्टा में १० राशि हुई। सूर्य वृषराशि का है तो वृषराशि से १ गिना तो १० वी राशि कुम्भ हुई। यही कुम्भ लग्न उस समय होगी।

यदि जन्म २-२५ वजे मध्याह्न का है $= १२ + (२-२५) = १४$ घ० २५ मि० इसमें से ६ वजे सूर्योदय का घटाया तो ८-२५ रहे। इसमें २ का भाग दिया तो ४ बार पूरा भाग लग गया और शेष बचा उसकी पाँचवी राशि हुई। वृष से पाँचवी राशि कन्या हुई। इस कारण उस समय कन्या लग्न होगी।

इसी प्रकार सूर्योदय से जन्मसमय तक घण्टा मिनट गिन कर २ का भाग देने से और सूर्योदय की राशि से उतनी सख्या गिनने पर इसका अनुमान हो जाता है कि उस समय लग्न में कौन राशि होगी।

मान लो रात्रि का समय है और चन्द्र दिखता है तो पञ्चांग से देख लो कि चन्द्र किस राशि पर है। पञ्चाङ्ग विषय में दैनिक चन्द्र देखना बतला दिया गया है। सूर्य देख कर जिस प्रकार कुण्डली बनाई थी यहाँ उन्ही प्रकार चन्द्र देख कर कुण्डली बना लेना। जिस स्थान पर चन्द्र आकाश में दिखेगा उसी स्थान पर चन्द्र लिख कर चन्द्र की राशि भी लिख देंगे और क्रमानुसार आगे की राशियाँ भर देंगे तो लग्न कुण्डली बन जायगी।

जैसे कन्याराशि का चन्द्र जन्म समय सिर पर है अर्थात् दशम स्थान में है तो दशम भाव में चन्द्र और चन्द्र की राशि का अंक ६ लिख कर आगे की राशियाँ क्रम पूर्वक भर देने से घन लग्न आ जाती है। यह लग्न कुण्डली बन गई। यहाँ सूर्य भी लिख दो। अपने को पहले



से मालूम है कि इस समय वृष राशि का सूर्य है। जहाँ वृष राशि हो सूर्य लिख दो। यहाँ पष्ठ भाव में वृष राशि है इस कारण पष्ठ भाव में सूर्य लिख दिया।

चन्द्र यदि और कोई स्थान में हो तो आकाश में चन्द्र जिस भाव में दिख रहा हो उस भाव में चन्द्र और उसकी राशि लिख कर उपर्युक्त रीति से कुण्डली बना लो तो लग्न निकल आवेगी ।

यदि चन्द्र भी नहीं है और अथेरी रात है तो तारागणो को देखो कौन नक्षत्र कहाँ पर है और वह नक्षत्र किस राशि का है । किसी एक नक्षत्र पर से राशि जान कर देखो वह किस भाव में है, जिस भाव में वह राशि हो लिख कर क्रम पूर्वक शेष राशियाँ भर दो तो लग्नस्थान में जो राशि आवे वही लग्न होगी यदि सत्र नक्षत्रों की अच्छी तरह पहचान हो गई हो तो कौन नक्षत्र उदय हो रहा है, कौन उदय हो चुका है उन नक्षत्रों की राशि पर से उनके ठीक-ठीक स्थान का अनुमान कर उपर्युक्त रीति से कुण्डली बना कर लग्न जान लो ।

परन्तु स्मरण रहे कि यह सब स्थूल मान से है । जैसे कोई पूछे कि इस समय क्या वजा होगा तो सूर्य की ओर देखकर अनुमान किया जा सकता है कि इस समय ३ वजा होगा । यदि उस समय घड़ी देखते हैं तो विदित होता है कि ३ वज्र कर ३० मिनट ४० सेकेण्ड हुआ है या ३ वजने को १४ मिनट बाकी है । इसी प्रकार उपर्युक्त रीति भी स्थूल है । इससे कुछ सूक्ष्म और शुद्ध लग्न पञ्चाङ्ग में दिये हुए दैनिक लग्न पत्र से जानी जा सकती है ।

दैनिक लग्न होरा सारिणी

यह प्रत्येक पञ्चाङ्ग में नहीं दिया रहता, परन्तु काशी, जबलपुर आदि कई स्थानों के पञ्चाङ्ग में अवश्य दिया रहता है । यद्यपि इसके विषय में पहले बता चुके हैं परन्तु यहाँ और भी उदाहरण देकर समझाते हैं । उदाहरण के लिए जबलपुर का लोकविजय पञ्चाङ्ग सम्वत् २००० का लेते हैं ।

पञ्चाङ्ग के तिथिपत्र के नीचे उस पत्र भर की तिथियाँ और वार ऊपर लिखा है । वाई और खड़ी पंक्ति में लग्न के नाम दिये हैं और आगे वह लग्न कब तक रहेगा उसका घटा मिनट दिया है ।

जन्म समय ठीक क्या वजा है देखो, यदि लड़ाई के समय का नया समय* (१ घंटा बढ़ा हुआ) है तो १ घंटा घटाकर पुराना समय बनालो और लग्नपत्र में उस तिथि और वार के नीचे अपना इष्ट समय खोजो । इष्ट समय सारिणी में दिये हुए जिस समय के भीतर मिले उसके वाई और जो लग्न लिखी हो वही लग्न उस समय होगी ।

* लड़ाई के समय तारीख १-९-१९४२ ई० से ता० १५-१०-१९४५ तक गवर्नमेन्ट की आज्ञा से भारतवर्ष में घड़ियाँ १ घंटा आगे बढ़ा दी गई थी । जिसके कारण उस समय १ घंटा बढ़ा हुआ समय प्रचलित था ।

मान लो किसी का जन्म वैशाख शुक्ल ३ शुक्रवार के रात्रि के ६-४० वजे का है। लग्न पत्र के नीचे शुक्ल पक्ष की ३ तिथि शुक्रवार के नीचे ७-७ तक तुला और ६-२४ तक वृश्चिक लग्न है। अपना समय बढ़ा हुआ समय होने से एक घटा घटा कर लिया तो (१-४०)-(१-०)=०-४० यह पुराना समय हुआ। ६-२४ के भीतर यह ०-४० है। इस कारण उस समय वृश्चिक लग्न हुई। यही जन्म लग्न हुई। वृश्चिक लग्न को लग्न स्थान में रखकर कुंडली बना लो।

ध्यान रहे लग्नपत्र में घटा मिनट में ही समय दिया रहता है, इससे अपना समय घटा मिनट में रात या दिन का है जान कर लग्न निकाल लो। इसमें लग्न जानना बहुत ही सरल है।

किसी २ में लग्न प्रारम्भ होने का समय दिया रहता है और समय रेलवे के अनुसार २४ वजे तक दिया रहता है। जिस प्रकार लग्नपत्र हो बुद्धि से विचार कर उपयोग करो। नये विद्यार्थी को कोई ऐसा पचाङ्ग खरीदना चाहिये जिसमें लग्नपत्र आदि आवश्यक बातें दी हो।

अध्याय २२

इष्ट काल निकाल कर लग्न सारिणी से लग्न निकाल कर जन्म कुंडली बनाना।

इष्टकाल—

कोई भी विचारणीय इष्ट विषय के सम्बन्ध में यह जानना कि उस समय क्या व्रजा है, वही समय इष्टकाल कहलाता है। जैसे किसी का जन्म १० वजे दिन को हुआ तो १० वजे का समय इष्टकाल घटा में हुआ। यदि किसी ने कोई प्रश्न पूछा तो उसका उत्तर देने के लिये उस समय की लग्न जानने के लिये समय की आवश्यकता होगी वही समय इष्ट काल है। जैसे किसी ने २ वजे रात को पूछा कि अमुक द्रव्य चोरी गया है मिलेगा कि नहीं तो २ वजे रात का समय अपना इष्ट काल हुआ।

इष्ट काल का समय घड़ी पल में होना आवश्यक है। यदि यह समय घटा मिनट में दिया हो तो इसके घड़ी पल बना लो। यह स्मरण रहे कि घटा मिनट का समय अर्द्ध रात्रि से आरम्भ होता है अर्थात् १२ वजे रात के उपरान्त १-२ आदि वजना है और अपना इष्ट घड़ी पल का समय सूर्योदय के उपरान्त आरम्भ होता है अर्थात् इष्ट घड़ी पल से प्रगट होता है कि सूर्योदय से इतने घड़ी पल उपरान्त किसी का जन्म आदि हुआ है।

जन्म समय घटा मिनट में दिया रहता है उसे घड़ी पल में परिवर्तन करने की युक्ति यह है :—

उम दिन सूर्योदय का समय (जो घटा मिनट में दिया रहता है) पचाग से देख लो और उस समय को इष्ट काल के घटा में से घटा दो, जो शेष घटे वचे उनके घड़ी पल बना लो तो इष्ट निकल आयगा । इसी को कुछ उदाहरण देकर समझाते हैं —

(१) यदि १२ वजे ' दोपहर ' के प्रथम जन्म है तो उसमें से सूर्योदय के घटा मिनट घटा कर जो वचे उसके घड़ी पल बना लो । मान लो सूर्योदय ५ घं० ३१ मि० पर है और जन्म ११ वज्रकर ५० मिनट पर हुआ है तो जन्मघटा में सूर्योदय घटाने से ६-१६ घटा बचा । इसके घड़ी पल बना दे तो १५ घंटा ४७॥ प० हुए तो अपना इष्ट काल १५ घं० ४७॥ पल हुआ ।

	घण्टा मिनट	घड़ी पल
जन्म—	११-५०	६ घण्टा=१५-०
सूर्योदय	५-३१	१६ मि०=०-४७॥
शेष	६-१६	योग=१५-४७॥

(२) यदि दोपहर (१२ वजे) के उपरान्त रात्रि के १२ वजे तक जन्म है तो जन्मसमय रेलवे टाइम के अनुसार बना लो अर्थात् १२ घण्टा और जोड़ देना । जैसे रात के ११ वजे है तो ११ + १२=२३ वजे जन्म समझो । अब इसमें से सूर्योदय घटा कर घड़ी पल बना लो जैसे जन्म १२ वजे रात का है तो १२ + १२=२४ वजे जन्म समझो । यदि उस दिन सूर्योदय ५ घण्टा ४५ मिनट पर हुआ तो २४ घण्टा से सूर्योदय का समय घटाने से शेष १८ घण्टा १५ मिनट बचा, इसके ४५ घड़ी ३७॥ पल हुए । इस कारण ४५ घड़ी ३७॥ पल इष्ट काल हुआ ।

	घण्टा मिनट	घड़ी पल
जन्म—	२४-०	१८ घण्टा = ४५-०
सूर्योदय	५-४५	१५ मि० = ०-३७॥
शेष १८-१५		योग = ४५-३७॥

यदि जन्म अर्धरात्रि के उपरात है तो उसमें (१२ दोपहर + १२ घण्टे अर्धरात्रि के=२४) २४ घंटा जोड़ दो और उसमें सूर्योदय घटा कर घटा मिनट के घड़ी पल बना लो तो इष्ट निकल आवेगा जैसे रात के २ घं० ४५ मि० पर जन्म है तो इसमें २४ घंटा जोड़े तो २६ घं० ४५ मि० हुए । इसमें सूर्योदय घटाया । मान लो सूर्योदय ५ घं० ३१ मि० पर था । यह घटाने से २१-१४ वचे, इसके ५३-५ घड़ी पल हुए । इस कारण अपना इष्ट ५३ घं० ५ प० हुआ ।

	घ० मि०	घ० प०
जन्म—	२-४५	२१ घण्टा=५२-३०
	+ २४- ०	१४ मि०= ०-३५
जन्म =	२६-४५	योग ५३- ५
सूर्योदय	५-३१	डण्ट
	शेष २१-१४	

लग्नसारिणी से लग्न देखना

किसी-किसी पञ्चांग में दैनिक लग्नपत्र नहीं रहता। लग्नपत्र से केवल लग्न ही विदित होती है, परन्तु यह पता नहीं चलता वह लग्न कितने अंश युक्त हो चुकी है। इस कारण लग्न जानने की तीसरी सरल रीति यहाँ देते हैं। इसमें लग्न की राशि और अंग भी जान सकते हैं। यह लग्न सारिणी द्वारा जानी जा सकती है।

लग्नसारिणी प्रत्येक पञ्चांग में दी रहती है। बहुधा ज्योतिषी जो गणित द्वारा लग्न निकालने की षट-पट से वचना चाहते हैं, इसी सारिणी द्वारा लग्न निकाल लेते हैं। गणित द्वारा इसमें भी सूक्ष्म रूप से शुद्ध लग्न कला विकला तक निकाली जा सकती है। प्रत्येक स्थान के अनुसार लग्न प्रमाण में कुछ अंतर पड़ जाता है, परन्तु काम चलाने की यह सारिणी बहुत उपयोगी है, इससे लग्न तो अवश्य ठीक निकल आती है। आरंभ में इसका उपयोग जान लेने से नया विद्यार्थी काम चला सकता है। अपने स्थान की लग्नसारिणी बनाना और लग्न निकालने का पूरा गणित, गणित खण्ड में मिलेगा।

जिस दिन की ल न निकालना हो उस दिन के सूर्य की राशि और अंश पञ्चांग से देख लो। जैसे वृषाक्ष बुध ३ सम्बत् २००० शुक्रवार को पञ्चांग में प्रातः रवि स्पष्ट ०-२२-१५-१ दिया है अर्थात् मीनराशि गत होकर मेषराशि के २२°-१५'-१" पर प्रातः काल सूर्य था।

अब लग्नसारिणी देखो। बाई ओर खड़ी पंक्ति में राशि दी है और ऊपर आड़ी पंक्ति में अंग दिये हैं। अपनी सूर्य की राशि ० रा २२° है (मेष के २२ अंश) यहाँ कला विकला छोड़ दिया। अब खड़ी पंक्ति में देखो जहाँ मेष वृष आदि राशियाँ लिखी हैं वहाँ ० मेष, वृष १, मिथुन २ इत्यादि दिया है अर्थात् दिये हुए अंक की राशि गत हो गई और अक्षरों में बताई राशि वर्तमान है। जैसे मेष ० दिया है इसका अर्थ यह है कि ० (मीन) राशि तो गत राशि है और मेषराशि वर्तमान राशि है। सूर्य मेष ० का है इससे मेष ० के सीध में दाहिनी ओर, और सूर्य मेष के २२° पर है, इससे २२° के नीचे देखा (ऊपर की पंक्ति में २२° खोजो)। २२° के नीचे मेष की सीध में ५-५६-०

लिखा हुआ मिला । इसमें अपना इष्ट काल जोड़ो । मान लो अपना इष्ट काल ८-४० वजे रात का है । उस, दिन सूर्योदये ५-३१ पर था तो ८-४० में १२ घटा जोड़ के सूर्योदय घटाया और उसके घड़ी पल बनाये तो इष्ट ३७-५२-३० हुआ । इसमें ऊपर का प्राप्त सारिणी अंक ५५-५६-० जोड़ा तो ४३-४८-३० घड़ी हुई । अब सारिणी के भीतर

घ० मि०	घ० प०
८-४०	१५ घण्टा = ३७-३०
+ १२-०	९ मिनट = ०-२२-३०
जन्म=२०-४०	= इष्ट = ३७-५२-३०
सूर्योदय ५-३१	+ सारिणी अंक ५-५६-०
शेष=१५-९	= ४३-४८-३०

खोजो इस अंक के समीप का अंक कहा है, सारिणी में इसके समीप का ४३-५६-० मिला । अपना इष्ट युक्त सारिणी अंक ४३-४८-३० है । इसके समीप का यही ४३-५६-० मिलता है । इसके आगे ४४-१०-२० अंक है वह बहुत अधिक है, इस कारण ४३-५६-० को ही लिया । अब इस अंक के बाईं ओर देखा वृश्चिक राशि है और ऊपर अश्व देखा तो २२° मिला । इससे प्रगट हुआ कि वृश्चिक लग्न २२° युक्त हुए है । या ल न ७ रा० २२° है ।

अब लग्न कुंडली में लग्न के स्थान पर वृश्चिक के ८ अंक रख कर पूर्व बताई रीति से पूरी कुण्डली बना लो ।

लग्न सारिणी से लग्न देखने की रीति यह है कि उस दिन का सूर्य जिस राशि अंश पर है पंचांग से देख लो । समझो किस राशि के कितने अंश भुक्त हुए हैं । जैसे सूर्य रा० १०-२५° दिया है तो मकरराशि भुक्त होकर कुंभ के २५° भुक्त हुए हैं, यहा सूर्य की राशि कुंभ लेंगे । खड़ी बाईं ओर की पंक्ति में सूर्य की राशि मिलेगी और ऊपर आड़ी पंक्ति में अंश मिलेंगे । खड़ी पंक्ति में वर्तमान राशियों के नाम और भुक्त राशियों के अंक दिये हैं जैसे ६ तुला, यहा ६ कन्या राशि भुक्त हो गई है और तुला राशि वर्तमान है ऐसा समझना । सूर्य की जो राशि वर्तमान हो उसको खड़ी पंक्ति में खोज कर उसके आगे दाहिनी ओर सीध में और सूर्य के इष्ट अंशों के नीचे जो अंक में मिलें उसमें इष्ट काल जोड़ दो । यदि इष्ट काल जोड़ने से ६० घड़ी से अधिक इष्ट काल हो जाता है तो उसमें से ६० घड़ी निकाल दो (घटा दो) और शेष (बचे हुए) अंक लो । फिर इष्ट युक्त प्राप्त सारिणी अंक को सारिणी में खोजो । इससे मिलता जुलता और इससे कम अंक जहा मिले उसके बाईं ओर, लग्न की राशि और सबसे ऊपर सीध में अंश लिखा मिलेगा, वही लग्न होगी । जैसे ३ कर्क लिखा हो और ऊपर १४ अंश लिखा

हो तो लग्न रा० ३-१४° समझना अर्थात् कर्क के १४° भुक्त हो गये हैं। कुंडली में यही कर्क लन लिखना जैसा ऊपर उदाहरण देकर समझा दिया गया है।

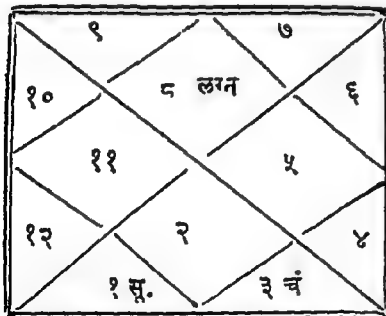
जन्मसमय बहुधा घंटा मिनट में दिया रहता है, यह बहुत साधारण समय है। वास्तव में समय कई प्रकार के है। जर्मन की दूसरी लड़ाई के समय यहा का प्रचलित स्टेण्डर्ड टाइम १ घण्टा बढ़ा दिया गया था अर्थात् वरमा का स्टेण्डर्ड टाइम भारतवर्ष भर में प्रचलित कर दिया गया था। इस टाइम से स्टेण्डर्ड टाइम पृथक् है। घूप घड़ी के अनुसार (लोकल टाइम) स्थानिक समय पृथक् है। यहाँ तो केवल प्रारम्भिक बातें बताई जा रही हैं जिसके समझने में नवीन विद्यार्थी को सरलता हो। समय का सूक्ष्म ज्ञान गणित खंड में मिलेगा।

संग्रह कुंडली बनाना

अभी तक लग्न निकाल कर कुंडली चक्र में राशियाँ स्थापित करना ही बताया है, उसमें ग्रहों की स्थिति विचार कर ग्रह स्थापित करने को रह गया है। कुंडली में ग्रह कैसे रखना यहाँ बतलाते हैं।

मान लो वैशाख शुक्ल ३ सम्बत २०००, जन्मसमय ८ घं० ४० मि० वजे रात्रि की कुंडली बनाया है। लग्न सारिणी देखने से ८-४० वजे वृश्चिक लग्न आई थी।

लग्न कुंडली



वृश्चिक लग्न होने से लग्न कुंडली में, लग्न स्थान में ८ रखकर शेष राशियाँ शेष स्थानों में भर दी। अब ग्रह भरने के लिये पंचांग देखो। उस दिन प्रातः काल रवि स्पष्ट में सूर्य रा०-२२°-३५'-१" दिया है अर्थात् मीन गत होकर मेष राशि पर सूर्य है। इससे जहाँ मेष का अंक १ लिखा है वहाँ सूर्य लिख दिया। अब चंद्र को

देखा तो उस दिन ३१ घं० ४५ प० उपरांत मिथुन राशि में आया है। अपना इष्ट काल ३७ घं० ५२ प० ३० वि० है यह ३१-४५ से अविक है। इस कारण चंद्र मिथुन राशि पर आ गया है, इससे मिथुन के अंक ३ के कोठे में चंद्र रखा।

शेष ग्रह साप्ताहिक ग्रह चक्र देखकर भरना पड़ता है। पंचांग में वैशाख शुक्ल ८ बुधवार का ग्रह स्पष्ट का चक्र दिया है और इसके पहिले चैत्र कृष्ण ३० (अमावस) मंगलवार का ग्रह स्पष्ट का चक्र दिया है। अपना जन्मसमय इन दोनों के बीच का है। दोनों चक्रों को देखो उनमें क्या अंतर है। चंद्र और सूर्य ग्रह तो पहिले लिख चुके हैं, शेष ५ ग्रह और लिखना है।

वैशाख कृष्ण ३०

बु.शु.श. २	१२	
गु. ३	१ चं. सू.	म. ११
४ रा.	१० के	
५	७	६
६	८	

वैशाख शुक्ल ८

बु श. २	१२	
गु शु ३	१ सू	११ मं.
४ रा. च	१० के	
५	७	९
६	८	

इन दोनों चक्रों में वे ग्रह जिनमें कोई अंतर नहीं है वे हैं - २ बु० ११ म० ३ गु० २ श० ४ रा० १० के० । इस कारण ये ग्रह अपनी कुंडली में भी इन्हीं स्थानों में लिख दोगे । अब केवल शुक्र ग्रह लिखने को रह गया है, क्योंकि पहिली कुंडली में शुक्र वृषराशि में है और दूसरी कुंडली में शुक्र मिथुनराशि में आ गया है । यह कब बदला है पचाग देखो । अब देखना है कि यह अपने इष्ट काल के पहिले बदला है या उसके उपरांत । पचाग के तिथिपत्र के अंत में ये सब सूचनाएँ मिलती है ।

पचाग में वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को मिथुने शुक्र २७-१७ लिखा है अर्थात् वैशाख शुक्ल प्रतिपदा के २७-१७ इष्ट पर मिथुनराशि पर शुक्र आया है । इससे प्रगट हुआ कि इष्ट काल के प्रथम ही मिथुनराशि पर शुक्र आ गया है । इससे शुक्र को मिथुन राशि पर ही लिखना पड़ेगा । इस प्रकार सब ग्रह लिख देने पर अपनी लग्नकुंडली तैयार हो गई ।

लग्न कुंडली

६।	७	
१० के.	८ लग्न	६
११ मं.	५	
१२	२ बु.श.	४ रा
१ सु.क्र	३ चं. गु.शु	

चंद्र कुंडली

४ रा	२ बु. श	
५	३ चं गु शु	१ सू
६	१२	
७	८	११ म
८	१० के	

अब चंद्रकुंडली तैयार करना है । चंद्र मिथुनराशि का है । इस कारण चंद्र की राशि मिथुन, लग्न स्थान में लिखो और शेष राशियाँ क्रमानुसार भर कर, लग्नकुंडली के अनुसार ही गृह भर दो तो चंद्रकुंडली बन जायगी । अर्थात् लग्न ८ की जगह चंद्र की राशि ३ लिख कर शेष सब राशियाँ ग्रह सहित लग्नकुंडली के अनुसार ही

लिख देना पड़ता है। चंद्र कुंडली में केवल राशियों के स्थान में परिवर्तन हुआ है और कोई अंतर नहीं पड़ता जैसा ऊपर बताया है।

चंद्रकुंडली को राशिकुंडली भी कहते हैं। मनुष्य के शरीर से जैसा लग्न का सम्बन्ध है उसी प्रकार चंद्र का भी सम्बन्ध है। विशेष कर चंद्रग्रह मन का द्योतक है। जन्म के चंद्र से गर्भाधान काल का लग्न से विशेष सम्बन्ध रहता है। इस कारण लग्नकुंडली के साथ-साथ चंद्रकुंडली भी स्थापित की जाती है।

ऊपर जो कुंडली बनाने की रीति समझाई गई है यह कुंडली, जन्म (जन्म पत्र बनाना), वर्ष (वर्ष फल बनाना), प्रश्न (किसी प्रश्न के निर्णय करने के समय) इत्यादि के सम्बन्ध से जहाँ जैसी आवश्यकता हो बनाई जाती है और उस पर से फल कथन किया जाता है। इस कारण यह कुंडली बहुत महत्व की होती है, यह जितनी शुद्धता पूर्वक बनाई जा सके उतना ही शुद्ध फल होगा।

अध्याय २३

राशियाँ और कालाङ्ग

कालाङ्ग (काल पुरुष का अंग)

प्रत्येक राशियों का प्रभाव अंग के विशेष भाग में पड़ता है। काल पुरुष के किस अंग के विभाग में कौन राशि विशेष प्रभाव डालती है यह जानना चाहिये। कालपुरुष के अंग और राशियों से सम्बन्ध है, इस कारण कालाङ्ग यहाँ बतलाते हैं। लग्न के विभाग के अनुसार लग्न से या मेष से क्रमानुसार गिनने पर शरीर में इन राशियों का स्थान कहाँ पड़ता है, नीचे बताया है।

लग्न मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुम्भ मीन
या राशि

मुख्य अंग	सिर	मुख	कंधा	हृदय	पेट	कमर	वस्ति	गुहेन्द्रिय	जाघ	घुटना	टांग	पैर	
		गला	बाहु	छाती	कलेजा		मूत्रपिंड						
	Head	Face neck	Arms	Breast	Stomach Heart	Loums	Pelvis Reins	anus ect	Private parts	Thigh	Knces	Legs	Feet

ऊपर चक्र मे इन राशियों या भाव का प्रभाव अग विशेष में बताया है, परन्तु इसके अतिरिक्त और भी अगो पर प्रभाव डालते हैं इस कारण इनको और भी समझाते हैं।

१ मेप इसका प्रभाव विशेष कर मस्तक पर पडता है। मोह के ऊपर के भाग पर इसका प्रभाव जानना। सिर और भेजा, मेधाशक्ति आदि इसके अतर्गत हैं।

२ वृष—मोह के नीचे मुख, नेत्र, चेहरा, गला इसमे शामिल है। इसका प्रभाव ग्रीवा (गर्दन), तक है।

३ मिथुन—दोनों हाथ, कंधे, भुजा, और छाती के ऊपर के भाग तक इसका प्रभाव है। इसका प्रभाव फेफड़े गला वाणी पर भी पडता है। दोनों छातियों मे भी प्रभाव करता है। ग्रीवा और छाती के बीच के भाग पर इसका प्रभाव पडता है।

४ कर्क—हृदय, चित्त, दोनों छाती और जठर (पेट की अग्नि) पर प्रभाव पडता है।

५ सिंह—कुक्षि (कूख-कोखा), पीठ, पेट, हृदय, रक्त स्थान, कलेजा पर प्रभाव करता है।

६ कन्या—कमर, पेट की अँतड़ियाँ और जठर पर भी प्रभाव करता है।

७ तुला—मूत्राशय, गुर्दा, वस्ति, पेट, नाभि, कटि आदि पर इसका प्रभाव पडता है। नाभि के नीचे लिंग स्थान के ऊपर के भाग मे इसका प्रभाव है। यह हाथ के पजे पर भी प्रभाव डालता है। त्वचा पर भी प्रभाव करता है।

८ वृश्चिक—गुह्येन्द्रिय, मल मूत्राशय (गुदा लिंग) आदि पर इसका प्रभाव है।

९ धन - दोनों जघाओं पर इसका प्रभाव है। शरीर का नाडी चक्र (Atrial system) धमनी चक्र आदि पर भी प्रभाव डालता है।

१० मकर—दोनों घुटने, हड्डि, हड्डियों की सधि, पर प्रभाव डालता है।

११ कुम्भ—टाँग, घुटने के नीचे का भाग पिंडली आदि पर और रक्त के बहाव पर प्रभाव डालता है। मज्जा तंतु और नेत्र पर भी प्रभाव डालता है।

१२ मीन—दोनों पैर के पजे, पैर की अँगुली आदि पर प्रभाव करता है। यह आँत और पेट मे भी प्रभाव करता है।

ये प्रभाव लग्न से या लग्न गत राशियों के अनुसार पडता है।

इनका उपयोग

मान लो किसी के जन्मसमय मेप का सूर्य हो। मेप का सूर्य हो। मेप का सूर्य उच्च का होता है (जैसा आगे बताया है) तो वह मनुष्य बड़े मस्तक वाला होगा। अपने मस्तक-बल से धनोपार्जन करेगा। यह मन्त्री आदि बड़े ओहदे पर भी हो सकता है।

किसी राशि में कोई पापग्रह (यह आगे समझाया है) हो तो उन राशियों से जिस अंग का बोध होता है, उस अंग में व्रण (फोड़े) आदि होंगे या उस अंग में कोई ग्रह जनित बाधा उपस्थित होगी, जैसे मेष का मंगल पडा है तो, मेष से सिर पीडित होगा। यदि जन्मकाल में, जन्मलग्न में मेषराशि हो और उसमें मंगल हो तो उसके सिर में चोट आदि का भय हो। जन्मसमय जिस राशि में पापग्रह हो उस राशि का वतलाने वाले अंग में मसादि चिन्ह होंगे। उसी प्रमाण से जिस राशि में पाप ग्रह हो या रवि-चन्द्रः पीडित हो उस राशि के अंग विभाग में रोग होगा।

भाव के अनुसार कालांग

ऊपर राशि के सम्बन्ध से कालपुरुष के अंग बताये हैं वे अंग लग्नादि भाव से भी सम्बन्ध रखते हैं और ममन्त भाव के सम्बन्ध में भी शरीर के अंगों पर प्रभाव पड़ने का विचार किया जाता है।

जैसे मियुन न है यह जातक (जिसकी जन्मकुडली है) का सिर हुआ। उस स्थान पर कोई ग्रह नहीं हो तो सिर में कोई चिन्ह न होगा। मान लो लग्न में शुभ है, शुभ शुभ ग्रह होने में उनका कपाल या सिर सुन्दर होगा। दूसरे स्थान में कर्क राशि है और कोई ग्रह नहीं है वह मुख का स्थान है, इस कारण मुख स्वच्छ होगा। तीसरा स्थान कंवा या बाहु पर प्रभाव करना है, तीसरे में सिंह है और कोई ग्रह नहीं है तो बाहु स्वस्थ होंगे। छठा स्थान का प्रभाव कमर पर होता है। मान लो छठे भाव में वृश्चिक राशि है और इसमें चन्द्र है तो उन्हे खाज गजकर्ण आदि रोग कमर में होंगे, परन्तु चन्द्र शुभ ग्रह होने में अग्नी दग्धा में उम रोग को अच्छा करेगा, इत्यादि प्रकार से भाव के सम्बन्ध में भी विचार होता है।

राशि के सम्बन्ध में विचार करने में उस राशि पर कोई पाप या शुभ ग्रह प्रभाव करता है तो उस राशि के सम्बन्ध से वैसा अच्छा या बुरा फल होता है, जैसे वृष राशि

* टिप्पणी—सूर्य चन्द्र पाप ग्रह में युक्त हो या ग्रहण से युक्त हों या कोई ग्रह युद्ध में पराजित, केतु से धूमित ग्रह और उत्कापात वाला ग्रह पीडित कहलाते हैं। इसका स्पष्टीकरण पृथक् खंड में होगा।

पर कोई पाप ग्रह हो, पाप ग्रह होने से कठ-विकार उत्पन्न करेगा, क्योंकि वृषराशि कंठ आदि पर प्रभाव डालती है। पाप ग्रह उन राशियों के सम्बन्धी अंग में अपनी दशा में अपने पदार्थ द्रव्य आदि से रोग उत्पन्न करते हैं। ग्रहों के पदार्थ द्रव्य आदि आगे दिये हैं।

मान लो मिथुन राशि पर जन्मसमय चन्द्र या सूर्य है। उस पर शनि या मंगल की दृष्टि हो या वहाँ पर ये ग्रह हो तो छाती फेफड़ा सम्बन्धी रोग दमा आदि उत्पन्न करेंगे। कर्क का प्रभाव दोनों छाती पेट पाचन-इन्द्रिय पर भी होता है और स्त्रियों के शरीर में दुःख उत्पन्न करने के स्थान पर भी प्रभाव करता है। कर्क स्त्री राशि है, तो यह स्त्रियों के उस अंग सम्बन्ध से सब प्रकार की नैसर्गिक दुर्बलता उत्पन्न करता है। वहाँ कोई पाप ग्रह होने से रोग उत्पन्न कर देता है। सिंह का प्रभाव पेट में आहार-विहार पर भी होता है, पाप ग्रह के प्रभाव से पेट में रोग उत्पन्न करेगा। इस राशि वाले को गरम पदार्थ चाय शराब आदि त्यागना चाहिए और आहार-विहार नियमित रखना चाहिए। इसी प्रकार कन्या राशि के सम्बन्ध से सग्रहणी आव, वदकोष्ठ और पेट गूल उत्पन्न होता है। तुला मूत्राशय का विकार मधु-मेह, सब प्रकार के प्रमेह आदि उत्पन्न करती है। इस राशि से त्वचा सम्बन्धी रोग भी उत्पन्न होते हैं। वृश्चिक के सम्बन्ध से साथों का रोग इसे जल्दी लगता है। बुरे ग्रह का प्रभाव इस पर होने से गुह्येन्द्रिय सम्बन्धी रोग होते हैं। धन में पाप ग्रह का प्रभाव होने से जाँघों में खून के विकार होते हैं। मकर राशि पर बुरा प्रभाव होने से सरदी का विकार रक्ताभिषरण सम्बन्धी दोष, सधि वात, वदकोष्ठ का, त्वचा रोग उत्पन्न होते हैं। कुंभ में पाप ग्रह हो तो घुटना पैर मज्जा तंतु आदि पर प्रभाव डालता है। यह नेत्र विकार और रक्त दोष भी उत्पन्न करता है। मीनराशि पर पाप ग्रह का प्रभाव होने से आत के रोग, सधिवात ठंड के विकार, पेट का दर्द भी उत्पन्न होते हैं।

ऊपर जो एक राशि के या भाव के अंग बतलाये हैं उसमें १ से १५° तक दाहिना भाग अंग का समझना और उपरांत ३०° तक बाया भाग समझना। जब इन अंगों में दाहिने या बायें में से किसी भाग पर ग्रह प्रभाव डालेगा, यह जानना है तो उस राशि के अंशों के २ भाग कर दो, बाया भाग पूर्वार्द्ध को दाहिना और उत्तरार्द्ध को बाया भाग समझना।

अध्याय २४

राशि गुण-धर्म

प्रत्येक राशियों के पृथक्-पृथक् गुण और धर्म हैं। ये राशियाँ सम हैं या विषम, स्त्री हैं या पुरुष हैं, इनमें कौन तत्त्व की प्रधानता है, अल्प सतान या अधिक संतान देती हैं या बध्ना राशि हैं। स्वभाव क्रूर हैं या सौम्य हैं। इसका प्रभाव किस दिशा में होता है और वात पित्त कफ सम्बन्ध में इसकी प्रकृति कैसी है, ब्राह्मण आदि कौन जाति की यह सूचक है। इसका रंग क्या है, क्रांति कैसी है, किस समय वह राशि बलवान रहती है और जल थल वन आदि में कहाँ विचरने वालों पर प्रभाव रखती है या उनमें से किस प्रकार के लोगों से इसका सम्बन्ध है यह सब राशियों के गुण-धर्म जानने से प्रगट होता है।

इनका उपयोग आगे बहुत पड़ेगा, जैसे अग्नि और वायु वाली राशियों का आपस में मित्रता होती है। भूमि और जल वाली राशियों की मित्रता होती है, परन्तु आँरो की आपस में मित्रता नहीं रहेगी। पुरुष राशियों की पुरुष से, स्त्री राशियों की स्त्रीराशि वालों से मित्रता होगी। पंचम स्थान सतान सूचक है, उसमें मीन राशि हो तो यह मीन राशि बहुप्रभव होने से अधिक सतान होगी। यदि उस पर शुभ ग्रह की या इसके भाव स्वामी की इस पर दृष्टि हो (दृष्टि सम्बन्धी विचार आगे मिलेगा) तो अवश्य बहुत संतान होगी। इसी प्रकार प्रत्येक राशियों के सम्बन्ध से जब विचार करने की आवश्यकता है तो हैं तो उन राशियों के गुण-धर्म पर अवश्य विचार करना चाहिये, इसी कारण इनका जानना आवश्यक है।

कोई प्रश्न, वर्ष या जन्म के समय विचारने में इनकी आवश्यकता होती है जैसे क्रूर राशि है तो क्रूर स्वभाव होगा, सौम्यराशि में सौम्य स्वभाव होगा। प्रश्नसमय चरराशि हो तो जिस सम्बन्ध से विचार कर रहे हो वह चलता-फिरता होगा, स्थिर राशि होने में वह स्थिर होगा। यदि उस समय राशि द्विस्वभाव राशि की लग्न हो तो दोनों मिला हुआ फल अर्थात् कभी चलता कभी स्थिर होगा। कौन चोर है, चोर की जाति आदि निर्णय में, राशि की जाति स्त्री है या पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि व धन कहाँ होगा, कर्क राशि है तो 'जल समीप होगा' इत्यादि बातों के विचारने में यह सहायक होता है। इस कारण राशियों का गुण-धर्म चक्र आगे दिया है।

राशि गुण धर्म चक्र—

राशि गुण धर्म	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१ सम विपम	विपम	सम	विपम	सम	विपम	सम	विपम	सम	विपम	सम	विपम	सम
२ पुरुष स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
३ चर स्थिर द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०	चर	स्थिर	द्विस्व०
४ तत्त्व	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
५ अल्प बहु प्रसव	अल्प या मध्यम	मध्यम	वहु	अल्प	अल्प	अल्प	वहु	अल्प	अल्प	अल्प	मध्यम	वहु
[स्त्री सग]												
६ क्रूर सौम्य स्वभाव	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
७ दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०
८ प्रकृति	पितृ	वात	त्रिधातु	कफ	पितृ	वात	त्रिधातु	कफ	पितृ	वात	त्रि०	कफ
९ जाति	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्ष०	वै०	शूद्र	ब्रा०	क्ष०	वै०	शू०	ब्रा०
१० रङ्ग	पाटल	श्वेत	हरा	श्वेत	पूर्वादिभीला	पाहु	चित्र	श्वेत	सुवर्णसम	पिणल	विचित्र	पिणल
	रक्तपीत	रक्त	स्निग्ध	स्नि०	ल०	र०	स्नि०	स्नि०	ल०	ल०	स्नि०	स्नि०
११ काति [शरीर]	रक्त	रक्त	स्निग्ध	स्नि०	ल०	र०	स्नि०	स्नि०	ल०	ल०	स्नि०	स्नि०
१२ कौन समय बली	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
१३ विचरण स्थान	बली	बली	पर्वत	सरल	भूमि	वन	जल	पर्वत	भूमि	वन	जल	जल
१४ शब्द	वन	भूमि	दीर्घ	हीन	दीर्घ	अर्द्ध	हीन	हीन	अति	अति	खड	हीन
१५ पाद	अति	अति	द्विपद	अपद	चतुष्पद	द्विपद	बहु	बहु	द्विपद	चतुष्पद	अपद	अपद
१६ देह कृश पुष्ट	दृढ	दृढ	मृदु	मृदु	मृदु	कृश	दृढ	कृश	दृढ	दृढ	दृढ	दृढ
१७ उदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शोर्पोदय	पृष्ठोदय	शोर्पोदय	शो	शो	शो	पु०	पु०	पु०	उभयोदय
१८ चतुष्पद आदि	चौपाया	चौ	द्विपद, पु०	कौटक	चौ	पुरुष	पुरुष	कौटक	पु०	पु०	पु०	जलचर जलचर

— १० —

राशियों के भिन्न-भिन्न नाम

कभी-कभी राशियों के चालू नाम के अतिरिक्त और भी नाम ज्योतिष ग्रन्थों में उपयोग में आते हैं, उन्हें भी जान लेना चाहिये ।

- १ मेष—अज वस्त, प्रथम, क्रिय ।
- २ वृष—उक्षा, गौ, तावुरि, शुक्रम ।
- ३ मिथुन—बोध, न्युग्म, जितुम, तृतीय ।
- ४ कर्क—चाद्र, कुलीर, चतुर्य ।
- ५ सिंह—कठीरव, लेप ।
- ६ कन्या—पायोन, पछी, अवला, तन्वी ।
- ७ तुला—जूक, वणिक, सप्तम, तौल ।
- ८ वृश्चिक—कौर्ष्य, अष्टम, काँज, अलि ।
- ९ धन—जैव, धनु, तौक्षिक, चाप ।
- १० मकर—आकेकर, दशम, चक्र ।
- ११ कुंभ—हृद्रोग, घट ।
- १२ मीन—रिप्फ, क्षप, अतिम ।

अध्याय २५

ग्रह विचार

भाव फल विचार करने के लिए आवश्यक बातें ।

किन्नी भाव का फल जानने के लिए इन बातों के विचार करने की पहिले बड़ी आवश्यकता होती है ।

- १—ग्रह शुभ है या पाप ग्रह ।
- २—उस भाव का स्वामी कौन है ।
- ३—भाव-स्वामी पाप या शुभ ग्रह है ।
- ४—उस भाव पर कौन कौन शुभ या पाप ग्रह की दृष्टि है ।
- ५—उस भाव का स्वामी और उस भाव में स्थित ग्रह इन दोनों की मैत्री ।
- ६—उस भाव में स्थित ग्रह उच्चबल (ऊँचाबल) या नीचबल (नीचाबल) का है ।
- ७ वह अपने घर में है (स्वगृही) या मूल त्रिकोण है ।
- ८—उस ग्रह के गुण धर्म क्या है ।

इत्यादि बातें विचार कर ग्रह फल कहना पड़ता है, इस कारण इन सबको आगे-समझायेँगे ।

ग्रहों का शुभत्व पापत्व, स्वगृह (अपना घर) या भाव स्वामी विचार ग्रहों की उच्च नोच्च मूल त्रिकोण राशिधा, ग्रहों की मैत्री, ग्रहों की दृष्टि, ग्रहों के गुण-धर्म आदि आवश्यक बातें प्रत्येक ज्योतिषी को स्मरण रखना चाहिए, बिना इसके जाने काम नहीं चलता ।

(१) ग्रह का शुभाशुभत्व विचार

ग्रह ३ प्रकार के हैं (१) शुभग्रह (२) पापग्रह या क्रूरग्रह (अशुभ ग्रह) और (३) मिश्रग्रह ।

१ शुभग्रह *benefic* — गुरु और शुक्र सदैव शुभ ग्रह समझे जाते हैं ।

२ पाप ग्रह *malefic*—रवि मंगल, शनि, राहु, केतु, हर्षल और नेपचून । ये अशुभ ग्रह हैं इस कारण इनको पाप या क्रूर (दुष्ट) ग्रह कहते हैं । ये सदैव पाप ग्रह ही समझे जाते हैं ।

३ मिश्र ग्रह *mixed*—बुध और चन्द्र ये सयोगवश कभी पाप ग्रह कभी शुभ ग्रह समझे जाते हैं, इस कारण इनको मिश्र ग्रह कहते हैं । वास्तव में ये दोनों शुभ ग्रह ही हैं, परन्तु जब ये पाप ग्रह के साथ होते हैं तो पाप ग्रह और अकेले या शुभ ग्रह के साथ रहते हैं तो शुभ ग्रह कहलाते हैं । इनके सम्बन्ध में विशेष विचार नीचे दिया है ।

(१) बुध—यह शुभ ग्रह से युक्त (साथ) या दृष्ट (शुभ ग्रह की दृष्टि उस पर हो) या शुभग्रह से किसी प्रकार सम्बन्ध हो तो शुभ फल देता है । पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है । बुध अकेला हो और अस्तंगत (सूर्य के साथ) न हो तो शुभ फल देता है ।

(२) चन्द्र—शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक शुभ है, इसके उपरांत पाप ग्रह समझा जाता है । किसी के मत से चन्द्र शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक मध्यम बलवान होता है, परन्तु उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने से बलिष्ठ होता है । शुक्ल दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक पूर्ण बलवान होता है । कृष्ण पक्ष की पंचमी के आगे १० दिन तक बलहीन होता है ।

(२) ग्रहों का स्थान या स्वगृह *Planetary ownership or Lord of houses*
स्वगृह= अपना घर । स्वक्षेत्र अपना स्थान । गृह=घर ।

यद्यपि ग्रह सूर्य के आसपास घूमते हैं, परन्तु सुविधा के लिए पृथ्वी के आसपास आकाश में चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि क्रमानुसार घूमने हुए मान लिये गये हैं । देखो चित्र सख्या ५ ।

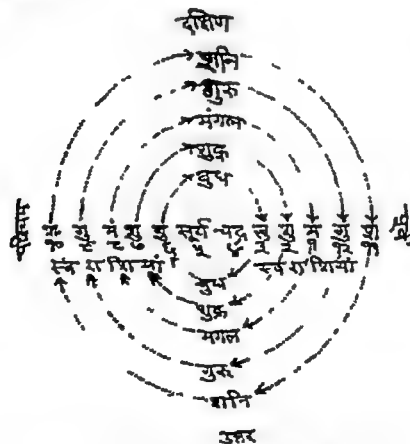
इन ग्रहों में सूर्य और चन्द्रमा का एक एक अपना (निजी) घर है, और ग्रहों के २-२ घर राशि चक्र में हैं। इन घरों को स्वगृह कहते हैं। कौन कौन राशि किस प्रकार किस ग्रह के वाटे में आई आगे समझाते हैं।

पृथ्वी के सबसे निकट ग्रह चन्द्र है, इसका प्रभाव सीधे मन पर अर्थात् हृदय पर पड़ता है। राशि चक्र में कालाग विषय में बता चुके हैं कि हृदय का द्योतक राशि कर्क है, इस कारण चन्द्र का स्वस्थान कर्क राशि मानी गयी है।

चन्द्र के आगे सबसे शक्तिशाली ग्रह सूर्य है। सूर्य का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है और सिंह राशि आत्मा का सूचक है, इस कारण सिंह राशि सूर्य का स्वस्थान माना गया है। कर्क के उपरान्त सूर्य की सिंह राशि आती है। सूर्य के पास बुध है इस कारण उनके दोनों वाजुओं की राशि मिथुन और कन्या इन दोनों का स्वामी बुध हुआ अर्थात् बुध को ये २ घर मिले। बुध यह सूर्य के पास होने से बुध को युवराज कहते हैं।

बुध के उपरान्त शुक्र ग्रह है, इसे दोनों ओर की २ राशियाँ वृष और तुला मिली, इस कारण शुक्र इन २ राशियों का स्वामी हुआ। शुक्र के आगे मंगल है, इसे आगे की २ राशियाँ मेष और वृश्चिक मिली इस प्रकार इन २ राशियों का स्वामी मंगल हुआ।

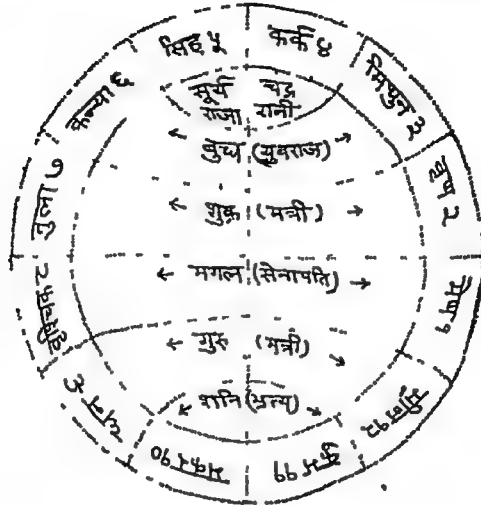
इसके आगे गुरु है उसे आगे की २ राशियाँ मीन और धन मिली, इस प्रकार गुरु इन २ राशियों का स्वामी हुआ।



चित्र—७१ ग्रहों के घूमने का क्रम और स्वराशि

गुरु के आगे आकाश में छोर पर शनि है, इसे आजू-बाजू की शेष २ राशियाँ कुम्भ और मकर मिली। चित्र सख्या ७१ और ७२ देखने से ये सब समझ में आ जायगा कि किस क्रम से कौन २ राशियों का स्वामी कौन ग्रह हुआ। चित्रसख्या ७१ में बताया

है कि ग्रह किस प्रकार घूम रहे हैं और इनको २-२ राशियां किस प्रकार से मिली हैं। चित्र ७२ में स्पष्ट रूप से समझ में आ जायगा कि ग्रहों को किस प्रकार राशियां मिली हैं।



चि०—७२ ग्रहों की स्व राशि

इस प्रकार ये राशियां, इन ग्रहों के स्व-स्थान हुए और इन्हीं स्थानों के स्वामी ये ग्रह हुए। स्वगृह को स्वक्षेत्र भी कहते हैं। जो ग्रह अपने स्थान में होता है वह स्वगृही या स्वक्षेत्री कहलाता है।

ग्रहों के स्वस्थान या स्वक्षेत्र

ग्रह स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक	शनि	राहु	केतु	हर्शल	नेपच्यून
स्वस्थान		१	३	९	२	१०	६	१२	११	१२	
की राशियां	५	४	८	६	१२	७	११				

भावस्वामी या गृहस्वामी Sign ruled by the planet

जिस भाव अर्थात् जिस स्थान में ये राशियाँ रहती हैं उस भाव या स्थान के जो ग्रह स्वामी होते हैं वे ऊपर चक्र में बताये हैं। ये ग्रह स्वामी कहलाते हैं, इनको गृह स्वामी भी कहते हैं। गृहस्वामी का उदाहरण देकर समझाते हैं।

यहाँ लग्न वृश्चिक है तो वृश्चिकराशि का स्वामी मंगल होता है, मंगल वृषराशि में बैठा है, वृष राशि शुक का स्व-गृह (घर) है, इसलिये कहेंगे कि लग्नेश मंगल शुक के घर

में बैठा है। दूसरे भाव में धन राशि है धन का स्वामी गुरु होता है। यह गुरु अपने ही घर में बैठा है तो कहेंगे द्वितीयेश गुरु स्व-गृही या स्वक्षेत्री) है। तीसरे भाव में भकर राशि है, इसका स्वामी शनि होता है। यह शनि, बुध के घर में है, क्योंकि जहाँ शनि बैठा है वहाँ कन्या राशि है और

६ गु	८ शु
१०	८
११ रा	५ के
१२	२ मं बु
१ सू	३
	६ श
	४ च.

कन्या का स्वामी बुध होता है। यहाँ तृतीये शनि बुध स्थानी है। चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि है जिसका स्वामी शनि होता है। यह शनि बुध के घर में है। चतुर्थभाव में राहु बैठा है तो कहेंगे राहु शनि के घर में बैठा है, और चतुर्थेश शनि बुध के घर में है। पंचम में मीन राशि है जिसका स्वामी गुरु होता है, गुरु पंचमेश होकर धन-भाव में बैठा है। षष्ठ में मेष राशि है। इसका स्वामी मंगल है। इससे कहेंगे कि षष्ठेश मंगल सप्तम में है और मंगल के स्थान में सूर्य बैठा है। सप्तम में वृष राशि है जिसका स्वामी शुक्र होता है। इससे यह शुक्र का घर है, इसमें मंगल और बुध बैठे हैं। यहाँ बुध, पाप ग्रह मंगल के साथ होने से पाप ग्रह माना जायगा। सप्तमेश शुक्र द्वादश भाव में स्वस्थानी (अपने घर का) है। अष्टम में मिथुन राशि है यह बुध का घर है, क्योंकि मिथुन का स्वामी बुध होता है। इस घर का स्वामी बुध मंगल के साथ, शुक्र के घर में बैठा है। नवम भाव में चंद्र स्वगृही है, क्योंकि कर्क राशि यहाँ है जिसका स्वामी चंद्र होता है। दशम भाव में सिंह राशि है जिसका स्वामी सूर्य षष्ठ भाव में मंगल के घर में बैठा है। दशम भाव में केतु है, यह सूर्य के घर में बैठा है। एकादश स्थान में बुध स्थानी (के स्थान में) शनि है, क्योंकि यहाँ कन्या राशि है जिसका स्वामी बुध होता है। द्वादश भाव में स्वस्थानी शुक्र है यहाँ तुला राशि है जो शुक्र का ही घर है।

स्वामित्व का और भी विचार

कुंडली में मुख्यतः चंद्र सूर्य और लग्न से फल के विचार में ध्यान दिया जाता है। द्वितीय स्थान से नेत्र ज्योति, कुटुम्ब और विद्या का भी विचार होता है। तीसरे स्थान से कठ, वस्त्र, कर्ण आभूषण, चतुर्थ से वाहन भू सम्पत्ति आदि, पंचम से ईश्वर प्रेम विद्या मंत्र आदि, षष्ठ से भृत्य, व्यसन, रोग आदि का विचार होता है। इन सब स्थानों से किस-किस बात का विचार होता है आगे बताया जायगा, यहाँ तो इससे ग्रहों का प्रभुत्व विचारना है, इस कारण संक्षेप में थोड़ा विचार किया गया है।

सब ग्रहों से सूर्य अधिक प्रभावशाली है, इस कारण उसे राजा कहा है। राजा सूर्य के स्थान सिंह से दूसरी राशि कन्या है। दूसरे स्थान से कुटुम्ब विद्या आदि का विचार

होता है। इस कारण सूर्य के युवराज बुध को यह स्थान (कन्या राशि) मिला। सूर्य से तीसरा तुला है, तीसरे से कण्ठ स्वर और वस्त्रादि का विचार होता है। यह सासारिक सुखो का स्थान होने से दैत्यगुरु शुक्र को यह स्थान मिला, क्योंकि शुक्र सासारिक सुखो के स्वामी माने गये हैं। सूर्य से चतुर्थ स्थान में वृश्चिक है। चतुर्थ से वाहन भू सम्पत्ति आदि का विचार होता है, वह स्थान सेनापति मंगल को मिला। मंगल भूमि-पुत्र है, जमीन वाहन आदि का स्वामी है। सूर्य से पंचम धन है जिससे ईश्वर प्रेम विद्या आदि का विचार होता है, इससे गुरु को जो विद्या ईश्वर प्रेम आदि का दाता है, यह स्थान मिला। अन्त में सूर्य से षष्ठ स्थान में मकर है। षष्ठ स्थान रोग दुःख आदि को प्रगट करता है, इसीसे रोग दुःख आदि के स्वामी शनि को यह स्थान मिला।

इस प्रकार सूर्य राजा है जिसके समीप रानी चंद्र है। सूर्य की रानी चंद्र को इसलिये कहा है कि चंद्र स्त्री ग्रह है और पृथ्वी के समीप होने से इसका सब से बड़ा प्रभाव पड़ता है। सूर्य आत्मा है, चंद्र मन है। इस कारण सम्बन्ध होने से चन्द्र को रानी कहा है। इनके समीप युवराज बुध है। युवराज के बाजू से मंत्री शुक्र, फिर इसके बाद सेनापति मंगल को स्थान मिला है। इसके बाद मंत्री गुरु है और अन्त में शनि दास को स्थान मिला है। यही चित्रसंख्या ७२ में बताया है।

अभ्यास २६

ग्रह को उच्च नीच राशियाँ Exaltation and Debilitation or fall

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह का स्वस्थान होता है उसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों का एक और विशेष महत्त्व का स्थान माना हुआ है। यह अधिकार ग्रह को उच्चता सूचित करता है। कोई भारी अधिकार प्राप्त मनुष्य अपने अधिकार का पूर्ण उपयोग कर किसी को विशेष लाभ पहुँचा सकता है, परन्तु वह अधिकार चले जाने पर किसी को भी कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता।

इसी प्रकार ग्रह के अधिकार सम्बन्ध का विचार अर्थात् उच्चता का विचार इससे होता है। इस उच्चता की पूर्ण अवधि को अर्थात् पूर्ण अधिकार होने को—deep exaltation कहते हैं। अधिकार हीन हो जाने पर—नीच कहलाता है। उस नीचता की पूर्ण अवधि को परम नीच deep debilitation or deep fall कहते हैं। परम नीच ग्रह होने पर लाभ तो कुछ नहीं कर सकता, परन्तु नीचतापूर्ण कार्य करने की ओर उसका झुकाव हो जाता है।

परम नीच की अवधि पूर्ण होने पर ग्रह क्रमशः उच्चता की ओर बढ़ने जाता है और अन्त में परम उच्च पद को प्राप्त होता है। ऐसे ग्रह की स्थिति को आरोही Ascending कहते हैं।

ग्रह उच्चता की पूर्ण अवधि प्राप्त कर फिर क्रमशः नीचता की ओर जाने लगता है ऐसे ग्रह को अवरोही Descending कहते हैं। क्रमशः घटते-घटते अन्त में ग्रह पुनः नीचता की पूर्ण अवधि को प्राप्त होता है।

परम उच्च से परम नीच का अन्तर सदा ६ राशि (१८०°) रहता है। उच्च का अधिकार स्वग्रह की अपेक्षा बड़ा होता है। जैसे मेष यह अग्नि तत्व की राशि है, मंगल भी अग्नि तत्व का ग्रह है, मंगल का स्वग्रह भी अग्नि तत्व का है रवि मेष राशि में रहता है तो अग्नि तत्व में आने से अधिक प्रबल हो जाता है, इस कारण मेष राशि रवि की उच्चता की राशि मानी गई है। रवि मेष राशि का होगा तो कहेंगे कि रवि उच्च का है। उच्चता की अन्तिम अवधि (सूर्य की) मेष राशि के १०° तक है। मेष के १०° के भीतर जब रवि होता है तो कहेंगे कि रवि परम उच्च का है। इसके उपरान्त रवि नीच की ओर जाने लगता है।

मेष से ६ राशि उपरान्त तुला है, इसपर सूर्य आया तो कहेंगे कि नीच का सूर्य है। तुला के १०° के भीतर सूर्य आने से कहेंगे सूर्य परम नीच का है। तुला के १०° उपरान्त रवि उच्च की ओर जाने लगता है।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों के सम्बन्ध में समझना। प्रत्येक ग्रहों की उच्च-नीच राशियाँ पृथक्-पृथक् हैं। उच्च और नीच के बीच सदा ६ राशि का अन्तर रहता है।

ग्रह की उच्च नीच राशियाँ

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	वृष	वृश्चिक
परम उच्च अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	२०	२०
रा	रा								
परमोच्च राशि	०-१०°	१-३°	६-२८°	५-१५°	३-५°	११-२७°	६-२०°	१-२०°	७-२०°
अंश									
नीच राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	वृश्चिक	वृष
परम नीच अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	२०	२०
रा									
परम नीच राशि	६-१०°	७-३°	३-२८°	११-१५°	९-५°	५-२७°	०-२०°	७-२०°	१-२०°
अंश									

हर्शल—यह ग्रह वायु राशि का है। मिथुन तुला में अच्छा माना जाता है। कुम्भ राशि में विशेष कर बलवान होता है।

नेपच्यून यह ग्रह जल राशि का है। कर्क वृश्चिक और मीन में बलवान होता है। जल राशि मीन में अत्यन्त बलवान होता है।

राहु केतु—कोई राहु का उच्च धन और केतु का उच्च वृष भी मानते हैं।

उच्च नीच—उच्च नीच राशियां ग्रहों के मदोच्च से सम्बन्ध रखती हैं जिनका उपयोग सिद्धांत ग्रथ में दिया है।

इसके अतिरिक्त ग्रहों का उच्च-नीच विचार दूसरे प्रकार से भी होता है। सूर्य चंद्र आदि ग्रहों का पृथ्वी से अन्तर सदैव समान नहीं रहता। कभी-कभी ग्रह पृथ्वी के समीप आ जाते हैं कभी दूर चले जाते हैं, क्योंकि सब ग्रह अडाकार मार्ग से सूर्य के आस-पास परिक्रमा कर रहे हैं।

सूर्य चन्द्र का विम्ब साधारण प्रकार से देखने में एक समान दिखता है, परन्तु ध्यान से देखोगे तो जहां पृथ्वी की दूरी समीप या अधिक हो जाती है तो विम्ब के आकार में कुछ अन्तर प्रगट होने लगता है, कभी कुछ बड़ा कभी छोटा प्रगट होता है। पृथ्वी की कक्षा से जो बिन्दु समीपवर्ती ज्योति से बहुत दूर है उसे उच्च कहते हैं और जो पास है उसे नीच कहते हैं। सूर्य दिसम्बर के अंत में अपनी कक्षा में नीच में होता है और जून के अन्त में उच्च का होता है। सूर्य चन्द्र उच्च होते हैं तो पृथ्वी से सबसे लम्बी दूरी पर होते हैं और उस समय उसका विम्ब छोटा दिखता है। जब सूर्य चन्द्र पृथ्वी के पास होते हैं तब नीच होता है उस समय विम्ब बड़ा दिखता है, ऐसे समय में ग्रहण हुआ तो खग्रास ग्रहण होता है। परन्तु यहां ऊपर जो ग्रहों की परम उच्च राशि अंश और परम नीच राशि अंश बताये गये हैं वे स्थिर कर लिये गये हैं और उनमें कभी परिवर्तन नहीं होता। इस कारण ऊपर बताये चक्र के अनुसार ही सदा उच्च-नीच ग्रहण करना।

(३) ग्रहों का मूल त्रिकोण

जिस प्रकार ग्रहों का विशेष अधिकार उच्च के सम्बन्ध में पहिले बता चुके हैं उसी प्रकार एक और ग्रह का अधिकार है उसे मूल त्रिकोण कहते हैं। यह अधिकार उच्च से कुछ कम होता है। नीचे चक्र में बताया है कि किस राशि के कितने अंश पर होने से ग्रह मूल त्रिकोण में होता है। कुछ ग्रह की राशियाँ स्वक्षेत्र भी हैं, मूल त्रिकोण भी हैं और उच्च भी हैं, इसका स्पष्टीकरण करने के लिये यह भी चक्र में बतलाया है कि कितने अंश तक मूल त्रिकोण और कितने अंश तक उच्च या स्वक्षेत्र हैं। स्वक्षेत्र अधिकार से मूल त्रिकोण अधिकार बड़ा होता है।

मूल त्रिकोण चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मूल त्रिकोण राशि	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धन	तुला	कुंभ
उच्च के अंश	X	३	X	१५	X	X	X
मूल त्रिकोण के अंश	२०	२७	१२	१०	१०	१५	२०
स्वक्षेत्र अंश	१०	X	१८	५	२०	१५	१०

मूल त्रिकोण के अंशों में किसी-किसी का मतभेद है, परन्तु राशियों के बारे में कोई मतभेद नहीं है। यहाँ बृहत्पाराशरी मत से मूल त्रिकोण के अंश दिये हैं।

चक्र का स्पष्टीकरण

सूर्य सिंह राशि में २०° तक मूल त्रि० होता है, शेष १०° उसके स्वक्षेत्र का है। चंद्र वृष के ३° तक उच्च उपरान्त २७° तक मूल त्रि० होगा। मंगल मेष के १२° तक मूल त्रिकोण, शेष स्वक्षेत्र होगा। बुध कन्या के १५° तक उच्च, उपरान्त १०° तक मूल त्रिकोण, शेष ५° स्वक्षेत्र। गुरु धन के १०° तक मूल त्रिकोण, उपरान्त स्वक्षेत्र होगा। शुक्र तुला के १५° तक मूल त्रिकोण, उपरान्त स्वक्षेत्र होगा। शनि कुम्भ के २०° तक मूल त्रिकोण, उपरान्त स्वक्षेत्र होगा।

मूल त्रिकोण के विचार से ही ग्रह की नैसर्गिक मंत्री स्थिर हुई है, यह आगे बताया जायेगा।

साधारण प्रकार से ग्रहों के मूल त्रिकोण की राशि—

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	वृष	मेघ	कन्या	धन	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह

अध्याय २७

ग्रहमैत्री Friendship

कुण्डली में ग्रहों की मंत्री का विचार होता है। यदि ग्रह अपने घर या मित्र के घर में होता है तो बलवान होता है। शत्रु के घर में बलहीन हो जाता है। यह सब विचारने के लिए देखना पड़ता है कि ग्रह जिस स्थान (घर) में बैठा है वह उसका

मित्र, शत्रु या सम हैं, इस कारण ग्रहों की मैत्री जानना आवश्यक है। सम का अर्थ है कि वह न तो मित्र है और न शत्रु है, उदासीन ग्रह है।

मैत्री दो प्रकार की है—(१) नैसर्गिक मैत्री (२) तात्कालिक मैत्री। नीचे नैसर्गिक मैत्री चक्र दिया है, उससे जान सकते हैं कि कौन ग्रह का कौन मित्र या शत्रु है।

नैसर्गिक मैत्री चक्र Natural friendship —

ग्रह	मित्र friend	शत्रु enemy	सम neutral
१ रवि के	चंद्र, मंगल, गुरु	शनि, शुक्र, राहु	बुध
२ चंद्र ,,	रवि, बुध	राहु	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
३ मंगल ,,	रवि, चंद्र, गुरु	बुध, राहु	शुक्र, शनि
४ बुध ,,	रवि, शुक्र, राहु	चंद्र	मंगल, गुरु, शनि
५ गुरु ,,	रवि, चंद्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि, राहु
६ शुक्र ,,	बुध, शनि, राहु	रवि, चंद्र	मंगल, गुरु
७ शनि ,,	शुक्र, बुध, राहु	रवि, चंद्र, मंगल	गुरु
८ राहु ,,	बुध, शुक्र, शनि	रवि, चंद्र, मंगल	गुरु

स्पष्टीकरण

रवि का मित्र चंद्र, मंगल, गुरु है, जब रवि, चंद्र की राशि (कर्क) या मंगल की राशि (मेष, वृश्चिक) या गुरु की राशि (धन, मीन) में से किसी राशि में हो तो कहेंगे रवि मित्रगृही है। सूर्य का शत्रु शनि, शुक्र है, जब रवि इनके घर में अर्थात् मकर, कुंभ (शनि की राशि) या तुला, वृष (शुक्र गृह) में होगा तो कहेंगे सूर्य शत्रु क्षेत्री है या शत्रुगृही है। जब बुध के गृह मिथुन या कन्या राशि में से किसी में सूर्य होगा तो कहेंगे सूर्य समक्षेत्री है। इसी प्रकार दूसरे ग्रहों की भी मैत्री का विचार चक्र के अनुसार होता है। इस मैत्री में कोई परिवर्तन नहीं होता। इस कारण इसे नैसर्गिक मैत्री कहते हैं। यह मैत्री स्वाभाविक है।

नैसर्गिक मैत्री में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि कई ग्रहों की परस्पर मैत्री तो ठीक है (जैसे रवि का मित्र गुरु है तो गुरु का भी मित्र रवि है), परन्तु सब ग्रहों का ऐसा सम्बन्ध नहीं है। कोई ग्रह किसी से मैत्री तो मानता है, परन्तु दूसरा ग्रह उससे शत्रुता रखता है। जैसे चन्द्र, बुध से मैत्री रखता है, परन्तु बुध चंद्र से शत्रुता रखता है। इसी प्रकार परस्पर मैत्री में कहीं-कहीं विरोध पड़ता है, वह नीचे के चक्र में समझाया है जिसका ध्यान रखना चाहिये।

मैत्री संबंध सूचक चक्र

जहां परस्पर मैत्री में कोई अन्तर नहीं है

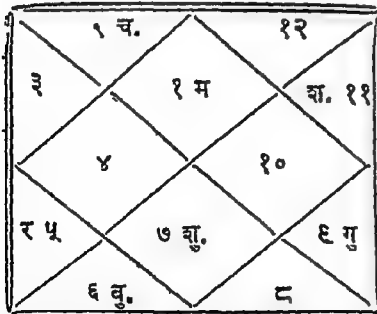
ग्रह का मित्र	शत्रु	सम
१ रविका चं मं गु श शु रा	—	—
२ चंद्रका रवि	राहु	—
३ मंगलका र गु	राहु	शुक्र
४ बुधका शु रा	—	—
५ गुरुका र.म.	—	श रा
६ शुक्रका बु श रा.	रवि	म
७ शनिका शु रा	रवि	गुरु
८ राहुका बु शु श चं मं र	गुरु	—

जहां मैत्री में भिन्नता है ।

ग्रहका मित्र	शत्रु	सम
१ रविका —	—	बुध
२ चंद्रका बुध	—	मं गु शु श.
३ मंगलका चंद्र	बुध	शन
४ बुधका र च	चन्द्र	मं. गु श.
५ गुरुका चंद्र	बु शु	—
६ शुक्रका —	चन्द्र	गुरु
७ शनिका बुध	चं म.	—
८ राहुका —	—	—

नैसर्गिक मैत्री की उत्पत्ति

ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री मूल त्रिकोण के सम्बन्ध से स्थापित हुई है । मूल त्रिकोण के मूल त्रिकोण चक्र



और उच्च के स्थान पर उस ग्रह का अच्छा प्रभाव पड़ता है, इस कारण उस स्थान के स्वामी से मित्रता होती है और शेष स्थान पर विरुद्ध प्रभाव पड़ता है। इस कारण शेष स्थान के स्वामी से शत्रुता होती है। यदि एक प्रकार से मित्र भाव और दूसरे प्रकार से शत्रुभाव आवे तो

उमे सम समझना । जहाँ दोनो प्रकार से मित्र-भाव आवे वहाँ मित्र समझना । नीचे चक्र में यही समझाया गया है ।

रवि, चन्द्र=मित्र १ वार=मित्र, शेष ग्रह { मित्र + मित्र = मित्र
मित्र + शत्रु = सम

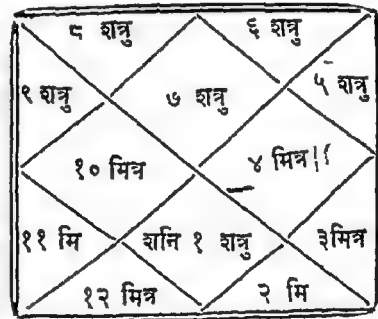
चिह्न + = २ वार मित्र = मित्र
x = १ वार ,, = ,,
o = मित्र + शत्रु = सम

क्रम	ग्रह	मूल त्रिकोण	मित्र स्थान	उच्च	शत्रु स्थान	मित्र	सम	शत्रु (क्षेप)
१	सूर्य	सिंह	स्थान २	१२	५	९	४	१२ १
	राशि	६ व. ०	५ गु. ५	१ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
	स्वामी	०	५ गु. ५	१ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
२	चन्द्र	वृष	राशि	३ मं. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५
	स्वामी	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
३	मंगल	मेघ	राशि	२ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
	स्वामी	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
४	बुध	कन्या	राशि	७ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
	स्वामी	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
५	शुक्र	तुला	रा.	१० मं. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५
	स्वा.	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
६	शुक्र	तुला	रा.	५ मं. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५
	स्वा.	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
७	शनि	कुम्भ	रा.	१२ मं. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५
	स्वा.	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५
८	राहु	कुम्भ	रा.	५ मं. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५
	स्वा.	५ गु. ५	५ गु. ५	५ मं. ५	५ म. ५	५ गु. ५	५ गु. ५	५ गु. ५

इस चक्र में मित्र और उच्च स्थान के सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन दोनों स्थानों में से किसी स्थान में रवि या चंद्र १ ही बार आ जावे तो मित्र होते हैं, परन्तु दूसरे ग्रह इन स्थानों में २ बार आवे तब मित्र होते हैं, १ बार आने से सम होते हैं, शेष शत्रु होते हैं। जैसे मंगल का विचारना है, गुरु २ स्थान (१२-६) में आया है तो मित्र हुआ, परन्तु रवि, चंद्र १ ही बार, ५ रवि, ४ चंद्र आने से मित्र हुआ। शुक १ बार आया है, इसी प्रकार शनि उच्च में १ ही बार आया है तो शु० श० सम हुए। शेष बुध वचा वह शत्रु हुआ। इसी प्रकार सबकी मैत्री विचारना।

तात्कालिक मैत्री Temporal friendship

जिस प्रकार कोई किसी का मित्र होने पर भी तात्कालिक परिस्थिति के कारण विरोध या समता का भाव दिखाता है या शत्रु रहने पर भी तात्कालिक अवस्था के अनुसार कभी मित्रता कभी समता दर्शाता है, इसी प्रकार ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री रहने पर भी परिस्थिति के अनुसार मैत्री में परिवर्तन हो जाता है इसको तात्कालिक मैत्री कहते हैं, अर्थात् तात्कालिक अवस्था के अनुसार जो मैत्री होती है उसे तात्कालिक मैत्री कहते हैं। मित्र=२, ३, ४ और १२, ११, १० वें स्थान के ग्रह शत्रु=१, ५, ६, ७, ८, और ९ वें स्थान के ग्रह जन्म कुंडली या किसी कुंडली में कोई ग्रह जहाँ पर भी हो उस स्थान को छोड़

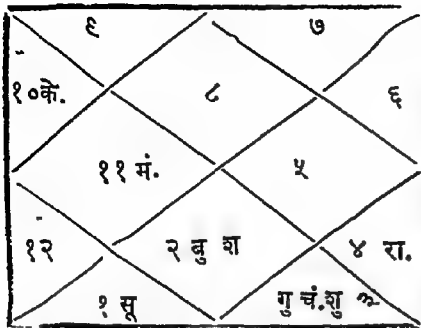


कर आगे के ३ स्थान और पीछे के ३ स्थानों में रहने वाले ग्रह उस ग्रह के तात्कालिक मित्र हो जाते हैं। शेष स्थान में रहने वाले ग्रह उसके शत्रु हो जाते हैं।

अर्थात् किसी विशेष स्थान से दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान में और दशवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान में रहने वाले ग्रह मित्र हो जाते हैं, शेष स्थान के ग्रह शत्रु होते हैं। जैसे यहाँ पर शनि सप्तम स्थान में है, उससे कौन-कौन स्थान के ग्रह मित्र शत्रु होंगे ऊपर कुंडली में बताया है।

यहाँ इसको और भी उदाहरण देकर तात्कालिक मैत्री समझाते हैं।

लग्न कुण्डली



(१) सूर्य—सूर्य से दूसरे घर में शनि बुध, तीसरे में गुरु चंद्र शुक्र, चौथे में राहु है, बारहवें में कोई ग्रह नहीं है, ग्यारहवें स्थान में मंगल और दशवें में केतु है ये सब सूर्य के मित्र हुए। शेष कोई नहीं बचे तो शत्रु कोई नहीं है।

(२) चंद्र के=रा० बु० श० सू० मित्र है, क्योंकि राहु दूसरे घर में है, तीसरे चौथे

में कोई ग्रह नहीं है। बारहवें श० बु०, ग्यारहवें सूर्य, दशवें कोई ग्रह नहीं है। ये सब मित्र हुए, शेष शत्रु हुए। चंद्र के पहिले घर में जहाँ गुरु शुक्र है, आठवें में केतु नवम मंगल है। इस कारण गु० शु० के. और मंगल शत्रु हुए। इसी प्रकार सब का निकालना।

(३) मंगल के=सू० श० बु० के० मित्र है, क्योंकि केतु बारहवें, तीसरे सूर्य, चौथे में शनि बुध है, दूसरे दशवें और ग्यारहवें स्थान में कोई ग्रह नहीं है। शेष ग्रह गुरु चंद्र शुक्र राहु शत्रु हुए।

(४) बुध के=गु० च० शु० रा० सू० और मं० मित्र, शेष श० और के० शत्रु है।

(५) गुरु के=रा० श० बु० सू० मित्र, शेष च० श० मं० और के० शत्रु है।

(६) शुक्र के=रा० श० बु० सू० मित्र, शेष गु० च० मं० और के० शत्रु है।

(७) शनि के=गु० च० शु० रा० सू० मं० मित्र, शेष बुध और केतु शत्रु है।

(८) राहु के=गु० च० शु० श० बु० सू० मित्र, शेष मं० और के० शत्रु है।

पंचधा मैत्री Average friendship

पंचधा मैत्री=नैसर्गिक मैत्री + तात्कालिक मैत्री।

मित्र + मित्र = अधि मित्र	शत्रु + शत्रु = अधिशत्रु
मित्र + सम = शत्रु	शत्रु + सम = शत्रु
मित्र + शत्रु = सम	शत्रु + मित्र = सम

नैसर्गिक और तात्कालिक मैत्री मिलाकर पंचधा मैत्री होती है। यदि दोनों में मित्र हो तो अधिमित्र, दोनों में शत्रु हो तो अधिशत्रु होते हैं। एक में मित्र दूसरे में शत्रु हो तो सम हो जाता है। एक में मित्र और दूसरे में सम हो तो मित्र और एक में शत्रु और दूसरे में सम हो तो शत्रु होता है।

इसी प्रकार विचार कर पंचधा मैत्री निकालने का उदाहरण नीचे दिया है। पहिले जो तात्कालिक मैत्री निकाले हैं उसी पर से पंचधा मैत्री निकालते हैं।

(१) नैसर्गिक मैत्री
(स्थायी मैत्री)(२) तात्कालिक मैत्री
(जो पहिले निकाल चुके हैं)

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम	ग्रह	मित्र	शत्रु
१ रवि	चं. मं. गु. शु. श. रा. बु.			१ रवि	च बु गु शु. मं. रा. X	
२ चंद्र	र. बु. रा.	मं. गु. शु. श.		२ चंद्र	सू. बु. श. रा. म. गु. शु.	
३ मंगल	र. चं. गु. बु. रा. शु. श.			३ मंगल	सू. बु. श. चं. गु. शु. रा.	
४ बुध	र. शु. रा. चं. मं. गु. श.			४ बुध	सू. च. गु. शु. रा. श.	
५ गुरु	र. चं. मं. बु. शु. श. रा.			५ गुरु	सू. बु. श. रा. चं. मं. शु.	
६ शुक्र	बु. म. रा. र. चं. मं. गु.			६ शुक्र	सू. बु. श. रा. चं. मं. गु.	
७ शनि	बु. म. रा. र. चं. म. गु.			७ शनि	सू. च. म. गु. शु. रा. बु.	
८ राहु	बु. शु. श. र. च. म. गु.			८ राहु	सू. चं. बु. गु. शु. श. म.	

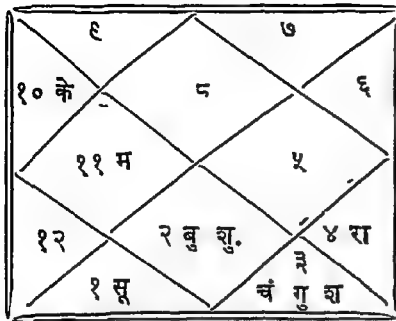
(३) पंचघा मैत्री (उपर्युक्त दोनों को मिलाकर यहाँ रखा है)

ग्रह	अविमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
१ रवि	च० म० गु०	बु०	श० शु० रा०	०	०
२ चंद्र	र० बु०	श०	रा०	मं० गु० शु०	०
३ मंगल	र०	श०	चं० गु० बु०	शु०	रा०
४ बुध	र० शु० रा०	म० गु०	चं०	श०	०
५ गुरु	र०	श० रा०	चं० मं० बु०	०	शु०
६ शुक्र	बु० म० रा०	०	र०	मं० रा०	चं०
७ शनि	शु० रा०	गु०	र० चं० म० बु०	०	०
८ राहु	बु० शु० म०	गु०	र० चं०	०	मं०

यहाँ तात्कालिक में सूर्य का शनि मित्र है, परन्तु नैसर्गिक में शत्रु है तो मित्र शत्रु मिलकर पंचघा मैत्री में सम हो गया। बुध तात्कालिक में मित्र और नैसर्गिक में सम है तो मित्र + सम = मित्र हुआ। रवि का चंद्र और मंगल दोनों प्रकार से मित्र है तो दोनों अविमित्र हुए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों की मित्रता मिलान करके पंचघा मैत्री चक्र में स्थापित किया है।

सम्पूर्ण ग्रहों का फल विचारते समय इसी पंचघा मैत्री चक्र के अनुसार ग्रहमैत्री का विचार होता है। जैसे लग्नकुंडली में लग्न में वृश्चिक राशि है। इसका स्वामी

लग्नकुंडली



मंगल हुआ, यह मंगल चतुर्थ भाव में शनि के घर (कुंभ) में बैठा है। पंचमा मंत्री में मंगल का शनि मित्र है। इस कारण मंगल मित्रस्थानी हुआ। वृष का शनि सप्तम में है वृषेश्वर (वृष का स्वामी) शुक्र है, शनि का यह शुक्र पंचमा मंत्री से अधि मित्र है तो कहेंगे कि शनि अधिमित्र क्षेत्री है। इसी प्रकार सब ग्रहों की मंत्री का

विचार करना पड़ता है। मित्र क्षेत्र में ग्रह होने से उसका बल बढ़ेगा और शत्रु क्षेत्र में बल घटेगा। यह सब विचार के लिये मंत्री का उपयोग होता है।

जो ग्रह मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री, अधिमित्रक्षेत्री या उच्च का हो वह शुभ फल देगा। शत्रु क्षेत्री, अधिशत्रु क्षेत्री या नीच में ग्रह हो तो अनिष्ट (बुरा) फल देगा। इस कारण ग्रह का क्षेत्र जानने के लिये इस जन्मकुंडली से ग्रह क्षेत्र विचार कर नीचे देते हैं।

उपर्युक्त लग्नकुण्डली के ग्रहों का क्षेत्र विचार

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
क्षेत्र	अधि-	अधि-	मित्र	अधि-	सम	अधि-	अधि	सम
	मित्रगृही	मित्रस्थानी क्षेत्री	मित्रक्षेत्री	गृही	मित्रगृही	मित्रक्षेत्री	क्षेत्री	

अध्याय २८

ग्रहों की दृष्टि Aspects of the planets

प्रत्येक भाव राशि या ग्रह पर किस-किस ग्रह की किस प्रकार की दृष्टि है, इसका विचार भी, ग्रहों के फल निर्णय करने के लिए करना पड़ता है, इस कारण ग्रहों की दृष्टि का जानना आवश्यक है।

दृष्टि का स्पष्टीकरण—

जब सूर्य उदय होता है तो उसकी किरण तिरछी होने के कारण गरमी कम जान पड़ती है। ज्यों-ज्यों सूर्य का अंश बढ़ता है त्यों-त्यों सूर्य का तेज बढ़ता है। जब सूर्य ९०° पर अर्थात् सिर पर आता है तो उसकी किरणें सामने पड़ने से सूर्य का प्रभाव

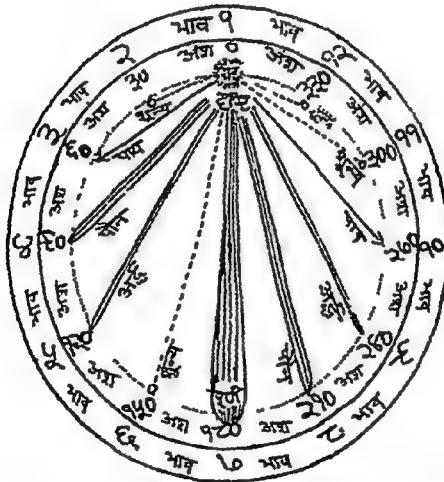
अधिक बढ़ जाता है अर्थात् उस समय गर्मी बहुत बढ़ जाती है। जब दिन ढलने लगता है तो उसकी किरणें तिरछी पड़ती हैं और प्रभाव कम होते-होते अन्त में लुप्त हो जाता है। उसी प्रकार सब ही ग्रहों का प्रभाव होता है। जिस ग्रह के सामने दूसरा ग्रह होगा उस पर, उस ग्रह का पूरा प्रभाव पड़ेगा, जब वाजु से होगा तो कम प्रभाव पड़ेगा।

जिस राशि पर कोई ग्रह हो उसके ठीक सामने सातवीं राशि होती है और उस समय दोनों ग्रहों का अन्तर 180° का रहता है। इस कारण सातवें स्थान पर ग्रह का पूरा प्रभाव पड़ता है, इसी का नाम पूर्ण दृष्टि है। इसी प्रकार शेष दृष्टि में किरणें तिरछी पड़ती हैं। इस कारण उनका प्रभाव कम हो जाता है।

जो ग्रह देखता है उसे द्रष्टा ग्रह कहते हैं। जिस ग्रह या भाव पर किसी दूसरे ग्रह की दृष्टि पड़ती है उसे दृश्य कहते हैं।

दृष्टि ४ प्रकार की होती है—(१) एक पाद दृष्टि या चौथाई दृष्टि, (२) द्विपाद दृष्टि या अर्द्ध दृष्टि, (३) त्रिपाद दृष्टि या पौन दृष्टि और (४) पूर्ण दृष्टि।

चित्र सख्या ७३ ग्रह की दृष्टि



चित्र सख्या ७३ में बताया है कि किसी ग्रह की अपने स्थान से किसी भाव पर या कितने अन्तर पर किस प्रकार की दृष्टि पड़ रही है। जहां दृष्टि नहीं है वहां ० बताया है। इस चित्र में ग्रहों की दृष्टि के प्रकार बतला कर उनकी किरणों का प्रभाव बताया गया है। इस चक्र में भीतर किनारे पर $30-30^\circ$ की एक-एक राशियां दो हैं और ग्रह स्थान से अन्तर अंशों में बताया है। चक्र के ऊपर भी १२ भाव या स्थान दिये हैं। इससे प्रगट होगा कि ग्रह स्थान से कौन से स्थान पर या कितने राशि अन्तर पर किस प्रकार की दृष्टि होती है।

ग्रहों के पहिले, दूसरे, छठवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थान पर कोई दृष्टि नहीं होती।

मंगल गुरु और शनि क्रमशः पृथ्वी की परिक्रमा मार्ग की परिधि के बाहर एवम् सूर्य से दूर होने के कारण इनकी विशेष दृष्टि का विचार किया गया है।

ग्रह की ४ प्रकार की दृष्टि होती है—

- (१) पूर्ण दृष्टि = 1° पूरी = 60 कला दृष्टि
- (२) त्रिपाद ,, = पौन दृष्टि = $0^\circ - 45'$,,
- (३) द्विपाद ,, = अर्द्ध ,, = $0 - 30$,,
- (४) एकपाद ,, = पाव ,, = $0 - 15$ ।

(१) पूर्ण दृष्टि—सम्पूर्ण ग्रह अपने स्थान से (उस समय जिस राशि में वे हो उस राशि से) सातवीं राशि या सातवें स्थान पर पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। परन्तु मंगल गुरु और शनि की विशेष दृष्टि होने के कारण इनकी अतिरिक्त पूर्ण दृष्टि इस प्रकार भी है। ये अपने स्थान से इन स्थान या राशियों पर भी पूर्ण दृष्टि से देखते हैं—

- (१) मंगल ४ और ८ स्थान या राशि पर
- (२) गुरु ५ और ९ ,, ,,
- (३) शनि ३ और १० ,, ,,

(२) त्रिपाद दृष्टि = मंगल को छोड़ कर सब ग्रह अपने स्थान से ४ और ८ स्थान या राशि पर त्रिपाद दृष्टि से देखते हैं। मंगल की त्रिपाद दृष्टि नहीं होती, क्योंकि यही दृष्टि मंगल की पूर्ण दृष्टि हो जाती है।

(३) द्विपाद दृष्टि = गुरु को छोड़ कर शेष सब ग्रह अपने स्थान से ५ और ९ स्थान या राशि पर द्विपाद दृष्टि से देखते हैं। गुरु की द्विपाद दृष्टि नहीं होती, क्योंकि यही गुरु की पूर्ण दृष्टि है।

(४) एकपाद दृष्टि = शनि के सिवाय सब ग्रह अपने स्थान या राशि से ३ और १० स्थान या राशि को एकपाद दृष्टि से देखते हैं। शनि की एकपाद दृष्टि नहीं होती, क्योंकि यह शनि की पूर्ण दृष्टि है।

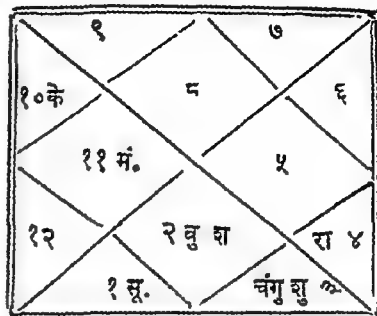
दृष्टिचक्र

दृष्टि	सू. च. बु. श. रा. मंगल	गुरु	शनि	मत्तातर राहु	शून्य दृष्टि
पूर्ण दृष्टि ७ वा स्थान	७, ४, ८	७, ५, ९	७, ३, १०	५, ७, ९, १२	१, २, ६, ११, १२
त्रिपाद ,, ४, ८	०	४, ८	४, ८	०	
द्विपाद ,, ५, ९	५, ९	०	५, ९	३, ६	
एकपाद ,, ३, १०	३, १०	३, १०	०	२, १०	कन्या का = अंधा होता है।

चारों प्रकार की दृष्टि में पूर्ण दृष्टि का ही विशेष प्रभाव पड़ता है, केतु की दृष्टि नहीं होती ।

ग्रह जिस स्थान से पूर्ण दृष्टि से देखता है वह स्थान पूर्ण फल देता है । उदाहरण देकर ग्रहों की दृष्टि विचारना आगे समझाते हैं ।

इस कुण्डली में मंगल चतुर्थ भाव में है ७, ४, ८ वें स्थान पर इसकी पूर्ण दृष्टि होती है । मंगल में सातवें स्थान पर सिंह राशि दशम भाव पर है, चौथे स्थान में वृष राशि सप्तम भाव में है जहाँ बुध गनि बैठे हैं । मंगल में अष्टम में कन्या राशि एकादश भाव में है । इस कारण सप्तम, दशम और एकादश भाव पर और बुध गनि ग्रहों पर मंगल की पूर्ण दृष्टि पड़ रही है । इसी प्रकार सब ग्रहों की दृष्टि का विचार करना । दृष्टि का स्थान गिनते



समय जिस स्थान पर ग्रह हो उस स्थान को एक गिनना चाहिये । जैसे सूर्य की एकपाद दृष्टि तीसरे स्थान पर विचारना है तो सूर्य के स्थान से को १ गिना तो तीसरे स्थान में अष्टम भाव आया जहाँ च. गु. शु. है, जिन पर सूर्य की एकपाद दृष्टि पड़ रही है ।

आगे इसी कुण्डली का दृष्टिचक्र अम्ब्याम के लिए दिया है । इस चक्र में पूर्ण दृष्टि १° की अर्थात् ६० कला की घटाई गई है । इसी प्रकार पौन दृष्टि ४५', अर्द्ध दृष्टि ३०' और पाव दृष्टि १५' की दी गई है, इसपर से दृष्टि समझ लेना ।

इस चक्र के देखने से समझ में आ जायेगा कि सूर्य की पूर्ण दृष्टि वारहवें भाव और तुला राशि पर है, पौन दृष्टि लग्न व वृश्चिक राशि और नवम स्थान की कर्क राशि पर है, अर्द्ध दृष्टि द्वितीय स्थान की वन राशि और दशम भाव की सिंह राशि पर है, पाव दृष्टि तृतीय स्थान की मकर राशि और अष्टम स्थान की मिथुन राशि पर है, ग्रेप राशियों पर कोई दृष्टि नहीं है । सूर्य की एकपाद दृष्टि च. गु. पर भी पड़ती है जो सप्तम स्थान में वृष राशि पर बैठे हैं और अष्टम भाव में है । राहु पर पौन दृष्टि है जो नवम भाव में कर्क राशि पर है । केतु पर सूर्य की पाव दृष्टि है जो तृतीय भाव में मकर राशि पर बैठा है और कोई ग्रह पर सूर्य की दृष्टि नहीं पड़ती । इसी प्रकार चक्र के अनुसार शेष ग्रहों की दृष्टि का विचार करना । यहाँ पर देखने वाला सूर्य ग्रह द्रष्टा है और बु. चं. गु. जिनपर सूर्य की दृष्टि पड़ती है वे दृश्य हैं । कोई ग्रह किसी भाव या दूसरे भाव को देखता है तो कहते हैं कि उस ग्रह की दृष्टि अमुक ग्रह या भाव पर है ।

कुंडली का दृष्टि-चक्र—

ग्रह व भाव स्थिति पर ग्रहों की दृष्टि पड़ती है

कुण्डली	भाव		लग्न	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
	राशि	ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
					केतु	१०	११	१२	सू.	सू. रा.	चं. गु. रा.	५	६	७
ब्रह्मा ग्रह														
१—सूर्य	कला	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'	०	६०'
२—चन्द्र	"	०	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'
३—मंगल	"	१५'	०	०	३०'	०	०	१५'	६०'	३०'	०	६०'	६०'	३०'
४—बुध	"	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'	०
५—शुक्र	"	०	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	०	१५'	४५'	६०'
६—शुक्र	"	०	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'
७—शनि	"	६०'	४५'	३०'	१५'	०	०	०	०	०	०	१५'	४५'	३०'
८—राहु	"	३०'	०	३०'	४५'	६०'	३०'	१५'	०	०	०	०	३०'	४५'

[२५]

कलात्मक दृष्टि=६०' = १° पूर्ण, ४५' = $\frac{3}{4}$, ३०' = $\frac{1}{2}$, १५' = $\frac{1}{4}$ दृष्टि ।

इन चारों प्रकार की दृष्टि में केवल पूर्ण दृष्टि का ही विचार होता है, क्योंकि उसका फल पूर्ण रूप से अनुभव में आता है । शेष दृष्टि उपयोगी नहीं है, क्योंकि उनका फल निश्चित नहीं होता । ग्रहों के दृष्टिबल निकालने में चारों प्रकार की दृष्टि का काम पड़ता है ।

दीप्ताश Orbs of the planets

जब द्रष्टा ग्रह (देखने वाला) और दृश्यग्रह (जिसपर दृष्टि पड़ रही हो) इन दोनों में थोड़ा ही अंग का अंतर हो या अश साम्य हो तो उनकी दृष्टि होना समझी जायगी । जैसे वृष के २ अंग पर कोई ग्रह हो और दूसरा ग्रह उससे सातवें घर में वृश्चिक राशि के २° पर हो, अर्थात् दोनों में पूरे १८०° का अंतर हो तो कहेंगे कि वह ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखता है । परन्तु दूसरा ग्रह वृश्चिक के २८° पर हो तो पूर्ण दृष्टि है ऐसा कहना ठीक नहीं, क्योंकि दोनों में २०६° का अंतर पड़ जाता है । वृष राशि के कोई भी अंग पर द्रष्टा ग्रह हो और दृश्य ग्रह सप्तम स्थान में जहाँ वृश्चिक राशि है उसके किन्ते ही अंग पर हो तो भी पूर्ण दृष्टि से देखता है ऐसा कहना ठीक नहीं है । कोई भाव या ग्रह पर दृष्टि करने वाला ग्रह उनी अश साम्य पर देखना चाहिये तब पूर्ण दृष्टि समझी जायेगी चाहे वह द्रष्टा ग्रह भाव के बीच में क्यों न हो । आगे-पीछे दृष्टि हुई तो निष्फल होती है ।

इन कारण दोनों द्रष्टा और दृश्य ग्रह की दृष्टि किसी विशेष अंश के भीतर होना चाहिए जिससे वह दृष्टि प्रभाव शाली होती है । प्रत्येक ग्रह की दृष्टि का कुछ विशेष अन्तर नियुक्त है जिसके भीतर दृष्टि रहने से वह दृष्टि प्रभाव शाली समझी जाती है और इस अन्तर का विचार अशो में होता है । इन अशो के अन्तर को दीप्ताश कहते हैं । अर्थात् दो या अधिक ग्रह जो एक दूसरे पर दृष्टि योग करते हैं तब वे ग्रह, दृष्टि योग करने के पूर्व किसी विशेष अंशों के भीतर एक दूसरे पर प्रभाव डालने में समर्थ होते हैं उस अन्तर को दीप्ताश कहते हैं । दीप्ताश चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्ताश	१५	१२	८	७	९	७	९

द्रष्टा ग्रह की दृष्टि इन दीप्ताश के भीतर हो दृश्य ग्रह पर उसके आगे पीछे हो तो कहेंगे कि दृष्टि दीप्ताश के भीतर है । ऐसी दृष्टि का विशेष फल होता है । यदि इन दीप्ताशों के अधिक आगे या पीछे दृश्य ग्रह हो तो फल मध्यम होगा । इसका उदाहरण देकर समझाते हैं ।

मान लो सूर्य वृष के 15° पर है और चंद्र तुला के 25° पर है। वृष से तुला ६ राशि अन्तर पर अर्थात् सातवें स्थान पर होने से सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो जाती है। अब देखना है कि इनकी दृष्टि दीसाश के भीतर है या नहीं। इसके लिए दोनों के अश देखे। दोनों के अशों में $(25-15)=10^\circ$ का अन्तर है। सूर्य का दीसाश 15° है तो यह अन्तर 10° दीसाश के भीतर है, तो कहेंगे कि सूर्य की दृष्टि चंद्र पर दीसाश के भीतर है। इसका कारण पूर्ण दृष्टि का पूरा फल होगा। ऊपर जो दृष्टि कोण के दीसाश बताये गये हैं वे इसी प्रकार विचारे जाते हैं।

युति Conjunction=जब-जब ग्रह एक ही राशि पर और एक ही अश पर हो तो वह युति दृष्टि योग कहलाता है। यदि दीसाश के अनुसार उसमें ८-१० अश से अधिक अन्तर पड़ जायगा तो वह युति योग प्रभाव पूर्ण नहीं होगा।

पाश्चात्य पद्धति से दृष्टि विचार

जिस ग्रह या भाव की दृष्टि निकालना है तो दोनों का अशों में अन्तर निकालो और उस अन्तर के अनुसार दृष्टि का फल विचार करो। द्रष्टा और दृश्य इन दोनों के बीच में अशों का न्यूनाधिक अन्त होने पर उस अन्तर के अनुसार दृष्टि का विशेष नाम होता है और दृष्टि योग से फल का अनुभव उसी के अनुसार होता है। ग्रह दृष्टि का शुभाशुभ फल उसी दृष्टि के अनुसार होगा।

यह विचार नहीं रखना चाहिये कि देखने वाला ग्रह शुभ होगा तो सदा शुभ फल देगा या पाप ग्रह होगा तो सदा अशुभ फल देगा। कभी-कभी अशुभ दृष्टि योग से शुभ ग्रह भी अशुभ फल देते हैं और अशुभ ग्रह शुभ फल देते हैं।

पाश्चात्य लोग कोई ग्रह विलकुल शुभ या अशुभ हैं ऐसा नहीं मानते, परन्तु दृष्टि योग से शुभाशुभ फल देना मानते हैं। जैसा गुरु यह शुभ ग्रह है उसका सम्बन्ध चंद्र के साथ होने से अति शुभ फल देगा, इसके विरुद्ध शनि ये पाप ग्रह हैं सूर्य या चंद्र के साथ शुभ दृष्टि योग करने से शुभ फल देता है। इस कारण योरोपीय जातक ग्रंथों के आधार पर यहाँ दृष्टि योग समझाते हैं, जिसमें यह भी बताया है कि कौन दृष्टि योग शुभ या अशुभ है। दृष्टि योग सूचक संकेत के चिह्न भी दिये हैं, क्योंकि अंग्रेजी पंचाङ्गी में केवल दृष्टि योग के चिह्न ही दिये रहते हैं।

दृष्टियोग

दृष्टियोग नाम	ग्रहों का अन्तर राशि या अंश	फल	चिह्न	दीप्तांश
१-सार्द्ध केन्द्रयोग Semi Square or Semi Quartile	१३ = ४५	अशुभ	☿ या S □	२-३ अंश
२ त्रिकोण (द्विराश्रयंतर) Sextile	२ = ६०	शुभ	♋ या ✱	२-३
३ केन्द्र (वर्तुलपाद) Square	३ = ९०	अति शुभ	□	४-५
४ त्रिकोण (नवम-पंचम) Trine	४ = १२०	अति शुभ	△	४-५
५ सार्द्ध चतुष्टय राश्रयंतर Sesqui quadrate	४३ = १३५	अशुभ	☐ या ☒	२-३
६ षडष्टक Quincunx	५ = १५०	अशुभ	♊ या ♋ या ♌	
७ पूर्ण दृष्टियोग (प्रतियोग) = प्रतियुति (सप्तम दृष्टि) Opposition	६ = १८०	अशुभ	♋	८-१०
८ युति दृष्टियोग (युति योग) Conjunction	० राशि अंश समान	युति करने वाले ग्रह के शुभाशुभ धर्म पर अवलम्बित है	♋	८-१०
९ एक राश्रयंतर युति Semi Sextile Semi Quintile	१ = ३०	सदा अच्छा	♌ या ♍ या S ✱	२-३
१० चक्र दशमांश Quintile	१३ = ३३		L	२-३
११ चक्र पचमांश Biquintile	२३ = ७२	कुछ अच्छा	Q	२-३
१२ चक्र सार्द्ध द्वितीयांश	४३ = १४४	„	±	२-३
१३ समक्रांति दृष्टियोग Parallel or Declination	जब नाडीवृत्त से बराबर क्रांति अंतर पर हो	युति के समान	P	२

(१) नेपच्यून का किसी भी ग्रह के साथ योग नहीं होता क्योंकि वह सब से कम चलने वाला है ।

अपवाद—वक्री ग्रह का दूसरे ग्रहों के साथ योग हो सकता है । हर्शल जब वक्री होता है तब उस का योग किनो भी ग्रह के साथ या चंद्र के साथ भी हो सकता है ।

पाश्चात्य मत से ग्रहों के दीप्तांश

(१) बु. गु. शु. म. ह —जब संयोगी हो=६°, वियोगी में ८° दीप्तांश । मान लो शुक्र शनि का युति योग है । यह योग संयोगी है, जब शुक्र शनि से ६° अंतर पर होगा तो उस दृष्टि का प्रभाव होगा और दोनों का योग होकर शुक्र ८° चला जायगा तब तक इसका प्रभाव रहेगा । इसी प्रकार सब ग्रहों का विचारना ।

(२) सूर्य का दीप्तांश अधिक है, संयोगी में १२° और वियोगी में १७° है । ये दीप्तांश केवल युतियोग, द्विराशि अंतरयोग, त्रिकोणयोग और प्रतियोग में विचारना ।

(३) छोटे-छोटे दृष्टि योगों के दीप्तांश ।

(१) एक राशि अंतरयोग, ७२° अंतरयोग, १४४° अंतरयोग में संयोगी में २° और वियोगी में ३°

(२) सार्द्ध केन्द्रयोग, सार्द्ध चतुष्टयराश्यांतरयोग में, संयोगी ३°, वियोगी ४°,

(३) सूर्य और चन्द्र के दृष्टि योग में इन दीप्तांशों से १° और अधिक लेना ।

(४) सम क्रांतियोग में २° से अधिक नहीं लेना । मान लो मंगल की क्रांति १३° उत्तर और शनि की ११° दक्षिण है तो इन दोनों का सम क्रांतियोग हुआ । इसी प्रकार भाव के भी दीप्तांश होते हैं ।



अध्याय २६

ग्रहों का परिचय

क्रम	ग्रह	सूर्य से अन्तर मील लाख में	सूर्य की परिक्रमा का समय	अपनी धुरी पर घूमने का समय	पृथ्वीसे कितने गुना बड़ा है	पृथ्वी से कितने लाख मील दूर है	मध्यम व्यास मील में
१	सूर्य	०	०	२५ $\frac{1}{2}$ दिन	३०००	६३ -	६.८ ८६००००
२	बुध	३५७	८७ ६७ दिन	२४ घं ६ मि.	३६९	४७०	२६६२
३	शुक्र	६६८	२२४.७० दि.	२३ $\frac{1}{2}$ घं.	०.९	१६१०	२३६ ७६६०
४	पृथ्वी	९२३	३६५.६८ दि.	२४ घं.	१	०	७६१८
घ. मि से.							
५	मंगल	१४७	६८६.९८ दि.	२४-३७-२२	०.१५	२४७६	३३८ ४२११
६	गुरु	४८२२	११ ८६ वर्ष १० घं.	१२८१	५६७२	३६३२	८६०००
७	शनि	८८५०	२९.४६ वर्ष १० $\frac{1}{2}$ घं.	७०६	१०२३६	७३७३	७०५००
८	हर्शल	१७७१०	८४.२ वर्ष १० घं. ३८ मि.	६४	१६४६६	१५९५४	३१७००
९	नेपच्यून	२७७५०	१६४.७८ १० घं ४९ मि.	८३	२८९२८	२६५७२	३४५००
वर्ष							
१०	चंद्र	०	पृथ्वी की परिक्रमा २९-५३ दि.	२७ $\frac{1}{2}$ दिन	४ $\frac{1}{2}$	२४० २२१	२००० मील हजार

ग्रहों का आकार और परिक्रमा मार्ग एक दूसरे से मिलान करने के लिये सूर्य का व्यास २ फुट मान कर उसी अनुपात से प्रत्येक ग्रहों का आकार और परिक्रमा मार्ग का व्यास नीचे चक्र में समझाया है। चित्रसंख्या ३ भी देखो।

ग्रह	बुध	शुक्र	पृथ्वी	मंगल	गुरु	शनि	हर्शल	नेपच्यून
वृत्त (मार्ग) का	१६४	२८४	४३०	६५४	$\frac{1}{2}$ मील	$\frac{1}{2}$ मील	१॥मील	२॥मील
व्यास	फुट	फुट	फुट	फुट				
आकार	राई का मटर	बड़ा	बड़े	मामूली छोटी	मामूली बड़ा			
	दाना	बटाना	अल्पीन	संतरा	नारंगी	वेर	वेर	
			का सिर					

पृथ्वी की सूर्य से दूरी वास्तव में ९ करोड़ से कुछ अधिक है। यह लम्बाई ऊपर बताये क्रम से अनुमान करने पर ४३० फुट का आधा २१५ फुट हुआ। सूर्य की दूरी

इस प्रकार अनुमान कर सकते हैं कि १ रेलगाड़ी प्रति घंटे ३० मोल के हिसाब से पृथ्वी से चले तो ३३८ वर्ष में वह सूर्य के पास पहुँचेगी ।

मंगल और गुरु के बीच सूर्य की परिक्रमा करते हुए और भी कई छोटे-छोटे ग्रह हैं । यदि उन को भी उपर्युक्त अनुपात से लघु आकार में समझने के लिये विचार करो तो व्यास १००० से १२०० फुट के भीतर लगभग ४० दाने रेत के बराबर हैं । छोटे-छोटे तो और भी अधिक हैं ।

सूर्य से इतर ग्रहों की दूरी आदि का अनुमान करने से प्रगट हो जायगा कि जिस ग्रह का छोटा घेरा है वह औघ्र परिक्रमा पूरी कर लेता है और जिसका परिक्रमा-मार्ग बड़ा है उसे परिक्रमा पूरी करने में अधिक समय लगता है ।

किसी ग्रह का परिक्रमा-मार्ग कितना ही छोटा या बड़ा हो परन्तु ३६०° में ही वह मार्ग घटा रहता है जिसमें १२ राशियाँ होती हैं ।

ग्रहों के भिन्न-भिन्न नाम—

यहां ग्रहों के मुख्य-मुख्य नाम संक्षेप में दिये हैं ।

१ सूर्य=रवि, भानु, भास्कर, हेलि, भानुकर, भानुमान, दीप्तरश्मि, चंडाशु, अहस्कर ।

२ चंद्र=सोम, शीतरश्मि, अंबुज, शीताशु, मृगाक, ग्लौ, कलेश, चन्द्रमा ।

३ मंगल=कुज, भीम, क्रूर, वक्र, लोहिताग, पापी, आर, आवनेय ।

४ बुध=चन्द्रपुत्र, ज्ञ, वित्, सौम्य, चाद्रि, बोधन, शात, श्यामगान, अतिदीर्घ ।

५ गुरु=बृहस्पति, जीव, अगिरा, देवगुरु, वाचस्पति, ईज्य, प्रशात, त्रिदेवेशवध ।

६ शुक्र=भृगु, सित, दैत्यगुरु, उशता, भार्गवसूनु, काण, कवि, अच्छ ।

७ शनि=अर्कपुत्र, छायात्मज, यम, सौरि, असित, नील, पंगु, कोण ।

८ राहु=क्रूर, कृष्णाग, तम, असुर, संहिकेय, कपिलाक्ष, दीर्घ, अगु, स्वर्मानु, विषुतुद ।

९ केतु=शिखी, ध्वज, शनिमुत, यमात्मज, प्राणहर, अतिपापी, गुलिक, मादि ।

१० हर्शल=यूरेनश, वारुणी, प्रजापति ।

११ नेपच्यून वरुण ।

अध्याय ३०

ग्रह-गुणधर्म

जिस प्रकार राशियों के गुणधर्म बता चुके हैं उसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के गुणधर्म हैं । इनके अव्ययन करने से प्रगट होगा कि इन ग्रहों से क्या-क्या गुण प्रगट होते हैं, और ये ग्रह किस प्रकार प्रभाव उत्पन्न करते हैं और उनसे क्या-क्या विचार जा सकता है ।

ये ग्रह किस धातु से सम्बन्ध रखते हैं, उनका तत्त्व क्या है, गुण कैसा है किस प्रकार की पीड़ा करते हैं, कहा पीड़ा करते हैं, कौन ग्रह किस कुटुम्बी का सूचक है, किस दशा में विशेष प्रभाव करते हैं, इत्यादि बातें आगे दिये हुए चक्र से प्रगट होगी ।

इन सब बातों का विचार कर फल अनुमान करना होता है । जैसे चोरी के प्रसन्न में विचार करना है, तो चोर की कौन जाति होगी, क्या अवस्था होगी, माल किस प्रकार के स्थान में रखा होगा इत्यादि बातें राशि और ग्रह गुणधर्म के अनुसार विचार करना पड़ता है । ग्रह शरीर के किस स्थान पर, किस तत्त्व का प्रभाव, किस धातु द्वारा करता है या आजीविका किस के द्वारा मिलेगी । वह ग्रह कैसे दोष उत्पन्न करेगा, किस अंग में पीड़ा करेगा इत्यादि बातें ग्रह की स्थिति के अनुसार बुद्धि से विचारना पड़ता है ।

ग्रह के गुणधर्म का उपयोग फल विचारने में काम आता है । फलित विषय में समय-समय पर इसका उपयोग होगा । इस कारण ग्रहों के गुणधर्म ध्यान में रखना चाहिये ।

इनकी मैत्री आदि के सम्बन्ध में इस प्रकार भी विचार होता है—तत्त्व का योग=वायु (शनि), अग्नि (मंगल) और पृथ्वीतत्त्व (बुध) ये एक ही राशि के होने से आधी (तूफान) आदि उत्पन्न करते हैं । अग्नि मंगल) और आकाश (गुरु) से भूकम्प अग्नि (सूर्य या मंगल) और जल तत्त्व (चन्द्र या शुक्र) से वर्षा ।

ग्रह गुणधर्म-चक्र—

गुणधर्म	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१ शरीर	आत्मा	मन	आरोग्य	वाणी	ज्ञान	कामदेव	दुःख	दुःख	दुःख
	(चित्त)	शक्ति	(विद्या)	बुद्धि	(साक्षा-)	(विपत्ति)			
		(पराक्रम)			रिक्त	सुख)			
२ पदवी	राजा	रानी	सेनापति	युवराज	मन्त्री	प्यादा			
						(सेवक)			
३ धातु	हड्डी	रक्त	चर्बी	त्वचा	मस्तिष्क	बीर्य	नसें		
४ तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाश	जल	वायु		
५ त्रिदोष	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफ	वात	वात	वात
	(प्रकृति)								
६ वर्ण(रंग)	रक्त	शुक्ल	रक्त	हरा	पीत	श्वेत	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
७ जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र	म्लेच्छ	रलेच्छ
८ अवस्था	वृद्धा	युवा	युवा	वाल	वृद्ध	युवा	वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध

- गुण धर्म सूर्य चंद्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु केतु
 ६ लिंग पुरुष स्त्री पुरुष नपुसक पुरुष स्त्री नपुसक स्त्री पुरुष
 १० दिशा पूर्व वायव्य दक्षिण उत्तर ईशान आग्नेय पश्चिम नैऋत्य नैऋत्य
 ११ गुण सत्त्वगुण सत्त्व० तमो० रजो० सत्त्व० रजो० तमो० तमो०
 १२ धातु सुवर्ण कासा गेरु सुवर्ण रत्न रूपा लोह लोह लोह
 १३ रस तिक्त लवण कटु कटु मधुर अम्ल तिक्त तिक्त तिक्त
 (सवरस) (कपाय)
 १४ काल मध्याह्न अपराह्न मध्याह्न पूर्वाह्न पूर्वाह्न अपराह्न संध्या संध्या संध्या
 (वली) वली (प्रातः) (प्रातः)
 १५ स्वभाव स्थिर चर उग्र मिश्र मृदु लघु तीक्ष्ण तीक्ष्ण
 १६ भूमि पशुभूमि आर्द्रभू. दग्ध० श्मशान ग्राम० जल० ऊपर ऊपर ऊपर
 १७ पाद चतुष्पद सर्प चौपाया पक्षी द्विपद द्विपद पक्षी सर्प पक्षी
 (अपद) (मनुष्य)
 १८ आकार चौकोन स्यूल चौकोन गोल गोल खंड(अर्द्ध- दीर्घ दीर्घ पुच्छ
 चन्द्राकार)
 १९ मणि माणिक्य मोती प्रवाल पन्ना पुण्यराग हीरा नीलम पिरोजा लसण
 २० स्वभाव उग्र सौम्य उग्र शुभ शुभ शुभ पाप पाप पाप
 २१ चर स्थिर चर चर द्विस्वभाव स्थिर चर पक्षी चर पक्षी
 आदि (स्थिर) (स्थिर)
 २२ स्थान वन जल वन ग्राम ग्राम ग्राम संधि विवर विवर
 २३ ,, देव- जल० अग्नि क्रीडा भण्डार शय्या गज डेर) विल विल
 स्थान
 २४ ग्रहमेद मूलग्रह धातुग्रह धातु जीव० जीव० मूल धातु धातु धातु
 २५ ऋतु ग्रीष्म वर्षा ग्रीष्म शरद हेमन्त वसंत शिशिर शिशिर शिशिर
 २६ जल शुष्क सजल शुष्क जलराशि जलराशि सजल शुष्क शुष्क शुष्क
 मे सजल मे सजल
 २७ पीडा- सिरया छाती या पीठ हाथ पैर कमर गुप्त घुटना
 स्थान मुख गला पेट स्थान जाघ
 २८ फल अयनमें मुहूर्त दिन ऋतु महीना पक्ष वर्ष
 समय
 २९ कारक पिता माता भाई मामा सतति स्त्री खर्च मृत्यु
 ३० दृष्टि ऊर्ध्व सम ऊर्ध्व तिरछी सम तिरछी अधो अधो अधो

ग्रहों के कल्पित स्वरूप के चित्र



चित्र संख्या ७४



चित्र संख्या ७५



चित्र संख्या ७६



चित्र संख्या ७७



चित्र संख्या ७८



चित्र संख्या ७९



चित्र संख्या ८०



चित्र संख्या ८१



चित्र संख्या ८२

किस ग्रह से क्या विचारना (संक्षेप में)

- १ सूर्य से—आत्मा पिता, स्वभाव, नीरोगता, सामर्थ्य और लक्ष्मी का विचार ।
- २ चन्द्र से—चित्त, माता, प्रसन्नता, वृद्धि, राजा, सम्पत्ति का विचार ।
- ३ मंगल से—पराक्रम, भाई पुत्र, भाई विरादर, रोग गुण, पृथ्वी ।
- ४ बुध से—विद्या, विवेक, वाणी, मामा, मित्र वाधव ।
- ५ गुरु से—बुद्धि, ज्ञान, पुत्र, धन, शरीर की पुष्टि ।

- ६ शुक्र से—कामदेव, ली, बाहन, भूषण, सुख
 ७ शनि से—आयु, जीवन, मृत्यु का कारण विपत्ति ।
 ७ राहु से—पितामह (दादा) का विचार ।
 ९ केतु से—माता यह (नाना) ।

अध्याय ३१

ग्रहों का प्रभाव

१ सूर्य—यह सब ग्रहों में बलवान् ग्रह है, क्योंकि सब ग्रहों का चालक है और इसी से सब ग्रहों को तेज मिलता है । यह महत् पद दर्शक, दैवी शक्ति, आत्मा, अग्नि देवता, सरकार राज दरवार आदि कार्य का कारक ग्रह है । सब राशियों में बलवान् मिहिराशि का स्वामी है । यह कुण्डली में बलवान् होता है तो ऐश्वर्य शौर्य, मान, कीर्ति दैवी व नैतिक नद् गुण आरोग्य, अधिकार ये सब प्राप्त होते हैं । रवि के प्रभाव से मनुष्य उदार, मत्स्य काम की अभिलाषा करने वाला, प्रतिभा सम्पन्न, गरीबों पर दया करने वाला होता है ।

रवि निर्बल होता है तो अभिमानी, अपनी बड़ाई करने वाला अधिकार का दुरुपयोग करने वाला होता है । मनुष्य शरीर में हृदय, रक्त का अभिसरण, जीवन शक्ति, हृदय का विकार, पित्त विकार नेत्र रोग, पेट के नीचे विकार प्रगट करता है ।

२ चन्द्र यह पृथ्वी का उपग्रह है । इसका प्रभाव कुण्डली में बहुत महत्व का है । जिस प्रमाण में ये बलवान् होता है उनी अनुसार दैहिक और मानसिक बल देता है । कर्क राशि का स्वामी है । राशिचक्र में भ्रमण करते समय जन्म समय या प्रश्न काल में यह जिस राशि पर हो उसके अनुसार फल उत्पन्न करता है । जन्म समय जिस राशि पर चन्द्र हो उस राशि के अनुसार स्वभाव मानसिक प्रगल्भता आदि उत्पन्न करता है । जिसका जन्म कर्क लग्न में हो, लग्न में चन्द्र हो तो उस पर अधिक प्रभाव करता है । वह मनोविकार के आधीन रहता है और नवीनता उसे प्रिय होती है, अर्थात् उस की आयुष्य भर में मनोविकार की प्रधानता रहती है और उसके सम्बन्ध में अच्छे बुरे कार्य का सम्बन्ध जन्म समय के चन्द्र की स्थिति पर अवलम्बित है । चन्द्र का प्रभाव शरीर के पेट स्तन, मेदा, लाजा, लालोत्पादक पिंड आदि पर होता है और

उस सम्बन्धी विकार उत्पन्न करता है। पूर्ण चन्द्र शुभ होने से अच्छा है शुभ फल देता है, परन्तु क्षीण चन्द्र अशुभ ग्रह समझा जाता है।

३ मंगल—यह आकार आदि में पृथ्वी सरीखा है, इसी से इसे भूमिपुत्र कहते हैं। वह रश्मि का प्रभाव बताते हुए तामड़े रंग का चमकते हुए दिखता है। यह मंगल स्वभाव से क्रोधी, चुगलखोर और झूठा होता है। यह निर्बल हो तो उस समय स्वभाव में झुठाई, चुगलखोरी, क्रोधीपना, दुष्टता और क्रोध के कार्य प्रगट करता है। यह अनिष्ट हो तो उष्णता का विकार, भयकर व त्रिदोषिक ज्वर, प्लेग, कालरा, माता आदि स्पर्श-जन्य रोगों से दुःख उत्पन्न करता है।

४ बुध—यह चन्द्र सरीखा महत्व का है, यह अपने बल के अनुसार मानसिक एवं बौद्धिक उन्नति दर्शाता है। जब यह चन्द्र के साथ त्रिरेकादश दृष्टि योग करता है तो उसकी बुद्धि सामर्थ्य अच्छी होती है। ये ग्रह चातुर्य, धार्मिक दशा, शोधक बुद्धि, शास्त्रीय विषय में प्रवेश, वाणी में मिठास आदि का कारक हैं। बुध अनिष्ट होता है तो सिर दुखना, लड़खड़ाते या तुतलाते बोलना, और कई प्रकार के मानसिक त्रास रोग प्रगट करता है।

यह ग्रह दूसरे ग्रह के साथ युक्त या दृष्ट हो तो जैसा वह ग्रह शुभ हो उसी प्रमाण से फल उत्पन्न करता है। इसका फल विचारते समय यह कौन राशि पर है और इस पर कौन ग्रह की कैसी दृष्टि है आदि बातों का पूर्ण विचार करना होता है।

५ गुरु—सब ग्रहों में बड़ा है और इसके ४ चन्द्र (उपग्रह) हैं। उनमेंसे एक तो लगभग अपनी पृथ्वी के बराबर है। यह अति शुभ दायक ग्रह है। न्याय प्रियता, सब अच्छे गुण या अच्छी बातें और सुख का द्योतक है। यह शुभ ग्रह है। जिस की कुडली में लग्न चन्द्र या बुध इनसे गुरु का शुभ योग होता है तो वह जातक उदार मन, न्यायी, प्रामाणिक, स्वच्छ हृदय का होता है, परन्तु अशुभ दृष्टि योग से साम्प्रतिक अडचन बड़े लोगों की अप्रसन्नता आदि प्रगट करता है। यह ग्रह रक्तदोष, यकृत का विकार आदि उत्पन्न करता। गुरु जहाँ हो उस स्थान की हानि करता है, परन्तु जिस भाव पर उसकी दृष्टि हो यह दृष्टि शुभ समझी जाती है, भाव की वृद्धि करती है।

६ शुक्र—यह दूसरे ग्रहों की अपेक्षा अधिक प्रकाशवान दिखता है। यह बुध के साथ हो तो काव्य, ललित कला, चित्र कला, वाचन कला, आदि में प्रवीण होता है। शुक्र लग्न में हो तो मुहं मनमोहन होता है। उत्तम भाषण शैली, मिलनसार स्वभाव, सबसे मिलने वाला, कपड़े आदि स्वच्छ रखता है। शुक्र जन्मकुडली में निर्बल हो तो, हलकापन, निर्लज्ज, भयानक शब्द प्रिय आदि अवगुण करता है। शुक्र में वृष राशि की अपेक्षा तुला राशि में अधिक बलवान होता है। और शुभ फल देता है ये पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल उत्पन्न करता है।

यह मूत्राशय का विकार, उपदश आदि विकार, अपने दुर्ब्यसन के कारण या अनौत्ति-पथ पर चलने के कारण होने वाले रोग वीर्यपात या उससे होने वाली दुर्बलता आदि विकार उत्पन्न करता है ।

७ शनि-इस के चहुँ ओर ३ बल्य और ८ चन्द्र (उपग्रह) है । मानो छोटी सूर्य माला ही हो, इसी कारण इसे सूर्यपुत्र कहते हैं । जन्मसमय शनि बलवान हो तो कुशाग्र-मति, मार्मिक, कठोर और कृपण, डरपोक, दूढ़, थोड़ा बोलने वाला, हिसाब किताब से खर्च करनेवाला, उद्योगी और सभ्य स्वभाव का होता है । शनि निर्बल हो तो सशय युक्त, दुष्ट, अधम, क्रोधी स्वभाव का होता है । सब ग्रहो में शनि अधिक पाप फल देने वाला है । शनि रवि, चन्द्र या लग्न के साथ अशुभ दृष्टियोग करता हो तो दंत विकार, नाना प्रकार के रोग जो अधिक समय तक रहने वाले हो, संधिवात, पक्षाघात, कुछ बहरापन आदि रोग दर्शाता है ।

संक्षेप में शनि ये डर, उदासीनता और मृत्यु का द्योतक ग्रह माना जाता है । शनि जहाँ पर हो उस स्थान को वृद्धि करता है, परन्तु जिस भाव को देखता है उसकी हानि करता है ।

८ हर्गल—(प्रजापति) यह अनेक आकस्मिक विचित्र प्रकार की घटना घटित करने वाला ग्रह है । साधारण प्रकार से ये पाप ग्रह है । इसी प्रकार वह कई प्रकार के चामत्कारिक और कल्पना जिसकी न हो सके ऐसा फल उत्पन्न करता है । जिस कुंडली में यह बलवान हो तो अच्छे प्रकार के शुभ फल दर्शाता है । निर्बल होने पर ससार के नाना प्रकार के कष्ट और स्त्री-सुख या भ्रातृ-सुख में न्यूनता लाता है । झगडा और विचित्र प्रकार के भ्रमण सम्बन्धी कार्य प्रगट करता है ।

जिसकी कुंडली में लग्न चंद्र या बुध इस ग्रह से शुभ दृष्टि योग करता हो तो उसकी बुद्धि और मानसिक उन्नति अच्छी प्रकार की प्रगट होती है । उसे विशेष कर आध्यात्मिक, गूढ़, फलित ज्योतिष, सामुद्रिक आदि शास्त्रीय विषय में प्रवेश या इतर विषय में योग्यता बढ़ती है ।

९ नेपच्यून—वरुण-इस ग्रह का धर्म पानी सरीखा अस्थिर है और सर्व साधारण पन से यह ग्रह अधिक अशुभ फल उत्पन्न करता है । बार-बार विचार बदलना, विश्वास करने अयोग्य, अस्थिरता आदि गुण प्रकट करता है । यह ग्रह कुंडली में जब बलवान हो या इसपर शुभग्रह की दृष्टि हो या बुध, चंद्र, से शुभ दृष्टि योग करता हो, उस समय बुद्धि की तीव्रता बढ़ेगी । अतर्दृष्टि में या दैवी दृष्टि में विचार करने की प्रेरणा मन में बढ़ती है, मन आध्यात्मिक मार्ग की ओर झुकता है । यदि वह कुंडली में बुरे स्थान में या पीडित हो तो बुरी वासना, मत्सर, लोभ, आदि की ओर ले जाने वाले विचार उत्पन्न करता है ।

इस ग्रह के प्रभाव से दूसरे की नकल शीघ्र करने में निपुण होता है। इससे जल तत्व से लाभ, गायन, तनु वाद्य, काव्य, गूढ शास्त्र में प्रवेश, स्वप्न सृष्टि के विचित्र अनुभव दर्शाता है। यह जल राशि (कर्क या मीन) में बलवान होता है। यह दुष के साथ अशुभ दृष्टि योग करता हो तो मज्जा तंतु में क्षोभ उत्पन्न करता है। चंद्र के साथ पीडित हो तो शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य नहीं रहता।

राहु-केतु

इन दोनों ग्रहों में राहु का ही महत्व है, क्योंकि राहु से सदा ६ राशि अंतर पर केतु रहता है। राहु को छोड़कर केतु कही नहीं जा सकता। दोनों ग्रह सदा वक्री रहते हैं और उनकी गति सदा एक-सी रहती है। जब राहु या केतु के बीच चंद्र क्रांति वृत्त पर आ जाता है उस समय उसका शर शून्य या बहुत थोड़ा रहता है, तभी ग्रहण संभव होता है। पृथ्वी और सूर्य के बीच चंद्र आ जाने से जब सूर्य नहीं दिखता तो सूर्यग्रहण होता है और सूर्य व चंद्र के बीच पृथ्वी आने से चंद्रग्रहण होता है। ये दोनों अप्रकाश ग्रह राहु-केतु बड़े महत्व के हैं, इस कारण इनकी गणना ग्रहों में की जाती है।

राहु का मुख्य धर्म मारना है। यह क्रूर ग्रह तीसरे स्थान में हो तो भाइयों का, चतुर्थ में माता का, पंचम में सतति का, सप्तम में स्त्री का, दशम में पिता का मारक होता है। यह पापग्रह है। दाँत ओठों के बाहर या बड़े धनुषाकार दिखे तो राहु का प्रभाव समझना। यह लग्न व ६, ७, १२ स्थान में नाशकर्ता होता है। राहु बलवान हो तो, उन्नत दशा में लाता है।

इनका फल विचार—

राहु केतु जिस भाव में हो और जिस-जिस भावस्वामियों के साथ हो उसीके अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। इनका कोई विस्व न होने के कारण दूसरों का प्रभाव ग्रहण कर शुभाशुभ फल देते हैं। ये तमोगुणी हैं। केन्द्र में हो और त्रिकोण से सम्बन्धित हो या त्रिकोण में हो और केन्द्रेश से सम्बन्धित हो तो शुभकारक होते हैं। राहु केतु जिस स्थान में हो या जिस भावेश के साथ हो उस भाव की वृद्धि करते हैं। परन्तु कोई ग्रह अच्छा भी हो तो भी राहु के साथ रहने से बुरा फल होता है। राहु केतु २ या ५ भाव के स्वामी हो तो जिस ग्रह के साथ रहते हैं वैसे इनका स्वभाव हो जाता है अर्थात् शुभ ग्रह के साथ शुभ और पाप ग्रह के साथ अशुभ हो जाता है।

अध्याय ३२

भाव-परिचय

पहिले बतला चुके हैं कि द्वादश भाव के स्थान स्थिर हैं और वे स्थान लग्न स्थान से गिने जाते हैं। उन भाव के विशेष नाम नीचे कुंडली में बताये गये हैं।

कुंडली में ग्रहों की स्थिति बदलते रहती है, परन्तु भाव वे ही रहते हैं। भाव में कोई परिवर्तन नहीं होता, परन्तु इन भाव में जो राशियाँ रहती हैं, वे लग्न की स्थिति के अनुसार सदा बदलती रहती हैं।

भाव के नाम

२ घनः	१२ व्यय	११ आय
३ सहज	१ लग्न तन	
४ सुहृद	१० कर्म	
५ सुत	७ जाया	९ धर्म
६ रिपु	८ मृत्यु	

लग्नकुण्डली

१	७	
१० के	८	६
११ मं.	५	
१२	२ बु श	४ रा
१ सू	३ गु शु	

जैसे यहाँ लग्नकुण्डली में वृश्चिक लग्न है तो तब स्थान (लग्न) में वृश्चिक का अंक ८ रहेगा और ऊनी क्रम में शेष भावों में राशियों के अंक लिखे रहेंगे जैसा यहाँ लग्न कुण्डली में दिया है।

इसको इन प्रकार पढ़ेंगे कि (तीमरा) सहज स्थान में केतु मकर का है, (चौथे) सुहृद स्थान में कुंभ का मंगल है, (पाँच) रिपु स्थान में मेष का सूर्य है, (सप्तम) जाया स्थान में वृष का बुध और शनि है, (अष्टम) मृत्यु स्थान में मिथुन का चंद्र, गुरु और शुक्र है, (नवम) धर्म स्थान में कर्क का राहु है। शेष स्थानों में कोई ग्रह नहीं है।

तब स्थान में वृश्चिक राशि, घन स्थान में धनु राशि, सुत स्थान में मीन राशि, दशम भाव या कर्म स्थान में सिंह राशि, आय भाव में कन्या राशि, और व्यय भाव में तुला राशि है। इस प्रकार इन भाव के वर्णन में विशेष नाम का ही उपयोग होता है।

इन १२ भाव के जो प्रचलित नाम हैं इन्हें कठम्य कर लेना चाहिये, परन्तु इनके अतिरिक्त और भी नाम हैं जो कभी-कभी उपयोग में आते हैं उनके नाम नीचे दिये हैं।

१ तनु भाव - लग्न, होरा, मूर्ति, चंद्र, मिर, अंग, वपु, कल्प।

२ धन भाव—कुटुम्ब, वाक्, पित्त, वित्त, स्व, अर्थ, कोष, अग्नि (नेत्र) ।

३ सहज भाव—सहोत्थ, गल, दुश्चिक्थ, आता, पराक्रम ।

४ सुहृद भाव—सुख, वेश्म, पाताल, हृत् (हृदय), वाहन, मातृ (माता) रसातल, वधु, अम्बु, कर्ण, हिवुक, शौर्य, तुर्य, मान, नीर, सन्न, गृह ।

५ सुत भाव—आत्मज, मंत्र, विवेक, शक्ति, उदर प्रवेश, प्रभाव, प्रतिभा, धी, बुद्धि, तनुज, तनय, विद्या, वाक् स्थान ।

६ रिपु भाव—रोग, क्षत, अरि, व्यसन, चोर, विघ्न ।

७ जाया भाव—चित्तोत्थ, काम, मदन, भर्ता, कलत्र, दधि, सूप, दून, अस्त, स्मर, जामित्र या मित्र ।

८ मृत्यु भाव—मरण, रंघ्र, आयु, अंतक, गुण, मूत्रकुच्छ, गुह्य, क्षीर, छिद्र, याम्य, निघन, लय स्थान ।

९ धर्म भाव—पैतृक, भाग्य, गुरु, तप, लाभ, शुभ, दया, मार्ग, अर्जित ।

१० कर्म भाव—आज्ञा, मान, खं, आस्पद, दशम, व्योम, तात, मेपूरण ।

११ आय भाव—लाभ, प्राप्ति, आगम, भव, सर्वतो भद्र ।

१२ व्यय भाव—रिष्फ, अत्य, विनाश, लग्न का अन्त्य खड, प्रान्त्य, अंतिम, रिफ ।

भाव संज्ञा—

उपर्युक्त भावों के नाम क्रमशः बताये हैं परन्तु विशेष परिस्थिति के अनुसार इनके विशेष नाम भी हैं जिनको जानना आवश्यक है । नीचे बताया है कि किन-किन भाव की क्या विशेष संज्ञा है । यहाँ भाव के नाम न लिख कर उनके क्रम सूचक अंक दिये हैं ।

भाव

(१) केन्द्र, कटक या चतुष्टय १,४,७,१०, .

(२) पणफर २,५,८,११

(३) आपोविलम ३,६,९,१२,

(४) उपचय ३,६,१०,११,

(५) अपचय (जो उपचय नहीं) १,२,४,

५,७,८,९,१२

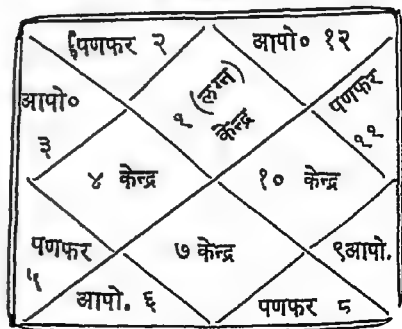
(६) चतुरल ४, ८ ।

(७) त्रिक ६,८,१२

(८) त्रिकोण ५,९

(९) त्रित्रिकोण ६

लग्नकुंडली



इन सबको उदाहरण देकर समझाते हैं ।

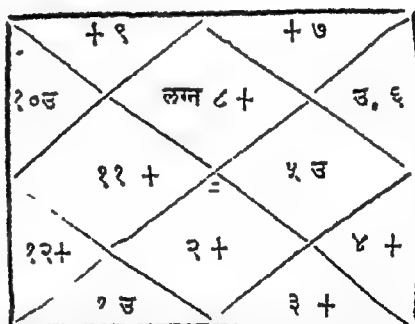
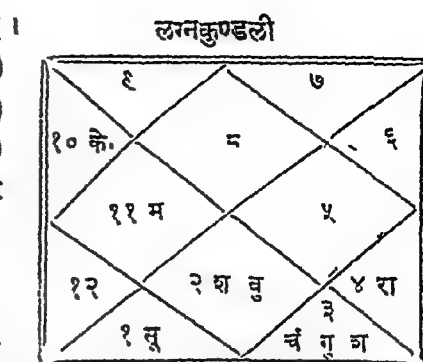
१ केन्द्र (१) लग्न में वृश्चिक (४) चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि का म० (७) सप्तम भाव में वृष का बु० श० (१०) दशम में सिंह राशि है, ये सब राशियाँ और ग्रह (८, ११, २, ५, राशियाँ और म० बु० श० ग्रह) केन्द्र में हैं ।

२ पणफर—(२) में धन राशि, (५) में मीन, (८) में मिवुन, (११) भाव में कन्या राशि है । इन स्थान की राशियाँ पणफर में हैं । अष्टम में चन्द्र गुरु शुक्र हैं । ये ग्रह भी पणफर में हैं ।

३ आपोक्लिम—(३) में मकर का केतु, (६) में मेष का सूर्य, (९) में कर्क का राहु और (१२) में तुला राशि ये सब आपोक्लिम में हैं ।

केन्द्र अर्थात् बीच के स्थान से दूसरा पणफर और तीसरा आपोक्लिम का घर होता है, जैसा यहाँ नमूना चुके हैं ।

४ उपचय, ५ अपचय—यहाँ कुडली में जहाँ उ० लिखा है वह उपचय स्थान है शेष जहाँ + है वे अपचय स्थान हैं । यहाँ लग्न कुडली में उपचय में (३) में मकर का केतु, (६) में मेष का सूर्य, (१०) में सिंह और (११) में कन्या राशि है । शेष सबे हुए स्थान अपचय कहलाये ।



६ चतुरन्त्र—किमी भी स्थान से चौथा और आठवाँ चतुरन्त्र कहलाता है, जैसे मंगल में धनि और बुध चतुर्थ में और कन्या राशि (११ भाव) अष्टम में हैं ये मंगल में चतुरन्त्र में हुए । इसी प्रकार किसी भी स्थान से चौथा आठवाँ स्थान गिनने से जो आवे वह चतुरन्त्र कहलाता है ।

७ त्रिक—किमी भी स्थान से ६-८ और १२ वाँ स्थान त्रिक स्थान कहलाते हैं, जैसे मंगल से छठा कर्क का राहु नवम भाव में है । मंगल से आठवाँ लाभ भाव में कन्या राशि है । मंगल से बारहवें मकर का केतु तृतीय भाव में है । ये सब मंगल के त्रिक स्थान में हुए ।

८ त्रिकोण—कोई भी स्थान से नवम स्थान और वहा से पचम स्थान त्रिकोण कहलाता है। एक दूसरे से नवम पचम राशिया इस प्रकार होगी। १, ५, ९। ३, ७, ११। ४, ८, १२। ये राशिया एक दूसरे से त्रिकोण में है।

जैसे मंगल से पचम में चन्द्र गुरु शुक्र है और चन्द्र से नवम स्थान में कुंभ का मंगल है तो १ वह स्थान जहाँ ग्रह है वहा से १ गिना, वहा से (५) पाचवे स्थान में मिथुन का चन्द्र है और वहाँ से (९) नवम स्थान में मंगल है, इस प्रकार ये स्थान एक दूसरे से त्रिकोण में हुए, क्योंकि यहा इनसे त्रिकोण बनता है। इसी प्रकार किसी भी स्थान से १-५-९ स्थान गिनो तो वे दोनो स्थान त्रिकोण में पडते हैं। १ स्थान तो केवल उस स्थान को गिनने के लिये था, यहा बचे हुए २ ही स्थान त्रिकोण के होते हैं जैसा कुंभ का मंगल और मिथुन का चन्द्र एक दूसरे से त्रिकोण में है।

९ त्रित्रिकोण—किसी स्थान से नवम स्थान त्रित्रिकोण कहलाता है, जैसे चन्द्र से मंगल नवम स्थान में है तो कहेंगे कि चन्द्र से त्रित्रिकोण में मंगल है।

इसी प्रकार लग्न से या किसी भाव विशेष से दूसरे भाव या ग्रह कितने स्थानान्तर पर है विचार कर भाव सज्ञा ऊपर बताए अनुसार निश्चित करना।

भाव स्वामी Lord of the house

जिस भाव में जो राशि है उस राशि का जो स्वामी होगा वही ग्रह भावस्वामी कहलाता है। भाव स्वामी को भावेश्वर, भुवन पति, भावेश या भाव अधिपति भी कहते हैं।

भाव स्वामी का भाव सम्बन्ध से भी पृथक्-पृथक् नाम होता है, जैसे :—लग्न का स्वामी—लग्नेश, द्वितीय भाव का स्वामी—द्वितीयेश का धनेश, ११ वाँ लाभ स्थान है उसका स्वामी लाभेश इत्यादि।

भाव स्वामी के विशेष योग Special aspects of the Lords of the houses

(अध्याय २८ का दृष्टि योग भी देखो)

१ भावेश योग—जब दो या अधिक भावेश (भाव स्वामी) का योग होता है तो भावेश योग कहते हैं।

जब कोई त्रिकेश (त्रिक ६-८-१२ भाव के स्वामी) जब-जब दूसरे भावेशो से योग करते हैं तो अनिष्ट फल देते हैं।

केन्द्रेश (केन्द्र भाव का स्वामी) व त्रिकोणेश (त्रिकोण भाव का स्वामी) का योग शुभ फल देता है। ये स्थान के अनुसार फल देते हैं। (त्रिक) ६, ८, १२ भाव में भावेश निर्वल होता है।

२ भावेश दृष्टि योग—जब दो या अधिक भावेश एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टि से देखते हैं तो भावेश पर दृष्टि योग कहते हैं। त्रिक भाव का स्वामी, जिस भावेश पर दृष्टि करता है उस भावेश के फल को निर्वल कर देता है।

३ त्रिकोण योग—जब दो भावेश एक दूसरे के त्रिकोण (नवम पचम स्थान) में हों तो उसे त्रिकोण योग कहते हैं। ये योग लक्ष्मी, राज वैभव, विभूति, कीर्ति देने वाला होता है। केन्द्रेश और त्रिकोणेश का त्रिकोण योग श्रेष्ठ होता है।

४ केन्द्र योग—दो भावेश परस्पर केन्द्र में हों तो केन्द्र योग होता है। यह योग महत्व सूचक है। एक ग्रह के केन्द्र स्थान से दूसरा ग्रह भी केन्द्र में हो तब यह योग होता है।

५ लाभ योग दो भावेश एक दूसरे पर तृतीय एकादश योग करते हों तो उसे लाभ योग कहते हैं। यह बहुत सम्पत्ति देने वाला होता है। एक ग्रह जहाँ हो उससे दूसरा ग्रह ग्यारहवें स्थान में हो तो दूसरे ग्रह से पहिला ग्रह तीसरे स्थान में पड़ता है। इस प्रकार जब एक ग्रह से गिनने पर दूसरा ग्रह ग्यारहवें स्थान में हो तब यह योग होता है।

६ द्विदिश योग - जब दो भावेश एक दूसरे से दूसरे या वारहवें स्थान में हों तो यह योग होता है। यह योग दरिद्रता सूचक है।

७ षडष्टक योग—दो भावेश एक दूसरे से छठे या आठवें स्थान में हों तो यह योग होता है। यह दुःख और कष्ट देता है।

८ अन्योन्य आश्रय योग—दो भाव के स्वामी जब एक दूसरे के भाव में हों तब यह योग होता है, जैसे लग्नेश लाभ स्थान में हो और लाभेश लग्न में हो तो यहाँ लग्नेश और लाभेश का अन्योन्य आश्रय योग हुआ। इसे परिवर्तन योग भी कहते हैं।

९ युति—जब दो भावेश एक ही राशि के एक ही अंश पर हों तो उसे युति कहते हैं।

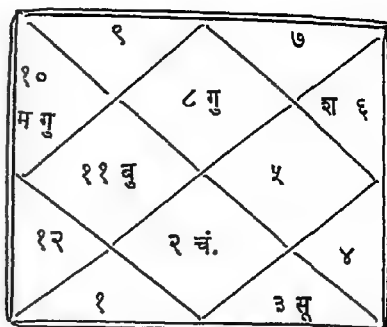
१० पड़भातर या प्रति योग—जब एक भावेश एक दूसरे से ६ राशि के अंतर पर हो अर्थात् एक दूसरे के सम्मुख हों तब यह योग होता है।

इन योगों का वर्णन दृष्टि विचार में भी हो चुका है, परन्तु भाव से सम्बन्ध होने के कारण यहाँ दिया है। यहाँ केवल मुख्य-मुख्य योग ही दिये हैं, क्योंकि योग अनेक हैं।

योग—ग्रहों का ऐसी परिस्थिति में आ जाना जिससे वह दूसरे ग्रह, भाव या राशि से किसी प्रकार सम्बन्धित होकर ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दें जिससे कोई विशेष फल उत्पन्न होने की सम्भावना हो। ऐसे अनेक योगों का वर्णन फलित ज्योतिष में दिया है।

यहाँ इन्ही योगो को उदाहरण देकर समझाते हैं -

इस कुण्डली में षष्ठ भाव का स्वामी मंगल और अष्टमेश बुध है, ये त्रिक भाव के स्वामी हैं। मंगल सहज भाव में है और मंगल से दूसरा स्थान चतुर्थ भाव है जिसमें बुध है। यहाँ मंगल और बुध का (६) द्विद्वादश योग हुआ। क्योंकि मंगल से बुध दूसरा और बुध से मंगल बारहवाँ है। यह योग दरिद्रता सूचक है। इस पर भी त्रिक भाव के स्वामियों का इस प्रकार योग होना अनिष्ट कारक है।



पहाँ चन्द्र सप्तम भाव में है, मंगल से यह गिनने पर पंचम स्थान होता है, इस कारण मंगल से नवम पंचम (३) त्रिकोण योग हुआ। यह योग अच्छा है, परन्तु यह त्रिकोण के स्वामियों का योग नहीं हुआ।

गनि लाभ स्थान में है वह चतुर्थेश (केन्द्र का स्वामी) है, इससे पंचम स्थान में शुक्र तृतीय भाव में है तो शनि और शुक्र का नवम पंचम होने से (३) त्रिकोण योग हुआ। यहाँ शुक्र सप्तमेश (केन्द्र स्वामी) है, इस कारण यहाँ केन्द्र के अधिपतियों का (शनि और शुक्र का) त्रिकोण योग हुआ। यह योग अच्छा है।

लाभ भाव का स्वामी बुध (चतुर्थ) केन्द्र में है। धर्म का भाव स्वामी चन्द्र भी केन्द्र (सप्तम) में है। यहाँ दोनों भावेश केन्द्र में हैं और एक दूसरे के केन्द्र में भी है तो यह (४) केन्द्र योग हुआ। यह अच्छा योग है।

जब कोई ग्रह एक दूसरे से चतुर्थ या सप्तम में हो तो एक दूसरे से केन्द्र में होते हैं, क्योंकि जो एक के चतुर्थ है वह दूसरे से दशम में पड़ता है और जो एक दूसरे से सप्तम में है वह दूसरे से में भी सप्तम होता है। लग्नकुण्डली में १, ४, ७, १० स्थान में रहने वाले ग्रह केन्द्र में कहलाते हैं, परन्तु एक ग्रह से दूसरे ग्रह के स्थान का अन्तर भी ४, ७, १० स्थान की दूरी पर होने से पहिले ग्रह के केन्द्र में दूसरा ग्रह है ऐसा कहेंगे।

यहाँ शनि जो तृतीयेश और चतुर्थेश होकर लाभ स्थान में है, इससे तीसरे स्थान में ल नी (ल न का) गुरु बैठा है जो धनेश और पचमेश है। इन दोनों ग्रहों का (५) तृतीय एकादश योग है, क्योंकि शनि से गुरु तीसरा और गुरु से शनि ग्यारहवाँ है। यह सम्पत्तिदाता योग हुआ।

षष्ठेश मंगल तृतीय भाव में है। मंगल से षष्ठ स्थान में सूर्य अष्टम भाव में बैठा है यह सूर्य दशमेश है। यहाँ षष्ठ और दशम भाव स्वामी और मंगल और सूर्य का (७) षष्ठष्टक योग हुआ जो कष्टदायक है।

गुरु लग्न में वृश्चिक के १०° पर है और चंद्र सप्तम भाव में वृष के १०° पर है तो गुरु और चंद्र का (१०) पड़भान्तर योग या प्रतियोग हुआ ।

मंगल मकर के २२° पर है और शुक्र भी मकर के २५° पर है तो मंगल और शुक्र को (९) युति हुई । यदि शुक्र भी मकर के २२° पर होता तो पूर्ण युति होती । परन्तु दोनों के अशो में केवल ३° का अन्तर है अर्थात् दीप्ताश के भीतर है तो यह भी युति कहलायगी ।

इस कुण्डली में लाभ भाव में बुध के स्थान में शनि बैठा है और चतुर्थ में अग्नि के स्थान में (कुम्भ राशि में) बुध बैठा है यह (८) अन्योन्य आश्रय योग हुआ । इसे परिवर्तन योग भी कहते हैं । इसी प्रकार और भी ग्रहों का याग विचारना ।

अध्याय ३३

भाव विचार

जब कोई ग्रह किसी भाव में आता है तो उस भाव के सम्बन्ध से ग्रह के फल का विचार होता है, इस कारण इन भावों से क्या-क्या विचार किया जाता है यहाँ बतलाते हैं ।

१ प्रथम भाव—इसे लग्न, मूर्ति, उदय या पूर्व भी कहते हैं । इस स्थान का नाम तनु है । इस स्थान में स्वभाव, प्रकृति, मन, स्वरूप, आयुष्य और इतर शारीरिक दुःख सुख का विचार होता है । शरीर की दुर्बलता, पुष्टता, शरीर का रंग, गील, आकृति, शरीर के लहसन, मसा, तिल आदि चिह्न, आरोग्य, शरीर लक्षण आदि का विचार होना है । इसका मुख्य प्रभाव मन्त्रक पर है ।

२ द्वितीय भाव—इसे धन स्थान कहते हैं । इसमें जातक (जिसका जन्म हुआ है और जिसके सम्बन्ध में विचारना है) की सम्पत्तिक स्थिति का बोध होता है । इस भाव में कोप (खजाना), मोना, रत्न आदि की प्राप्ति, मित्र, वस्त्र, कुटुम्ब व स्त्री पुरुष का मुख और पूर्व अर्जित धन, अथवा कार्य, विद्वत्ता, लेखन, पटुत्व, वाणी, नेत्र और खाद्य पदार्थ आदि का विचार होता है । इसका प्रभाव कण्ठ, नेत्र और मुख पर होता है ।

३ तृतीय स्थान—इसे सहज (साथ में उत्पन्न हुए) स्थान या भ्रातृ-स्थान व पराक्रम-स्थान भी कहते हैं । इसमें भाई बहिन, भाइयों का सुख, पास के सम्बन्धियों का सुख या थोड़ी यात्रा रेल, बैल गाड़ी आदि की, पराक्रम (साहस), सेवक, चाचा,

मामा, दासी, हाथ कान सम्बन्धी रोग, कान के गहने आदि का विचार होता है। इसका मुख्य प्रभाव हाथ, वाहु, कन्धा और कान पर होता है।

४ चतुर्थ स्थान—इसे सुहृद, पाताल और सुख स्थान भी कहते हैं। इस भाव से सुख-दुःख का, माता का, स्थावर सम्पत्ति का, आयुष्य के दिन का, क्षेत्र, गृह (घर) भूमि, वगीचा, तालाव, चौपाया, मित्र, सुख, वन्धु, उद्यम, ससुर, नानी और छाती का विचार होता है। इसका प्रभाव छाती और पेट पर होता है।

५ पंचम स्थान - इसे सुत भाव कहते हैं। इससे सतति, गर्भ, विद्या, शील-स्वभाव मन्त्र, उपासना, सट्टा, लाटरी या इसी प्रकार के व्यवहार में यश, अपयश, आनन्द और बुद्धि का विचार होता है। इसका प्रभाव हृदय और पीठ व कुक्षि पर होता है।

६ षष्ठ भाव - इसको रिपु-स्थान भी कहते हैं। इससे शत्रु, मामा, मौसी, होने वाला रोग, सेवक, अपने अधीन कार्य करने वाले, ऊँठ, घोड़े, भैंस आदि पशु-चोर भय, सग्राम, क्रूर कर्म, वन्धन भय, सौतेली मा, अपयश, हानि, रोग, चिन्ता और शङ्का आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव कमर आत, नाभि और पेट पर होता है।

७ सप्तम भाव—इसे अस्त या कलत्र या जाया-स्थान कहते हैं। इससे स्त्री, स्त्री-सुख, विवाह, व्यापार, गमन, अदालती झगड़े, साझीदार, प्रगट शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी, सग्राम, विवाद, वाणिज्य, प्रवास या स्थानान्तर, जारकर्म, कलह आदि का विचार होता है। स्त्री का पति या पतिसुख का भी विचार इसीसे होता है। इसका प्रभाव वस्ति, मूत्रपिंड और कमर पर भी होता है।

८ अष्टम भाव—इसे मृत्यु या आयु स्थान भी कहते हैं। इससे मृत्यु का निदान, आयु, सकट, शस्त्र, अकल्पित लाभ, स्त्री की ओर से धन प्राप्ति, नदी तैरना, अत्यन्त विषम मार्ग, गुदा रोग, गुह्य रोग, रिपु, दुर्गस्थान, ऋण, रण, लावारसी धन, व्याधि का उत्पन्न होना, छिद्र मार्ग, टेढ़ी वात, युद्धसमय, शत्रु का भय, वस्तु का नाश आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव गुह्येन्द्रिय किंवा प्रजोत्पादक इन्द्रिय पर होता है।

९ नवम स्थान—इसे धर्मस्थान कहते हैं। इससे धर्म, श्रद्धा, तप, तीर्थयात्रा, लौकिक, भाग्योदय, दूर की यात्रा, जल प्रवास, स्वप्न, तत्त्वज्ञान, बुद्धिमत्ता, ग्रथ, कर्तव्य, दीक्षा, मठ, देवग्रह, कुआ-तालाव आदि का विचार, भाग्य की वृद्धि, निर्मल स्वभाव, नम्रता आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव जाघ पर पड़ता है।

१० दशम भाव—इसे कर्मस्थान या राज्यस्थान भी कहते हैं। इससे पितृ सुख, ओहदा, कीर्ति, कर्म, कार्य से होने वाला अच्छा या बुरा काम, यज्ञ, उद्योग-धधा, व्यापार, मुद्रा, राजा से आदर, वडी पदवी के प्राप्ति का विचार, नौकरी, पेशा, अधिकार, राज्य, वृष्टि आदिक आकाशीय वृत्तात आदि का, प्रवास (परदेशगमन) और ऋण आदि का विचार होता है। इसका प्रभाव घुटने पर होता है।

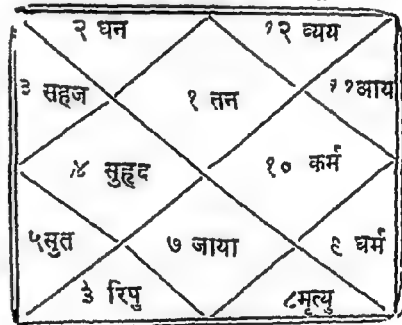
११ एकादश भाव—इसे आय या लाभस्थान भी कहते हैं । अनेक प्रकार का लाभ, आगा, इच्छा, द्रव्य लाभ, आमूषण, हाथी, घोड़े, पालकी आदि ऐश्वर्य, मित्र सुख, वास्य, विद्या लाभ, परिवार, दामाद, मित्र कैसे मिलेंगे आदि का विचार होता है । इसका प्रभाव पैर व पिंडली पर होता है ।

१२ द्वादश भाव— इसे व्यय स्थान कहते हैं । इसमें मोक्ष, गुप्त विद्या, आध्यात्मिक विद्या, कंद, दण्ड धातु, खर्च का विचार, हानि, दान, व्यय, पाखण्ड, आत्महत्या, राजकीय संकट, कर्ज, ठगवाजी और घेरना या पकड़ना आदि का विचार इससे होता है । इसका प्रभाव पांव का पंजा, उगली और तलुवा पर होता है ।

इस भावकुण्डली से अपने सम्बन्धियों का भी विचार होता है । उसे नीचे के पैरा में चक्र में दिये अंक के अनुसार मिलावें जैसे —

१ तन, आजी, नाना । २—धन-समधिनि । ३—सहज, भाई, बहन, नीकर-चाकर । ४—सुहृद, मित्र, माता, नमुर । ५—मुत्त, सन्तान । ६—रिपु, काकी, मौसी, मामा, फूफा । ७—जाया, स्त्री, आजी, भाई-बहन की सन्तान, नानी । ८—मृत्यु, समथी । ९—धर्म, भावज, बहनोई, नाती, साले, साली । १०—कर्म, स्वामी, पिता, सास, राजा । ११—आय, लड़के की बहु, दामाद । १२—व्यय, काका, मामी, फूफी ।

इन लग्नकुण्डली पर में उसके सम्पूर्ण सम्बन्धियों का इस प्रकार विचार हो सकता है कि जिसका विचार करना है उस भाव को लग्न मान कर उसी में तन, धन, सहज आदि भाव क्रमानुसार गिन कर उसी से उसके सम्बन्ध का सम्पूर्ण फल निकाला जा सकता है ।



जैसे स्त्री के सम्बन्ध में विचार करना है तो स्त्रीभाव (सप्तम भाव) को लग्न मान कर उससे तन-धन सहज आदि भाव गिन कर विचारना पड़ेगा । जैसे सप्तम को लग्न माना तो उसमें स्त्री के शरीर आदि का विचार होगा, उससे दूसरा घर (अष्टम भाव) से स्त्री का धन, तीसरे घर (नवम भाव) से, उसके भाई-बहन, चतुर्थ घर (दशम भाव) में, उसका सुख, माता आदि का विचार होगा । इसी प्रकार सप्तम को लग्न मान कर उसमें पूरे १२ भाव का विचार कर, स्त्री के सम्बन्ध का फल विचार हो सकता है ।

अब साले साली का विचार करना है तो स्त्री भाव सप्तम को लग्न मान कर उसके भाई-बहन जानने को सप्तम में तीसरा गिनने पर नवम भाव आया । इससे स्त्री के

भाई-वहिन (साले-साली) का फल जान सकते हैं । इसी प्रकार सास (स्त्री की मा) का विचारना है तो चौथा घर माता का होने से, सप्तम से चौथा गिना तो दशम भाव आया, यह स्त्री की मा (सास) का घर हुआ । उससे सप्तम घर सास के पति अर्थात् ससुर का होता है तो दशम से चौथा घर, चौथा भाव यह ससुर का घर हुआ ।

पुत्र-पुत्री का घर पाचवा है । उससे सातवा स्त्री का और पति का घर होता है तो पंचम भाव स सातवा, एकादश भाव, पुत्र की स्त्री (बहू) या लड़की का पति (दमाद) का हुआ । बहू की मां (समधिन) जानने को एकादश भाव से चौथा घर (धन भाव) बहू की मा (समधिन) का घर हुआ । उससे सातवा (अष्टम भाव) उसके पति अर्थात् समधी का घर हुआ ।

तीसरा भाव भाई वहिन का है, उससे सातवा नवम भाव हुआ । यह भाई की स्त्री या वहिन का पति (वहनोई) का घर हुआ । भाई वहिन की सतान जानना है तो पचम भाव सतान का होने से तीसरे से पाचवा घर गिना तो सप्तम भाव आया । यह भाई वहिन की सतान (भतीजे-भतीजी) का घर हुआ ।

पिता के भाई वहिन के बारे में जानने को पिता के दशम घर से सहज तीसरा गिना तो व्यय भाव आया । यह काका या फुआ का घर हुआ । इससे सप्तम में छठे भाव है, वह काकी या फूफा का घर हुआ । पिता की मा (आजी) का स्थान जानने को पिता के दशम स्थान से, चौथा स्थान लग्न हुआ, यह आजी का घर हुआ । इससे सप्तम घर सप्तम स्थान हुआ, इससे आज्ञा का विचार होगा ।

माता के स्थान चतुर्थ से चौथा घर सप्तम स्थान हुआ । यह माता की मा अर्थात् नानी का घर हुआ, इससे सप्तम घर लग्न है, यह नाना का घर हुआ ।

इसी प्रकार एक ही कुडली पर से सम्पूर्ण सम्बन्धियों के फल का विचार हो सकता है ।

अध्याय ३४

धूप घड़ी

जहाँ घड़ी नहीं है या घड़ी बिगड़ जाने के कारण समय नहीं मालूम हो सकता, वहाँ धूप घड़ी अवश्य बना लेना चाहिये । धूप घड़ी का समय सच्चा स्थानिक समय Local Time है । धूप रहते रहते दिन भर का समय ठीक ठीक जाना जा सकता है । यह ज्योतिषियों के बड़े काम की चीज है, क्योंकि धूप घड़ी के समय के अनुसार जो लग्न निकाली जायगी वह शुद्ध लग्न निकलेगी । इस कारण धूप घड़ी का बनाना जानना चाहिये । इसके बनाने की युक्ति नीचे दी है । एक सीधा बास

लो उसे सीधा करके (जहा समभूमि और खुला हुआ स्थान हो) गाड़ दो । कई दिन तक लगातार इसकी छाया ८ बजे दिन को देखो तो प्रतीत होगा कि इसकी छाया सदा एक ही स्थान पर नहीं रहती और थोड़ी बहुत उसकी दिशा में अंतर पड़ जाता है । यदि उत्तर ध्रुव पर सीधा वास गाड़ा जावे तो उसकी छाया सदा एक ही नमय में एक ही स्थान पर रहेगी । कारण यह है कि उत्तरी ध्रुव पर जो वास गाड़ा गया वह पृथिवी की अक्षरेखा के समानान्तर होता है और घरातल जिस पर छाया पड़ती है वह अक्षरेखा से समकोण होता है । यदि किसी दूसरे स्थान पर इस प्रकार वास गाड़ा जावे तो वह अक्षरेखा के समानान्तर नहीं होता । वह घरातल जिस पर वान की छाया पड़ती है वास से समकोण बनाती है, इस कारण सीधे गाड़ा हुआ वास की छाया एक ही समय पर एक ही स्थान पर नहीं पड़ती ।

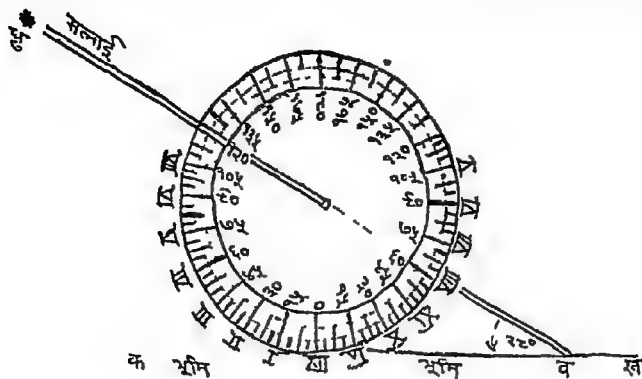
यदि वास समकोण पर न गड़ा कर भूमि में ध्रुव की सीध में गड़ाया जाय तो छाया में परिवर्तन नहीं होगा । ध्रुव का कोण जिसकी सीध में वाम गाड़ा गया है उस स्थान का अक्षांश सूचक है अर्थात् उस स्थान के अक्षांश के कोण के अनुसार यह उस वास का झुकाव ध्रुव की ओर हो तो वह वास ध्रुव की सीध में हो जायगा और वास पान जहाँ वास की छाया पड़ती है । समय सूचक चिह्न बना देने से धूप घड़ी का काम देगा । इसी निम्नता पर धूप घड़ी बनी है ।

धूप घड़ी बनाने के लिये गोल पुट्टे का तुकड़ा लो उसमें समान २४ भाग बना कर घटे का निशान लगा दो जिससे २४ निशान २४ घटा के बन जायेंगे । फिर एक सलाई उन पुट्टे के ठोक बीचो बीच इस प्रकार छेद कर लगा दो कि वह पुट्टे के समकोण में रहे । फिर उस सलाई को एक नोक ध्रुव की ओर करके उसे जमीन में इस प्रकार गाड़ दो या जमा दो कि मलाई भूमि में उस स्थान के अक्षांश के बराबर कोण बनावे । उस सलाई की छाया समय सूचक अंको पर पड़ने से वहाँ का ठीक समय ज्ञात होगा । जैसे चित्रसंख्या ८३ में बताया है, समय सूचक अंको पर सलाई की जहा छाया पड़ेगी उसी के अनुसार स्थानिक समय होगा ।

चित्रसंख्या ८३ देखो यहाँ गोल पुट्टे में बाहर की ओर समय सूचक घटो के चिह्न बने हैं । आगे आवश्यक न होने में और भी घटों के अंक नहीं लिखे गये हैं । मध्याह्न के १२ बजे का चिह्न सबसे नीचे रहता है । यह धूपघड़ी २८° के अक्षांश के स्थान पर समय बतायगी ।

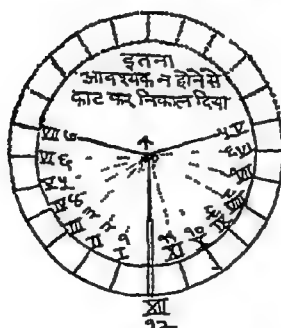
भीतर की ओर १५°-१५° अंश के अंतर पर अंश के चिह्न लगाकर अंश लिखे हैं । एक घटे के भीतर १५-१५ मिनट के ४ कोठे बने हैं । यहा स्थानाभाव के कारण और विभाग नहीं किये गये । इन प्रत्येक कोठो के ३-३ और विभाग करने से प्रत्येक विभाग ५-५ मिनट का बन जायगा ।

अब धूपघड़ी को कही स्थापित करने के लिये स्थाई बनाना है तो इस प्रकार बनायेंगे—



चित्रसख्या ८३ धूपघड़ी बनाना

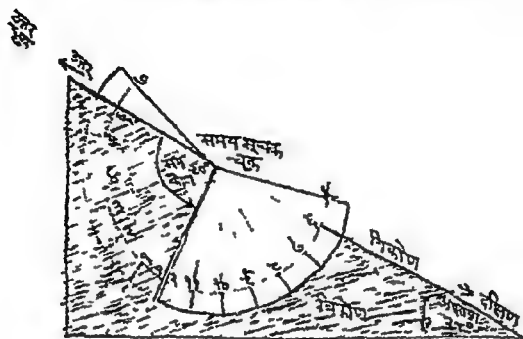
एक त्रिकोण इस प्रकार बनाओ जिसका एक कोण अपने स्थान के अक्षांश के बराबर हो और उसे किसी सम चतुर्भुज पर इस प्रकार पक्की तौर पर जमा दो कि उस त्रिकोण का ऊपरी किनारा ध्रुव की सीध में रहे। फिर इस गोल समय सूचक चक्र को (जो किसी धातु के पत्र पर बनाया गया हो,) नीचे की ओर जहाँ १२ वजे का चिह्न है इस प्रकार समकोण बनाते हुए केन्द्र बिन्दु तक काटो, जिससे वह पहिले वताये हुए त्रिकोण में फसाया जा सके। फिर उसे उस त्रिकोण में इस प्रकार फसा दो कि त्रिकोण पर वह समकोण बनावे। अब इस त्रिकोण की ऊपरी छाया गोल चक्र पर पड़ेगी, वह समय सूचक होगी। इस गोल चक्र का ऊपरी अनावश्यक भाग काट कर फेंक दो। वडे से बड़ा जितने घटे का दिनमान उस स्थान पर होता है उतने ही घटों के चिह्न की आवश्यकता



चित्रसख्या ८४ धूपघड़ी बनाने का चक्र बनाना

पड़ेगी। शेष भाग अनावश्यक होंगे, इस कारण अनावश्यक भाग को निकाल देना चाहिये, जैसा चित्रसख्या ८४ में बताया है।

यहाँ २८° के अक्षांश पर धूपघड़ी बनी है, इस कारण १४ घंटे के चिह्न यहाँ रहने दिया है। पहिले बता चुके हैं कि $२४^{\circ}-१२'$ से $३०^{\circ}-४८'$ अक्षांश तक १४ घंटे का परम दिन होता है। इस कारण केवल १४ घंटे के चिह्न यहाँ बनाये हैं। इस प्रकार के कटे हुए चक्र को त्रिकोण समकोण बनाते हुए जमाया है जैसा चित्रसंख्या ८५ में बनाया है।



चित्रसंख्या ८५ चक्र को त्रिकोण में फसाना

चक्र में जो १२ वजे के स्थान में केन्द्र तक फसाने के लिये पहिले काट लिया गया था, उसी कटे हुए स्थान को त्रिकोण में फसा कर जमाना चाहिये जिससे त्रिकोण के दोनों ओर उस चक्र का भाग निकला रहे। इसी चक्र में जिस स्थान पर त्रिकोण को छाया पड़ेगी, वहाँ बनाये हुए चिह्न के अनुसार समय घटा मिनट में जाना जा सकेगा।

चक्र को त्रिकोण में फसाने के लिये यदि आधा त्रिकोण का भाग और आधा चक्र का भाग काट कर फसाया जाय तो अच्छा जम जाता है और इसे त्रिकोण में जमाते समय इस बात का ध्यान रहे कि त्रिकोण और चक्र के बीच दोनों ओर समकोण रहे।

फिर इस त्रिकोण को किसी लकड़ी के छोटे पट्टिया पर जमा दो। वस यही धूप घड़ी बन गई। समय देखने के लिये इसे सर्वत्र इस प्रकार रखना चाहिये कि त्रिकोण का ऊपरी किनारा और नोक ध्रुव की सीध में रहे।

अध्याय ३५

१ विना पंचाङ्ग के तिथिज्ञान

यदि पंचाङ्ग पास न हो तो स्थूल रूप से तिथि वार नक्षत्र आदि का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है यह नवीन विद्यार्थी को जानना आवश्यक है। इस कारण इन सबके जानने की रीति यहाँ बतलाते हैं।

इन विधियों से स्थूल ज्ञान ही होता है। सूक्ष्म ज्ञान तो गणित द्वारा ही होता है, इसका सूक्ष्म ज्ञान गणित-खण्ड में मिलेगा। यहाँ तो प्रारम्भिक ज्ञान के बातें बताई जायगी।

पहिले बता चुके हैं कि किस-किस मास की पूर्णिमासी को कौन-कौन नक्षत्र पड़ते हैं, उनको स्मरण रखना चाहिये।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भा. प	आश्विन	कार्तिक	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन
नक्षत्र	चित्रा	विशाखा	ज्येष्ठा	पू. षा	श्रवण	पू. भा.	अश्वि०	कृत्ति०	मृग०	पुष्य	मघा	उ. फा.

जिस दिन की तिथि जानना है उस दिन का नक्षत्र मालूम करो। फिर पूर्णमासी के आगे जो नक्षत्र हो उससे इष्ट दिन के नक्षत्र तक गिनो। जो सख्या हो, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से उतना गिन कर तिथि कह दो। कभी-कभी तिथि में क्षय वृद्धि होने से एक तिथि का अन्तर पड़ जाता है। १५ दिन से अधिक हो तो अमावस्या की १५ तिथि घटा कर शेष तिथि शुक्ल पक्ष की जानना।

पूर्णमासी को जो नक्षत्र बताये हैं उनमें भी कभी-कभी एक नक्षत्र का अन्तर पड़ जाता है, क्योंकि कोई नक्षत्र दिन के पहिले भाग में ही अन्त हो जाता है, कोई पूरे दिन भर रहता है, इस कारण तिथि में भी कभी-कभी अन्तर पड़ जाता है और कभी-कभी तिथि ठीक निकलती है।

(१) जैसे सम्वत् २००० में धनिष्ठा नक्षत्र को कौन तिथि वैशाख में होगी जानना है। चैत्र पूर्णिमा को नक्षत्र चित्रा था, उसके आगे का नक्षत्र स्वाती से धनिष्ठा तक गिना तो ९ हुए। कृष्ण प्रतिपदा से गिना तो ९ तिथि हुई। पचाङ्ग देखो तो उस दिन दशमी तिथि है। सप्तमी की हानि होने से तिथि का अन्तर पड़ गया।

(२) श्रावण में मूल नक्षत्र को कौन तिथि पड़ेगी यह जानना है। आषाढ की पूर्णिमा को पू. षा नक्षत्र के आगे का नक्षत्र उ. षा. से मूल तक गिना तो-२५ आये, ये १५ से अधिक होने से, १५ तिथि अमावस्या तक के घटाये तो, शेष १० रहे। ये शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि हुई। पचाङ्ग में उस दिन ग्यारस थी। इस उदाहरण में श्रावण की पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होता है, अपना मूल नक्षत्र उसके पहिले आता है, इससे इसके पहिले का मास आषाढ की पूर्णिमासी ली गई है।

सूर्य और चन्द्र से तिथि जानना और तारीख से तिथि जानना आगे बताया गया है।

२—विना पंचाङ्ग के वार (दिन) जानना

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो दिन हो वह उस वर्ष का राजा कहलाता है। चैत्र शुक्ल परिवा से गत मास की अमावस्या तक गिनो, जो सख्या हो उसे १३ से गुणा

करी और उसमें वर्तमान महीना के पक्ष के वीते हुए दिन जोड़ दो और योग में ७ का भाग दो, शेष ब्रूजे उसे वार के राजा से उस सख्या तक गिनी तो वार ज्ञात होगा ।

(१) जैसे सम्वत् २००० में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सोमवार था । यही सोमवार वर्ष का राजा कहलाया ।

सम्वत् २०० में आपाट शुक्ल ११ का वार जानना है ।

चैत्र शुक्ल १ से आपाट की अमावस्या तक गत मास = ३ हुआ $\times १\frac{१}{२} = ४\frac{१}{२}$ आपाट की अमावस्या से आपाट शुक्ल ११ तक गत दिन = १० पहिले के $४\frac{१}{२} + १० = १४\frac{१}{२} \div ७ =$ शेष $\frac{१}{२}$ । वर्ष का राजा सोमवार से $\frac{१}{२}$ गिना, तो सोमवार गत हुआ, वर्तमान मंगल वार आया । पहिले ग १ दिन लिया था, इस कारण सोमवार गत दिन आया । यदि वर्तमान दिन लिया होता तो उत्तर में वर्तमान दिन आता । पचाङ्ग में आपाट शुक्ल ११ को मंगलवार है ।

(२) सम्वत् २००० कुआँर वदो १४ को कौन वार था ?

चैत्र से भादो की अमावस तक = ५ मास $\times १\frac{१}{२} = ७\frac{१}{२}$ भादो की अमावस से भादो की पूर्णिमा तक १५ दिन, आगे कार्तिक वदो १४ तक = १४ दिन । $७\frac{१}{२} + १५ + १४$ दिन = $३६\frac{१}{२}$ दिन $\div ७ =$ शेष $१\frac{१}{२}$ दिन । वर्ष के राजा सोमवार से $१\frac{१}{२}$ गिना तो दूसरा मंगल वार आ । इस कारण उस दिन मंगलवार था ।

(३) सम्वत् २००० राजा शनि । माघ कृष्ण १० का दिन जानना है ।

चैत्र शुक्ल १ से पूस की अमावस तक = ९ मास $\times १\frac{१}{२} = १२\frac{१}{२}$ पूस की अमावस से पूष की पूनो तक = १५ दिन । पूष की पूर्णिमा में माघ कृष्ण १० तक = १० दिन । $१२\frac{१}{२} + १५ + १० = ३७\frac{१}{२} \div ७ =$ शेष $३\frac{१}{२}$ दिन । वर्ष का राजा शनि से गिना चौथा दिन मंगल वार का दोपहर आया । आधा दिन बचा था इससे प्रगट हुआ उस दिन दशमी आधे दिन तक थी ।

(४) सम्वत् २००१ राजा शनि । आपाट शुक्ल १३ का दिन जानना है ।

चैत्र शुक्ल १ में आपाट कृष्ण ३० तक = ३ मास $\times १\frac{१}{२} = ४\frac{१}{२}$ आपाट ३० से आपाट शुक्ल १३ तक = १३ दिन । $४\frac{१}{२} + १३ = १७\frac{१}{२} \div ७$ शेष ३॥ दिन । राजा शनि से चौथा वार मंगलवार हुआ । आधा दिन आया है अर्थात् १३ तिथि उस दिन आधे दिन तक ही थी ।

बहुधा दिन के किसी भी समय पर तिथि का अन्त हो जाता है । तिथि की हानि या वृद्धि भी हो जाती है, जिसके कारण वार में भी कभी-कभी एक दिन का अन्तर पड़ जाता है ।

आगे वर्ष के राजा का चक्र कई वर्षों का दिया है जिससे कही खोजना न पड़े ।

कई वर्षों के वर्ष के राजा का चक्र

सम्बत	राजा	वार	सम्बत	राजा	सम्बत	राजा	सम्बत	राजा
१८४८	सोम.	१८६१	गुरु.	१९२४	शुक्र.	१९५७	शनि.	१९९० सोम.
१८४९	शुक्र.	१८९२	सोम.	१९२५	बुध	१९५८	गुरु.	१९९१ शुक्र.
१८५०	शुक्र.	१८६३	शुक्र.	१९२६	रवि.	१९५९	बुध.	१९९२ गुरु.
१८५१	मंगल	१८९४	गुरु	१९२७	शनि.	१९६०	रवि.	१९९३ मङ्गल.
१८५३	शुक्र	१८९५	सोम	१९२८	बुध	१९६१	शुक्र.	१९९४ सोम
१८५४	बुध.	१८६६	शनि.	१९२९	सोम.	१९६२	बुध	१९९५ शुक्र
१८५७	बुध.	१८६७	शुक्र.	१९३०	शनि.	१९६३	रवि.	१९९६ बुध.
१८५८	रवि.	१८६८	बुध	१९३१	गुरु.	१९६४	शुक्र.	१९९७ सोम.
१८५९	शनि.	१८६९	सोम.	१९३२	बुध.	१९६५	गुरु	१९९८ शुक्र.
१८६०	गुरु.	१९००	शुक्र.	१९३३	रवि.	१९६६	सोम.	१९९९ मंगल.
१८६१	बुध.	१९०१	मंगल	१९३४	शुक्र.	१९६७	रवि.	२००० सोम.
१८६५	सोम.	१९०२	शनि	१९३५	बुध.	१९६८	शुक्र.	२००१ शनि.
१८६७	गुरु	१९०३	शनि.	१९३६	रवि.	१९६९	मंगल.	२००२ गुरु.
१८६९	शनि.	१९०४	बुध	१९३७	शनि.	१९७०	सोम.	२००३ बुध.
१८७०	शुक्र.	१९०५	मंगल.	१९३८	बुध.	१९७१	शुक्र.	२००४ रवि.
१८७१	मंगल.	१९०६	रवि.	१९३९	सोम.	१९७२	मंगल.	२००५ शनि.
१८७२	सोम.	१९०७	गुरु.	१९४०	रवि.	१९७३	सोम.	२००६ बुध.
१८७३	शुक्र.	१९०८	बुध	१९४१	शुक्र	१९७४	शुक्र	२००७ रवि
१८७४	मंगल	१९०९	रवि	१९४२	मंगल.	१९७५	शुक्र	२००८ शनि.
१८७६	शुक्र.	१९१०	शनि	१९४३	सोम.	१९७६	मंगल.	२००९ बुध.
१८७७	बुध.	१९११	बुध	१९४४	शुक्र.	१९७७	रवि.	२०१० सोम.
१८७८	मंगल.	१९१२	सोम	१९४५	गुरु.	१९७८	शनि	२०११ रवि.
१८८०	शनि.	१९१३	रवि	१९४६	सोम.	१९७९	बुध.	
१८८१	बुध.	१९१४	गुरु.	१९४७	शुक्र.	१९८०	रवि.	
१८८२	रवि	१९१५	मंगल.	१९४८	गुरु.	१९८१	शनि.	

संवत्	राजा	संवत्	राजा	संवत्	राजा	संवत्	राजा
१८८३	शनि.	१९१६	सोम	१९४९	मंगल	१९८२	बुध
१८८४	बुध	१९१७	शुक्र	१९५०	रवि	१९८३	रवि
१८८५	रवि	१९१८	गुरु	१९५१	शनि	१९८४	रवि
१८८६	शनि	१९१९	सोम	१९५२	बुध	१९८५	गुरु
१८८७	गुरु	१९२०	शुक्र	१९५३	रवि	१९८६	बुध.
१८८८	मंगल	१९२१	गुरु	१९५४	शनि	१९८७	सोम
१८८९	सोम	१९२२	मंगल	१९५५	बुध	१९८८	शुक्र
१८९०	शुक्र	१९२३	शनि	१९५६	मंगल	१९८९	बुध

३—विना पंचांग के नक्षत्र जानना

किसी चाद्र मास की पूर्णिमा को जो नक्षत्र होता है पहिले बता चुके हैं। पूर्णिमा से आगे की तिथि तक गिनो, उस सख्या को गत पूर्णिमा के नक्षत्र सख्या में जोड़ दो अर्थात् पूर्णिमा को जो नक्षत्र हो उसके आगे इष्ट तिथि की संख्या तक गिनो तो इष्ट नक्षत्र निकल आयागा।

(१)-जैसे सम्वत २००० में कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को नक्षत्र जानना है। इसके पहिले कुआँर पूर्णिमा को अश्विनी नक्षत्र होता है। कुआँर पूर्णिमा से कार्तिक अमावस्या तक १५ दिन और कार्तिक शुक्ल चौथ तक गत दिन $१५+३=१८$ दिन हुए। अब पूर्णिमा का नक्षत्र अश्विनी से गिना तो १८ वा नक्षत्र ज्येष्ठा आया। पचाग में भी उस दिन ज्येष्ठा दिया है।

(२) दूसरी रीति=कार्तिक कृष्ण १ से इष्ट मास तक गिन कर घूना करो और बीते पक्ष के दिन जोड़ कर १ और मिला दो ओर २७ का भाग दो। शेष जो बचे उसे अश्विनी से गिन कर इष्ट नक्षत्र कहना। पक्ष के दिन जोड़ने के लिए कृष्ण पक्ष की प्रि पदा को गिनो और और आगे गिनना आरभ कर इष्ट तिथि तक गिनना चाहिए।

जैसे ऊपर के उदाहरण में गत मास कुआँर है। इसे कार्तिक से गिना तो यह कुआँर १० वा महोना हुआ। $१२ \times २ = २४ +$ गत तिथि (कुआँर पूर्णिमा से कार्तिक अमावस्या तक $१५ +$ चौथके ४ दिन) $+ १ = २४ + १५ + ४ + १ = ४४ - २७$ शेष $१७ = १७$ वा नक्षत्र अनुराधा होता है। इस कारण इष्ट तिथि को अनुराधा नक्षत्र आया। पचाग में उस दिन ज्येष्ठा नक्षत्र है। इसमें भी कभी २ एक नक्षत्र का अन्तर पड़ जाता है।

दूसरा उदाहरण—माघकृष्ण १० को सम्वत २००० में नक्षत्र जानना है। गत मास पूस हुआ। कार्तिक से पूस तक $= ३$ मास $\times २ = ६ +$ गत दिन माघ कृष्ण के $१५ \times$ माघ

शुक्ल के १० दिन + १=६+१५ + १०+१=३२ = २७=शेष ५=मृगशिर । पंचांग में कुछ देर उपरान्त रोहिणी था, १ दिन का अंतर पड़ गया । तिथि के घट बढ़ जाने से प्रायः १ दिन का कमी २ अंतर पड़ जाता है ।

(३) तीसरी रीति अमावस्या को सूर्य और चन्द्र एक साथ रहते हैं । यदि सूर्य नक्षत्र ज्ञात हो तो अमावस्या से आगे जितने दिन (इष्ट दिन तक) हो गिनो, उतने दिन सूर्य नक्षत्र में गिनने पर अपना दिन नक्षत्र (चंद्र नक्षत्र) आयगा ।

आकाश में भा यदि चंद्र दिखता है तो चंद्र के समीप जो नक्षत्र होगा आकाश में देखकर बता दो । उस दिन वही नक्षत्र होगा ।

(४) बिना पंचांग के योग जानना

सूर्य का जो नक्षत्र हो मालूम करो । सूर्य नक्षत्र से पुष्य नक्षत्र तक दोनों नक्षत्रों को मिलाते हुए गिनो, फिर जिस दिन का योग जानना है उस दिन के चन्द्र नक्षत्र तक श्रवण से गिनो । दोनों संख्या जोड़ कर २७ का भाग दो, जो शेष वचे वह संख्या योग की होगी ।

जैसे स० २००० में श्रावण शुक्ल १० को जानना है । उस दिन सूर्य आश्लेषा नक्षत्र पर है और इष्ट दिन (दशमी) को ज्येष्ठा नक्षत्र है । अब पुष्य नक्षत्र में सूर्य के आश्लेषा नक्षत्र तक गिना=यह दूसरा नक्षत्र है=२संख्या हुई । फिर श्रवण से इष्ट नक्षत्र ज्येष्ठा तक गिना २३ आये । $= २३ + २ = २५ \div २७ =$ शेष २५ रहे, २५ वा योग ब्रह्म योग आया, पंचांग में २६ वा योग ऐन्द्र है । नक्षत्रों के घट बढ़ जाने से इसमें भी कमी-कमी एक दिन का अंतर पड़ जाता है ।

(५) बिना पंचाङ्ग के करण जानना ।

शुक्ल प्रतिपदा से इष्ट तिथि को गिन कर दूना करो और १ घटा कर ७ का भाग दो तो ये चरकरण निकलेंगे । वह करण तिथि के उत्तरार्द्ध में मिलेगा । पूर्वार्द्ध में उसके पहिले का करण जानना ।

ये ७ चर करण हैं (१) वव (२) वालव, (३) कौलव, (४) तैत्तिल (५) गर, (६) वणिज, (७) विष्टि ।

स्थिर करण ४ हैं — (१) शकुनि, (२) चतुष्पद, (३) नाग, (४) किस्तुघ्न ।

स्थिर करण—शुक्ल परिवा को पूर्वार्द्ध में किस्तुघ्न, उत्तरार्द्ध में वव (चर) अमावस्या, कृष्ण ३० को पूर्वार्द्ध में चतुष्पद उत्तरार्द्ध में नाग, कृष्ण १४ को पूर्वार्द्ध में विष्टि (चर) उत्तरार्द्ध में शकुनि

उदाहरण --संवत् २००० में श्रावण पूर्णिमा को करण जानना है । पूर्णिमा तक

१५ तिथि=१५५२=३०-१=२९-७=शेष १=वव करण उत्तरार्द्ध में, इसके पूर्वार्द्ध में (इसके पहिले का) विष्टि करण होगा । १ तिथि में २ करण होते हैं ।

पहिले करण जानने का चक्र दे चुके हैं उसके द्वारा किसी भी तिथि का करण सरलता से जान सकते हैं ।

(६) विना पंचाङ्ग के चन्द्र जानना

(इष्ट तिथि $\times २$) $\times$ (कृष्ण पक्ष में ३५, शुक्ल पक्ष में ५) $\div ५$ = लब्धि वर्तमान संक्राति जिन राशि की हो उस राशि से लब्धि सख्या तक गिनो तो चन्द्र की राशि निकलेगी । गिनने में १२ से अधिक सख्या हो तो १२ घटा कर शेष अक लेना ।

(१) जैसे नं० २००० वैशाख शुक्ल १२ को चन्द्र जानना है ।

निधि १२५२ = २४ + ५ शुक्ल पक्ष के = २९ - ५ = लब्धि ५ ५) २९ (५ लब्धि दशमी को वृष संक्राति थी । वृष से लेकर लब्धि का अक ५ तक
गिना तो कन्या आई । तो उस दिन कन्या का चन्द्र था ।

(२) कार्तिक अमावस्या को चन्द्र जानना है । तिथि १५ $\times २$ = ३० + ३५ (कृष्ण पक्ष होने हैं) $\div ५$ = १३ लब्धि । लब्धि १३ यह १२ में अधिक है तो १३ - १२ = शेष १ को संक्राति कृष्ण चौथ को थी उसमें १ गिना तो तुला का चन्द्र आया ।

(३) ज्येष्ठ पूर्णिमा सं २००० को चन्द्र जानना है । तिथि १५ $\times २$ = ३० + ५ (शुक्ल के) = ३५ $\div ५$ = लब्धि ७ मियुन । संक्राति १२ तिथि को थी, मियुन से ७ गिना = सातवा वनु आया, इस कारण इष्ट दिन को धनु का चन्द्र हुआ ।

दूसरी रीति—अमावस्या को सूर्य चन्द्र एक राशि पर रहते हैं तो जो सूर्य की राशि हो वहा में सवा दो दिन चन्द्र एक राशि पर रहता है । तिथि में $२\frac{१}{२}$ दिन = $\frac{५}{२}$ का भाग दो । अर्थात् तिथि $\times ४ \div ९$ = जो लब्धि होगी, सूर्य की राशि से उतना गिनो तो चन्द्र की राशि ज्ञात होगी । जैसे वैशाख शुक्ल १२ = १२ $\times ४ \div ९$ = १८ $\div ९$ = २ लब्धि । सूर्य वृष का है तो वृष से लब्धि २ तक गिना तो कन्या राशि आई । इस कारण चन्द्र की राशि कन्या हुई ।

सूर्य की संक्राति जानना आगे बताया है ।



अध्याय ३६

सायन सूर्य जानने की स्थूल रीति

मास	तारीख	अंग्रेजी महीना	सूर्य की सक्राति	अंश	गति कला
१ माघ	२०	जनवरी	कुम्भ	१°	६१'
२ फाल्गुन	१९	फरवरी	मीन	१	६०
३ चैत्र	२१	मार्च	मेघ	१	५६
४ वैशाख	२०	अप्रैल	वृष	१	५९
५ ज्येष्ठ	२१	मई	मिथुन	१	५८
६ आषाढ	२१	जून	कर्क	१	५७
७ सावन	२३	जुलाई	सिंह	१	५७
८ भादो	२२	अगस्त	कन्या	१	५८
९ कुआँर	२३	सितम्बर	तुला	१	५८
१० कार्तिक	२३	अक्टूबर	वृश्चिक	१	६०
११ अगहन	२३	नवम्बर	धनु	१	५९
१२ पूस	२२	दिसम्बर	मकर	१	५९

यहाँ अंग्रेजी तारीख के अनुसार सायन सूर्य दिया है। इष्ट दिन का सायन सूर्य जानने की रीति—

चक्र में सायन सूर्य की सक्रान्ति और उसकी तारीख इष्ट दिन के समीप की खोजों और उससे इष्ट दिन का अन्तर निकालो। उसी के आगे सूर्य की गति दी है। अन्तर समय की गति स्थूल रूप से निकाल कर उसे चक्र में दिये हुए सायन सूर्य में जोड़ या घटा कर इष्ट दिन का सायन सूर्य जान सकते हो। चक्र में दिये हुए तारीख के पहले का समय हो तो घटाना पड़ेगा, आगे का हो तो जोड़ना पड़ेगा, तब इष्ट दिन का सायन सूर्य निकलेगा।

जैसे १८ मार्च का सायन सूर्य निकालना है। चक्र में देखा अपने इष्ट समय के समीप २१ मार्च दिया है। अब इष्ट दिन और चक्र की तारीख का अन्तर निकालना। (चक्र की तारीख २१ मार्च—इष्ट तारीख १८ मार्च) = २१-१८ = ३ दिन का अन्तर आया। २१ मार्च के आगे गति ५६' दी है। १ दिन में सूर्य ५९' चलता है तो ३ दिन के अन्तर में = ५६' × ३ = १७७ कला = २°-५७' गति हुई। यह सूर्य की इष्ट काल तक की गति हुई। अर्थात् २१ मार्च के आगे सूर्य का अन्तर २°-५७' हो गया। इस गति को चालन कहते हैं। अर्थात् सूर्य को इतना चलना पड़ेगा।

चक्र की तारीख से अपना इष्ट समय पहिले का है, इसलिये यह चालन घटाना पड़ेगा। जहाँ घटाना पड़ता है उसे चालन ऋण कहते हैं। जहाँ जोड़ना पड़ता है उसे चालन धन कहते हैं। इष्ट काल २१ मार्च के आगे का होता तो चालन धन होता, परन्तु अपनी तारीख २१ मार्च के पहिले की है। इस कारण यहाँ चालन ऋण हुआ। चक्र में जो दिया है उसे पक्षित्य (जो पंक्ति में है) या चक्रस्थ कहते हैं। अब पक्षित्य २१ मार्च के सायन सूर्य को लिया। वह मेप १° पर है = रा ०-१ अं० इसमें

रा. अ. क.	से चालन २°-५७' (चालन ऋण होने से) घटाया तो शेष रहा
०-१-०	११ रा २८°-३' यह स्पष्ट सायन सूर्य इष्ट काल का हुआ। यहाँ
-०-२-५७	राशि ० है। इसमें से १ राशि नहीं घटती थी तो ऊपर १२ राशि
= ११-२८-३	मान कर घटाया तो ११ रही। इस प्रकार स्पष्ट सायन रवि हुआ।
स्पष्ट सायन सूर्य	

गणित करने से जो इष्ट समय का ग्रह आदि निकलता है उसे स्पष्ट ग्रह आदि कहते हैं।

इष्ट कालीन सायन रवि स्पष्ट ११ रा २८° ३' में यदि २° ५७' जोड़ दिया जाय तो वही ० रा १° सायन रवि २१ मार्च का आ जाता है।

यदि घटा भी दिया है तो उतने घटे की गति निकाल कर उस चालन का भी $\pm$ (धन ऋण जैसी आवश्यकता हो) करो। घटे की गति त्रैराशिक से इस प्रकार निकालें—६० घड़ी (१ दिन रात) में सूर्य की गति उस दिन ५९' (या जो गति हो) थी तो उतने घड़ी में (इष्ट घड़ी में) कितनी होगी ? घटा की घड़ी बना लो।

जैसे ५ घड़ी की गति निकालना है। ६० घड़ी में ५९' तो ५ घड़ी में

$$\frac{५९ \times ५}{६० \times १०} = \frac{५९}{१२} = ५'-५५'' \text{ गति हुई। मान लो } १८ \text{ मार्च को } \frac{१२ \times ५९(४')}{४८}$$

$$\text{सूर्योदय के आगे ५ घड़ी की और गति जानना है तो इष्ट } \frac{११ \times ६०}{१२ \times ६०(५५'')} \\ \text{दिन के बाद की गति होने से जोड़ना पड़ेगा। पहिले का } \\ \text{समय होता तो चालन घटाना पड़ता। १८ मार्च के } \\ \text{सूर्य में ५ घड़ी की गति और जोड़ा तो योग ११ रा २८° } \\ \text{३४' ५५'' हुआ। अर्थात् उस समय मीन के २८° ३४' } \\ \text{५५'' पर सूर्य होगा। सूक्ष्म गणित करने पर १०-१५ } \\ \text{कला का अन्तर आ जाता है।}$$

	रा	०	'	''
१८ मार्च को सूर्य ११	२८	३०	०	
+ ५ घड़ी और	०	०	४	५५
योग=११	२८	३४	५५	
यह इष्ट काल का सायन सूर्य				

सायन सूर्य में से अयनांश घटा देने से निरयन सूर्य होता है। अयनांश निकालना पहिले बता चुके हैं।

सौर मास की संक्रांति की तारीख

सौर मास	संक्रांति (आरंभ)	संक्रांति की तारीख	इसके आगे दिन का हिसाब
१ वैशाख	मेष	१३ अप्रैल	लगाने से सौर मास की तारीख
२ ज्येष्ठ	वृष	१४ जुलाई	(तिथि) जानी जा सकती है।
३ आषाढ	मिथुन	१४ जून	अर्थात् इस प्रकार बताई हुई
४ श्रावण	कर्क	१६ जुलाई	तारीखों के आगे गिनने पर सौर
५ भाद्रपद	सिंह	१६ अगस्त	मास की तिथि किसी भी इष्ट दिन
६ आश्विन	कन्या	१६ सितम्बर	की निकाल सकते हो। इसमें भी
७ कार्तिक	तुला	१७ अक्टूबर	कभी-कभी एक दिन का अन्तर
८ मार्गशीर्ष	वृश्चिक	१६ नवम्बर	पड़ जाता है। यहाँ अंग्रेजी तारीख
९ पौष	धन	१५ दिसम्बर	के हिसाब से कौन संक्रांति उस
१० माघ	मकर	१३ जनवरी	समय होगी यह साधारण प्रकार से
११ फाल्गुन	कुंभ	१२ फरवरी	जानी जा सकती है।
१२ चैत्र	मीन	१५ मार्च	

स्थूल रीति से बिना पञ्चाङ्ग के चन्द्र साधन (चन्द्र स्पष्ट करना)

जन्म समय पर किसी ग्रह की ठीक स्थिति इष्टकाल तक गणित द्वारा निकालने से जो जानी जाती है उसीको ग्रह स्पष्ट करना कहते हैं और उस ग्रह के स्पष्ट करने के गणित को साधन (साधन करने की विधि) कहते हैं।

ऊपर सायन सूर्य का साधन करना (बिना पंचाङ्ग के) बताया है, उसी प्रकार यहाँ चन्द्र का साधन करना भी बताते हैं।

सूर्य और चन्द्र में जब १२° का अन्तर पड़ जाता है तब १ तिथि होती है। इस कारण चन्द्र स्पष्ट करने के लिये उस समय का सूर्य स्पष्ट कर लेना आवश्यक है।

जैसे वैशाख कृष्ण पंचमी ता० २५ अप्रैल सन् १९४३ ई० के ४ बजे संध्या समय चन्द्र स्पष्ट करना है।

पहले इस दिन का सूर्य स्पष्ट करेंगे। वैशाख में २० अप्रैल को वृष के १° पर चक्र में सायन सूर्य दिया है और गति ५६ कला है। $(२५ अप्रैल - २० अप्रैल) = ५ \times ५९'$ गति=चालन घन (इष्टकाल पंक्ति के आगे होने से) + हुआ $५ \times ५९' = २९५' = ४^{\circ} - ४५'$ चालन+इष्ट ४ बजे संध्या का है $= (१२ + ४) = १६$ बजे इष्ट। यह समय सूर्योदय के

बाद का है। मान लो सूर्योदय ६ वजे हुआ। (१६ घंटा-६ वजे सूर्योदय) १० घंटा इष्ट। २४ घंटा में ५६' गति तो १० घंटा में $= \frac{५६ \times १०}{२४} = \frac{२६५}{१२}$ २५ कला के लगभग।

इन सब को जोड़ा तो इष्ट काल में सायन स्पष्ट रवि=रा १-६-२०'-०" हुआ=
(वृष के ६-२०')

$$\begin{array}{r}
 \text{सूर्य (वृष } १^{\circ}) = \text{रा } ० \quad १ \\
 \phantom{\text{सूर्य (वृष } १^{\circ}) = \text{रा }} १ \quad १ \quad ० \\
 \text{५ दिन का चालन } + = ० \quad ४ \quad ५५ \\
 \hline
 \text{योग} = १ \quad ५ \quad ५५ \\
 \text{१० घंटे का } + = ० \quad ० \quad २५ \\
 \hline
 = १ \quad ६ \quad २० \\
 \text{इष्ट कालीन सायन रवि}
 \end{array}$$

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से गिनी जाती है। पूर्णिमा को '१५ और अमावस्या को ६० तिथि होती है। अपनी इष्ट तिथि = वैशाख कृष्ण ५ है=१५ शुक्ल पक्ष के + ५ गत तिथि कृष्ण पक्ष के =(१५+५)=२०+१=२१ गत तिथि।

$$१ \text{ तिथि}=१२^{\circ} \text{ तो } २१ \text{ तिथि}=२१ \times १२^{\circ}=२५२^{\circ}=८ \text{ रा. } १२^{\circ}$$

$$\begin{array}{r}
 \text{सूर्य स्पष्ट } \text{रा } ० \quad ' \\
 \phantom{\text{सूर्य स्पष्ट }} १ \quad ६ \quad २० \\
 \text{गत तिथि} = \underline{८ \quad १२ \quad ०} \\
 \text{प्रातः चंद्र स्पष्ट} = ६ \quad १८ \quad २० \\
 = \text{मकर का } १८^{\circ}-२०'
 \end{array}$$

यह पंचमी को सूर्योदय पर चंद्र की स्थिति हुई और प्रातः काल का सायन चंद्र हुआ।

चंद्र की दैनिक गति १२° से १५३° तक है अर्थात् साधारण प्रकार से मध्यम गति १४° है। २४ घंटा में १४° गति है तो आधे दिन की सव्या तक ७° हुई है। १ घंटा में लगभग ३५' गति हुई। यहाँ ४ वजे सव्या की गति निकालना है। मान लो सूर्योदय ६ वजे हुआ तो सूर्योदय से इष्ट काल तक १० घंटा हुआ। १ घंटा में ३५' तो १० घंटा में =३५' × १०=३५०'=५°—५०' गति हुई। यहाँ चालन+ है।

$$\begin{aligned} \text{प्रातः चंद्र स्पष्ट } & ६-१८-२० \\ १० \text{ घंटे का चालन } & + ०-५-५० \\ \text{इष्ट कालीन } & \left. \begin{aligned} & = ६-२४-१० \\ \text{सायनचंद्र स्पष्ट } & = \text{मकर का } २४^{\circ}-१०' \end{aligned} \right\} \end{aligned}$$

इस प्रकार ४ वजे तक चंद्र मकर के $२४^{\circ}-१०'$ पर हुआ । यह स्थूल मान से चंद्र स्पष्ट हुआ । सूक्ष्म रीति से गणित करने में लगभग ११ कला का अंतर पड़ जाता है ।
(सायन चंद्र—अयनाश) = निरयन चंद्र ।

चंद्र साधन करने का दूसरा उदाहरण

तारीख २५ मई के ६ वजे संध्या का चंद्र स्पष्ट करना है, ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी का ।

२१ मई को सूर्य = मिथुन १° गति $५८'$ = इष्ट २५ मई को ६ वजे संध्या = चालन + (२५ मई - २१ मई) = $४ \times ५८'$ गति = $२३२' = ३^{\circ}-५२'$ चालन + । ६ वजे संध्या इष्ट है । मान लो सूर्योदय ६ वजे है, ६ वजे से १२ घंटा हुआ । २४ घंटा में $५८'$ तो १२ घंटा में $२९'$ गति हुई । इन सबको जोड़ा तो इष्ट कालीन सायन सूर्य स्पष्ट = २ रा- $५^{\circ}-२१'$ हुआ ।

$$\begin{aligned} \text{सूर्य मिथुन } & १^{\circ} = २२ रा-१^{\circ}-०' \\ \text{चार दिन का चालन } & + ०-३-५२ \\ १२ घंटे का ,, & + ०-०-२६ \\ \text{इष्टकालीन } & \left. \begin{aligned} & = २-५-२१ \\ \text{सूर्य स्पष्ट } & \end{aligned} \right\} \end{aligned}$$

तिथि ज्येष्ठ कृष्ण ५ है = शुक्ल पूर्णिमा = १५ + कृष्ण पंचमी तक गत तिथि ४ = $१५+४=१९$ दिन ।

१ तिथि में $१२'$ तो १९ तिथि में = $१९ \times १२' = २२८' = ७ रा-१८^{\circ}$

रा ० ,,

सायन सूर्य-२-५-२१ १ दिन की चंद्र की मध्यम गति (औसत गति) १४°
तिथि के अंश + ७-१८-० है तो १२ घंटा ($\frac{१}{३}$ दिन, की=७°

= चंद्र स्पष्ट = ६-२३-२१ = चतुर्थी के अन्त तक का ।

आधे दिन का + = ०-७-०

इष्ट कालीन } = १०-०-२१ = कुम्भ के $०^{\circ}-२१'$ पर चन्द्र है ।
सायन चंद्र स्पष्ट } = इष्ट कालीन सायन चंद्र कुम्भ के $०^{\circ}-२१'$ पर है ।

(२) चन्द्र साधन करने की दूसरी रीति—

चंद्र की मध्यम गति १२° है कोई १४° लेते हैं। रवि और चंद्र में १२° का अंतर पढ़ने पर १ तिथि होती है, शेष २° मध्यम गति के हैं। उस के मिला देने से चंद्र के अंश ज्ञात हो जाते हैं।

अधिक मध्यम गति का अंतर इस प्रकार से होता है।

तिथिप्रतिपदा द्वितीया तृतीया चतुर्थी पंचमी पंचमी से द्वादशी शेष तिथि में

अंतर २°	४	६	५	३	३	२ अंश
तिथि पूर्णिमा से		एकादशी से		चंद्र स्पष्ट करने के	लिये सूर्य स्पष्ट में	
कृष्णपंचमी तक		अमावस्या तक		तिथि के अनुसार ये अंश मिला देना		

अंतर ३ अंश ३ अंश के $१५\frac{३}{४}^{\circ}$ तक बढ़ जाती है। इसी के कारण साधारण रीति से अधिक बढ़े हुए अंश ऊपर जोड़ना बताया है। इस रीति से चंद्र स्पष्ट करने में १° के लगभग अंतर पड़ जाता है, परन्तु ३° से अधिक अन्तर नहीं आता। तिथियाँ १ मास में पूरी ३० नहीं होती। इस से ये अंश बढ़ जाते हैं।

जैसे सन १९४३ मे २५ मई को तदनुसार ज्येष्ठ वदी ६ को १२ वजे दिन का चंद्र साधन करना है। १२ वजे दिन अर्थात् सूर्योदय से लगभग ६ घंटा हुआ।

२१ मई को साधन रवि=मिथुन १° गति $५८'$ इष्ट २५ मई का है। आगे का होने से चालन घन हुआ।

$$(२५ मई-२१ मई) = ४ \text{ दिन} \times ५८' \text{ गति} = २३२' = ३^{\circ}-५२' = ३^{\circ}-५२'-०^{\circ}$$

$$२४ घंटा में $५८'$ गति तो ६ घंटा में = $५८' \times ६ = ३४८'$ $+ ०-१४-३०$$$

$$२१ मई को सूर्य $२-१^{\circ}-०$ $४-६॥$ चालन+$$

$$+ \text{चालन } ०-४-६\frac{३}{४}$$

$$= \text{साधन सूर्य} = २-५-६\frac{३}{४}$$

रा ०

$$६ तिथि है=गति तिथि $५=५ \times १२^{\circ}=६०^{\circ}=२-०^{\circ}$$$

$$+ \text{पंचमी के अन्त } = २-०-०$$

$$\text{तक चंद्र योग } ४-५-६\frac{३}{४}$$

$$+ ०-३-० \text{ पंचमी की बढ़ती के अंश}$$

$$+ ०-३-० \text{ छठ " " "}$$

$$\text{योग} = ४-११-६\frac{३}{४} \text{ (क्यों कि छठ उदय है)}$$

६ घंटा का + = ३-३० २४ घंटा में चंद्र १४° चला तो ६ घंटा में

$$\text{चन्द्र स्पष्ट} = ४-१५-३६\frac{३}{४} \quad \frac{७ \ १४ \times ६}{२४} = \frac{७^{\circ}}{२} = ३^{\circ}-३०'$$

४ २

∴ इष्ट कालीन सायन चंद्र स्पष्ट ४-रा १४°-३६ $\frac{३}{४}$ '

यह कुछ मोटा हिसाब है। गणित से १-२ अंश का अन्तर पड़ जाता है। सायन चंद्र से अयनाश घटा दो तो निरयन चंद्र होगा।

चंद्र से नक्षत्र और उसका चरण साधन करना

चंद्र स्पष्ट की राशि आदि की कला बना कर १३°-२०' = ८००' का भाग दो तो लब्धिगत नक्षत्र होगा। शेष में ४ गुणाकर ८००' का भाग दो तो वर्तमान नक्षत्र का चरण निकालेगा। १ नक्षत्र में ४ चरण होते हैं। सायन नक्षत्र १३°-२०' का होता है और अश्विनी से आरम्भ होता है। जैसे चंद्र मकर का २९°-५२' है। = ६२-२६°-५२' = १७६६२" ÷ ८००' = २२ गत नक्षत्र (श्रवण) वर्तमान २३ वा नक्षत्र घनिष्ठा का २ चरण।

रा. अं. क.	८००') १७९६२" (२२ गत नक्षत्र
९-२६-५२	१६००
<u>×३०</u>	१९९२
२७०	<u>१६००</u>
<u>+२९</u>	३६२
२९९	<u>×४</u>
<u>×६०</u>	८००) १५६८ (१ गत
१७६४०	<u>८००</u> चरण
<u>+५२</u>	७६८ शेष
१७६९२ विकला	= वर्तमान दूसरा चरण हुआ

किसी राशि के नाम पर से जन्म नक्षत्र और चरण जानना—

आगे होड़ा चक्र दिया है जिस पर से हिन्दुओं के नाम विचार कर रखे जाते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होते हैं और प्रत्येक चरण के लिये एक अक्षर नियुक्त है। जन्म समय जो नक्षत्र होता है उस नक्षत्र का जो चरण वर्तमान हो उसी चरण के अक्षर के अनुसार नाम रखा जाता है। जैसे किसी का जन्म शतभिषक नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ तो चक्र में देखने से प्रगट हुआ कि शतभिषक के तीसरे चरण का अक्षर "सी" है। इसी अक्षर पर से सीताराम, शिशुपाल आदि नाम उस बालक का रखा जावेगा। स अक्षर में

श अक्षर भी लिया जा सकता है। वह ह्रस्व हो या दीर्घ हो उसका कुछ विचार नहीं होता। यहाँ सी अक्षर है इसमें "छोटी इ" की भी मात्रा हो तो कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। इसमें केवल अक्षर और मात्रा का विचार होता है। मात्रा ह्रस्व हो तो उसे दीर्घ भी ले सकने हैं जैसे कू और कु एक है। इसी प्रकार म और मा एक है। मघा के पहले चरण का जन्म होता है म अक्षर है तो मक्खन सिंह या मास्ती प्रसाद भी नाम रख सकते हैं।

कई अक्षर ऐसे भी हैं जिन पर से नाम नहीं रखा जा सकता है जैसे ड, ब, ण, जब ये अक्षर आते हैं तो नाम "न" अक्षर या किसी दूसरे अक्षर पर से रख देते हैं।

इसी प्रकार किसी राशि के नाम पर से मम के आदि अक्षर का विचार कर जन्म नक्षत्र या राशि भी जान सकते हैं। जैसे किसी का नाम रामलाल है। नाम का आदि अक्षर रा है। चक्र देखा तो तुला राशि के आगे चित्रा के तीसरे चरण का जन्म है और तुला राशि है।

इस चक्र से किसी ग्रह की राशि अश कला आदि मालूम हो तो उसका नक्षत्र और चरण भी जाना जा सकता है।

जैसे जन्म समय चंद्र स्पष्ट ६रा-२६°-५२' है तो यह जानने के लिये कि जन्म नक्षत्र अर चरण क्या होगा, होडा चक्र का अन्तिम भाग देखो। ६ रा २६°. ४०' तक घनिष्ठा का पहला चरण गत हो चुका, घनिष्ठा का दूसरा चरण १०रा-०°-०' तक है। अपना चंद्र इन दोनों के भीतर है इससे यह प्रगट हुआ कि घनिष्ठा के दूसरे चरण का जन्म है।

नक्षत्र का चरण (जैसे नाम से प्रगट हो जाता है) जान लेने पर इसी चक्र द्वारा चंद्र की राशि अश आदि भी विदित हो सकता है।

जैसे किसी का जन्म घनिष्ठा के तीसरे चरण का है तो तीसरे चरण घनिष्ठा का १३ रा-३°-२०' तक है। दूसरा चरण १० रा ०° ०' तक है। इस कारण चंद्र इन दोनों के बीच है ऐसा समझना। चंद्र ठीक स्थिति तो गणित करने से ही प्रगट होती है। यहाँ केवल मोटा हिसाब बतलाया है। गणित खड में इसका गणित दिया है।

होडा चक्र को अवकडहा चक्र या शतपद चक्र भी कहते हैं।

१ चरण (नक्षत्र का) ३°-२०' का होता है। आगे ३°-२० जोड़ते जाने से राशि के अंशादि का चक्र बन जाता है।

इसमें एक अक्षर को लेकर प्रत्येक चरण के लिय पृथक मात्रा लगा कर चरण के अक्षर बनाये गये हैं। जैसे ल से ला, ली, लू, ले, लो इत्यादि जैसा नीचे के चक्र से प्रगट होगा।

होना चक्र के अक्षर और उनका नक्षत्र चरण सूचक चक्र—

नक्षत्र

अक्षर जो है

जो नहीं है

अक्षर

क्रम नाम

अक्षर नक्षत्र चरण अक्षर नक्षत्र चरण अक्षर नक्षत्र चरण अक्षर नक्षत्र चरण अक्षर नक्षत्र चरण

१ अश्विन.

आ ३/१ का ५/३

इ ३/२ कौ ५/४

उ ३/३ कू ६/१

ए ३/४ के ७/१

ओ ४/१ को ७/२

३ कृत्तिका

गा २३/१

गो २३/२

गू २३/३

गे २३/४

गो २४/१

ख

५ मृग.

घा ६/२

घो २७/४

चू १/१

चे १/२

चो १/३

६ आर्द्रा

डा ६/३

दो २७/४

दू १/१

दे १/२

दो १/३

८ पुष्य

छा ६/४

चो २७/४

चू १/१

चे १/२

चो १/३

९ आश्ले.

जा २१/३

जो २१/४

जू १/१

जे १/२

जो १/३

१० मघा

झा २६/३

जो २६/४

जू १/१

जे १/२

जो १/३

११ पू. फा.

न २६/४

नो २६/४

नू १/१

ने १/२

नो १/३

१२ च. फा.

टा ११/२

टो ११/३

टू १/१

टे १/२

टो १/३

१३ हस्त

ठ १३/४

ठो १३/४

ठू १/१

ठे १/२

ठो १/३

१४ चित्रा

डा ८/४

डो ८/४

डू १/१

डे १/२

डो १/३

[२२]

इस चक्र में

अक्षर के आगे

ऊपर नक्षत्र का

क्रम और नीचे

चरण के अंक दिये

हैं। नक्षत्र क्रम से

यहाँ दिये हुए

नक्षत्र का नाम

प्रकट हो जायगा।

इसमें ये अक्षर

बराबर हैं—

अ=आ

इ=ई

उ=ऊ

ए=ऐ

ओ=औ

अ=अं

स=सः

व=वः

१५ स्वाती-३ २०/४

१६ विशा. १३/३

१७ अतु. ता १५/४ ती १६/१ तु १६/२ ते १६/३ तो १६/४

१८ ज्ये. थ २६/३

१९ मूल. दा २५/३ दी २५/४ दू २६/१ दे २७/१ दो २७/२

२० पू. पा. ध २०/२

२१ च. षा. ना १७/१ नी १७/२ नू १७/३ ने १७/४ नो १८/१

२२ श्रवण ना १२/३ पी १२/४ पू १३/१ पे १४/१ पो १४/२

२३ धनि. फा २०/३

२४ शत. भ १९/३ भी १६/४ भू २०/१ भे २१/१ भो २२/२

२५ पू. भा. मा १०/१ मी १०/२ मू १०/३ मे १०/४ मो ११/१

२६ ज. भा. या १८/२ यी १८/३ यू १८/४ ये १६/१ यो १६/२

२७ रेवती रा १४/३ री १४/४ रू १५/१ रे १५/२ रो १५/३

ला १/४ ली २/१ लू २/२ ले २/३ लो २/४

वा ४/२ वी ४/३ वू ४/४ वे ५/१ वो ५/२

य १३/२

सा २४/२ सी २४/३ सु २४/४ से २५/१ सो २५/२

हा ७/३ ही ७/४ हू ८/१ है ८/२ हो ८/३

ती हू हे तो

पञ्च

जव हस्त के

हस्तरे वरण का

जन्म होता है तो

य अक्षर होने से

उसे खा मानकर

नाम रख देते हैं

जैसे—

धरारास=

खरारास

षडानन=

खडानन ।

[१०८]

ह. न. प. = इन अक्षरों से नाम नहीं बनता तो इनके बदले “न” या और कोई भी अक्षर नाम

रख देते हैं ।

अध्याय ३७

तारीख से तिथि निकालना

सुवर्णांक १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
विशेषांक ० ११ २२ ३ १४ २५ ६ १७ २८ ९ २० १ १२ २३ ४ १५ २६ ७ १८

आरंभ महीना=मार्च को पहिला गिनो ।

आरंभ मे विशेषांक शून्य है जिसका क्षेपक ११ है अर्थात् प्रतिदिन ११ बढ़ता है ।
जैसे ११ + ११ = २२ + ११ = ३३ इसका ३ ही लिया ३ + ११ = १४, = १४ + ११
= २५ । इसी प्रकार ये विशेषांक ऊपर दिये हैं । ३० से अधिक तिथि होने पर ३० घटाने
से जो बचता है वही ऊपर चक्र में रखा है । जैसे २२ + ११ = ३३ का ३० घटा कर
३ ही विशेषांक रखा है ।

सुवर्णांक Golden numer = सन ईस्वी + $\frac{1}{4}$ = शेष सुवर्णांक का क्रम ।

(शाका + ७८) = सन ईस्वी ।

जैसे शाका १८६५ + ७८ = १९४३ सन् । $\frac{१९४३}{४} + १ = \frac{१९४४}{४}$ = शेष ६ ।
शेष ६ वचा तो १९४३ सन का सुवर्णांक=६ हुआ । इस सुवर्णांक १९) १९४४ (१०२
६ के नीचे विशेषांक २५ दिया है । इस वर्ष भर के लिये इसी

विशेषांक से तिथि निकलेगी ।

$$\begin{array}{r} १९ \\ ४४ \\ \hline ३८ \\ ६ \text{ शेष} \end{array}$$

रीति—सन ईस्वी में १ जोड़ कर १९ का भाग दो जो शेष बचे वह सुवर्णांक होगा ।
उस सुवर्णांक के नीचे जो विशेषांक मिले उसे लो । फिर जिस अंग्रेजी महीना की तारीख
की तिथि जानना हो, मार्च से उस अंग्रेजी महीना तक गिनो, गिनते समय मार्च को
१ गिनो । गिनती में महीना की जो संख्या आवे उसे मास संख्या कहते हैं ।

महीने की तारीख + विशेषांक = मास संख्या = तिथि ।

महीने की तारीख, विशेषांक और मास संख्या जोड़ने से तिथि निकलती है । तिथि
३० से अधिक आवे तो ३० घटाने से जो बचे उसे लेना । पूर्णिमा को १५ और अमावस्या
को ३० तिथि जानो ।

सब योग १ से १५ तक आवे तो = शुक्ल पक्ष की तिथियाँ होगी ।

„ १६ से ३० „ „ = कृष्ण „ „ „

जैसे सन् १९४३ ईस्वी की ७ अप्रैल की तिथि जानना है। सन् १९४३ का सुवर्णांक ६ निकला था, इसका विशेषांक २५ है, इष्ट मास अप्रैल है। मार्च से गिना, मार्च १, अप्रैल २, इस प्रकार मास संख्या २ हुई।

$$\text{=विशेषांक + तारीख + मास संख्या} = २४ - ३० = ४ \text{ शुक्ल पक्ष की तिथि।}$$

२५ ७ २

यह योग ३० से अधिक है, इस कारण ३० घटाया, शेष ४ रहे। १ से १५ तक शुक्ल पक्ष की तिथि होती है। इस कारण ४ शुक्ल पक्ष की तिथि तारीख ७ अप्रैल को होगी।

दूसरा उदाहरण—तारीख १८ मार्च सन् १८९० की तिथि जानना है

$$\text{सन् } \frac{१८९० + १}{१९} = \frac{१८९१}{१९} \left. \begin{array}{l} \text{शेष } १० \text{ सुवर्णांक} \\ \text{विशेषांक } ९ \end{array} \right\} \begin{array}{l} \text{मार्च से इष्ट मास} \\ \text{मार्च } १ \end{array}$$

$$\text{विशेषांक } ९ + \text{तारीख } १८ + \text{मास } १ = २८ \text{ कृष्ण पक्ष की तिथि हुई}$$

$$९ + १८ + १ = (२८-१५) = १३ \text{ तिथि}$$

ऊपर बताये नियम से तारीख की तिथि निकालने में कभी-कभी एक तिथि का अन्तर पड़ जाता है, क्योंकि कभी-कभी एक तारीख में २ तिथियाँ हो जाती हैं। कभी-कभी तिथियों की हानि-वृद्धि भी होती है। इस कारण कभी १ तिथि का अन्तर पड़ जाता है। इस रीति से तिथि का अनुमान हो जाता है। (२) इसी रीति को अब दूसरी प्रकार से करते हैं।

आगे तारीख से चन्द्र की तिथि निकालने की जगह दी है, उसका देखने की रीति यह है।

सन्-१९४३=शेषांक (सन् में जोड़ कर १९ का भाग दो जो वचे वह शेषांक कहलाया)
इष्ट महीना के नीचे और शेषांक के आगे चक्र में जो अंक मिले वह मासांक होगा।
मासांक+तारीख=तिथि (तिथि ३० से अधिक होने से ३० घटा देना)

जैसे सन् १९४२ में १५ दिसम्बर की तिथि जानना है।

$$\frac{१९४२ + १}{१९} = \frac{१९४३}{१९} \text{ शेषांक } ५$$

$$१९) १९४३ (१०२$$

$$\underline{१९}$$

$$४३$$

$$\underline{३८}$$

$$५ \text{ शेषांक}$$

इष्ट मास दिसम्बर के नीचे और शेषाक ५ के आगे देखा तो २४ मिला। यही मासांक हुआ। मासांक + तारीख = ३६-३०=६ तिथि शुक्ल पक्ष की।

$$२४ + १५ = ३९-३०=९$$

दूसरा उदाहरण—

इसी सन् में दिसम्बर की तिथि जानना है।

उपर्युक्त मासाक + तारीख = २६ कृष्ण पक्ष की तिथि

$$२४ + २ = २६-१५=११$$

पंचांग में उस दिन दशमी थी। एक तिथि वृद्धि होने से अन्तर आ गया।

तारीख से चंद्र की तिथि जानने की जंत्री

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	०	२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
२	११	१३	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८
३	२२	२४	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
४	३	५	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	१४	१६	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
६	२५	२७	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
७	६	८	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३
८	१७	१९	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
९	२८	३०	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
१०	८	११	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
११	२०	२२	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
१२	१	३	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
१३	१२	१४	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
१४	२३	२५	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
१५	४	६	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
१६	१५	१७	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
१७	२६	२८	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
१८	७	९	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
१९	१८	२०	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५

ऊपर के अंक में ११ जोड़ने से ३० से अधिक होने पर ३० घटा देने से यह सारिणी बनी है।

शुक्ल प्रतिपदा की तारीख जानना

सन इसवी के मासाक को ३० से घटा दो तो शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की तारीख निकल आवेगी ।

जैसे सन १९४३ के मई का मासाक २८ है । $\frac{१९४३+१}{१९} = \frac{१९४४}{१९} = ६$ शेषाक

सारिणी में ६ शेषाक के आगे और मई के नीचे २८ मासाक मिला ।

३०-२८ मासाक = २ तारीख हुई । मई को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (पडिवा) होगी ।

पूर्णमासी की तारीख जानना—

इष्ट सन के बाद मासाक को ३० में से घटा दो, शेष १५ रहे तो ३० तारीख को पूर्णिमा होगी । शेष १५ से अधिक हो तो १५ से जितने अधिक हो वही अधिक तारीख होगी । १५ से कम हो तो उसमें १५ और जोड़ना तो योग फल पूर्णिमा की तारीख होगी ।

जैसे सन १९४३ का शेषाक ६ है । जून के नीचे और ६ शेषाक के आगे जून का मासाक २९ दिया है । ३०-२९ मासाक=शेष १ यह १५ से कम है । इस कारण १+१५= १६, तारीख १६ को पूर्णिमा होगी ।

इस रीति में भी १ का कमी २ का अन्तर आ जाता है ।

सन १९४६ की मई की पूर्णिमा जानना है ।

$$\frac{१९४६+१}{१९} = \frac{१९४७}{१९} = ६ \text{ शेषाक इसके आगे और मई के नीचे १ मासाक है । } ३०-६$$

१ = २९ यह १५ से अधिक है । २९-१५ शेष=१४ तारीख को मई में पूनम होगी ।

तिथि से तारीख निकालना

$$\text{तारीख} = \left(\text{शुक्ल पक्ष तिथि} + ३० \right) - \left(\text{चैत्र से १ गिनकर कृष्ण पक्ष तिथि} + १७ \right) - \left(\text{इष्ट मास तक सख्या} + \text{सन विशेषाक} \right)$$

सायन मेष सक्रान्ति को चैत्र जानो और इससे १ गिनो ।

रीति—शुक्ल पक्ष की तिथि ३० और कृष्ण पक्ष की तिथि हो तो १५ जोड़ना योग-फल को तिथि सख्या जानो ।

मास संख्या—जिस मास में सायन मेष सक्रान्ति हो उसे चैत्र जानो और चैत्र को १ गिन कर इष्ट मास तक सख्या गिनो गिनने से जो संख्या आवे वह मासाक हुआ ।

यहाँ नक्षत्र मान से जहाँ महीना पूरा हो उसे मास मानना आवश्यक नहीं है । केवल एक सायन मेष संक्रमण वाले मास को चैत्र मान कर इसी चैत्र से गिनना ।

सन ईसवी का सुवर्णांक और विशेषांक निकालना पहले बता चुके हैं। विशेषांक को माससंख्या में जोड़ो और इस योग को तिथि संख्या में घटाओ, जो शेष वचे वही तारीख होगी।

हिन्दी मास में जो अंग्रेजी महीना पड़ता है उस अंग्रेजी महीना की तारीख इस प्रकार निकालना। यदि ३० से अधिक तारीख आवे तो ३० दिन घटा देना। घटाने से जो वचे वह अगले महीने की तारीख होगी।

हिन्दी महीना में लगभग ये अंग्रेजी महीना पड़ते हैं।

चैत्र वैशाख जेठ असाढ़ सावन भादो कुआर कार्तिक अगहन पूस माघ फागुन मार्च अप्रैल मई जून जुलाई अगस्त सितम्बर अक्टू० नव० दिस० जन० फर० कभी इन महीनो में कुछ अंतर पड़ जाता है।

उदाहरण (१)

सन १९४३ ज्येष्ठ शुक्ल १४ की तारीख जानना है—

$(१९४३+१) \div १९ = \frac{१९४४}{१९} =$ शेष सुवर्णांक, इसका विशेषांक २५ इसी के नीचे दिया है।

तारीख = (शुक्ल १४ + ३०) - (चैत्र से ज्येष्ठ मास + ३ विशेषांक २५) = ४४ - २५ = १९ तारीख हुई। इस तारीख में भी कभी-कभी १ का अन्तर पड़ जाता है। क्योंकि तिथि की हानि-वृद्धि होती है और कभी-कभी एक तारीख में २ तिथि हो जाती है।

दूसरा उदाहरण—चैत्र कृष्ण १३ सन १९९० को तारीख जानना है—

$\frac{१९९०}{१९} + १ = \frac{१९९१}{१९} =$ शेष १०, १० सुवर्णांक के नीचे ९ विशेषांक दिया है।

तारीख = (कृष्ण १३ + १५) - (चैत्र से चैत्र मास १ + विशेषांक ९) = २८ - १० = १८ तारीख आई। मार्च को १८ तारीख हुई।

अमावस्या की तारीख जानना—

तारीख = ३० - (सन का विशेषांक + चैत्र से इष्ट मास तक मास संख्या)

जैसे सन १९४२ के दिसम्बर में अमावस्या कौन तारीख पड़ेगी जानना है।

$\frac{१९४२}{१९} + १ = \frac{१९४३}{१९} =$ शेष ५ सुवर्णांक के नीचे १४ विशेषांक दिया है।

तारीख = ३० - (विशेषांक + मार्च से दिसम्बर तक) = ३० - २४ = ६ तारीख।

१४

महीना १०

इसमें भी कभी कभी १ दिन का अन्तर पड़ जाता है। पंचांगों में ७ तारीख को अमावस्या दिया है।

विशेष विचार—संक्रान्ति मान में वृद्धि

संक्रान्ति मान ७२ वर्ष में १ दिन आगे बढ़ता है। जनवरी और फरवरी की तिथि निकालने को इष्ट वर्ष के पिछले वर्ष का विशेषांक निकालो और इन दोनों महीनो की अमावस्या निकालने के लिये गत वर्ष का विशेषांक लो।

अमावस्या निकालने का विशेषांक और महीने का योग ३० से अधिक हो तो ३० से घटा देना, जहाँ ० शेष रहे उसे ३० तारीख समझना। तिथि की क्षय वृद्धि से कभी-कभी तारीख में १ दिन का अन्तर पड़ जाता है। इस कारण इष्ट वार पर से शुद्ध तारीख निकाल कर मिलान कर लेना चाहिए। वार से तारीख निकालने की रीति आगे दी है।

तारीख से दिन निकालना—

यदि तिथि से तारीख निकालनी है और दिन भी मालूम करना है तो यह निश्चय कर लेना चाहिए कि उस दिन वह तारीख पड़ती है या नहीं। इसके जानने की रीति आगे दी है।

मासांक और वारांक

अंक	१	२	३	४	५	६	७
मास	जनवरी	मई	लीप—	फरवरी	जून	सितम्बर	लीप—जनवरी
	अक्टूबर		फरवरी	मार्च		दिसम्बर	अप्रैल
			अगस्त	नवम्बर			जुलाई
दिन	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार

इस चक्र में महीने के ऊपर जो अंक दिये हैं वे मासांक हैं और दिन के ऊपर के अंक वारांक हैं।

रीति सन ईसवी का उत्तरार्द्ध अर्थात् इकाई और दहाई को लेकर उस उत्तरार्द्ध का चतुर्थांश भी उसी में जोड़ दो। चतुर्थांश निकालते समय आधा या पौन अंक मिले उसी जोड़ते समय छोड़ देना चाहिए। उस योग फल में तारीख और अंग्रेजी महीने का अंक (मासांक) भी जोड़ दो और ७ का भाग दो जो शेष बचे वही वार उपर्युक्त क्रम से होगा।

जैसे सन् १९४३ में २३ मई का दिन जानना है। सन् १९४३ का उत्तरार्द्ध ४३ हुआ = $४३ + ४\frac{३}{४} = ४३ + १०\frac{३}{४} = ५३$ (यहाँ जोड़ते समय $\frac{३}{४}$ छोड़ दिया) = $५३ +$ तारीख २३ + मई का मासांक २ = $७८ = ७८ - ७ = ७१$ = शेष १ = रविवार। यहाँ मई के ऊपर २ अंक लिखा है, इससे मई का मासाङ्क २ हुआ। सब का योग ७८ था, ७ का भाग देने से १ बचा, १ के नीचे इतवार लिखा है। इससे प्रगट हुआ कि २३ मई सन् १९४३ को इतवार का दिन था।

बीसवी सदी में उपर्युक्त नियम से तारीख का दिन निकालना है। परन्तु इसके पहिले की गत सदी की तारीख जानने के लिये प्रति सदी में २ अधिक जोड़ना और भविष्य की सदी में २ अंक घटा देना होगा, तब ठीक तारीख निकलेगी।

लीप फरवरी हो तो लीप वर्ष में जनवरी और फरवरी की तारीख से दिन निकालने में कुछ सावधानी की आवश्यकता है। ऊपर चक्र में लीप फरवरी और लीप जनवरी जहाँ लिखा है उस वर्ष उस के ऊपर लिखा मासाक लो अर्थात् लीप जनवरी का निकालने को लीप जनवरी का विशेषांक ० या ७ लेना और लीप फरवरी के लिये मासाक ३ लेना। क्योंकि लीप फरवरी के ऊपर ३ अंक लिखा है। यदि लीप वर्ष न हो तो साधारण जनवरी का अंक १ और फरवरी साधारण अंक ४ लेना जैसा पहिले चक्र में बताया चुके हैं।

लीप वर्ष (Leap year) = प्लुत वर्ष। जिस वर्ष में सन् ईसवी में ४ का पूरा २ भाग चला जाय या पूर्ण सदी से तो उसमें ४०० का भाग पूरा २ चला जाय अर्थात् भाग देने से शेष कुछ न बचे तो वह लीप इयर (प्लुतवर्ष) कहलाता है। जैसे ४, ८, १२, ८८, १२, १६ में ४ का भाग पूरा २ चला जाता है। शेष कुछ नहीं बचता तो ये सब लीप वर्ष होंगे। और ४००, ८००, १२००, १६००, २०००, इत्यादि इन ईसवी में जिसमें सदी शेष कुछ नहीं बचता तो ये सब लीप वर्ष कहलायेंगे।

सन् १६०० ईसवी यह पूरी सदी तो है (अर्थात् सैकड़ा के २ शून्य इसमें तो है) परन्तु ४०० का भाग पूरा पूरा नहीं जाता, ४०० का भाग देने से शेष बचता है। इससे यह लीप वर्ष नहीं है। १६१६ में ४ का भाग देने से कुछ नहीं बचता, इस कारण यह लीप वर्ष होगा।

लीप वर्ष में फरवरी २९ दिन की होती है। साधारण फरवरी में २८ दिन होते हैं शेष महीनों में कोई ३० दिन का कोई ३१ दिन का होता है। जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर में ३१ दिन, शेष महीनों में ३० दिन होते हैं।

आगे इसी को सरल जंत्री अनन्त वर्षों की बनाई गई है, जिससे किसी भी सन् की तारीख से दिन या दिन से तारीख सरलता से जान सकते हो।

अनन्त वर्षों की जन्त्री

अग्रज्जी महीना	सन् ईसवी का नम्बर						
७ लीप जनवरी, अप्रैल, जुलाई	१	२	३	४	५	६	७
६ सितम्बर, दिसम्बर	२	३	४	५	६	७	१
५ जून	३	४	५	६	७	१	२
४ फरवरी, मार्च, नवम्बर	४	५	६	७	१	२	३
३ लीप फरवरी, अगस्त	५	६	७	१	२	३	४
२ मई	६	७	१	२	३	४	५
१ जनवरी, अक्टूबर	७	१	२	३	४	५	६

१	८	१५	२२	२९	रवि	सो	मं.	बु.	गु.	शु	श.
२	९	१६	२३	३०	सो	म	बु.	गु	शु	श.	र
३	१०	१७	२४	३१	म	बु	गु	शु	श	र	सो
४	११	१८	२५	—	बु	गु	शु.	श	र	सो.	मं
५	१२	१९	२६	—	गु	शु	श.	र	सो.	म	बु.
६	१३	२०	२७	—	शु.	श.	र	सो	म	बु	गु
७	१४	२१	२८	—	श	र	सो.	मं.	बु	गु.	शु.
तारीख						दिन					

जन्त्री - खने की रीति—

इस जन्त्री में क्रिमी भी नन की तारीख या दिन जान सकते हो । जिस सन् ईसवी की तारीख खोजना हो उसका नम्बर आगे बताई हुई रीति से निकालो । साल में एक बार मन् का नम्बर खोज लेने में वह नम्बर वर्ष भर काम देता है ।

जिस महीने की तारीख जानना है वह अंग्रेजी महीना वाई ओर खोजो । ऊपर अंग्रेजी महीना लिखा है, उसके नीचे इष्ट महीना मिलेगा । उस महीना के सीध में दाहिनी ओर इष्ट सन् का नम्बर खोजो । सन् ईसवी का नम्बर जहाँ लिखा है उसी के नीचे मन् ईसवी का नम्बर मिलेगा । जहाँ सन् ईसवी का नम्बर मिले उसके नीचे उसी खड़ी पक्ति में दिन की पक्ति है । उसी दिन की पक्ति में सबसे ऊपर कौन धार है इसका ध्यान रखो । क्योंकि अपनी तारीख इसी धार पक्ति के अनुसार निकलेगी । दिन पक्ति के वाई ओर तारीख की पक्तियाँ हैं । जहाँ तारीख लिखा है उसके ऊपर तारीखें दो हैं और जहाँ दिन लिखा है उसके ऊपर दिन की पक्तियाँ हैं ।

दिन की प्राप्त पक्ति के वाई ओर जो तारीखें दो हैं उनमें से इष्ट दिन की तारीख या इष्ट तारीख का दिन खोज लो । दिन की प्राप्त पक्ति का उपयोग करते समय दोष दो हुई दिन की पक्तियों पर कोई ध्यान मत दो । यह पक्ति महीना भर काम देगी । दूसरे महीने की उम्मी मन् के नम्बर के नीचे दूसरी पक्ति निकलती है ।

उदाहरण—मन् १९४३ का नम्बर ५ है (मन् का नम्बर निकालना आगे बताया है) जून के महीने की तारीख और दिन देखना है । वाई ओर ऊपर अंग्रेजी महीनों के नीचे तीसरी पक्ति में जून दिया है, उसके आगे सन् के नम्बर के नीचे सन् का नम्बर ५ जोजा (क्योंकि इष्ट सन् का नम्बर ५ है) यह तीसरी खड़ी पक्ति में मिला, इसके ठीक नीचे दिन की पक्ति में दिन खोजने में दिन की पक्ति मिलेगी । उसमें सबसे ऊपर मंगल लिखा है तो मंगलवार को पहली तारीख होगी । दिन के वाई ओर इष्ट दिन की तारीख खोज लो । उम्मी दिन की पक्ति से जिसमें आदित्यवार मंगलवार

है दिन से तारीख या इष्ट तारीख का दिन निकाल लेना चाहिए । जैसे ३० तारीख कौन दिन पड़ेगा देखना है तो ३० के सीध में बुधवार है । इससे प्रगट हुआ ३० तारीख को बुधवार होगा । इसी प्रकार जून की १० तारीख गुरुवार को पड़ेगी । तारीख १७ भी गुरुवार को होगी । सोमवार की तारीख देखना है तो सोमवार के आगे ७, १४, २१ और २८ तारीखें दी हैं । इनमें से जिस तारीख की आवश्यकता हो ले लेना । यहाँ तारीख : १ तक दी है, परन्तु जून महीने में केवल ३० दिन होते हैं । इस कारण ३० तारीख तक इस महीना में लेंगे बाकी छोड़ देंगे ।

सन् का नम्बर जानने का चक्र—

सन् का नम्बर								शेष से	सदी तक
सन् का नम्बर	७	१	२	३	४	५	६	०	६६ १
	५	६	७	१	२	३	४	१००	१६६ २
	३	४	५	६	७	१	२	२००	२६६ ३
	१	२	३	४	५	६	७	३००	३६९ ४

शेष वर्ष (सन् के इकाई दहाई के अंक)	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सन् - ४००
	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	शेष जो वचे
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	शेष सदी ।
	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	शेष सदी की
	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	इकाई दहाई
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	शेष वर्ष ।
	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	सैकड़ा का
	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	अंक + १ =
	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	५० पक्ति ।
	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	पक्ति के सीध
	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	मे और शेष
	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	वर्ष के ऊपर
	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	सन् का
	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	नम्बर
	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	मिलेगा ।

शेष वर्ष (सन् के इकाई दहाई के अंक)

सन् ईसवी का नम्बर निकालने की रीति ।

मन् = ४०० = शेष सदी । सन् ईसवी यदि ४०० से अधिक हो तो ४०० का भाग दो जो शेष वचे उसे लो । जो इस प्रकार का शेष वचता है उसे शेष सदी कहते हैं । यदि ४०० से कम सन् हो तो चक्र के अनुसार ही पक्ति का नम्बर होगा, जैसे -

शेष ० से ९९ तक = पक्ति १

शेष १०० से १९९ तक = पक्ति २

शेष २०० से २९९ तक = पक्ति ३

शेष ३०० से ३९९ तक = पक्ति ४

४०० का भाग देने पर जो शेष सदी मिले उसमें फिर १०० का भाग दो जो शेष वचे वह = शेष वर्ष हुआ । और उसमें जितने वार १०० का भाग जाय वह लब्धि हुई । इन लब्धि में १ और जोड़ना तो वह पक्ति का नम्बर होगा । अर्थात् उस सदी के इकाई दहाई के एक शेष वर्ष कहलाये जो शेष वर्ष चक्र में दिया है और उस सैकड़ा के अंक में १ और जोड़ो तो वह पक्ति का नम्बर होगा ।

ऊपर चक्र में पक्ति का नम्बर अत में १ से ४ तक दिया है । अपने इष्ट सन के शेष वर्ष के ऊपर और इष्ट पक्ति में जो सन का नम्बर मिले वही इष्ट सन का नम्बर होगा ।

वर्तमान सदी की पक्ति ४ है । इस कारण वर्तमान सदी में सब ये नीचे की पक्ति ४ के सन का नम्बर लेता ।

उदाहरण—

(१) सन् $१६०० \div ४०० = ४ \frac{०००}{४००} =$ शेष ३०० हुआ । शेष ३०० - १०० = २ वार भाग गया = लब्धि ३ + १ = ४ पक्ति हुई, शेष ० वचा तो = शेष वर्ष ० हुआ । अब शेष वर्ष चक्र में ० के ऊपर और ४ पक्ति की सीध में देखा तो सन का नम्बर १ मिला । सन का नम्बर १ हुआ ।

(२) सन् $२०० \div ४०० = ० \frac{२००}{४००} =$ शेष २०० - १०० = लब्धि २ + १ = ३ पक्ति, शेष शेष वर्ष ० पक्ति ३ । यहा इकाई दहाई में शून्य है १०० का भाग देने से शेष ० रहेगा । इस कारण शेष वर्ष ० हुआ । शेष वर्ष चक्र में ० के ऊपर पक्ति ३ के सीध में खोजने से मन् का नम्बर ३ मिला ।

(३) सन् $१६४४ - ४००$ शेष सदी ३४४ हुई । इसमें इकाई दहाई में ४४ है तो शेष वर्ष ४४ हुए । शेष ३४४ के सैकड़ा के स्थान में ३ है ३ + १ = ४ पक्ति या $३४४ \div १०० = ३$ लब्धि + १ = ४ पक्ति । शेष ४४ = शेष वर्ष ४४ हुए । शेष वर्ष ४४ के ऊपर और पक्ति ४ के सीध में सन् का नम्बर ७ मिला ।

(४) सन् १८०१-४००=शेष सदी २०१, इकाई दहाई में ०१ है तो शेष वर्ष ०१ अर्थात् १ हुआ। २०१ में सैकड़ा के स्थान में २ है। २+१=३ पक्ति हुई। या २०-१००=लब्धि २+१=३ पक्ति। शेष १=शेष वर्ष १ हुआ। शेष वर्ष १ के ऊपर पक्ति ३ के सोध में खोजा तो सन् का नम्बर ४ मिला।

यहाँ ४०० का भाग देने के उपरांत जो शेष सदी प्राप्त होती है उसमें फिर १०० का भाग देना बताया है, परन्तु यदि ऊपर पक्ति का चक्र देखो तो वही ही लिखा है कि शेष कितने से कितने के बीच में बचने पर कौन पक्ति होती है। इस कारण सुविधा के लिये ऊपर ही चक्र के दाहिनी ओर लिख दिया है। सन् में केवल ४०० का भाग देकर शेष सदी निकाल लो। शेष सदी के इकाई दहाई के अंक शेष वर्ष होते हैं। उसी शेष वर्ष के ऊपर इष्ट पक्ति की सोध में सन् का नम्बर मिल जाता है। वर्ष में केवल ७ बार सन् का नम्बर निकालना पड़ता है और वह नम्बर उसी वर्ष भर काम देता है।

कुछ निकाले हुए सन् के नम्बर—

सन् के न	१	२	३	४	५	६	७
१७९८	१७९९	१८००	१८०१	१८०२	१८०३	+	
१८०४	१८०५	१८०६	१८०७	+	१८०८	१८०९	
१८१०	१८११	+	१८१२	१८१३	१८१४	१८१५	
+	१८१६	१८१७	१८१८	१८१९	+	१८२०	
१८२१	१८२२	१८२३	+	१८२४	१८२५	१८२६	
१८२७	+	१८२८	१८२९	१८३०	१८३१	+	
१८३२	१८३३	१८३४	१८३५	+	१८३६	१८३७	
१८३८	१८३९	+	१८४०	१८४१	१८४२	१८४३	
+	१८४४	१८४५	१८४६	१८४७	+	१८४८	
१८४९	१८५०	१८५१	+	१८५२	१८५३	१८५४	
१८५५	+	१८५६	१८५७	१८५८	१८५९	+	
१८६०	१८६१	१८६२	१८६३	+	१८६४	१८६५	
१८६६	१८६७	+	१८६८	१८६९	१८७०	१८७१	
+	१८७२	१८७३	१८७४	१८७५	+	१८७६	
१८७७	१८७८	१८७९	+	१८८०	१८८१	१८८२	
१८८३	+	१८८४	१८८५	१८८६	१८८७	+	
१८८८	१८८९	१८९०	१८९१	+	१८९२	१८९३	
१८९४	१८९५	+	१८९६	१८९७	१८९८	१८९९	
१९००	१९०१	१९०२	१९०३	+	१९०४	१९०५	

सन् ईसवी

मन्त्र के नं०	१	२	३	४	५	६	७
	१६०६	१६०७	+	१६०८	१६०९	१६१०	१६११
	+	१६१२	१६१३	१६१४	१६१५	+	१६१६
	१६१७	१६१८	१६१९	+	१६२०	१६२१	१६२२
	१६२३	+	१६२४	१६२५	१६२६	१६२७	+
	१६२८	१६२९	१६३०	१६३१	+	१६३२	१६३३
	१६३४	१६३५	+	१६३६	१६३७	१६३८	१६३९
	+	१६४०	१६४१	१६४२	१६४३	+	१६४४
	१६४५	१६४६	१६४७	+	१६४८	१६४९	१६५०
	१६५१	"	१६५२	१६५३	१६५४	१६५५	+
	१६५६	१६५७	१६५८	१६५९	+	१६६०	१६६१
	१६६२	१६६३	+	१६६४	१६६५	१६६६	१६६७
	+	१६६८	१६६९	१६७०	१६७१	+	१६७२
	१६७३	१६७४	१६७५	+	१६७६	१६७७	१६७८
	१६७९	+	१६८०	१६८१	१६८२	१६८३	+
	१६८४	१६८५	१६८६	१६८७	+	१६८८	१६८९
	१६९०	१६९१	+	१६९२	१६९३	१६९४	१६९५
	+	१६९६	१६९७	१६९८	१६९९	+	२०००
	२००१	२००२	२००३	+	२००४	२००५	२००६
	२००७	+	२००८	२००९	२०१०	२०११	+
	२०१२	२०१३	२०१४	२०१५	+	२०१६	२०१७

मन्त्र-सूची

जन्म वनांन की गीति

यह जन्म वनांन कठिन नहीं है मगर बना सकते हो। उम्र लग में यह बनाई गई है जिसमें अपनी स्मरण शक्ति में ही जय आनन्दरुता हो वही मरुलता में कोई भी इसे बना सके।

आरम्भ में मान के अक उल्टे क्रम में बाईं ओर ग्यो अर्थात् पहिले ७ फिर उसके नीचे ६ फिर ५ इत्यादि ओर उस मानाक के आगे उम्र नम्बर के महीने लिख दो। पहिले बता चुके हैं कि कौन महीने का क्या नम्बर होता है। उनको कठस्थ कर लेना कोई कठिन नहीं है। उम्र प्रकार ७ पक्षियों में मय १२ महीने, लीप जनवरी और लीप फरवरी भी आ जाते हैं।

महीने की पंक्ति के आगे दाहिनी ओर सन् के नम्बर की पंक्तिया है। इसका भरना बहुत सरल है। खड़ी पंक्ति में ऊपर से नीचे १, २, ३, ४ आदि क्रम पूर्वक ७ अंक तक लिख लो। फिर सबके ऊपर की पंक्ति में भी बाईं ओर से १ के आगे २, ३, ४ आदि क्रम पूर्वक लिखते जाओ और ७ अंक तक लिख लो। शेष कोठों में उसके आगे के अंक लिख कर सब कोठे भर दो। ७ अंक के बाद फिर १ अंक लिख कर उसके आगे के अंक क्रमानुसार लिखना पड़ता है।

सन् के नम्बर के कोठों के नीचे दिन की पंक्तिया है। इसमें रविवार से आरम्भ कर शनिवार तक आठे और खड़े कोठों में दिन भर दो। जिस प्रकार सन् का नम्बर भरा था उसी रीति से क्रमानुसार दिन सब कोठों में लिख दो।

इसके बाईं ओर महीने की पंक्ति के नीचे तारीख की पंक्तिया है, उनमें १ से लेकर ३१ तक क्रमानुसार तारीख के अंक भर दो। वस, इस प्रकार अनन्त वर्षों की जन्मी तैयार हो गई। जन्मी बनाने की इतनी सरल रीति और कहीं न मिलेगी।

सन् का नम्बर निकालने का भी चक्र बनाना बहुत सरल है। पंक्ति ४ में १ से लेकर ७ कोठों में क्रमानुसार ७ अंक लिख लो, और उसके ऊपर तीसरी पंक्ति में प्रत्येक अंक में २ जोड़ कर लिख दो, ७ के बाद १ अंक लिखना नही लिखना। इसी प्रकार दूसरी और पहिली पंक्ति में सबमें क्रम से २-२ अंक बढ़ा कर लिख दो तो पंक्ति के अनुसार सन् के नम्बर के अंक सब पंक्तियों में लिख जायेंगे।

१०० के भीतर पहिली पंक्ति की शेष सदी, २०० के भीतर दूसरी पंक्ति, ३०० के भीतर तीसरी, और ४०० के भीतर चौथी पंक्ति सन् इसवी की शेष सदी की होती है।

शेष वर्ष चक्र बनाना भी सरल है। पंक्ति ४ के सीध में १ से ७ तक सन् के नम्बर के अंक लिखे हैं। उसके नीचे ० से लेकर १, २, ३, आदि शेष वर्ष के अंक भरना आरम्भ करो। ४-४ अंक लिख लेने पर लीप वर्ष आता है। लीप अंग्रेजी शब्द है। इसका अर्थ है कूटना। इससे एक कोठा कूट कर अर्थात् लीप इयर को १ कोठा छोड़ कर आगे लिखो। जैसे १ सन् के नम्बर के नीचे, ० फिर २ के नीचे १, ३ के नीचे २, और ४ के नीचे ३ क्रमानुसार ४ अंक शेष वर्ष के लिख चुके। इसके उपरांत चौथा वर्ष ४ लीप इयर का होता है। इस कारण एक कोठा आगे का छोड़ कर अर्थात् सन् का नम्बर ५ के नीचे × चिह्न लगाकर आगे के कोठों में (सन् का नम्बर ६ के नीचे) ४ शेष वर्ष लिखो, आगे क्रमानुसार ४, ५, ६, ७ तक लिखने के बाद १ कोठा छोड़ कर ८ लिखो क्योंकि ८ लीप वर्ष है। इसी प्रकार सब कोठों में क्रमानुसार ९९ तक अंक अपने मनसे भरते चले जाओ। जिस वर्ष के पहिले × ढेरा का चिह्न खाली जगह में है उसे लीप वर्ष समझना।

दो सदी के सन् के नम्बर इसी प्रकार निकाल कर आगे चक्र में दिये हैं, जिससे सन् के नम्बर खोजने में कोई अड़चन न हो। इसी प्रकार इसके आगे के सन् के नम्बर निकालने का चक्र बना सकते हो। केवल लीप वर्ष का ध्यान रखना। यदि लीप वर्ष है तो आगे नम्बर के नीचे खाली ढेरें का चिह्न लगा कर उसके आगे के नम्बर के नीचे वह लीप वर्ष लिखना। इस चक्र के देखने से ही सब समझ में आ जायगा। सन् १८०० में ४०० का भाग नहीं गया तो यह लीप वर्ष नहीं माना गया, क्योंकि पूरी सदी में ४०० का भाग पूरा-पूरा लगने से लीप वर्ष माना जाता है। परन्तु साधारण वर्ष में पूरा ४ का भाग लग जाय तब लीप वर्ष माना जाता है।

मुसलमानी सन् हिजरी के महोनों की तारीख जानना—

मुसलमानी महीना

सन् का नम्बर

मोहर्रम १। सव्वाल १०	१	२	३	४	५	६	७
जमादिउल अब्बल ५	२	३	४	५	६	७	१
रविउल आरिवर ४। रमजान ६	३	४	५	६	७	१	२
सावान ८	४	५	६	७	१	२	३
रविउल अब्बल ३। जिलहिज १२	५	६	७	१	२	३	४
सफर २। रज्जब ७	६	७	१	२	३	४	५
जमादिउल आरिवर ६। जोकैद ११	७	१	२	३	४	५	६

१	८	१५	२२	२९	शनि.	रवि.	सोम.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.
२	९	१६	२३	३०	रवि	सोम.	मंगल	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.
३	१०	१७	२४	—	सोम.	मंगल	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि	रवि
४	११	१८	२५	—	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि.	रवि	सोम.
५	१२	१९	२६	—	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	रवि.	सोम	मंगल.
६	१३	२०	२७	—	गुरु	शुक्र.	शनि.	रवि.	सोम	मंगल.	बुध
७	१४	२१	२८	—	शुक्र.	शनि.	रवि.	सोम.	मंगल.	बुध.	गुरु.

जंत्री देखने की रीति—पहिले नीचे बताई विधि से हिजरी सन् का नम्बर खोज लो। वह नम्बर वर्ष भर काम देगा। फिर इष्ट मास के सामने की पक्ति में प्राप्त सन् का नम्बर जहाँ मिले उस नम्बर के नीचे जिस दिन की खड़ी पक्ति मिले उसके सामने वाई ओर दो हुई तारीख खोज लो या इष्ट तारीख का दिन उसी प्राप्त दिन की पक्ति से खोज लो।

जैसे हिजरी सन् १३७३ के दूसरे महीने सफर की पहिली तारीख किस दिन होगी जानना है। नीचे बताई रीति से हिजरी १३७३ का नम्बर खोजा तो ६ मिला। अब

सफर महीने के आगे सन् का नम्बर ६ खोजा, वह पहिली पंक्ति मे मिला । उस ६ के नीचे दिन की पंक्ति जो शनिवार से आरम्भ होती है, ली । शनिवार के आगे बाईं ओर १ तारीख दी है । तो प्रगट हुआ कि शनिवार को मुसलमानी महीना सफर की पहिली तारीख होगी ।*

हिजरी सन् का नम्बर निकालने का चक्र

हिजरी सन् का नम्बर							सदी
२	६	४	१	६	३	७	५ अ
६	३	७	५	२	६	४	१ ब
०	१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७
८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५
९६	९७	९८	९९	०	०	०	-

हिजरी सदी के शेष वर्ष

सन् का नम्बर निकालने की रीति—

हिजरी } = शेष १०० या ३०० = अ सदी
सदी } - ४०० = शेष २०० या ० = ब सदी

हिजरी के इकाई दहाई के अंक = शेष वर्ष ।

हिजरी के इकाई दहाई के अंक छोड कर पूरी सदी लो, उसमें ४०० का भाग दो । यदि शेष १०० या ३०० बचे तो = अ = सदी होगी । यदि शेष २०० या ० बचे तो = ब = सदी होगी ।

वह हिजरी अ या ब जिस प्रकार की सदी हो, उस पंक्ति में और शेष वर्ष के ऊपर जो सन् का नम्बर मिले वह इष्ट सन् का नम्बर होगा ।

* टिप्पणी—इसमें तिथि के कारण कभी-कभी एक दिन का अन्तर पड जाता है ।

जैसे हिजरी सन् १३७३ में इकाई दहाई के अंक ७३ शेष वर्ष हुए। इनको छोड़ कर सदी १३०० ली ÷ ४०० = शेष १०० = अ = सदी हुई। अब शेष वर्ष ७३ के ऊपर और अंक में खोजा तो ६ मिला। यही १३७३ के हिजरी सन् का नम्बर हुआ।

हिजरी सन् के नम्बर खोजने का अन्य प्रकार का चक्र ।

हिजरी सन् का नम्बर	हिजरी की सदी के शेष वर्ष
२ ६ २ ६ ० ८ १६ २४ ३२ ४० ४८ ५६ ६४ ७२ ८० ८८ ९६	
६ ३ ६ ३ १ ९ १७ २५ ३३ ४१ ४९ ५७ ६५ ७३ ८१ ८९ ९७	
४ ७ ४ ७ २ १० १८ २६ ३४ ४२ ५० ५८ ६६ ७४ ८२ ९० ९८	
४ ७ ४ ७ २ १० १८ २६ ३४ ४२ ५० ५८ ६६ ७४ ८२ ९० ९८	
६ ० ६ २ ४ १२ २० २८ ३६ ४४ ५२ ६० ६८ ७६ ८४ ९२ ०	
२ ३ ६ ५ १३ २१ २९ ३७ ४५ ५३ ६१ ६९ ७७ ८५ ९३ ०	
० ४ ७ ४ ६ १४ २२ ३० ३८ ४६ ५४ ६२ ७० ७८ ८६ ९४ ०	
५ १ ५ १ ७ १५ २३ ३१ ३९ ४७ ५५ ६३ ७१ ७९ ८७ ९५ ०	

सदी अ व ख ग हिजरी का नम्बर खोजने की रीति —
 १०० २०० ३०० ४०० कोई हिजरी के इकाई दहाई के अंक
 ५०० ६०० ०० ८०० छोड़कर पूरी सदी ली। सदी के ऊपर और
 ९०० १००० ११०० १२०० शेष वर्ष (हिजरी के इकाई दहाई के अंक)
 १३०० १४०० १५०० १६०० के सामने जो नम्बर मिले वही सन् का नम्बर
 १७०० १८०० १९०० २००० होगा। जैसे हिजरी १३७३ की सदी १३००
 २१०० २२०० २३०० २४०० हुई और शेष वर्ष ७३ हुए। अब १३००
 २५०० २६०० २७०० २८०० सदी के ऊपर देखो यह सदी अ प्रकार की
 २९०० ३००० ३१०० ३२०० है। इसके ऊपर और शेष वर्ष ७३ के सामने
 ३६०० ३४०० ३५०० ३६०० बाईं ओर देखो तो ६ मिला। यही ६ सन्
 ३७०० ३८०० ३९०० ४००० का नम्बर हिजरी १३७३ का हुआ।
 ४१०० ४२०० ४३०० ४४०० हिजरी १२९९ = १२८० सदी के ऊपर
 ४५०० ४६०० ४७०० ४८०० और ९९ के सामने बाईं ओर देखा ५ मिला
 ४९०० ५००० ० ० यही ५ सन् का नम्बर हुआ। यह सदी ब
 प्रकार की है। वस इस प्रकार प्राप्त सन् के नम्बर से इष्ट मास की तारीख ऊपर
 बताई रीति से खोज लो। पहले बताई हुई सन् के नम्बर खोजने की रीति और
 यह रीति एक ही है। यहाँ उदाहरण के लिए ५००० हिजरी तक देकर सन् का
 नम्बर खोजना बताया गया है।

राष्ट्रीय जंत्री National calender (Gragarion calender)

अभी तक सन् ईसवी का दिनाक प्रचलित था, परन्तु यह राष्ट्रीय नहीं है, इस विचार से भारत सरकार ने दिनाक २२ मार्च ईसवी सन् १९५७ से राष्ट्रीय जंत्री प्रचलित की है ।

दिनाक २१ मार्च को बसत सम्पात Vernal equinox होता है, जब दिन रात बराबर होती है और सूर्य ६ बजे उदय होता है । उस दिन राष्ट्रीय वर्ष का अन्त समझ कर दूसरे दिन २२ मार्च से राष्ट्रीय चैत्र मास आरम्भ होता है । उस दिन राष्ट्रीय चैत्र की १ तिथि (दिनाक) साका १८७३ से यह राष्ट्रीय वर्ष की तिथि आरम्भ होती है ।

यह राष्ट्रीय दिनाक अर्द्ध रात्रि से अर्द्ध रात्रि तक ईसवी सन् के दिनाक के अनुसार ही माना जायगा । राष्ट्रीय वर्ष दिन ३६५ घंटा ५ मिनट ४८ स का माना गया है । लीप इयर (प्लुत वर्ष) में हर चौथे वर्ष (सन् ईसवी के अनुसार ही) चैत्र मास ३१ दिन का होगा । साधारण वर्ष में चैत्र ३० दिन का ही होगा । आगे वैशाख से भाद्रपद तक ५ महीने ३१ दिन के शेष ६ महीने ३० दिन के होंगे ।

आरम्भ का			आरम्भ का		
राष्ट्रीय मास	दिन	अंग्रेजी दिनाक	राष्ट्रीय मास	दिन	अंग्रेजी दिनाक
लीप चैत्र	३१	२२ मार्च से	आश्विन	३०	२३ सितम्बर से
साधारण चैत्र	३०	,, ,,	कार्तिक	३०	२३ अक्टूबर से
वैशाख	३१	२१ अप्रैल से	मार्ग शीर्ष	३०	२२ नवम्बर से
ज्येष्ठ	३१	२२ मई से	पौष	३०	२२ दिसम्बर से
आषाढ	३१	२२ जून से	माघ	३०	२१ जनवरी से
श्रावण	३१	२३ जुलाई से	फाल्गुन	३०	२० फरवरी से
भाद्रपद	३१	२३ अगस्त से			

लीप वर्ष में राष्ट्रीय वैशाख मास और उसके आगे के मास आरम्भ होने की तारीख में एक दिन अधिक बढ़ जायगा । परन्तु फरवरी २९ दिन की होने से अन्त में फाल्गुन की ३० तिथि दिनाक २१ मार्च को ही पड जायगी जिससे २२ मार्च से फिर चैत्र आरम्भ होगा ।

सरकारी पत्र व्यवहार में राष्ट्रीय दिनाक के अतिरिक्त सन् ईसवी का दिनाक भी दिया जाता है ।

पंचांग में दी हुई तिथि और राष्ट्रीय दिनाक (तिथि) में अन्तर है । आजकल पंचांगों में तिथि और अंग्रेजी दिनाक के अतिरिक्त राष्ट्रीय दिनाक भी दिया रहता है ।

अध्याय ३८

दिनमान जानना

यहाँ स्थूल रूप से दिनमान जानने की रीति बताई जाती है । सूक्ष्म रूप से दिनमान जानना गणित खंड में बताया गया है ।

अयन संक्राति से (अर्थात् सायन कर्क और सायन मकर संक्राति से) गत दिन कितने हुए निकालो । गत दिन को ३ से गुणा कर १५३० जोड़ो और ६० का भाग दो । जो लब्धि मिले वह कर्क संक्राति की गणना करने में रात्रिमान और मकर संक्राति से गणना करने पर दिन मान निकलेगा ।

जैसे सम्वत् २००० में २२ दिसम्बर की रात को सायन मकर की संक्राति हुई थी । २३ मई का दिनमान जानना है तो दिसम्बर के गोप दिन ३ - २२ = ९ + जनवरी ३१ के, + फरवरी २८ के, + मार्च ३१ के, + अप्रैल ३० के + मई २३ के = सर्व दिन ५२ १५० दिन $\times ६० = ४५६ + १५३० = १९८६ - ६० = ३३$ घ. ६ पल ६०) १९८६ (३३ घड़ी दिनमान ३३ घ ६ प हुआ ।

१८०

१८६

१८०

६ पल

रात्रिमान = (६० - दिनमान) = ६० - (३३ - ६) = २५ घ ५४ प रात्रिमान

२१ दिसम्बर को सायन मकर संक्राति और २१ जून को सायन कर्क संक्राति प्राय होती है ।

दिनमान से सूर्योदय जानना पचाग देखने के प्रकरण में बताया चुके हैं ।

चन्द्रोदय अस्त ज्ञान (स्थूल रूप से)

चन्द्रोदय—पूर्णिमा के उपरात, प्रतिदिन २३ घड़ी = ५४ मिनट के उपरात चन्द्रोदय होता है । अर्थात् कृष्ण पक्ष आरम्भ होने पर इतनी देर बाद प्रतिदिन चन्द्र उदय होगा । तिथि में २३ घड़ी का गुणा कर जान सकते हो कि उस तिथि में (कृष्ण पक्ष में) कितनी घड़ी उपरान्त चन्द्रोदय होगा ।

यदि शुक्ल पक्ष है तो उतने घड़ी पल या (घण्टा मिनट) गये पर चन्द्र अस्त होगा । यह बहुत मोटा हिसाब है । दिनमान के अनुसार इसमें अन्तर पड़ता है ।

चन्द्रोदय का समय जानना—

रात्रिमान को वर्तमान तिथि से गुणा करो। कृष्ण पक्ष हो तो गुणनफल में २ घटा दो। शुक्ल पक्ष हो तो गुणनफल में २ जोड़ दो। उपरांत १५ का भाग दो, लब्धि चन्द्रोदय की घड़ी निकलेगी। १५ का भाग देने से जो बचे उसमें ६० का गुणा कर १५ का भाग देने से पल निकलता है।

जैसे ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी को दिनमान ३३ घ ६ प. है तो रात्रिमान २६ घण्टा ५४ प हुआ।

$$\begin{array}{rcl}
 \text{(रात्रिमान तिथि)} & \text{कृष्ण पक्ष घ. प.} & \text{घ प. घ प.} \\
 (२६-५४ \times ४) - २ & \text{होने में (१०७-३६) - २} & १०५ - २६ ७ - २ \\
 \hline
 & = & = \\
 & \text{१५} & \text{१५} \quad \text{१५} \\
 \text{रात्रिमान २६ घ. ५४ प} & & = \text{सूर्यास्त होने के ७ घ. २ प. होने} \\
 & & \text{के उपरांत चन्द्रोदय होगा।} \\
 & \text{X ४} & \\
 & १०७ - ३६ & \\
 & = २ & \text{कृष्ण पक्ष होने से घटाया।} \\
 १५) १०५ - ३६ (७ घड़ी & & \\
 \underline{१०५} & & \\
 ० & & \\
 १५^{\circ}) ३६ (२ पल & & \\
 \underline{३०} & & \\
 ६ & &
 \end{array}$$

अस्त जानना—

पौष शुक्ल ७ दिनमान २६-३० रात्रिमान ३३-३० को चन्द्र के अस्त का समय जानना है।

$$\begin{array}{rcl}
 \text{रात्रिमान ३३-३०} & १५) २३६-३० (१५ & = १५ घ. ४६ प रात्रि गये \\
 \text{X ७ तिथि} & १५ & \text{उपरांत} \\
 \hline
 २३४-३० & ८६ & \\
 + २०० शुक्ल पक्ष & ७५ & \\
 \hline
 २३६-० & \text{होने से १५५६०} & \\
 & ६६० & \\
 & + ३० & \\
 \hline
 १५) ६९० (४६ & & \\
 \underline{६०} & & \\
 ६० & \text{पल} & \\
 ६० & &
 \end{array}$$

तारा देखकर रात्रिमन जानना—

(१) सूर्य नक्षत्र से, सिर के ऊपर जो नक्षत्र हो उस तक गिनो, गिनने से जो सख्या आवे उसमें ७ घटा कर २० का गुणा करना और ९ का भाग देना तो जो अंक शेष रहे वह गत रात्रि स्पष्ट होगी ।

(२) या सूर्य नक्षत्र से, सिर के ऊपर जो नक्षत्र हो उस तक गिनने में जो सख्या आवे उसमें ७ घटाकर २ का गुणाकर २ घटा दो तो रात्रि स्पष्ट होगी ।

पूर्वाषाढा, अनुराधा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती और विशाखा सिर के ऊपर हो तो अष्टम में उदय होता है । मृगशिर और मूल नक्षत्र में हो तो नवम में उदय होता है और जब और कोई नक्षत्र सिर के ऊपर हो तो अष्टम में उदय होता है । सूर्य नक्षत्र जो होता है वह सूर्योदय के साथ उदय होता है और सूर्य अस्त के समय वही नक्षत्र अस्त स्थान पर आ जाता है । इन कारण सूर्य नक्षत्र में सिर के ऊपर तक जो नक्षत्र हो उनको यहाँ गिनना बनाया है और सिर के नक्षत्र से पूर्व की ओर गिनो तो ऊपर बताये अनुसार अष्टम या नवम नक्षत्र उदय स्थान में रहेगा ।

मान लो सूर्य मूल नक्षत्र पर है और रात्रि को देखा अश्विनी नक्षत्र सिर पर है । मूल ने अश्विनी तक गिना तो १० नक्षत्र हुए । इनमें ७ घटा कर २० का गुणा कर ९ का भाग दिया ।

$(१० - ७) \times २० \div ९ = (१ \times २०) - ६ = ६० - ६ = ५४ = ६$ घड़ी ४० पल इतनी रात्रि गत हुई ऐसा जानना ।

दिनमान में गत रात्रि जोड़ने में उस समय का इष्ट काल होगा, जैसे उस दिन २६-४ दिनमान में ६-८० गत रात्रि जोड़ा तो ३२-४४ इष्ट काल हुआ ।

द्वन्द्वी रीति में सूर्य नक्षत्र से सिर के ऊपर का नक्षत्र अश्विनी तक १० हुए । इसमें ७ घटाये ३ बचे, २ से गुणा किया=६ हुए । इसमें से २ घटाये ४ घड़ी रहे । इन रीति में कुछ अनर पट जाता है ।

सिर पर नक्षत्र अश्विनी है इससे आठवाँ नक्षत्र पुष्य हुआ । इस कारण इस समय पुष्य नक्षत्र या कर्क रात्रि उदय हो रही है अर्थात् कर्क लग्न होगी ।

रात्रि का समय जानना—

पहिले देखो सिर पर कौन तारा है और उस तारे का क्या विपुवाश है । नाक्षत्र काल से १ घटा कम या अधिक जिस तारे का विपुवाश है वह तारा उस रात्रि को विलकुल नहीं दिखेगा । जिस तारे का विपुवाश ६ घटा अधिक हो वह तारा सूर्य अस्त होने के समय सूर्य के ६ घटा आगे होने से सिर पर उस समय होगा । उससे अधिक १२ घटा विपुवाश जिस तारे का है वह रात्रि को और कभी सिर पर आयेगा ।

जो तारा सिर पर दिखे उसका विषुवाश आगे दिये हुए चक्र में से देख कर लिख लो । उसमें से उस दिन का नाक्षत्र काल घटा दी । जो घंटा मिनट बचे उतने घंटा मिनट आगे वह तारा मध्यम रवि के आगे है ऐसा समझना । अर्थात् उतने बजे होंगे समझना । क्योंकि मध्यम रवि १२ बजे सिर पर आता है और इसके उतने घंटा मिनट आगे वह तारा है । इस कारण समझ लेना कि उतने बजे होंगे ।

जैसे १ जनवरी को रात्रि में यह जानना है कि घड़ी में क्या बजा होगा । ५ जनवरी को दोपहर को मध्यम रवि का विषुवाश १६ घण्टा है । जैसा पहिले चक्र में दे चुके हैं अपने को १ जनवरी की रात्रि को जानना है । (ता० ५-१ ता०)=४ अंतर दिन । इसमें दोपहर से रात तक $\frac{3}{4}$ दिन घटाया तो= $\frac{3}{4}$ हुए । अर्थात् ४ दिन से आधा दिन इस कारण घटाया कि अपना समय ५ ता० के पहिले का है । $\frac{3}{4}$ दिन $\times$ ४ मिनट गति=० घ० १४ मि० ता० ५ को १९ घण्टा विषुवाश था । इसमें से ०-१४ मि० घटा दिये तो शेष १८ घ० ४६ मि० बचे—यह उस दिन का नाक्षत्र काल या मध्यम रवि का विषुवाश हुआ ।

मान लो उस दिन सिर पर अश्विनी नक्षत्र है । अश्विनी का विषुवाश, चक्र में १ घं० ४६ मि० दिया है । इसमें से नाक्षत्रकाल १८ घं० ४६ मि० घटाया तो नहीं घं० मि० घटता तो २४ घण्टा जोड़ कर घटाया तो शेष ७ घ० ३ मि० १-४६ रहे । अर्थात् १२ बजे दोपहर को जब मध्यम रवि मध्याह्न पर —१८-४६ था उससे ७ घ० ३ मि० आगे यह तारा है अर्थात् ७ घं० ३ मि० शेष ७-३ रात के बजे है ।

समय देखते समय सिर के ऊपर कोई पहिचान का तारा न मिले तो कुछ समय ठहरो, जब कोई पहिचान का तारा सिर पर आवे तो उससे गणित कर अपनी घड़ी मिला लो ।

ऊपर के उदाहरण में नाक्षत्रकाल १८-४६ आया है । यदि इससे १ घंटा कम या अधिक जिस तारा का नाक्षत्र काल हो अर्थात् १७-४६ या १९-४६ हो तो वह तारा इस रात को विलकुल नहीं दिखेगा । जैसे १ जनवरी को पूर्वाषाढा उत्तराषाढा और श्रवण नहीं दिखेंगे, क्योंकि जनवरी में मकर संप्राप्ति होती है तो घन और मकर के नक्षत्र नहीं दिखेंगे । जिस तारे का विषुवाश इससे ६ घंटा आगे हो अर्थात् (१८-४६)+६=० घं० ४६ मि० हो तो वह तारा सूर्यास्त के समय ६ घ० आगे होगा जैसे उ० भाद्रपद नक्षत्र, उससे १२ घण्टा अधिक हो (०-४६)+१२=१२-४६ तो विषुवाश का तारा रात्रि को कभी सिर पर आवेगा जैसे हस्त ।

तारों का होरात्मक विषुवांश

इनमें स्थिति के अनुसार बहुत थोड़ा अन्तर पड़ता है, क्योंकि प्रतिवर्ष इनकी गति ३-४ सेकण्ड के लगभग है ।

नक्षत्र	घं०	मि०	से०	नक्षत्र	घं०	मि०	से०	नक्षत्र	घं०	मि०	से०
१ अश्विनी	१	४६	२६.४	११ पूर्वा फाल्गुनी	११	६	१५.४	२१ उत्तराषाढा	१८	३६	४३.३
२ भरणी	२	४४	२६.६	१२ उत्तराफाल्गुनी	११	४४	१२.६	२२ अभि०	१८	३३	४३.३
३ कृत्तिका	३	४१	५०.१	१३ हस्त	१२	२४	५६.६	२३ श्रवण	१६	४६	८.६
४ रोहिणी	४	३०	२८.१	१४ चित्रा	१३	२०	११.२	२४ धनि०	२०	३५	१३.५
५ मृग०	५	२६	५४.२	१५ स्वाती	१४	११	१६.७	२५ शत०	२२	४७	३६.५
६ आर्द्रा	६	३२	१३.५	१६ विशाखा	१४	५५	३७.३	२६ पूर्वा भाद्रपद	२३	००	१७
७ पुनर्वसु	७	३६	३०.३	१७ अनुराधा	१५	५४	४२.८	२७ उत्तरा भाद्रपद	०	८	२०.६
८ पुष्य	८	३६	१७.६	१८ ज्येष्ठा	१६	२३	३४.८	२८ रेवती	१	८	४६.०
९ आश्लेया	८	५०	२२.४	१९ मूल	१७	२७	६.४		१	२५	१२.२
१० मघा	१०	३	१८.८	२० पूर्वाषाढा	१८	२२	६.५				

स्थूल रीति से छाया से दिन का इष्ट जानना—

परम दिन जो २१ जून को होता है वह लेना । पहिले बता चुके हैं कि किस अक्षांश पर कितना परम दिन (बड़े से बड़ा दिन) होता है ।

(१) (परमदिन—अपना दिनमान) $\times \frac{9}{5} = (\text{अ}) = \text{दिन मध्य छाया (घड़ी पल मे) ।}$

अपना दिनमान ५६

(१२ अंगुल शकु की छाया)—(अ=दिन मध्य छाया) + १२ अंगुल शकु=दिन की गत या गम्य घटी पल अर्थात् दोपहर के पहिले इतना दिन चढ़ा या दोपहर के बाद का इष्ट है तो इतना दिन शेष रहा, जानना ।

गत = इतने घड़ी पल बीत गया ।

गम्य= " " " " बीतने को है ।

(२) दूसरा प्रकार

$$१२१ \div \left(\text{इष्ट छाया का पैर का नाप} + ६ \right) = \text{लब्धि घड़ी पल (दिन की गत, गम्य घटी पल)}$$

(३) व=मेप से तुला संक्राति तक=१ घटाना तीसरा प्रकार—

$$\text{तुला व मीन " में=३ " } १०५ \div [(\text{छाया नाप} + ७) - व]$$

$$\text{वृश्चिक व कुंभ " मे=४ " } = \text{गत गम्य घटी}$$

$$\text{घन व मकर " में=५ " }$$

गत दिन = दिनार्द्ध के पूर्व में इतने घड़ी पल दिन चढ़ा ।

गम्य=दिन के उत्तरार्द्ध में इतने घड़ी पल शेष रहा ।

उदाहरण—

(१) मान लो अपना अक्षांश २३ अंश है । यहाँ का परम दिन १३ घं० २० मि० = ३३ घ० २० पल का होता है जैसा पहिले समझा चुके हैं ।

अपने स्थान का परम दिन

अन्तर ७ — १७ × ५९ अ=दिन

३३ घड़ी २० पल है ।

मध्य छाया

इष्ट दिन का दिनमान

७ — १७=१० घ० ११ प०

(मान लो) २६ — १७ है

× ७

अन्तर ७ १७

५)५०-५९(१० घड़ी

अब १ शंकु (सलाका) १२

५०

अंगुल का लिया, उसको सीधा खड़ा

०

कर छाया नापी तो २५ अंगुल

५)५९(११ पल

छाया निकली ।

५

९

५

४

शंकु छाया २५ अंश-०

दिनमान

—दिन मध्य छाया १०-११

२६-१७ × ६ १५७ घ. ४२ प. ९४६२ पल

अन्तर (शेष) = १४-४९

योग २६-४९ २९-४९ १६०-९ पल

+ शंकु नाप १२-०

= ५ घ. ५२ प. दिन शेष रहा

योग २६-४९

मध्याह्न के बाद होने के कारण

(२) दूसरी रीति

$$\begin{aligned} & १२१ \div (छाया + ६) \\ & = १२१ \div (१४ छाया + ६) \\ & = १२१ \div २० = ६ घ ३ प. \\ & = ६ घ. ३ प. दिन गोप रहा \end{aligned}$$

मान लो इष्ट काल में अपनी छाया को अपने पैर से नापा तो, नाप में १४ पैर निकली। यह छाया मध्याह्न के उपरांत की है।
२०)१२१(६ घड़ी

$$\begin{array}{r} १२० \\ \underline{१ \times ६०} \\ २०)६०(३ पल \\ \underline{६०} \end{array}$$

(३) तीसरी रीति

$$\begin{aligned} & १०५ \div [(छाया + ७) - व] \\ & = १०५ \div [(१४ छाया + ७) - ५] \end{aligned}$$

मान लो छाया का नाप वही १४ पाव है और वन मंक्राति होने से वन के ५ घटाना पड़ेगा तो व=५ हुआ।

$$\begin{aligned} & = १०५ \div (२१ - ५) \\ & = १०५ \div १६ ६ घ. ३३ प \\ & = ६ घ. ३३ प दिन गोप रहा। \end{aligned}$$

$$१६)१०५(६ घड़ी$$

यह नव स्थूल रीति है इसका ध्यान रहे।

$$\begin{array}{r} ६६ \\ \underline{१ \times ६०} \\ १६)५४०(३३ पल \\ \underline{४८} \\ ६० \\ \underline{४८} \\ १२ \end{array}$$

अध्याय ३६

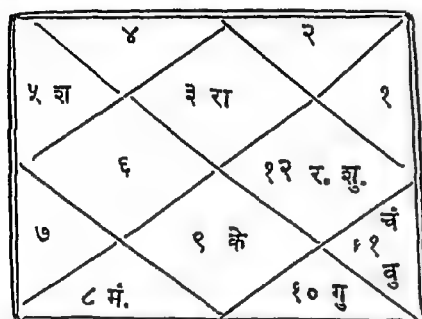
केवल कुंडली पर से जन्मसमय मास-पक्ष आदि का ज्ञान

केवल कुंडलीचक्र किसी का देख कर उस जातक की आयु, जन्म मास, अयन, ऋतु, पक्ष, जन्म तिथि, नक्षत्र, योग, करण, जन्म दिन में या रात में हुआ, जन्म का समय आदि स्थूल रूप से जान सकते हो। इन सब को जानने की रीति पृथक् २ समझाते हैं।

(१) वर्ष ज्ञान—

कुंडली में शनि की राशि और वर्तमान सम्वत् में शनि की राशि देखो। शनि २॥ वर्ष में एक राशि पूरी करता है। कुण्डली की शनि की राशि से शनि की वर्तमान राशि

तक गिन कर २॥ से गुणा करो तो गत आयु आयगी । वर्तमान सम्बत् में वह संख्य घटा दो तो लगभग जन्म का सम्बत् निकल आवेगा । शनि लगभग ३० वर्ष में १२ राशि घूम लेता है । इस के भीतर की आयु इस से प्रगट हो जायगी । यदि जातक देखने में ३० से अधिक आयु का जान पड़े तो शनि के फेरे के अनुसार ३०-३० वर्ष जोड़ते जाय तो आयु निकल आयगी । इस कारण पहिले देखकर अनुमान लगा लेना चाहिए कि कितनी आयु होगी और शनि के कितने फेरे हो गये होंगे । यदि जातक पास नहीं है तो पूछ सकते हैं कि जातक वाल, युवा, अर्धेड या वृद्ध है तब जन्म समय बताना ।



इस कुंडली में शनि सिंह का है । सम्बत् २००० में वृष का शनि है । सिंह के आगे कन्या से वृष तक गिना ६ राशि हुई $९ \times २॥ = २२॥$ वर्ष हुए । अब इस को आयु २२॥ वर्ष या $२२॥ + ३० = ५२॥$ वर्ष, या $५२॥ + ३० = ८२॥$ वर्ष की होगी । अब जातक को देखकर आयु का अनुमान कर

बता दो । या पूछने से प्रगट हुआ कि अर्धेड से और कुछ उमर हो गई है तो ५२॥ वर्ष की आयु होगी । इसे इष्ट सम्बत् में घटाया (सम्बत् २०००-५२३=१९४७ ३/४ आया) तो कह सकते हैं कि सम्बत् १९४७ के लगभग का जन्म होगा । इस में एकाध वर्ष का अन्तर पड़ सकता है ।

इसी प्रकार कुंडली में गुरु की राशि से इस समय के गुरु की राशि तक गिन कर आयु जान सकते हैं । गुरु १२ वर्ष में पूरा भ्रमण (१२ राशि) घूम लेता है । १ महीने में १ राशि घूमता है ।

कुंडली में गुरु मकर का था । सम्बत् २००० में मिथुन का गुरु है । मकर के आगे कुम्भ से गिना मिथुन तक ५ राशियाँ हुई=५ वर्ष । शनि के साथ ही साथ इस का विचार करना चाहिए । जैसे शनि से तो ५०॥ वर्ष की आयु निकली थी तो इस में गुरु के ४ फेरे हो चुके । $४ आवृत्ति \times १२ वर्ष = ४८ वर्ष + ५ वर्ष = ५३ वर्ष$ वर्तमान सम्बत् तक आया । सम्बत् २००० सम्बत् १९४७ का जन्म निकालता है । अब इस में भी इन के अंशों — ५३ का विचार करो तो और भी ठीक हिसाब आयु का जम जाता है ।

१९४७ जन्म के गुरु १४ अंश पर है अर्थात् आधी राशि भुक्त हो चुकी है तो ५३ में आधा वर्ष घटा दिया तो वही ५२॥ वर्ष आ जाते हैं ।

इसी के साथ २ राहु का भी विचार करना चाहिए । राहु सदा वक्री रहता है और १८ वर्ष में पूरा भ्रमण घूम लेता है । कुंडली के राहु से वर्तमान राहु तक उल्टे

क्रम में गिनो, जो मख्या हो उसे १॥ में गुणा करो, क्योंकि राहु १॥ वर्ष में एक राशि पार करता है । जो गुणन फल आवे उस पर में आयु विचारना ।

जैसे कुडली में राहु मिथुन का है । सम्बत् २००० में कर्क का है । मिथुन से उल्लेख क्रम में आगे वृष फिर मेष आदि गिना तो ११ राशि हुई । $११ \times १॥ = १६\frac{१}{२}$ वर्ष + ३६ वर्ष (राहु के २ फेरा) = ५२॥ वर्ष आयु । यदि कुडली में ग्रह स्पष्ट दिये हो तो इन ग्रह के अंगों पर में ठीक विचार करने पर आयु का हिसाब ठीक जम सकता है ।

जिम मन्वत् की आयु कुण्डली देगकर अनुमान करने में निकले उस वर्ष का पंचांग (यदि पुराने पंचांग पाव हो तो) या एकाव्य वर्ष आगे पीछे का पंचांग देखो । जिसमें ग्रहों की ठीक स्थिति कुण्डली के अनुसार मिले ठीक उसी समय का जन्म जानना ।

(२) कुण्डली से अयन जानना

अयन—मकर के सूर्य के कुछ पहिले उत्तरायण और कर्क के सूर्य के कुछ पहिले दक्षिणायन होना है । कुण्डली में जिम राशि का सूर्य हो उसमें जन्म समय का अयन जानना

जैसे कुण्डली में मीन का सूर्य है तो उत्तरायण जानना और उस जातक का जन्म उत्तरायण में हुआ है कहना ।

(३) जन्म की ऋतु और मास जानना

जन्म मान—सूर्य की राशि में चंद्रमास का अनुमान इस प्रकार करना

सूर्य की

राशि मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चि धन मकर कुम्भ मीन
मास वैशाख ज्येष्ठ असाढ़ श्रावण भादो कुभार कार्तिक अगहन पूस माघ फागुन चैत

जैसे मीन का सूर्य कुण्डली में है तो चैत्र में जन्म हुआ होगा ।

१) ऋतु

चन्द्र मास के अनुसार इस प्रकार ऋतु होती है—

ऋतु वसंत १	ग्रीष्म २	वर्षा ३	शरद ४	हेमंत ५	शिशिर ६
मास चैत्र	जेठ	माघ	कुम्भार	अगहन	माघ
वैशाख	असाढ़	भादों	कार्तिक	पूस	फागुन

सूर्य मीन का होने में चैत्र मास हुआ । चैत्र में वसन्त ऋतु होती है । इस कारण जातक का जन्म वसन्त ऋतु में हुआ है कहना ।

(५) जन्म का पक्ष जानना

कुण्डली में ७ राशि के भीतर चन्द्र हो तो शुक्ल पक्ष और ७ राशि के बाहर चन्द्र हो तो कृष्ण पक्ष जानना ।

जैसे ऊपर कुण्डली में मीन का सूर्य है और चन्द्र कुम्भ का है । मीन से गिना तो ७ राशि कन्या हुई । इसके आगे कुम्भ का चन्द्र है, इससे जान पड़ा कि सूर्य से चन्द्र ७ राशि के बाहर है, इस कारण जातक का जन्म कृष्ण पक्ष का होगा कहना ।

(६) जन्म की तिथि जानना

कुण्डली में जहाँ सूर्य हो वहाँ अमावस्या जानो, क्योंकि अमावस्या को सूर्य और चन्द्र एकत्र रहते हैं । उसके आगे जैसे जैसे तिथि बढ़ती है, चन्द्रमा आगे बढ़ते जाता है । इस कारण कुण्डली में देखो चन्द्र कहाँ है और सूर्य से कितने घर के अन्तर चन्द्र है । एक कोठे में (१ राशि में) २॥ तिथि के हिसाब से तिथि होती है । क्योंकि मोटे हिसाब से चन्द्र ३० दिन में १२ राशि घूमता है तो १ राशि में २॥ दिन पड़ा । १ दिन में १ तिथि होती है इस कारण १ राशि में २॥ तिथि होती है ।

यहाँ पर कुण्डली में मीन का सूर्य है और चन्द्र कुम्भ का है । दोनों के बीच ११ राशि का अन्तर हुआ । $११ \times २॥ = २७॥$ तिथियाँ हुई । अमावस्या को ३० तिथि कहते हैं । $(२७॥ - १५) =$ शेष १२॥ तिथि । २७॥ में पूर्णिमा तक की १५ तिथि घटा दिया तो शेष १२॥ तिथि कृष्ण पक्ष की निकल आई । अर्थात् कृष्ण पक्ष की १३ तिथि का जन्म होगा ।

यदि चन्द्र और सूर्य के अंशों का विचार किया जाय तो और भी ठीक तिथि निकल आती है । यहाँ सूर्य मीन के ५° में है (११ रा- ५°) और चन्द्र कुम्भ के ३° (१० रा- ३°) पर है अर्थात् लगभग बराबर अंश दोनों के है । जब सूर्य और चन्द्र के बीच १२° का अन्तर पड़ता है तो १ तिथि होती है । यहाँ दोनों का अन्तर निकला ।

सूर्य ११ रा- ५ अंश = शेष १ रा- २ अंश

— चन्द्र $१०-३ = ३२$ अंश $\div १२$ अंश

शेष = $१-२ = २॥$ लगभग तिथि

हुई अर्थात् २॥ तिथि चन्द्र और चलता तो अमावस्या हो जाती । इस कारण अमावस होने को २॥ तिथि शेष है । पूरी १५ तिथि से २॥ घटाये तो १२॥ तिथि हुई । अर्थात् १२ तिथि पूरी हो चुकी है तेरहवी तिथि वर्तमान है तो जन्म कृष्ण पक्ष की १३ तिथि का हुआ ।

चन्द्र में से सूर्य घटाने से स्पष्ट तिथि ज्ञात होती है । यहाँ चन्द्र $१०-२०-३$ अंश

चन्द्र १०-२०-३ अंश में से सूर्य ११-२०-५ अंश घटाया तो शेष १०-२०-२८
 सूर्य ११-५ अंश रहे, इसके ३२४ अंश हुए। १२ अंश की एक तिथि
 शेष १०-२८ होती है, इसमें १२ का भाग दिया तो २७ $\frac{१}{३}$ तिथि हुई।
 १२) ३२८ अंश (२७ इसमें से १५ घटाया तो कृष्ण पक्ष की १२ $\frac{१}{३}$ तिथि हुई
 २४ तिथि अर्थात् जन्म तिथि १३ हुई।

$$\begin{array}{r} २४ \\ ८५ \\ ८४ \\ \hline ४ \end{array}$$

यदि सूर्य के आगे चन्द्र ७ घर के भीतर है तो समझना अमावस्या को पार कर
 चन्द्र आगे चढ़ रहा है और अमावस्या के आगे शुक्ल पक्ष की तिथि आरम्भ हो गई
 है। सूर्य के ठीक सम्मुख नातवें घर में चन्द्र हो तो पूर्णिमा समझना। इसके आगे
 चन्द्र जाने पर कृष्ण पक्ष का आरम्भ होता है और चन्द्र जब सूर्य के पास आ जाता है
 तो अमावस्या होती है।

(७) कुण्डली से जन्म का वार जानना

कुण्डली से जो जन्म का मास जान पड़े चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गिन कर डेट गुना
 करो। गत पक्ष के दिन जोड़ कर ७ या भाग दो। जो शेष रहे उसे जन्म वर्ष के राजा से
 गिन कर जन्म का वार कहना। पहले बना चुके हैं कि चैत्र शुक्ल १ तिथि को जो वार
 होता है वही उन वर्ष का राजा कहलाता है। वर्ष के राजा का चक्र पहिले दे
 चुके हैं। जैसे जन्म चैत्र कृष्ण १३ का है जैसा ऊपर निकाल चुके हैं। चैत्र शुक्ल १ से
 फागुन कृष्ण ३० तक ११ महीने हुए। $११ \times १॥ = १६॥$ दिन+फागुन शुक्ल पक्ष के
 १५ दिन+और चैत्र कृष्ण १३ तक गत दिन १२ हुए। $१६॥ + १५ + १२ = ४३॥ - ७ =$ शेष
 $१॥$ बचा। इस वर्ष का राजा सोमवार था तो सोमवार से १॥ गिना, मंगलवार
 हुआ। जन्म दिन मंगलवार कहना।

(८) कुंडली से जन्म नक्षत्र जानना

कुण्डली में जो जन्म मास निकले कार्तिक में उस मास तक गिन कर दूना करो
 और गत पक्ष के दिन भी जोड़ कर एक और मिला दो। इसमें २७ का भाग दो, शेष
 जो बचे अश्विनी से गिन कर नक्षत्र जानना।

जैसे कुण्डली में प्रगट हुआ चैत्र का जन्म है तो गत मास फागुन हुआ। कार्तिक
 को १ गिना। इस प्रकार कार्तिक से फागुन तक गिना ५ मास हुए। $५ \times २ = १० +$ गत
 तिथि $१३ + १ = १० + १४ = २४$, अश्विनी से गिना चौबीसवा नक्षत्र शतभिषक का
 जन्म हुआ।

(६) कुण्डली से जन्म का योग जानना

पुष्य नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक गिनो और श्रवण नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनो । दोनों संख्या जोड़कर ७ का भाग दो, जो शेष बचे उसी क्रम से गिन कर योग जानना ।

सूर्य चन्द्र की राशि अंश पर से पहले बताये होडा चक्र में दिये हुए अंशों पर से इनका नक्षत्र जान सकते हो जैसा सूर्य ११-२०-५ अंश है अर्थात् मीन के ५ अंश पर है । होडाचक्र में ११-२०-३ अंश-२० अंश तक पूर्वा भाद्रपद का चौथा चरण दिया है । इष्ट सूर्य ११-२०-५ अंश है इससे जाना गया कि सूर्य पूर्वा भाद्रपद का चौथा चरण पार करके उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में गया है । उत्तरा भाद्रपद का पहिला चरण ११-२०-६ अंश ४० अंश तक होता है, इस कारण सूर्य जन्म समय उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र पर था ।

पुष्य नक्षत्र से उत्तरा भाद्रपद (सूर्य नक्षत्र) तक गिना १६ हुए । जन्म नक्षत्र (चन्द्र नक्षत्र) शतभिषक है (ऊपर निकाल चुके हैं) । श्रवण से चन्द्र नक्षत्र शतभिषक तक गिना ३ हुए । $१६+३=१९$ वा योग=साध्य योग आया । यदि योग २७ से अधिक आवे तो २७ का भाग देने पर जो शेष रहता उसे लेते । यहाँ जन्म का योग साध्य निकला ।

(१०) कुण्डली से जन्म का करण जानना

कुण्डली में जो जन्म की तिथि मिले उस तिथि तक शुक्ल प्रतिपदा से गिनो और उस संख्या में २ का गुणा कर १ घटा कर ७ का भाग दो जो शेष बचे वही करण परार्द्ध में जानना ।

स्थिर करण । शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किस्तुधन और परार्द्ध में वव, कृष्ण १४ को, परार्द्ध में शकुनि । अमावस्या के पूर्वार्द्ध में शकुनि । अमावस्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद और परार्द्ध में नाग सदा रहते हैं । यदि इनमें से कोई तिथि का जन्म हो तो इसी के अनुसार करण जानना । शेष का उपरोक्त रीति से जानना ।

जैसे कृष्ण १३ का जन्म है । शुक्ल प्रतिपदा से पूणिमा तक १५ दिन+कृष्ण पक्ष के १३ दिन । $१५+१३=०८ \times २=५६-१=५५ \div ७=$ शेष ६ । छठा करण वणिज हुआ । यह वयोदशी के परार्द्ध में हुआ । इसके पूर्वार्द्ध में इसके पहिले का अर्थात् पाचवा गर करण जानना ।

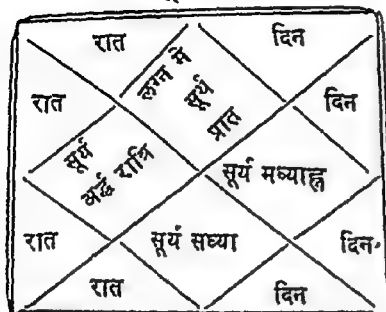
इतनी खटपट न करके पहिले जो करण चक्र दे चुके हैं उससे इष्ट तिथि का ठीक करण जान सकते हो ।

(११) दिन या रात का जन्म है कुण्डली देखकर जानना

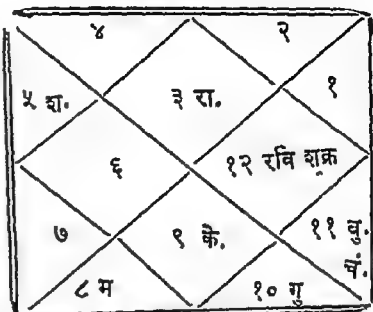
कुण्डली में जहाँ सूर्य हो वहाँ से जन्म लग्न ६ घर के भीतर हो तो दिन का जन्म कहना और सातवें स्थान में हो तो संख्या का जन्म, ८ से १२ स्थान तक लग्न हो तो

रात्रि का जन्म कहना । लग्न में सूर्य हो तो प्रातःकाल का जन्म, दशम में सूर्य हो तो दोपहर का जन्म और चतुर्थ में सूर्य हो तो अर्द्धरात्रि का जन्म कहना जैसा यहाँ सूर्य के समय चक्र में बताया गया है । लग्न कुण्डली देखा तो सूर्य दशम स्थान में है

सूर्य का समय चक्र



लग्नकुण्डली



यहाँ मे लग्न चौथे घर में है अर्थात् ६ घर के भीतर ही है, इस कारण दिन का जन्म कहना । सूर्य दशम स्थान में है जिससे प्रगट होता है कि मध्याह्नकाल का जन्म है ।

(१२) कुण्डली से जन्म समय जानना

ऊपर जो सूर्य का समय चक्र दिया उसमें केन्द्र में सूर्य रहने से जो समय होता है वतला दिया गया है । अब उनके बीच के स्थान से भी समय जानना वतलाते हैं ।

दिन रात की ६० घड़ी में सूर्य, कुण्डली में १२ राशि (लग्न के अनुसार) घूम लेता है । १ राशि में ५ घड़ी या २ घण्टा पड़ा ।

कुण्डली में सूर्य मे लग्न जितने घर दूर हो उसका ५ गुना करो तो इष्ट काल की घड़ी निकल आयगी ।

अपनी कुण्डली में सूर्य दशम भाव में है वहाँ से लग्न ३ घर अन्तर पर है । $३+५=१५$ घड़ी अपना इष्ट हुआ । अर्थात् कुण्डली से प्रगट हुआ कि जातक का जन्म लगभग १५ घड़ी इष्ट पर हुआ होगा ।

यहाँ ध्यान रहे कि १ राशि में ३०° होते हैं । ३० अंश में ५ घड़ी का अंतर पड़ता है तो ६ अंश में १ घड़ी या १ अंश में १० पल का अंतर पड़ता है । सूर्य से लग्न जितने राशि अंश आगे है देख कर इष्ट घड़ी का विचार कर लो । जैसे सूर्य ११ रा ५ अंश (मीन के ५ अंश) पर और लग्न २ रा २२ अंश (मिथुन के २२ अंश) पर है तो सूर्य को आगे २५ अंश और चलना पड़ेगा तब मीन राशि का अन्त होगा । इस कारण (२ रा २२ अंश) लग्न + (० रा २५ अंश) = ३ रा १७ अंश = यह सूर्य और

लग्न का अन्तर हुआ । ३ राशि = $(३ \times ५) = १५$ घड़ी और १७ अंश = $(१७ \times १०) = १७०$ पल = २ घ ५० प । सब मिल कर १७ घड़ी ५० पल के लगभग इष्ट हुआ । यह जन्म का इष्ट हुआ । परन्तु यह भी स्थूल मान है इसका ध्यान रहे ।

कुंडली पर से जन्म समय आदि का ज्ञान कैसे किया जाता है यह बता चुके । इसपर से जान सकते हो कि यह कुंडली चक्र कितने महत्व का है और इस कुंडली चक्र से कितनी महत्वपूर्ण बातें जानी जा सकती है । जिसके पास कुण्डली है और वह शुद्ध बनाई गई है तो उससे जन्म समय के सम्बन्ध की बहुत-सी उपयोगी बातों का ज्ञान हो सकता है । इस कारण जितनी शुद्धता पूर्वक कुंडली तैयार की जायगी उतना शुद्ध फल निकलेगा ।

यहाँ केवल प्रारम्भिक ज्ञान कराने के निमित्त ही कुंडली सम्बन्धी सम्पूर्ण बातें स्थूल रूप से बता दी गई हैं । इससे स्थूल रूप से कुंडली बनाना आ जायगा और फल विचारने का अनुभव बढ़ेगा ।

सूक्ष्म रूप से गणित द्वारा कुंडली आदि तैयार करना और तत्सम्बन्धी पूरा गणित गणित खण्ड में उदाहरण देकर समझाया गया है, जिससे इतना ज्ञान होने के उपरान्त आगे की सब बातें सरलता पूर्वक समझ में आने लगेंगी ।

अध्याय ४०

ग्रहों का बल विचार

कुण्डली में सब ग्रहों में कौन बलवान है कौन बलहीन है यह जानने की आवश्यकता पड़ती है । इस कारण ग्रहों के बल का विचार करना संक्षेप में बतलाते हैं ।

ग्रहों का बल ६ प्रकार से विचारते हैं और उन सब को मिला कर प्रत्येक ग्रह के बल का विचार करते हैं । क्योंकि बलवान ग्रह पूर्ण फल देता है । बलहीन ग्रह फल देने में असमर्थ होता है । ग्रहों का बल ६ प्रकार का है ।

(१) स्थान बल, (२) दिग्बल, (३) कालबल, (४) चेष्टा बल, (५) नैसर्गिक बल, (६) दृग् बल ।

१ स्थान बल—५ प्रकार के बल के योग से यह बल बना है ।

(१) उच्च बल, (२) सप्तवर्गी बल, (३) युग्मायुग्म बल, (४) द्रष्टा बल, (५) केन्द्रादि बल ।

(१) उच्च बल—जो ग्रह अपने उच्च में होता है वह पूर्ण बली होता है । जो अपने नीच में होता है वह शून्य बली होता है । इस के बीच में ग्रह हो तो अनुपात से बल निकालना पड़ता है ।

(२) सप्तवर्गी वल ग्रहों के गृह, होरा, द्रेष्काण आदि सप्तवर्गीवल साधन करना गणित खण्ड में बताया है । जो ग्रह अपने मित्र के घर में अपने मूल त्रिकोण या स्वगृह में होता है वह वली होता है । शत्रु के स्थान में होता है उसका वल घट जाता है ।

(३) युग्मायुग्म वल—सम राशि स्त्री सन्नक होती है । चन्द्र व शुक्र ग्रह स्त्री गृह है । स्त्री राशि में स्त्री ग्रह हो तो वलवान होता है । विपम राशि पुरुष ग्रह है, उपर्युक्त ग्रहों को छोड़ कर शेषग्रह पुरुष है । इन में नपुंसक ग्रह भी पुरुष में शामिल है । पुरुष राशि में पुरुष ग्रह वलवान होते हैं । राशि स्त्री है या पुरुष राशि गुणधर्म चक्र में दिया है । ग्रह का लिंग, ग्रह गुण धर्म चक्र में दिया है ।

(४) द्रेष्काण वल—एक राशि के ३ भाग करने से प्रत्येक भाग की द्रेष्काण संज्ञा होती है । पहिले द्रेष्काण में पुरुष ग्रह वली होता है । अन्त के द्रेष्काण में स्त्रीग्रह और मध्य के द्रेष्काण में नपुंसक ग्रह वली होता है ।

(५) केन्द्रादि वल—केन्द्र में ग्रह पूर्ण वली होता है । पणफर में मध्यम अर्थात् आधावल, आपोक्लिम में चौथाई वल होता है । केन्द्रादि भाव सज्ञा पहिले समझा चुके हैं ।

इन सब के वल का योग करने से ग्रह के स्थान सम्बन्ध से वल का पता लगता है, इन कारण इसे स्थान वल कहते हैं ।

२ दिग्गवः—यह अकेला ही है । इसमें दिशा के अनुसार ग्रहों का वल निकालते हैं । जैसे लग्न (पूर्व) में बुध और गुरु वली होते हैं । सप्तमभाव (पश्चिम) में, शनि वली होता है । चतुर्थभाव (उत्तर) में शुक्र और चन्द्र वली, दशम भाव (दक्षिण) में सूर्य वलवान होता है । इनसे सातवें घर में ये ग्रह हीनवल होते हैं । जैसे सूर्य दशम भाव अर्थात् सिर पर जब होता है तब वलवान होता है, पाताल (चतुर्थ भाव) में वलहीन होता है । बीच का वल अनुपात से निकाला जाता है । भाव की दिशाएँ पहले समझ चुके हैं ।

३ काल वल—४ प्रकार का वल मिलाकर काल वल बनता है ।

(१) नतोल्लत वल, (२) पक्ष वल, (३) दिन रात्रि त्रिभाग वल (४) वर्षादि वल ।

(१) नतोल्लत वल—चन्द्र मंगल शनि रात्रि में वली, अर्द्ध रात्रि में पूर्ण वली, सूर्य शुक्र गुरु दिन में वली, मध्याह्न में पूर्ण वली, और बुध सदा वली रहता है ।

जो मध्याह्न में पूर्ण वली होते हैं वे अर्द्ध रात्रि में वलहीन हो जाते हैं और जो अर्द्ध रात्रि में वली होते हैं वे मध्याह्न में वलहीन हो जाते हैं, इस में भी बीच के समय का वल अनुपात से (गणित द्वारा) निकाला जाता है ।

(२) पक्षबल — पापग्रह = सूर्य, भगल, शनि, कृष्णपक्ष में बली ।

शुभग्रह = चंद्र, गुरु, शुक्र, बुध, शुक्ल पक्ष में बली ।

(३) दिन रात्रि त्रिभाग बल = दिन के और रात के पृथक् २ तीन भाग करना ।

दिन के प्रथम भाग में बुध, द्वितीय में सूर्य-तृतीय में शनि बली ।

रात्रि के ,, चंद्र ,, शुक्र, ,, मंगल ,, ।

गुरु (दिन और रात्रि में) सदा बली होता है ।

इससे देखा जाता है कि दिन या रात्रि में जन्म हुआ है और दिन या रात्रि के कौन से भाग में जन्म हुआ है । जिस भाग में जन्म हुआ है उस भाग का सूचक ग्रह बली होगा । शेष ग्रह बलहीन होंगे ।

(४) वर्षादि बल — जिस होरा में किसी का जन्म हो उस होरा स्वामी का बल $\frac{1}{12}$ मिलेगा और जिस मास में जन्म हो उस मासस्वामी का बल $\frac{1}{12}$ (आषा) और वर्ष के स्वामी का बल $\frac{1}{12}$ मिलता है । इन को छोड़ कर और दूसरे ग्रहों को बल नहीं मिलता ।

(४) चेष्टा बल — उत्तरायण (१०, ११, १२, १, २, ३ राशि के सूर्य में) चंद्र और सूर्य चेष्टा बल पाता है और भीमादि ग्रह चंद्र समागम होने से या वक्र होने से चेष्टा बली होते हैं । और यदि ग्रह युद्ध हुआ हो तो जो ग्रह जीतता है वह चेष्टा बली होता है ।

(५) नैसर्गिक बल — रवि, चंद्र, शुक्र, गुरु, बुध, मंगल और शनि ये ग्रह शनि से उलटे क्रम से एक दूसरे के बली होते हैं अर्थात् शनि सबसे कम बल पाता है, उससे बली भगल, मंगल से बुध बली, बुध से गुरु बली, गुरु से शुक्र बली, शुक्र से चंद्र बली, और चंद्र से सूर्य बली होता है । सूर्य सबसे बली होता है और ऊपर बताये क्रम से ग्रह एक दूसरे से बल में हीन होते हैं ।

(६) दृग् बल — जिस प्रकार ग्रहों की दृष्टि ग्रह या भाव पर पड़ती हो उसका दृष्टि चक्र बनाना पहले बता चुके हैं, उसी प्रकार अपनी कुण्डली देखकर ग्रहों की दृष्टि का चक्र बनाया जाता है, जिससे प्रगट होता है कि किस ग्रह पर किस किस ग्रह की दृष्टि है । फिर उसमें विचारते हैं कि उस ग्रह पर कितने पाप ग्रहों की और कितने शुभ ग्रहों की दृष्टि है । सर्व शुभ ग्रहों की दृष्टि का योग कर उसका चतुर्थांश निकालते हैं और शुभ योग चतुर्थांश से पाप योग चतुर्थांश घटाने से जान पड़ता है पाप दृष्टि अधिक है या शुभ दृष्टि अधिक है । शुभ दृष्टि अधिक हो तो अच्छा और पाप दृष्टि अधिक हो तो बुरा समझा जाता है ।

ऊपर जो ग्रह का बल विचार करना बताया गया है वह बल गणित से निकाला जाता है फिर प्रत्येक ग्रहों के बल को जोड़ कर देखा जाता है कि कौन ग्रह कितना बलवान है। ग्रह जितना बली होगा उतना ही फल देगा। बलहीन ग्रह फल नहीं देता उलटे हानि करता है। इस कारण बल का विचार किया जाता है।

बल निकालने का पूरा गणित उदाहरण सहित गणित खंड में दिया है। यहाँ केवल प्रारंभिक ज्ञान के निमित्त ही बल का वर्णन किया गया है।

अध्याय ४१

नक्षत्र गुण धर्म

क्रम	नक्षत्र	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाडो	वैर	लोचन	मुख	नाम
योनि (नेत्र)										
१	अश्वि.	क्षत्रिय	चतु'पद	अश्व	देव	आदि	भैंस	मद	तिर्यक	लघु
२	भरणी	"	"	गज	मनुष्य	मव्य	सिंह	मध्य	अघो	उग्र
३	कृत्तिका	क्ष १	"	छाग	राक्षस	अत	वानर	सुलो.	अघो	मिश्र
वैश्य ३										
४	रोहिणी	वैश्य	"	सर्प	मनुष्य	अत	नकुल	अव	ऊर्ध्व	ध्रुव :
५	मृग०	वैश्य २	चतु० २	सर्प	देव	मव्य	नकुल	मंद	तिर्यक	मृदु
शूद्र २ नर २										
६	आर्द्रा	शूद्र	नर	श्वान	मनुष्य	आदि	हरिण	मध्य	ऊर्ध्व	तीक्ष्ण
७	पुन०	शूद्र	नर ३	मार्जार	देव	आदि	उदुह	सुलो०	तिर्यक	चर
ब्रा० १ जल '										
८	पुष्य	ब्राह्मण	जलचर	छाग	देव	मव्य	वानर	अव	ऊर्ध्व	लघु
९	आश्ले	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	राक्षस	अत	उदुह	मंद	अघो	तीक्ष्ण
१०	मघा	क्षत्रिय	चतु'पद	मूपक	राक्षस	अत	मार्जार	मध्य	अघो	उग्र
११	पूर्० फा०	क्षत्रिय	चतु'पद	मूपक	मनुष्य	मव्य	मार्जार	सुलो०	अघो	उग्र
१२	उ० फा०	क्ष० १	चतु० १	गौ	मनुष्य	आदि	व्याघ्र	अव	ऊर्ध्व	ध्रुव
वैश्य ३ नर ३										
१३	हस्त	वैश्य	नर	महिष	देव	आदि	अश्व	मद	तिर्यक	लघु
१४	चित्रा	वैश्य २	नर	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	गाय	मध्य	तिर्यक	मृदु

शूद्र २

१५ स्वाती	शूद्र	नर	महिष	देव	अंत	अन्व	सुलो०	तिर्यक	चर
१६ विशाखा	शूद्र ३	नर ३	व्याघ्र	राक्षस	अंत	गाय	अंत	अधो	मिश्र
	ब्रा० १	कीट १							
१७ अनु०	ब्राह्मण	कीट	मृग	देव	मध्य	श्वान	मद	तिर्यक	मृदु
१८ ज्ये०	ब्राह्मण	कीट	मृग	राक्षस	आदि	श्वान	मध्य	तिर्यक	तीक्ष्ण
१९ मूल	क्षत्रिय	नर	श्वान	राक्षस	आदि	हरिण	सुलो०	अधो	तीक्ष्ण
२० पूषा	क्षत्रिय	नर ॥	मर्कट	मनुष्य	मध्य	मेढा	अंध	अधो	उग्र
		चतु० ३॥							
२१ उषा	क्ष० १	चतु० पद	नकुल	मनुष्य	अंत	सर्प	मंद	ऊर्ध्व	ध्रुव
	वैश्य ३								
२२ अभि०	०	०	नकुल	मनु०	अन्त	सर्प	मध्य	०	लघु
२३ श्रवण	वैश्य	चतु० १॥	मर्कट	देव	अन्त	मेढा	सुलो०	ऊर्ध्व	चर
	जल० २॥								
२४ धनि०	वैश्य २	जल २	सिंह	राक्षस	मध्य	गज	अन्व	ऊर्ध्व	चर
	शूद्र २	नर २							
२५ शत०	शूद्र	नर	अश्व	राक्षस	आदि	भैंस	मंद	ऊर्ध्व	चर
२६ पूषा	शूद्र ३	नर ३	सिंह	मनुष्य	आदि	गज	मध्य	अधो	उग्र
	ब्रा १	जल १							
२७ उभा	ब्राह्मण	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य	व्याघ्र	सुलो०	ऊर्ध्व	ध्रुव
२८ रेवती	ब्राह्मण	जलचर	गज	देव	अन्त	सिंह	अन्व	तिर्यक	मृदु

इन नक्षत्र गुण धर्म चक्र में दिये हुए वर्ण वश्य योनि गण और नाड़ी विवाह आदि में विचार किया जाता है। सक्षिप्त जन्म पत्रिका (टिप्पणी) में ये सब लिखना पड़ता है। इस कारण यहाँ चक्र में दिया है।

वर्ण में कृत्तिका नक्षत्र मे क्षत्रिय १, वैश्य ३ दिया है। इसका अर्थ यह है कि नक्षत्र में ४ चरण होते हैं, उनमें पहिला १ चरण मे क्षत्रिय और अंत के शेष ३ चरण मे वैश्य वर्ण होता है। आगे भी इसी प्रकार का विचारना। जिसमे १ ही वर्ण दिया है वहाँ चारो चरण में एक ही वर्ण समझना। इसी प्रकार वश्य मे भी समझना। जैसे श्रृगिश्चर में वश्य मे पहिले २ चरण में चतुष्पद और अंत के २ चरण में नर समझना।

वश्य में चतुष्पद = चौपाया, नर = द्विपद = मनुष्य। कीट = कीड़े = रेंगने वाले बिना पैर के (अपद)। जलचर = जल में चलने वाले जीव।

योनि—छाग=बकरा या भेडा । मार्जार=बिल्ली । महिष=भैस । श्वान=कुत्ता, मर्कट=बंदर, घानर । उदुह=बूहा, मूषक । गौ=गाय । नकुल=न्योला । व्याघ्र=वाघ, शेर । अश्व=घोडा । गज=हाथी ।

लोचन—कोई वस्तु खोई हो उसके विचार में काम आता है । सु०=सुलोचन । मुख=तिर्यक=तिरछा । अघो=उलटा, औंधा । ऊर्ध्व=चित ।

नक्षत्र नाम —इन नक्षत्रों के नाम के अनुसार कार्य करने में शुभ होता है ।

अध्याय ४२

किसी बालक का जन्म समय बतला कर सक्षित जन्म-पत्रिका बनाने को कहा जावे तो कैसे बनाना यहाँ समझाते हैं ।

मान लो बालक का जन्म नरसिंहपुर में तारीख २-१०-१९३८ ई० के १० वजे दिन हुआ है । इसकी जन्म-पत्री बनाना है ।

उस सन् का पचाग देखा । कर्मवीर पचाग जवलपुर का सम्बत् १९९५ का मिला, उसे देखा । आश्विन शुक्ल ६ रविवार सम्बत् १९९५ शाका १८६०, तारीख के अनुसार मिला ।

आश्विन शुक्ल पक्ष तिथि ९ रविवार ६० घ ० प., नक्षत्र पू० पा० २७-४५, शोभन योग ३-४६, उपरात अतिगंड योग, बालक करण २६-१, दिनमान २६ ३२, मिश्रमान ४५-५२ का मिश्रकालोन सूर्य ५ रा. १५ अश २६'-३६" दिया है । चंद्र मकर का ४४-२१ उपरात होगा ।

उपर्युक्त तिथि आदि जवलपुर की है । वहाँ से नरसिंहपुर का देशान्तर ४ मिनट पश्चिम=१० पल है । पश्चिम होने से उपर्युक्त मान से घटाना पड़ेगा । इसमें फल सस्कार भी करना पड़ता है, परन्तु नवीन विद्यार्थी की सुविधा के लिये ये सब सस्कार छोड़ देते हैं, क्योंकि चर सस्कार आदि का ज्ञान अभी नहीं कराया गया है । इस कारण अभी कुछ कठिनाई मालूम पड़ेगी । यह विषय गणित खंड में विस्तार पूर्वक उदाहरण देकर समझाया गया है । अभी काम चलाने की स्थूल रूप से ही टिप्पणी तैयार करते हैं ।

इष्ट साधन

	घं० मि०	घड़ी पल
जन्म	१० ० (दिन को)	३ घण्टा = ७ ३०
सूर्योदय	६ ६ (पंचाग के अनुसार)	५४ मि० = २ १५
शेष=	३—५४ = ९ घ० ४५ प. इष्ट ।	योग= ६—४५ इष्ट हुआ

रविवार को पूर्वाषाढा नक्षत्र २७-४५ है। पचाग में देखो यह नक्षत्र इसके पहिले शनिवार को कितना था। शनिवार को मूल नक्षत्र २१ घ० ३३ प० दिया है।

३० पल	घ० प०
पूर्ण घटी ६०-०	शनिवार को पू० घा० ३८-२७
भुक्त मूलनक्षत्र २१-३३ (शनिवार को)	+ रविवार को पू० घा० २७-४५
शेष = ३८-२७ शनिवार को	योग ६६-१२
यह पूर्वाषाढा वचा	भभोग पूर्वाषाढा का
शनिवार को पूर्वाषाढा ३८-२७ था	पूर्ण पूर्वाषाढा=६६-१२
+ रविवार को इष्ट काल ६-४५	∴ १ चरण = ६६-१२ = घ० पल
भुक्त पूर्वाषाढा ४८-१२=भयात	४ १६ ३३

शनिवार को मूल नक्षत्र २१-३३ भुक्त होने के बाद पूर्वाषाढा लगा। शनिवार को पूर्वाषाढा ३८-२७ रहा और रविवार को २७-४५ तक था। सब मिलकर पूर्वाषाढा नक्षत्र का भोगकाल ६६-१२ हो गया। इसे भभोग या सर्वर्क्ष कहते हैं। भभोग का चौथाई भाग करने पर १ चरण का भोग निकलता है। भभोग ६६-१२ में ४ का भाग देने से १ चरण का भोग १६-३३ आया। अब देखना है कि जन्मसमय अर्थात् इष्ट काल तक पूर्वाषाढा कितना भुक्त हुआ था। शनिवार के शेष पूर्वाषाढा में इष्ट काल जोड़ने से पूर्वाषाढा का भुक्त काल ४८-१२ निकला। इसे भयात या भुक्तर्क्ष कहते हैं।

अब देखना है पूर्वाषाढा के कौन चरण का जन्म है। भयात में १ चरण घटाया तो शेष ३१-३६ वचे। दूसरा चरण घटाया तो शेष १५-६ वचे, अब तीसरा चरण नहीं घटता तो तीसरे चरण का जन्म समझो।

	घ० प०
भयात	४८ १२
१ चरण	१६ ३३ घटाया
शेष	३१ ३६
दूसरा चरण	६ ३३ घटाया
शेष	१५ ६

तीसरा चरण १६ ३१ नहीं घटता, इससे तीसरे चरण का जन्म हुआ।

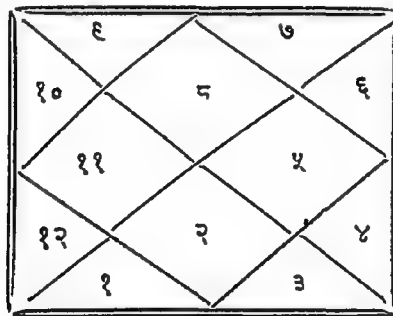
पूर्वाषाढा के तीसरे चरण में होडाचक्र के अनुसार नामाक्षर 'फा' निकला। धनु राशि हुई। फा अक्षर पर से फतेहसिंह नाम रखा।

अब नक्षत्र गुण धर्म चक्र देखा

पूर्वाषाढा के तीसरे चरण में जन्म होने से = क्षत्रिय वर्ण, चतुष्पद वश्य, मर्कट योनि, मनुष्य गण, मध्य नाडी हुई। धन राशि है जिसका स्वामी गुरु हुआ।

अब लग्न कुडली बनाने के लिये पहिले लग्न निकालना है। लग्न निकालने को लग्नसारिणी देखा। सूर्य ५ रा १५ अश है अर्थात् कन्या के १५ अश पर है। सारिणी में कन्या के १५ अश के नीचे ३१-२५-१ दिया है। इसमें सारिणी अंक ३१-२५-१ इष्ट ६-४५ जोड़ा तो योग ४१-१०-१ हुआ। इसे सारिणी + इष्ट ६-४५-० में खोजा ४१-६-१२ तक वृश्चिक के ७° होते हैं और योग ४१-१०-१ ४१-१७-३२ तक ८° होते हैं अपना इष्ट युक्त सारिणी अंक दोनों के बीच में है। सह कारण लगभग ७॥° वृश्चिक लग्न के आते हैं। वृश्चिक लग्न निकली। अब वृश्चिक लग्न को घीच में रख कर कुडली तैयार की। इस प्रकार कुडली चक्र बन कर तैयार हुआ।

अब इस में ग्रह भगने के लिए पंचाग देखा। पंचाग में अष्टमी का मिश्रमान ४५-५४ का ग्रह इन प्रकार दिया है। जन्म नवमी का है। इस कारण उसके समीप की पक्ति (पंचाग के ग्रह) यही है।



पक्ति सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु केतु
५-१४° ४-२१° ५-८° १०-५° ६-२३° ११-१४° ७-०°-२६' १-०°-२६'

अब पंचाग में देखो कि पक्ति से इष्ट काल तक कोई ग्रहों में परिवर्तन हुआ है क्या? अष्टमी के आगे नवमी के इष्ट काल तक पंचाग में इन ग्रहों में कोई परिवर्तन नहीं दिया, इस कारण इसी के अनुसार अपनी कुडली में ग्रह स्थापित करेंगे।

सूर्य ५-१४ अश है अर्थात् कन्या का है, मंगल=सिंह का, बुध=कन्या का, गुरु कुम्भ का, शुक्र तुला का शनि मीन का, राहु वृश्चिक का, केतु वृष का है। इसी प्रकार कुण्डली में जहाँ इन राशियों के अंक है वहाँ ये ग्रह स्थापित करेंगे।

लग्नकुण्डली

१०	१ चं.	७ शु.	६ सू. बु.
११ गु	८ रा.	५ मं.	४
१२ ज	२ के	३	१

चन्द्रकुण्डली

८	१०	८ रा.	७ शु.
११ गु	९ चन्द्र	६ सू. बु.	५ मं.
१	१२ ज.	३	२ के

राशि पहिले ही जान चुके हैं घन राशि है अर्थात् घन राशि का चंद्र है, इस कारण चन्द्र को घन राशि पर रखा। लग्न को बीच में लग्न स्थान पर रखा जो कुण्डली बनाई जाती है वह लग्न कुण्डली है और चन्द्र राशि को बीच में (लग्न स्थान पर) रख कर जो कुण्डली बनाई जाती है वह चन्द्र कुण्डली है।

अब इसी को लिखने की रीति आगे बताई गई है। पहिले मंगलाचरण में गणेश, ईश्वर आदि की वंदना लिखने के उपरान्त ये सब बातें क्रमानुसार लिख दी जाती हैं।

श्री गणेशाय नमः

स जयति सिन्धुरवदनो देवो, यत्पादपंकजस्मरणम्।

वासरमणिरिव तमसां, राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥

ब्रह्मा करोतु दीर्घायुः, विष्णुः कुर्याच्च संपदाम्।

हरो रक्षतु गात्राणि, यस्यैषा जन्मपत्रिका॥

अथास्मिन् शुभे विक्रमार्क सम्वत् १९९५, शालिवाहन शाके १८६०, सायन दक्षिणायने गते, याम्यगोले शरदृतौ महामागल्यप्रद आश्विनमासे शुभे शुक्लपक्षे, तिथौ ९ घट्यादिकम् ६०।० रविवासरे। पूर्वाषाढानक्षत्रे घटय २७।४५, शोभननाम योगे घट्यादिकं ३।४६ तदुपरि अतिगंडनामयोगे। बालवकरणे घटय २९।१ एवं पंचांगशुद्धि। तत्र दिनप्रमाणं घटयः २९।३२ रात्रिप्रमाणं घटय ३०।८ श्रीसूर्योदयादिष्टघट्यादिकं ९।४५ कन्यार्के गताश. १५। वृश्चिकलग्ने गताश ७। एवम् शुभग्रहावलोकित कल्याणवतीविलाया श्रीमतो नाथूरामसिंहस्य ठाकुरगृहे भार्या सौभाग्यवती अम्बाकुक्षेः पुत्ररत्नमजीजनत्॥ तस्याभिधानं शतपदचक्रानुसारेण पूर्वाषाढातृतीय-चरणे “फ” काराक्षरे अकारस्वरे फतहसिंह इति नाम प्रतिष्ठितम्। अस्य राशिः धनुः। स्वामी गुरु। क्षत्रिय वर्णः। चतुष्पद वश्य, मर्कट योनिः। मनुष्य गणः। मध्य नाडी। इत्यादि विवाहादौ विचारणीयम्। अयं च कुलदेव्याः प्रसादात् दीर्घायुर्भूयात्।

लग्नकुण्डली

१०	९ च	७ शु
	८ रा	६ सू. बु.
११ गु.		५ म.
१२ ज.	२ के	४
१	३	

चन्द्रकुण्डली

१०	८ रा.	७ शु
११ गु	६ चं	५ म.
१२ ज	४ सू. बु	३
१	२ के	४

दूसरा प्रकार टिप्पणी (जन्म पत्रो) लिखने का ।

श्रीगणेशाय नम

श्रीसरस्वत्यै नम.

स जयति सिंघुरवदनो देवो, यत्पादपंकजस्मरणम् ।

वासरमणिरिव तमसां, राशिं नाशयति विघ्नानाम् ॥

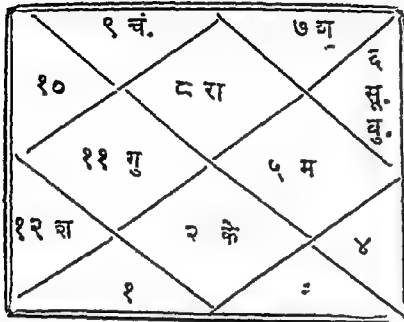
आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ।

आयुः कुर्वतु ते सर्वे यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥

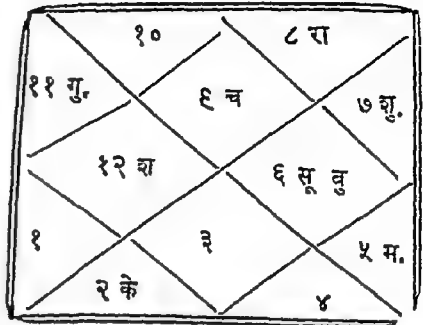
अयास्मिन् श्रीमन्पतिविक्रमादित्यराज्योदयात् गताब्दा श्री सम्वत् १९९५
 छाके १८६० ॥ श्री सूर्ये दक्षिणायने ॥ शरद् ऋतुः ॥ मासानामुत्तमे आश्विनमासे ॥
 शुभे शुक्लपक्षे ॥ तिथौ नवम्या ॥ रविवासरे । घट्यादि ६०।० ॥ पूर्वाषाढानक्षत्रे
 घट्यादि २७।४५ ॥ शोभननामयोगे घट्यादि ३।४६ । तदनन्तरम् अतिगडनाम-
 योगे ॥ बालवकरणे २६।११ ॥ एव पचागशुद्धावददिने श्रीसूर्योदयादिघट्यादि
 ६।४५ ॥ तत्समये वृश्चिकलग्नोदये श्रीठाकुरनाथरामसिंहजी तस्य गृहे सौभाग्यवत्या
 भार्याया कुक्षी पुत्ररत्नमजीजनत् ॥ पूर्वाषाढानक्षत्रस्य भुक्तर्धघट्यादि ४८।१२ ॥
 भोग्यर्धघट्यादि १८।०। सर्वर्धघट्यादि ६६।१२ ॥ अत पूर्वाषाढानक्षत्रस्य तृतीय-
 चरणे जातत्वात् अवकहडाचक्रानुसारेण चि० कनेहसिंह नाम प्रतिष्ठितम् ॥ सच देवद्विज-
 प्रसादाद् दीर्घायुर्भवतु ॥ घन-राशि ॥ अन्निय-वर्ण ॥ चतुष्पद वश्य ॥ मर्कट-योनिः ॥

मनुष्य गणः ॥ मध्य नाडी ॥ एत द्विवाहादौ विचारणीयम् ॥ वृश्चिकलग्नगताश-
 ७ ॥ कन्यार्कगताश १५ ॥ इयं जन्मपत्रिका जवलपुरस्य कर्मवीरपंचागानुसारेण
 निर्मिता ॥ आग्लमतानुसारेण जन्मसमय १० वादने दिने दिनाक २।१०।१९३८ ईसवी ॥
 शुभमस्तु ॥

अथ जन्माकचक्रमिदम्



चन्द्राकचक्रम्

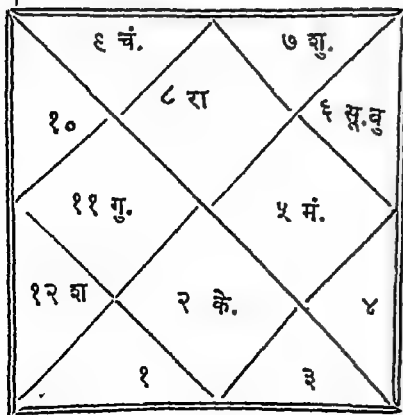


कुण्डली के प्रकार

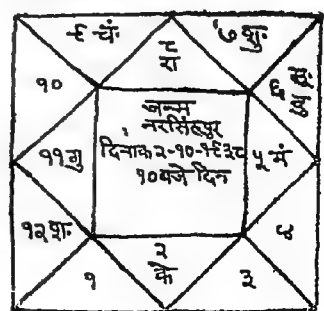
कुण्डली कई प्रकार की बनाई जाती है । उनके बनाने की भिन्न २ रीतिया आगे
 , बताई जाती है ।

भिन्न भिन्न प्रकार की कुण्डलियाँ ।

कुण्डली क्रम (१)



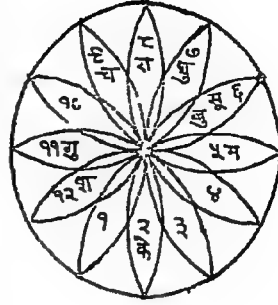
कुण्डली क्रम (२)



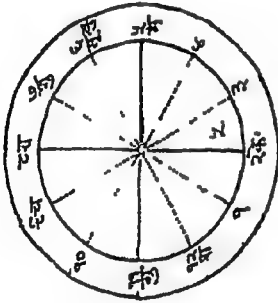
कुंडली क्रम (३)

९ च	८ रा	७ शु
१०		६ मू बु
११ गु		५ मं
१२ श	१	४
	२ के	३

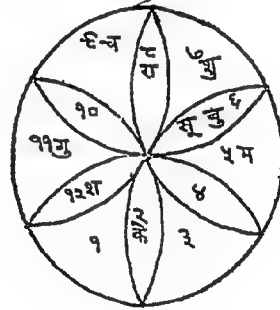
कुंडली क्रम (४)



कुंडली क्रम (५)



कुण्डली क्रम (६)



कुण्डली क्रम (७)



ये जितनी कुंडलियां बनाई गई हैं, सब एक ही प्रकार की हैं, परन्तु उनके आकार भिन्न २ प्रकार के बनाये गये हैं। ज्योतिषी लोग शोभा के लिये इसी प्रकार की अनेक रूप की सुन्दर कुंडलियां जन्मपत्री में बनाते हैं। उनमें रंग भी भर देते हैं।

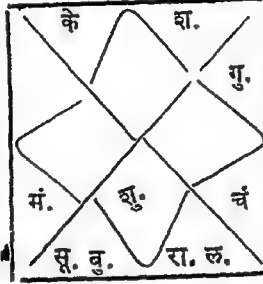
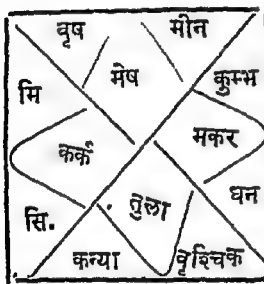
इन सब कुण्डलियों में क्रम एक ही प्रकार का है। अर्थात् ऊपर लग्न से आरंभ कर बाईं ओर से क्रमानुसार राशियां स्थापित की जाती हैं। परन्तु इस प्रकार की कुंडली में इनके भाव स्थिर हैं केवल राशियां चलायमान हैं। देखो लग्नकुण्डल क्रम १ से ७ तक।

परन्तु भारतवर्ष में इन कुण्डलियों के आकार के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न प्रकार से कुण्डलियां कई स्थानों में बनाई जाती हैं और उनके बनाने की पद्धति भी भिन्न-भिन्न है। इस कारण उनका वर्णन कर देना यहाँ आवश्यक है जिससे इस प्रकार की कोई कुण्डली मिलने पर नवीन विद्यार्थी को समझने में कोई अड़चन न हो।

राशि कुण्डली क्रम (८)

ग्रह कुण्डली क्रम (९)

लग्न कुंडली क्रम (१)



केशव देवज्ञ की जातकपद्धति (केशवी जातक) में राशि को स्थिर मान कर कुंडली बनाई गई है और उसमें भाव चलित बताये गये हैं।

यहाँ जिस प्रकार राशि कुंडली ८ बनाई गई है, उसी के अनुसार राशियां सदा स्थिर मानी गई हैं। जैसे दशम स्थान में सदा दशमी मकर राशि और लग्न में सदा पहली मेष राशि रहती है, ऐसा मानकर कुण्डली बनाई जाती है। इसमें राशियों के अंक नहीं लिखे जाते केवल ग्रह जिस राशि में हो उस राशि के स्थान में लिख दिये जाते हैं, और जहाँ लग्न होती है लग्न लिख दी जाती है जैसे ग्रह कुण्डली क्रम (९) में पूर्व लिखित लग्न कुण्डली क्रम (१) के अनुसार ग्रह भर दिये गये हैं। इसमें राशि के अंक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। लग्न कुंडली क्रम (१) और कुण्डली क्रम (९) से मिलान करो। उसमें कितना अंतर दिखाई देता है और नवीन विद्यार्थी को कुण्डली क्रम (९) अटपटी जान पड़ेगी।

दक्षिण में कुंडली बनाने की भिन्न पद्धति है। उसमें राशि को स्थिर तो माना है परन्तु उसका क्रम उलटा है। जैसे उपर्युक्त कुण्डली में अंक ऊपर से लिखना आरम्भ

होकर बाईं ओर से क्रमानुसार लिखे गये हैं, परन्तु यहाँ विरुद्ध क्रम से अर्थात् दाहिनी ओर से क्रमानुसार राशि के अंक स्थापित किये जाते हैं। इसमें राशियाँ स्थिर और भाव चलित माने गये हैं। और जहाँ लग्न हो वहाँ लग्न लिख दिया जाता है। यहाँ नीचे दी हुई कुण्डली देखने से सब समझ में आ जायगा।

स्थिर राशि कुण्डली
क्रम (१०)

ग्रह कुण्डली
क्रम (११)

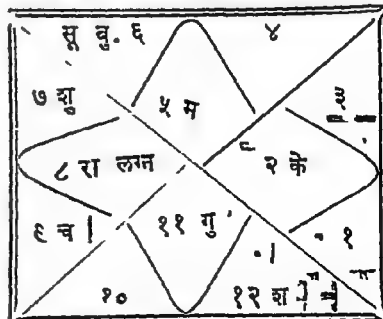
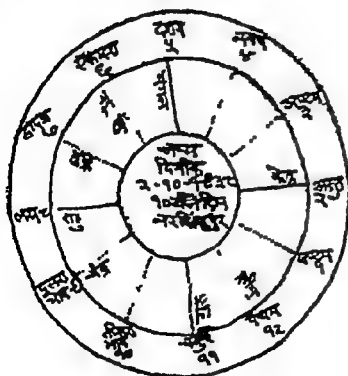
ग्रह कुण्डली
क्रम (१२)

मीन	मेघ	वृष	मि.	१२ श.	१	२ के	३	श		के	
कुम्भ	राशि	कर्क		११ गु	जन्म		४	गु.	जन्म		
मकर	कुण्डली	सिंह		१०	कुण्डली	५ म			कुण्डली	म	
घन	वृश्चि	तुला	कन्या	९ च.	८ रा	७ शु	६	चं	रा	शु.	सू वु
					लग्न		सू. वु		लग्न		

इसमें जहाँ लग्न लिखा है उसके आगे भाव गिना जाता है। जैसे लग्न में वृश्चिक का राहु है, घन भाव में घन राशि का चन्द्र है इत्यादि प्रकार से कुण्डली क्रम ११ में भाव समझना। परन्तु जो कुण्डली (११) में समझाने के लिये राशि के अंक दिये हैं वे नहीं रहते। केवल कुण्डली क्रम (१२) के अनुसार लग्न-कुण्डली में ग्रह बता दिये जाते हैं।

पाश्चात्य पद्धति से कुण्डली इस प्रकार बनती है कि कुण्डली में दशम भाव ऊपर रहता है, चतुर्थ भाव नीचे रहता है, बाईं ओर लग्न का स्थान (पूर्व) और दाहिनी ओर अस्त (पश्चिम) स्थान रहता है। इसमें भाव स्थिर और राशियाँ चलायमान बतलाते हैं। पाश्चात्य पद्धति से कुण्डली क्रम (१३)

कुण्डली क्रम (१४)



भाव स्थिर है इस कारण भाव में जिन-जिन राशियों के जितने २ अंश होते हैं भाव स्थान में लिख दिये जाते हैं और जो ग्रह जितने अंश पर होता है उसके नीचे लिख दिया जाता है। बीच में जन्म समय स्थान आदि लिखा रहता है। देखो कुण्डली क्रम १३।

इसी कुण्डली को कुडली क्रम (१) सरीखा भी बनाते हैं, जिसमें कि लग्न के स्थान में दशम स्थान ऊपर रखते हैं जैसा कि कुण्डली क्रम १४ में बताया गया है। देखो कुडली क्रम (१४)।

जन्म-पत्रिका

यहाँ विद्यार्थियों को केवल टिप्पणी (सक्षिप्त जन्मकुण्डली) बनाना बताया गया है। पूरी जन्मपत्रिका बनाने में बहुत गणित करना पड़ता है।

जन्मपत्रिका बनाने के लिये जन्म के स्टेन्डर्ड टाइम (घड़ी के समय) को स्थानिक समय बना कर, काल समीकरण के अनुसार उस का संस्कार कर शुद्ध इष्ट काल बनाया जाता है। जिस पर से जन्म पत्रिका का सम्पूर्ण गणित होता है, इस पर से प्रत्येक ग्रहों की गति के अनुसार चालन बनाकर ग्रह स्पष्ट किया जाता है। फिर अपने स्थान का अक्षांश निकाल कर उस से पलभा बना कर चरखण्डा निकाल, लकोदय में उस का संस्कार कर स्वोदय बनाया जाता है। अयनाश निकाल कर सूर्य स्पष्ट से सायन सूर्य बनाकर स्वोदय और इष्ट के आधार पर गणित से लग्न निकाली जाती है। फिर नत बना कर लंकोदय पर से दशम भाव निकाल कर, फिर सब भाव संधिया निकाल कर सम्पूर्ण भाव स्पष्ट किया जाता है। फिर भाव का रूपात्मक भाव बल विस्वावल चय क्षय फल निकाला जाता है। फिर भावकुण्डली बनाई जाती है और तात्कालिक एवं नैसर्गिक मंत्रों पर से पंचमा मंत्री चक्र बनाया जाता है। होरा द्रेष्काण आदि कई प्रकार की वर्ग-कुण्डलियाँ बनाई जाती हैं। दशवर्ग चक्र बना कर उत्तम पारिजातक आदि सज्ञादर्शक चक्र बनाया जाता है। ग्रह पर ग्रहदृष्टि चक्र, भाव पर ग्रह-दृष्टि चक्र, शुभ अशुभ दृष्टि चक्र बनाया जाता है। ग्रह का और भाव का पृथक २ बल निकाल कर पडबल चक्र बनाया जाता है। इष्ट कष्ट, इष्ट बल, कष्ट बल, इष्ट दृष्टि, कष्ट दृष्टि, शुभ अशुभ चक्र, शुभ अशुभ पंक्ति आदि के कई चक्र बनाये जाते हैं। अष्टक वर्ग शुभ रेखा चक्र बना कर राशि पिंड ग्रह पिंड बना कर, अष्टक वर्ग आयु साधन, व उसकी दशा अंतर्दशा साधन का साधन किया जाता है और अशायु, पिंडायु, जीवशायोक्त आयु, मिश्रायु, आदि आवश्यक आयु, निकाल कर उसकी दशा अन्तर्दशा आदि भी निकाली जाती है और विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी आदि दशा निकाल कर उनकी अंतर्दशा

विदवा आदि निकाल कर उनका समय निकाला जाता है। इस प्रकार जन्मपत्रिका में अनेक चक्र बनाये जाते हैं।

इन सब विषय को पृथक् रूप से गणितखंड में प्रत्येक का उदाहरण देकर पूरी गणित क्रिया देकर पूर्ण रूप से समझाया गया है। जिसमें गणित करने की सम्पूर्ण रीतिया भी दी हैं और लग्नसारिणी, दशमसारिणी, दिनमानसारिणी आदि भिन्न सारिण्या भी बनाकर उनके बनाने की रीति समझाई गई है, जिसके द्वारा बिना किसी सहायता के विद्यार्थी स्वयं जन्मपत्रिका बना सकेगा।

जब पंचांग न हो तो अहर्माण निकाल कर मध्यम ग्रह बना कर ग्रह स्पष्ट करने की सारिण्या और रीति भी उदाहरण सहित दे दी गई है, जिससे पत्रिका बनाने का कोई विषय नहीं रह जाता। पूरी जन्मपत्रिका बनाकर फिर उसका फल निकाला जाता है।

अध्याय ४३

फलित सम्बन्धी स्थूल विचार

ज्योतिष सम्बन्धी नियमों को समझाने के पश्चात् पंचांग का ज्ञान, कुण्डली का निर्माण इत्यादि विषय समझाया जा चुका है। कुण्डलीनिर्माण के उपरान्त प्रत्येक विद्यार्थी को यह उत्सुकता हृदय में होती है कि अब इसका फल जाने। गणित विषय जितना कठिन व मूढ है उतना ही कठिन व सूक्ष्म फलित विषय है।

फलित विषय को उत्तमना तथा पूर्ण रूप से जानने के लिये ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण गणित, ग्रहों का समावेश, स्थित तथा देशकाल आदि सब ही बातों का जानना आवश्यक है। किन्तु जिन प्रकार इस ज्ञान खंड में स्थूल मान से ज्योतिष के प्रारम्भिक ज्ञान का प्रदर्शन किया गया है उन्हीं प्रकार में स्थूल मान से फलादेश जानने के कुछ नियमों का उल्लेख आवश्यक समझ कर आगे बताया जायगा। साथ ही साथ गोचर ग्रह, अर्धरात्रि, साढ़े माती रात्रि, आयुर्दाय का स्थूल रूप में विचार, मारकेश विचार, विगोत्तरी दशा नाथन आदि भी मन्त्रों में बताया जायगा, जिससे विद्यार्थी को इस ओर रुचि बढ़ कर उस का अभ्यास कर अनुभव प्राप्त करें।

इन सब का उदाहरण देकर समझाने से पुस्तक का आकार बहुत बढ़ जाता, इस कारण यह सब सविस्तार में ही दिया है, क्योंकि इन सब विषय का पृथक् वर्णन फलित खंड में विस्तारपूर्वक होगा।

बहुत लोग शंका करते हैं कि सूर्य की गरमी का प्रभाव एक ही स्थान पर एक ही समय एक मा ही पड़ना चाहिये, परन्तु फलादेश में भिन्न रूप से कैसे कहा जाता है।

इसके समझाने को मध्याह्न के समय भिन्न २ प्रकार की धातुओं के वर्तन में बराबर २ पानी भर कर किसी निश्चित स्थान में निश्चित समय तक रखो। उपरांत देखने से प्रगट होगा कि किसी वर्तन के पानी में गरमी (टेंपरेचर) अधिक होगी, किसी में कम। मान लो तावा, लोहा, कासा और पीतल ऐसे ४ प्रकार के भिन्न २ धातुओं के वर्तन में पानी रखा था। देखने से ज्ञात हुआ कि तावे के वर्तन का पानी अधिक उष्ण होगा, फिर लोहे का, पीतल का और सब में अल्प उष्णता का प्रभाव कासे के वर्तन पर पड़ा। यह भिन्न-भिन्न प्रकार की धातुओं के कारण हुआ। जिसमें दाहक शक्ति अधिक होगी उसमें गरमी का प्रभाव शीघ्र पड़ेगा और जिसमें अल्प होगी उसमें अल्प प्रभाव पड़ेगा।

ठीक उसी प्रकार संसार के समस्त जड़ और चैतन्य पदार्थ मनुष्य आदि सब ही पर सब ग्रहों का प्रभाव भिन्न २ रूप से पड़ता रहता है। जिस वस्तु पर प्रभाव पड़ रहा है उसकी स्थिति पात्र के समान समझना चाहिए।

इस प्रकार जो जिस लग्न और ग्रह स्थिति में और जिस स्थान में उत्पन्न हुआ है उसीके अनुसार उसकी प्रकृति बन जाती है और उसी प्रकृति के अनुसार भिन्न २ मनुष्यों पर भिन्न २ प्रभाव ग्रहों का पड़ता रहता है।

फलादेश कहते समय आगे बताई हुई बातों का विचार करना चाहिए और अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग कर भिन्न २ फलों को तौल कर और विचार कर फल कहना चाहिए। और उसका अभ्यास करते २ अनुभव बढ़ाना चाहिये, क्योंकि अनुभव से ही ज्ञान बढ़ता है।

फलित का स्थूल ज्ञान होने की सामग्री आगे दी है।

फलित का विचार इन रीतियों से किया जाता है :—

१ गोचर से—केवल जन्म राशि पर से पचाग में दिये हुए ग्रहों की स्थिति पर से प्रत्येक मास या पक्ष आदि का फल जाना जाता है।

२ जन्म कुण्डली से—जन्म कुण्डली देख कर ग्रहों की स्थिति के अनुसार, ग्रह फल, भाव फल, दृष्टि फल, योग फल आदि का पूर्ण विचार कर फल कहा जाता है।

३ वर्षफल—जन्म कुण्डली पर से प्रत्येक वर्ष की, वर्ष कुण्डली बनाकर और उस के भीतर प्रत्येक मास की या यदि आवश्यकता हुई तो प्रत्येक दिन की भी कुण्डली बनाकर वर्ष, मास या प्रति दिन का फल जाना जा सकता है।

४ प्रश्नकुण्डली—किसी भी समय जब कोई प्रश्नकर्ता कोई विषय पर प्रश्न करता है और उसका उत्तर चाहता है तो उस समय जो लग्न होगा, उस पर से प्रश्न कुण्डली बनाकर उस कुण्डली पर से उस विषय का पूरा निर्णय किया जाता है।

फल का समय—किसी विशेष फल का समय जानने को भिन्न २ प्रकार की दशाओं का साधन किया जाता है और उस ग्रह की दशा अतर्दशा या विदशा किस समय तक रहेगी गणित से निकाला जाता है। जिससे ठीक तिथि फल की जानी जा सकती है।

किसी ग्रह की दशा का जो समय है उसके विभाग करने से अन्तर्दशा का समय निकलता है और अतर्दशा के समय का विभाग करने से विदशा का समय निकलता है। इस प्रकार फल का सूक्ष्म समय निकाला जा सकता है।

फल कहने के लिये इन बातों का जानना आवश्यक है

(१) शुद्ध इष्ट काल परसे बनाई हुई कुण्डली।

(२) यह देखना कि कुण्डली में कौन ग्रह किस २ स्थान में है।

(३) भाव में जो राशि है उसका स्वामी कौन ग्रह है। अर्थात् ग्रहों का स्वस्थान सब से पहिले जानना चाहिए।

(४) ग्रहों के उच्च नीच स्थान, मूल त्रिकोण स्थानों का विचार कर देखना कि कोई ग्रह इन अधिकारों में है क्या ?

(५) ग्रहों की नैसर्गिक तात्कालिक और पचघा मैत्री का विचार कर ग्रहों का परस्पर मैत्री सम्बन्ध देखना।

(६) ग्रहों की दृष्टि प्रत्येक ग्रह और भाव पर विचार कर उसका दृष्टि द्वारा सबध का विचार करना।

(७) ग्रह गुण धर्म, राशि गुण धर्म और नक्षत्र गुणधर्म पर विचार करना।

(८) ग्रहों के अस्त वक्रों मार्गों पर विचार।

(९) भिन्न-भिन्न भाव के पृथक् नाम और मामूहिकरूप से उनका नाम जो हो, उन में ग्रहों का विचार।

(१०) प्रत्येक भाव से क्या क्या विचार किया जा सकता है, इसको जान के विचारणीय विषय का भाव खोजना।

(११) विचारणीय भाव का स्वामी कौन ग्रह है और किस स्थान में है ? जहाँ भाव स्वामी है उसके भाव से मैत्री सम्बन्ध का विचार करना।

(१२) विचारणीय भाव पर भावेश या और किन ग्रहों की दृष्टि है। इन बातों के विचारने का प्रारम्भिक ज्ञान करा दिया गया है, परन्तु इस के अतिरिक्त फल विचारने के लिये और अनेक बातों को जानने की आवश्यकता है जिनको जानने पर फल कह सकते हैं।

- (१) ग्रहों की भिन्न भिन्न प्रकार की अवस्थाएँ और उन का फल ।
- (२) ग्रहों के भिन्न भिन्न राशियों में रहने का फल ।
- (३) भाव में भिन्न भिन्न राशियों के रहने का फल ।
- (४) प्रत्येक भाव के अनुसार प्रत्येक ग्रह का फल ।
- (५) भाव स्वामी के भिन्न भिन्न स्थानों में रहने का फल ।
- (६) ग्रहों की मन्त्री के अनुसार फल ।
- (७) ग्रहों की ग्रहों पर दृष्टि के अनुसार फल ।
- (८) प्रत्येक भाव पर पृथक पृथक ग्रहों की दृष्टि का फल ।
- (९) भाव में एक से अधिक ग्रह रहने का पृथक पृथक फल ।
- (१०) कारक ग्रह, मारक ग्रह, अरिष्ट योग, अरिष्ट भंग योग आदि का ज्ञान ।
- (११) ग्रहों के विशेष योग—जैसे अल्पायु योग, दीर्घायु योग, मृत्यु योग, राज योग, राजभंग योग, राज दंड योग, घन योग, दारिद्र्य योग, अघा काना लगडा आदि होने के विशेष योग और नाभस आदि अनेक योगों का विचार कर देखना कि कुण्डली में कौन कौन योग पड़े हैं और उनका क्या फल होता है ।
- (१२) ग्रह की विशेष परिस्थिति के अनुसार फल का विचार ।
- (१३) जन्म समय का सम्बन्ध, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन आदि अनेक बातों के विचार से भिन्न-भिन्न फल ।
- (१४) चंद्र की राशि, नक्षत्र, चरण आदि के विचार से विशेष फल जानना ।
- (१५) लग्न और लग्नेश के विचार से विशेष फल जानना ।
- (१६) आयुर्दाय का ज्ञान ।

इत्यादि अनेक बातों का विचार कर ग्रह और भाव के बलावल और परिस्थिति विचार कर देश, काल, आयु, प्रथा आदि पर विचार करते हुए फल कहना पड़ता है । फिर उन की दशा निकाल कर वह फल होने का समय निश्चित किया जाता है ।

फल कहने के लिये विचार—

जिस सम्बन्ध का फल विचार करना है उसके लिये देखो वह फल किस भाव से सम्बन्ध रखता है । जैसे सन्तान का विचार करना है तो पंचम भाव से उसका विचार होगा, क्योंकि पंचम भाव का नाम सुत भाव है । सन्तान विचारने के लिए मुख्य भाव तो पंचम है । परन्तु और भी भाव हैं जिनसे सन्तान का विचार होता है । इस प्रकार देखना कि उस भाव का विचार और कौन कौन भाव से सम्बन्ध रखता है ।

जिस भाव के सम्बन्ध से विचार करना है उस भाव के सम्बन्ध से इन बातों का विचार करना पड़ता है—

(१) भाव का कितना बल है ?

(२) भाव में कोई ग्रह है या नहीं ।

(३) भाव में शुभ या अशुभ ग्रह है ।

(४) भाव में लग्नेश है क्या ?

(५) भाव में कोई ग्रह हो तो उस भाव का बलावल उच्च-नीच आदि अधिकार का विचार ।

(६) भावस्थ ग्रह, त्रिकोण, केन्द्र, त्रिक आदि स्थानों के स्वामी होने का विचार ।

(७) भाव में कौन २ ग्रहों की दृष्टि है और द्रष्टा ग्रह कैसा है ।

(८) भाव में अनेक ग्रहों का योग पर विचार ।

(९) भाव भावेश युक्त या दृष्ट है ?

(१०) भावस्थ ग्रह और भावेश के योग दृष्टि मैत्री आदि सम्बन्ध का विचार ।

(११) भाव, भावस्थ ग्रह और भावेश के सम्बन्ध से विशेष परिस्थिति और विशेष योगों पर विचार ।

(१२) भावेशों का परिवर्तन योग (भावेश का परस्पर एक दूसरे के स्थान में होना) ।

(१३) भाव के कारक ग्रह की स्थिति और योग दृष्टि मैत्री आदि से भाव से सम्बन्ध होने का विचार ।

(१४) आयुर्दायि का विचार कर मारकेश का विचार ।

इन सब के विचार करने के प्रथम भावस्थ ग्रह या भावेश की पूरी स्थिति इस प्रकार विचार कर लेना चाहिए ।

(१) भावेश पाप या शुभ या मिश्र ग्रह है ।

(२) भावेश वक्त्री मार्गी अस्त आदि विचार से क्या है ?

(३) भावेश के बलावल का विचार ।

(४) भावेश का उच्च, मूल त्रिकोण स्वगृही आदि अच्छे अधिकार पर विचार ।

(५) भावेश का नीच शत्रु गृही अस्त आदि बुरे अधिकार पर विचार ।

(६) भावेश की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं पर विचार ।

(७) भावेश किसी ग्रह के साथ है या अकेला ।

(८) भावेश का शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट होने से अच्छी स्थिति पर विचार ।

(९) भावेश का अशुभ ग्रह युक्त या दृष्ट होने से बुरी स्थिति पर विचार ।

(१०) भावेश का मित्र ग्रह युक्त या दृष्ट होने से बल प्राप्त करने पर विचार ।

(११) भावेश का शत्रु ग्रह युक्त या दृष्ट होने से निर्बलता आने पर विचार ।

(१२) भावेश केन्द्र कोण आदि शुभ स्थानों में होने से अच्छी स्थिति पर विचार ।

(१३) भावेश त्रिक (६-८-१२) स्थानों में होने या इनके स्वामी होने आदि की बुरी स्थिति पर विचार ।

(१४) भावेश का केन्द्र त्रिकोण स्वामियों के साथ रहने से अच्छी स्थिति पर विचार ।

(१५) भावेश का त्रिकेश के साथ रहने से बुरी स्थिति पर विचार ।

(१६) भावेश के वर्ग के अनुसार शुभ या अशुभ वर्ग में होने का विचार ।

(१७) भावेश का नवाश में उच्च-नीच आदि स्थिति में होने पर विचार ।

(१८) भावेश शुभ या अशुभ स्थान में है ।

इत्यादि बातों का विचार कर ग्रहों की और भाव की पूरी स्थिति और सम्बन्ध आदि का विचार कर फल कहना पड़ता है ।

अध्याय ४४

फलित विचार करने के लिये संक्षेप में कुछ साधारण नियम

(१) नीच का ग्रह अशुभ होता है जैसे मकर का गुरु ।

(२) उच्च का ग्रह (जैसे मेष का सूर्य)=शुभ फल देता है, फल वृद्धि करता है ।

(३) परमोच्च ग्रह (जैसे गुरु कर्क के ५° पर हो तो)=भाव फल उत्तम देता है ।

(४) मूल त्रिकोण में ग्रह (जैसे शुक्र १२° पर)=यह उच्च से अधिकार में कुछ कम है, परन्तु उच्च के सदृश ही शुभ फल देता है ।

(५) स्वक्षेत्री ग्रह (जैसे मिथुन का बुध)=फल की वृद्धि करता है । शुभ सदृश फल देता है । इसका फल मूल त्रिकोण से कुछ हल्का है ।

(६) मित्र क्षेत्री ग्रह (जैसे मेष का सूर्य)=फल वृद्धि करता है, अशुभ फल कम देता है ।

(७) अतिमित्र गृही ग्रह=शुभ फल दायक होता है (पंचधा मैत्री के अनुसार अधि मित्र लेना) ।

(८) उच्च या मित्र, या बलवान ग्रह से युक्त या दृष्ट ग्रह=शुभ होता है । जैसे मीन का शुक्र उच्च का होता है, यह बुध के साथ चतुर्थ भाव में हो तो बुध अच्छा फल देगा । या बुध चतुर्थ में हो उसपर दशम भाव से उसका मित्र शुक्र पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो शुभ है ।

(९) सम क्षेत्री ग्रह (जैसे शनि की राशि मकर में बैठा मंगल)=सम फल देता है ।

(१०) शत्रु क्षेत्री ग्रह=(जैसे बुध चंद्र के स्थान कर्क में हो)=अशुभ और हानि-कारक होता है ।

(११) ग्रह नीच का होकर शत्रु क्षेत्री भी हो=तो उस भाव का फल नाश करता है । जैसे तुला का नीच सूर्य अपने शत्रु शनि की राशि ११ में बैठा हो ।

(१२) मित्र राशि या उच्च राशि में स्थित पाप ग्रह भी=शुभ हो जाता है । जैसे मकर का मंगल जो उच्च का है या सिंह का मंगल अपने मित्र सूर्य के घर का ।

(१३) शुभ ग्रह यदि । नीच या शत्रु गृही या अस्त हो तो बुरा फल देता है । जैसे नीच मकर का गुरु या शत्रु स्थानी मिथुन का गुरु या अस्त सूर्य के साथ गुरु ।

(१४) पाप ग्रह नीच का सब फल नाश करता है जैसे कर्क का मंगल ।

(१५) अस्त ग्रह (जो सूर्य के साथ रहने से अस्त हो)=अशुभ है बुरा फल देता है ।

(१६) शुभ ग्रह उदय हो (अस्त न हो) और वक्री हो और निर्मल काति हो अर्थात् देखने में प्रकाशवान दिखे तो अच्छा फल देता है ।

(१७) पाप ग्रह वक्री हो तो अशुभ है ।

(१८) पाप ग्रह युक्त या भाव स्वामी के शत्रु से युक्त या दृष्ट ग्रह अनिष्ट फल देता है । जैसे चतुर्थ में वृश्चिक का बुध पाप ग्रह राहु से युक्त हो तो पाप युक्त होने से बुध बुरा हुआ । यदि दशम स्थान में वृष का राहु है जो चतुर्थेश मंगल का शत्रु है तो बुध पर राहु की दृष्टि पड़ने से बुरा फल देगा ।

(१९) शुभ ग्रह जैसे शुभ या अशुभ स्थान में हो उसके शुभ या अशुभ फल को बढ़ाते हैं ।

पाप ग्रह अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के फलों को घटाते हैं । इसलिये शुभ ग्रह शुभ स्थान में अति शुभ और अशुभ ग्रह अशुभ स्थान में हो तो उसके अशुभ फल को कम करने के कारण अच्छे होते हैं और अशुभ ग्रह शुभ घर में बैठ कर उसके शुभ प्रभाव को घटाने के कारण हानिकारक होते हैं ।

(२०) शुभ स्थान=१,४,७,१०,१३,१६ भाव । सदा अशुभ स्थान=६,८,१२ भाव ।

अशुभ स्थान=२ और ७ घर मारक स्थान हैं । इनमें अशुभ ग्रह हो तो ये अशुभ होते हैं । परन्तु इनमें शुभ ग्रह हो तो समान भाव हो जाता है ।

सम स्थान=३ भाव (ये न शुभ हैं और न अशुभ हैं) ।

(२१) ग्रह जिस स्थान को देखता है उसके बल को बढ़ाता है । यदि भाव स्वामी होकर उस भाव को देखे तो अच्छा फल देता है । जैसे लाभ स्थान में मिथुन का गुरु पंचम भाव अपने स्वस्थान (घन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखता है तो पंचम भाव का फल अच्छा होगा ।

(२२) बुरे भी ग्रह हो परन्तु अच्छे घर में हो जैसे त्रिकोण, केन्द्र या लाभ में तो अच्छा फल देते हैं । जैसे सूर्य पाप ग्रह है परन्तु दशम (केन्द्र) स्थान में अच्छा होता है ।

(२३) शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अच्छा फल देते हैं ।

(२४) ग्रह जो ३, ६, ११ या, - ७, ८ भाव के स्वामी न हो तो शुभ फल देते हैं ।

(२५) ग्रह जो एक दूसरे से २-१२ भाव में या ६-८ घर में हो तो बुरा प्रभाव करते हैं ।

अर्थात् एक ग्रह दूसरे भाव में हो और दूसरा उससे वारहवें भाव में हो तो उसका सम्बन्ध बुरा है । या एक छठे दूसरा वहा से आठवें स्थान में हो तो उनका सम्बन्ध बुरा होता है । जैसे लग्न में मंगल है और छठे स्थान में शनि है तो ये एक दूसरे से ६-८ स्थान में हुए । मंगल पूर्ण दृष्टि से शनि को देखता है तो दृष्टि द्वारा सम्बन्ध हो गया यह बुरा है ।

(२६) भाव में पाप ग्रह हो या उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उस भाव की वृद्धि होती है । जैसे पंचम भाव में शुक्र शुभ ग्रह हो या उसकी दृष्टि हो तो अच्छा है ।

(२७) भाव में पाप ग्रह हो या उस पर पाप दृष्टि हो तो बुरा फल देता है । जैसे चतुर्थ में शनि हो उसकी दृष्टि हो तो बुरा हो ।

(२८) यदि भाव में शुभ और अशुभ ग्रह दोनों हो तो मिश्रित फल होगा । या भाव पर शुभ और अशुभ दोनों की दृष्टि हो तो मिश्रित फल होता होगा ।

(२९) जिस भाव में नीच या शत्रुक्षेत्री ग्रह हो उस भाव की हानि करते हैं । यदि स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोण, उच्च के या मित्रक्षेत्री ग्रह हो तो वह भाव शुभ फल देता है ।

(३०) भाव, शुभ ग्रह या भावेश युक्त या दृष्ट हो और पापयुक्त या दृष्ट न हो तो शुभ फल होता है ।

यदि पाप युक्त या दृष्ट होने से शुभ फल देने वाले भी बुरे हो जाते हैं । और शुभ युक्त या दृष्ट होने से अशुभ फल देने वाले भी अच्छे हो जाते हैं ।

(३१) भाव में, भाव स्वामी के अतिरिक्त यदि शुभ ग्रह अस्त, नीच या शत्रु स्थानी हो तो अच्छा फल नहीं देता ।

यदि पाप ग्रह अस्त, नीच या शत्रुस्थानी हो तो भाव फल को पूर्ण नाश कर देता है ।

(३२) भाव में शुभ स्थान का स्वामी हो या उसकी दृष्टि हो और वह भाव दुष्ट ग्रह या दुष्ट भावेश के साथ न हो या इनकी दृष्टि न हो तो अच्छा फल देता है ।

(३३) बुरे या भले भाव किसी ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो मध्यम फल देते हैं ।

(३४) जिस भाव में लग्नेश हो उस भाव की उन्नति होती है ।

(३५) भावेश-मित्र गृही, स्वगृही, मूलत्रिकोण या उच्च का हो तो अच्छा फल देता है ।

यदि अष्टम में या अस्त या शत्रु या नीच राशि में हो और शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट न हो तो भाव फल नाश हो जाता है ।

(३६) भावेश, पाप ग्रह भी हो परन्तु नीच, अस्त या शत्रुगृही न हो तो ऐसे भावेश युक्त या दृष्ट भाव बुरा नहीं होता ।

(३७) भावेश अपनी राशि में उच्च का हो परन्तु नवाश में नीच का हो तो अच्छा फल नहीं देता ।

इसी प्रकार अपनी नीचराशि में होकर अपने नवाश में उच्च राशि का हो जावे अच्छा फल देता है ।

जैसे मीन का शुक्र राशि में उच्च का है और अपने नवाश में कन्या राशि का अर्थात् नीच का हो जावे तो अच्छा फल नहीं देगा । यदि राशि में कन्या (नीच) राशि का शुक्र हो परन्तु नवाश में मीन (उच्च) का हो जावे तो अच्छा फल देगा । (नवाश निकालना अन्त में बताया है) ।

(३८) भावेश अस्तंगत या नीच का हो तो केन्द्र या त्रिकोण में रहने पर भी शुभ फल विशेष रूप से नहीं देता, अडचन और कष्ट के उपरान्त फल देता है ।

(३९) किमी भाव का फल, पहिले भावेश से विचारना, क्योंकि भावेश, उस भाव का स्वामी है और भावस्थित ग्रह उस भाव रूपी घर का किरायेदार ठहरा । भाव में बैठा शुभ ग्रह उस भाव की वाहती चमक-दमक अवश्य देता है, परन्तु भावेश के बुरे होने पर भाव से उत्पन्न फल की प्राप्ति में अडचन होती है । इस कारण भावस्थ ग्रह से भावेश प्रबल है ।

(४०) भावेश, ल न से केन्द्र या त्रिकोण या लाभ में हो तो वह भाव फल की वृद्धि करता है ।

(४१) ३, ६, ८ या ११ भाव के स्वामी जिस भाव में हो, बुरे होते हैं । ५ और ९ भाव के स्वामी अच्छे होते हैं ।

केन्द्र स्थानों के स्वामी यदि शुभ ग्रह हो तो बुरे फल देते हैं ।

केन्द्र स्थानों के स्वामी यदि पाप ग्रह हो तो अच्छे फल देते हैं ।

(४२) लग्नेश जिस भावेश के साथ हो उस भाव के फल की वृद्धि करता है, परन्तु लग्नेश यदि अष्टमेश के साथ हो तो उस भाव की हानि करता है। लग्नेश जिस भाव में हो या जिस भाव स्वामी के साथ हो उस भाव का वह फल देगा, परन्तु भाव स्वामी बली हो तब अच्छा फल देगा, यदि बलहीन हो तो दुःख देगा।

(४३) लग्नेश यदि अष्टमेश भी हो जाय तो शुभ समझा जाता है।

(४४) लग्नेश ६, ८, १२ भाव के स्वामियो के साथ हो तो बुरा है। लग्नेश जहाँ है उस भाव का स्वामी ६, ८, १२, भाव में हो तो बुरा है।

(४५) लग्नेश अष्टम में हो परन्तु शुभ दृष्टि हो तो बुरा फल नहीं देता।

(४६) लग्नेश जिस ग्रह से युक्त या दृष्ट है उस ग्रह का स्वस्थान क्या है मालूम करो, लग्नेश के प्रभाव से उसी स्थान के फल में वृद्धि होगी, जैसे नवम स्थान में लग्नेश बुध कुम्भ राशि का है वह चन्द्र से युक्त है, चन्द्र का स्वस्थान कर्क है, जो धन भाव में है तो बुध लग्नेश के प्रभाव से उस स्थान की वृद्धि होगी।

(४७) जिस भाव या भावेश या ग्रह के एक ओर पाप ग्रह हो और दूसरी ओर शुभ ग्रह हो तो मिश्रित फल देगा। यदि दोनों ओर शुभ ग्रह हैं तो शुभ फल देगा। यदि दोनों ओर पाप ग्रह हैं तो पाप ग्रहों से घिरा रहने के कारण बुरा फल देगा। जैसे तीसरा भाव लो, इसके एक ओर और दूसरे भाव में मंगल हो और चौथे भाव में शनि हो तो यह भाव दोनों ओर पाप ग्रहों से घिर जाने के कारण बुरा है। यदि दूसरे भाव में गुरु है और चौथे भाव में शुक्र हो तो यह शुभ ग्रहों से घिरा होने के कारण अच्छा है। यदि दूसरे भाव में शनि और चौथे भाव में गुरु हो तो एक ओर शुभ और दूसरी ओर अशुभ से घिरा होने के कारण मिश्रित फल देगा।

(४८) यदि कोई भाव स्वामी पाप ग्रह हो और तीसरे घर में पड़ जाय तो अच्छा फल देगा। परन्तु शुभ ग्रह तीसरे घर में पड़ जाय तो मध्यम फल देता है।

(४९) त्रिषणाय (३, ६, ११ भाव) ये अशुभ स्थान कहलाते हैं, क्योंकि इनके स्वामी शुभ ग्रह हो तो बुरे होते हैं और पाप ग्रह हो तो शुभ फल देते हैं।

(५०) त्रिक स्थान (६-८-१२ भाव)=दुष्ट स्थान हैं, शुभ ग्रह त्रिक में उस भाव के फल की हानि करते हैं और पापग्रह उस भाव की वृद्धि की हानि करते हैं।

(५१) किसी भाव का स्वामी त्रिक में हो या त्रिकेश जिस भाव में हो उस भाव के फल का नाश होता है। परन्तु शुभ ग्रह उसे देखता हो तो शुभ हो जाता है। जिस भाव का स्वामी त्रिक में हो वह उस भाव के अच्छे फल को बुरा और बुरे फल को अच्छा करता है।

(५२) कोई भाव स्वामी जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी यदि दुष्टस्थान में हो तो उस भाव की सब बातों में बुरा फल देगा ।

(५३) कोई दुष्ट स्थान (त्रिक) का स्वामी अपने स्वस्थान में हो और उसका यदि दूसरा भी स्वस्थान हो जो दुष्ट भाव में पड़ता हो तो वह दुष्ट स्थान का भी स्वामी कहलायगा, परन्तु उस दुष्ट स्थान का फल न देगा, अपने ही स्थान का जहाँ पर वह है, फल देगा । जैसे लाभ स्थान में मेघ का मंगल स्वस्थानी है, इसका दूसरा स्वस्थान वृश्चिक छठे घर में पड़ने से यह मंगल पट्टेश भी हुआ, परन्तु उसका हानि कारक फल न देगा, लाभ स्थान का ही फल देगा ।

(५४) किसी भाव का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अच्छा फल देगा ।

(५५) केन्द्र में शुभ ग्रह हो यदि वे केन्द्र स्वामी न हो तो बहुत शुभ होते हैं । क्योंकि केन्द्र स्वामी शुभ ग्रह बुरा फल देता है और पाप ग्रह केन्द्रेश हो तो अच्छा फल देता है ।

(५६) यदि पाप ग्रह केन्द्रेश होकर त्रिपणाय पति भी हो तो पाप कारक होते हैं । यदि पाप ग्रह केन्द्रेश होकर त्रिकोणेश भी हो तो शुभ फल देने में बलवान होते हैं ।

(५७) चार शुभ ग्रहों में से केन्द्रेश होने पर कौन सब से बुरा है इसका विचार गुरु शुक्र में विशेष शुभता होने से विशेष बुरे हैं ।

बुध कभी पाप ग्रह के साथ रह जाने से पाप ग्रह हो जाता है, इस से गुरु शुक्र की अपेक्षा बुध में अल्प दोष आता है ।

चन्द्रमा ये पूर्ण रहने से शुभ हैं, क्षीण होने से पाप हो जाता है, इससे बुध की अपेक्षा चन्द्र का दोष न्यून होता है । अर्थात् सब शुभ ग्रहों में चन्द्रमा में बहुत कम बुरा फल होता है ।

(५८) त्रिकोण में लग्न भी ली जाती है ।

पचम नवम भाव में चाहे शुभ या अशुभ ग्रह हो शुभ फल देते हैं ।

(५९) उच्च का ग्रह त्रिकोण में बहुत अच्छा होता है, परन्तु नीच का ग्रह त्रिकोण में बुरा फल देता है ।

(६०) केन्द्रस्वामी का शुभ फल का परिणाम परिश्रम से होता है । परन्तु त्रिकोणेश का शुभ फल बिना परिश्रम के होता है ।

(६१) केन्द्रेश या त्रिकोणेश यदि त्रिक स्थान में हो तो अपने सम्बन्ध वाले भाव में अशुभ प्रभाव डालते हैं ।

(६२) कोई भावेश अपने भाव से केन्द्र या त्रिकोण में पड़े तो शुभ फल देता है । जैसे तृतीयेश बुध, तीसरे भाव से केन्द्र (सप्तम) में पड़े अर्थात् तीसरे भाव से सातवाँ, नवम भाव आया तो यदि नवम भाव में तृतीयेश बुध पड़े तो शुभ फल देगा ।

(६३) यदि केन्द्रेश ये त्रिकोणेश के साथ हो तो अच्छा है। यदि दूसरे त्रिकोण के स्वामी से भी योग या दृष्टि द्वारा सम्बन्धित हो तो बहुत अच्छा फल देता है। जैसे वृष लग्न है, चतुर्थ में सिंह का सूर्य और बुध है तो केन्द्रेश सूर्य है, त्रिकोणेश (पंचमेश) बुध का यहाँ साथ हो गया। तब दूसरा त्रिकोणेश (नवमेश) शनि है, यदि वह दशम स्थान में स्वस्थानी है, चतुर्थ के ग्रहों को देखता है तो अच्छा है।

(६४) द्विद्वादश भाव (२-१२ भाव) विचार।

घनेश और व्ययेश अपने स्वभाव अनुसार फल नहीं देते। ये जिस शुभ या अशुभ घर में रहते हैं या जिस शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं या जिस स्थान के वे स्वामी हैं वहाँ जैसी शुभ या अशुभ राशि हो उसीके अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। अर्थात् २ और १२ भाव के स्वामियों का स्वतः का कोई विशेष गुण दोष नहीं है, उनके गुण दोष विचारने को देखो कि इन भावेश की राशि का स्वामी किस भाव में है, ये किस ग्रह के साथ है और ये भावेश किस भाव में पड़े हैं। इन तीनों रीति से इनका गुण दोष विचारना। अर्थात् २-१२ भाव के स्वामी शुभस्थान में या शुभ युक्त हो तो शुभ है। यदि अशुभ स्थान (६-८-१२ भाव) में या अशुभ युक्त हो तो अशुभ है।

(६५) छठा भाव यह ऋण रोग शत्रु का मुख्य स्थान है, यदि पाप ग्रह इसमें हो तो उस भाव के बुरे फल को नष्ट करेगा अर्थात् इनके नाश होने से वह सुखी होगा। यदि शुभ ग्रह हो तो इनको बढने नहीं देंगे, परन्तु अधिक लाभ नहीं कर सकते। यदि छठे भाव का स्वामी अपने घर पछ में हो तो अच्छा समझा जाता है।

(६६) अष्टम भाव में सूर्य-चंद्रमा बलवान नहीं होते, परन्तु ये अष्टमेश हो तो अच्छे समझे जाते हैं। और अष्टमेश यदि लग्नेश भी हो तो वह अच्छा समझा जाता है।

अष्टमेश अशुभ है परन्तु यह त्रिकोणेश भी हो तो शुभ है। अष्टमेश त्रिपणाय का भी स्वामी हो तो अशुभ कारक है। अष्टम में शुभ ग्रह हो तो अशुभता कम हो जाती है और कुछ शुभ भी हो जाता है। जिस भाव में अष्टमेश हो उस भाव का नाश हो जाता है।

(६७) व्ययेश व्यय भाव में हो तो शुभ समझा जाता है।

(६८) पाप ग्रह १, ८, १२ भाव में बुरा फल करते हैं। क्षीण चन्द्र १, ६, ८, १२ भाव में अशुभ है। पाप ग्रह ३, ६, ११ भाव में अच्छे हैं। शुभ ग्रह सब स्थानों में अच्छा फल देते हैं। गुरु शुक्र सदा शुभ हैं चाहे वे नीच के हो या ऐश्वर्य के साथ हों। परन्तु बुरी परिस्थिति में रहने के कारण उनकी भलाई करने की शक्ति घट जाती है।

व्ययेश के विचार से स्थानों के स्वामियों की अच्छाई बुराई का विचार—

किसी भी भाव के व्ययेश से उस भाव के स्वामी की स्थिति पर विचार।

१ लग्नेश—यह धन भाव का व्ययेश हुआ, धन अपने तन की रत्ना के लिये व्यय कराने में, लग्नेश शुभ हुआ ।

२ द्वितीयेश—यह २ तीय भाव का व्ययेश हुआ । तृतीय भाव सहज पराक्रम और आयु का स्थान है । इस कारण इसके व्यय कारण होने से द्वितीयेश अशुभ और मारक कहलाता है ।

३ तृतीयेश—यह चतुर्थ का व्ययेश हुआ । चतुर्थ से सुख आदि का विचार होता है । इससे तृतीयेश यह सुख का व्ययकारक होने से अशुभ होता है ।

४ चतुर्थेश—यह पंचम का व्ययेश हुआ । पंचम विद्या का स्थान है यदि वह पापी होकर विद्या का नाश करता है तो उचित ही है । यदि शुभ होकर विद्या का नाश करता है तो अनुचित है । इस कारण चतुर्थेश शुभ हो तो अशुभ और पाप ग्रह हो तो शुभ कारक कहा जाता है ।

५ पंचमेश—यह पष्ठ भाव का व्ययेश हुआ । पष्ठ रोग, शत्रु आदि का स्थान है, उसका नाशक पंचमेश हुआ । इससे पंचमेश अच्छा कहा जाता है ।

६ षष्ठेश—यह सप्तम स्थान का व्ययेश हुआ । इस कारण सप्तम स्त्री का नाशक षष्ठेश अशुभ हुआ ।

७ सप्तमेश—अष्टम का व्ययेश हुआ । अष्टम आयु का स्थान है जिसका नाशक सप्तमेश हुआ, जिससे सप्तमेश मारक कहलाया ।

८ अष्टमेश—यह नवम का व्ययेश हुआ । नवम भाग्य का स्थान है, जिसका व्ययकारक होने से अष्टमेश अशुभ हुआ ।

९ नवमेश—यह दशम भाव का व्ययेश है । दशम कर्मस्थान अर्थात् संसार का बन्धन है । इस कारण सासारिक बन्धन अर्थात् कर्म का व्यय करने वाला होने के कारण नवमेश शुभ हुआ ।

१० दशमेश—यह लाभ स्थान का व्ययेश है । लाभ का व्यय अर्थात् हानिकारक होने से यह अशुभ कहलाता है ।

दशमेश पाप ग्रह होकर अशुभत्व के फल का नाशक होने से शुभ समझा जाता है और शुभ ग्रह अशुभ बढ़ाने के कारण बुरा समझा जाता है ।

११ लाभेश—यह व्यय का व्ययेश हुआ । व्यय का नाश करता है । खर्च नहीं होने देने के कारण बुरा है, क्यों कि पैसा रहने पर भी व्यय नहीं करने दे तो आवश्यक सामग्री अन्न वस्त्र आदि प्राप्त करना कठिन हो जायगा । इसमें लाभेश अशुभ कहा गया है ।

१२ व्ययेश—यह लग्न का व्ययेश है । लग्न शरीर है उसका व्ययकारक होने से यह अशुभ हुआ ।

इससे प्रगट हुआ कि—

त्रिषणाय—(३-६-११) भाव के स्वामी पापकारक होते हैं ।

त्रिकोण—(५-९) भाव के स्वामी शुभ कारक होते हैं ।

केन्द्र के स्वामी—शुभ हो तो अशुभकारक होते हैं । और पाप हो तो शुभकारक होते हैं ।

२-८-१२ भाव के स्वामी—अपने साथी और स्थान आदि के अनुसार फल देते हैं ।
२ और ७ भाव—मारक स्थान हैं—इनके स्वामी मारकेश कहलाते हैं ।

अध्याय ४५

गोचर विचार

गो का अर्थ है तारा (नक्षत्र या ग्रह) और चर अर्थात् चलना । सूर्यादि नवग्रह प्रतिदिन दैनिक गति के प्रमाण से भ्रमण करते हैं, जिस की साप्ताहिक या दैनिक स्थिति पंचांग में दी रहती है ।

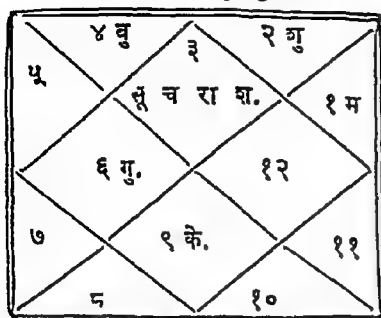
इन्ही ग्रहों की गति के अनुसार भिन्न-भिन्न समय में भिन्न राशियों पर ग्रह सदा चलते रहते हैं और उस भ्रमण से जो प्रभाव भिन्न राशियों पर पड़ता है उसे गोचर फल कहते हैं ।

गोचर के अनुसार ग्रह का फल जानने की यह रीति है कि जन्म समय के चन्द्र की जो अपनी राशि हो, उसको प्रथम स्थान मान कर उसपर से प्रत्येक स्थान के फल का क्रमानुसार विचार होता है । उसी जन्म राशि को प्रथम स्थान मान कर उसपर से प्रत्येक ग्रह का स्थान गिन कर जानना चाहिए । जैसे किसी की कुम्भ राशि है तो जब कभी गोचर फल देखना हो तो पंचांग में जो कुण्डली ग्रहस्थिति के अनुसार दी रहती है उस कुण्डली में जहाँ कुम्भ राशि दी हो उसे पहिला स्थान माने और उसके आगे के स्थानों की क्रमानुसार गणना करो । तन घन आदि द्वादश स्थान लग्न-कुण्डली में जैसे गिनते हैं उसी प्रकार यहाँ भी पहिले स्थान को तन स्थान समझ कर स्थानों की गणना करना ।

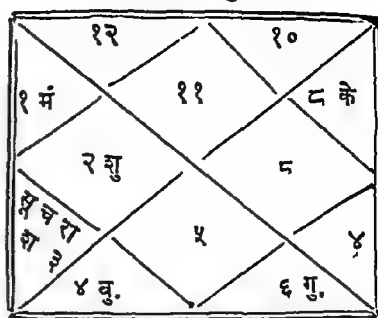
उदाहरण के लिये सम्वत् २००२ आषाढ कृष्ण अमावस्या को कुण्डली पंचांग से ली । जन्म राशि कुम्भ का विचार करना है ।

जन्म समय चन्द्र कुम्भ राशि का था, इस कारण राशि कुम्भ कहलाई । पंचांग की कुण्डली को घुमा कर इस प्रकार रखो कि अपनी राशि लग्न स्थान पर आ जावे ।

पचाग मे दी हुई कुण्डली



अपनी गोचर कुण्डली



कुम्भ राशि को लग्न स्थान मे लिख कर शेष राशिया क्रमानुसार बाईं ओर से लिख कर उसमे वे ही ग्रह स्थापित कर दो जो पचाग की कुण्डली में दिये हैं, तो अपनी गोचर कुण्डली बन जायगी, जैसा यहां बताया है। जिस राशि पर जो ग्रह पचाग की कुण्डली में दिये रहते हैं उसी के अनुसार गोचर कुण्डली में रहते हैं, केवल अन्तर यही रहता है कि पचाग में सूर्य जिस राशि पर रहता है वह लग्न के स्थान मे सबसे ऊपर दिया रहता है, अपनी गोचर कुण्डली मे लग्न स्थान पर अपनी राशि रहती है। अपनी इसी गोचर कुण्डली पर से फल का विचार करना पड़ता है।

अपनी कुण्डली में मेष का मंगल तीसरे स्थान मे है और वृष का शुक्र चौथे स्थान मे है। पंचम मे मियुन का सूर्य चन्द्र शनि और राहु है। षष्ठ मे कर्क का बुध, अष्टम मे कन्या का गुरु और लाभ स्थान में धन का केतु है। वस, इसी के अनुसार फल का विचार करना पड़ेगा।

गोचर फल विचारने का चक्र प्रत्येक पचाग मे दिया रहता है उससे देख लेना। इसका पूरा फल विचारना पृथक् फलित खण्ड में दिया जायगा।

जन्म राशि और जन्म लग्न में क्या अन्तर है ध्यान में रखना चाहिए। जन्म समय जो राशि पूर्व में उदय हो रही है वह जन्म लग्न है और जन्म समय चन्द्रमा जिस राशि मे रहता है वह राशि जन्मराशि कहलाती है। यहां गोचर फल जन्मराशि से विचार किया जाता है।

अध्याय ४६

शनि का विशेष विचार

साढ़ेसाती शनि

शनि का प्रभाव इतर ग्रहों को अपेक्षा विशेष देखने मे आता है, क्योंकि शनि अधिकतर दु ख प्रगट करता है। यह एक राशि मे लगभग २॥ वर्ष रहता है। शनि का

इस काल में नाना प्रकार के कष्ट और भिन्न २ मनुष्यों को जन्म कुण्डलो के अनुसार शनि के प्रभाव से भिन्न २ प्रकार की आपत्तियाँ आती हैं। इस में किसी की मृत्यु होती है, किसी के माता पिता का मरण होता है, किसी की स्त्री की मृत्यु होती है, किसी का घर जलता है, किसीकी जीविका जाती है इत्यादि अनेक प्रकार के सकटमय प्रसंग आते हैं। परन्तु विशेष परिस्थिति में यह कभी २ शुभ फल भी देता है। जब शनि की अशुभ साढेसाती हो तो लोहे की अगूठी पहिरना, शनि की उपासना करना, जप दान आदि करना चाहिए।

किसीको साढेसाती आने पर फिर ३० वर्ष में साढेसाती आती है। एक मनुष्य को ३ बार से अधिक साढेसाती नहीं आती। चौथी साढेसाती लाखों में बिरला मनुष्य भोगता है।

शनि की साढेसाती का शुभाशुभ जो फल मिलता है नीचे चक्र में बताया है कि किस राशि वाले को किस प्रकार पीडा आदि देता है।

राशि	समय और प्रभाव	राशि	समय और प्रभाव
१ मेष	बीच के २॥ वर्ष अनिष्ट	७ तुला	अंत के २॥ वर्ष अनिष्ट
२ वृष	आरम्भ के २॥ वर्ष अनिष्ट	८ वृश्चिक	पहिले २॥ वर्ष अच्छे शेष अनिष्ट
३ मिथुन	अन्त के " "	९ धन	अंत के २॥ वर्ष अच्छे शेष अनिष्ट
४ कर्क	पहिले २॥ वर्ष अच्छे शेष अनिष्ट	१० मकर	पहिले २॥ वर्ष किंचित अनिष्ट
५ सिंह	अन्त के २॥ श्रेष्ठ शेष अनिष्ट	११ कुम्भ	सब अच्छा
६ कन्या	पहिले २॥ वर्ष अनिष्ट	१२ मीन	अंत के २॥ वर्ष अनिष्ट

मतान्तर—कोई कहते हैं धन के पूर्ण ७॥ वर्ष अनिष्ट, मकर के पहिले ५ वर्ष और कुम्भ के पहिले २॥ वर्ष अनिष्ट कारक होते हैं।

विशेष अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि साढे साती का शुभाशुभ फल जातक के जन्म शनि के ऊपर निर्भर है।

जब शनि जन्म राशि से

१२ वें स्थान में आता है तो=शरीर कष्ट, अधिक खर्च, व्यापार में अडचन, धन की हानि और शिर व नेत्र में पीडा करता है।

जन्म स्थान में आता है तो—उदर विकार, जमीन-सम्पत्ति तथा पशु-वाहन की हानि, अधिकारियों से मनमुटाव और अपयश करता है।

दूसरे स्थान में आता है तो=निरर्थक यात्रा, कुटुम्ब तथा शत्रु विरोध, कुटुम्ब वियोग, राजमार्ग में झगड़ उपस्थित हो।

शनि का स्वस्थान मकर और कुम्भ है। जब शनि अपने स्वस्थान या उच्च स्थान पर आता है तो जन्मकुण्डली की स्थिति के अनुसार वह जातक को लाभ भी करता है।

अद्वैया शनि विचार—

जब शनि जन्मराशि से चतुर्थ या अष्टम स्थान में होता है तो उसे अद्वैया शनि कहते हैं। इसमें भी शनि कष्ट देता है, जिस का फल इस प्रकार होता है —

चतुर्थ में—शरीर तथा माता पिता को कष्ट, राज मार्ग से चिंता, सम्पत्ति सम्बन्धि झंझटें, घन खर्च।

अष्टम में शरीर व शत्रु भय, मानसिक चिन्ता और धन का अपव्यय।

शनि का चरण विचार—

शनि जब एक राशि छोड़ कर दूसरी राशि में जावे उस समय देखो शनि अपनी जन्म राशि से कितने स्थान में है, उसके अनुसार निम्नलिखित फल का विचार करना।

१-६-११ स्थान में हो तो=सुवर्णपाद=फल=सौख्य फल।

२-५-९ „ „ =रजत पाद=फल=सर्व काम फलप्रद।

३-७-१० „ „ =ताम्र पाद=फल=मध्यम फल प्रद।

४-६-१२ „ „ लोह पाद =फल=दुःख दारिद्र्य दायक।

अध्याय ४७

आयुर्दाय

आयु के ३ भेद हैं। (१) अल्पायु, (२) मध्यायु, (३) दीर्घायु।

साधारण प्रकार से आयु का विचार लग्नेश और अष्टमेश से होता है।

दीर्घायु

मध्यमायु

अल्पायु

आयु (८० से १२० वर्ष तक) (४० से ८० वर्ष तक) (३० से ४० वर्ष तक)
लग्नेश चर स्थिर द्विस्वभाव चर स्थिर द्विस्वभाव चर स्थिर द्विस्वभाव
अष्टमेश चर द्विस्व० स्थिर स्थिर चर द्विस्व० द्विस्व० स्थिर चर

स्पष्टीकरण

(१) दीर्घायु—लग्नेश अष्टमेश दोनों चर राशि में हो या एक स्थिर दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो।

(२) मध्यमायु—लग्नेश अष्टमेश में से एक चर दूसरा स्थिर में या दोनों द्विस्वभाव में हो।

(३) अल्पायु—लग्नेश अष्टमेश में से एक चर दूसरा द्विस्वभाव में हो या दोनों स्थिर राशि में हो ।

१ इस प्रकार राशि जिसमें लग्नेश (लग्न स्वामी) और अष्टमेश (अष्टम स्थान का स्वामी) हो, विचारना कि वह राशि चर स्थिर या द्विस्वभाव है । उसर से ऊपर बताये चक्र के अनुसार आयु का विचार करना यह पहली रीति हुई ।

२ इसी प्रकार दूसरी रीति यह है कि लग्न या सप्तम भाव में चन्द्र हो तो लग्न और चन्द्र से विचार करना । यदि वहाँ चन्द्र न हो तो शनि और चन्द्र से ऊपर बताये अनुसार आयु का विचार करना ।

३ तीसरा प्रकार यह है कि लग्नेश और अष्टमेश की तरह लग्न और होरा लग्न में भी ऊपर बताये अनुसार विचार करना अर्थात् चर आदि उस राशि की सज्ञा का विचार कर आयु का विचार करना ।

इस प्रकार तीनों बताई हुई रीति से या २ प्रकार की रीति से जो आयु प्राप्त हो नीचे चक्र के अनुसार आयु का विचार करना ।

आयु	दीर्घायु	मध्यमायु	अल्पायु
आयु वर्ष	१२० १०८ ९६ ८० ७२ ६४ ४० ३६ ३८		
कितने प्रकार में	३ २ १ ३ २ १ १ २ ३		
बाई हुई आयु			

जैसे दीर्घायु ३ प्रकार से आने पर १२० वर्ष, २ प्रकार से १०८ वर्ष, केवल एक प्रकार से ९६ वर्ष । इसी प्रकार ऊपर चक्र के अनुसार आयु का विचार करना ।

इसके आगे और भी गणित द्वारा आयु स्पष्ट की जाती है । यहाँ केवल प्रारम्भिक ज्ञान के लिये दिया है । पूरी आयु निकालना व लग्न और होरा लग्न गणित द्वारा निकालना गणित खण्ड में दिया है । सूक्ष्म रूप से आयुर्द्वय गणित करने से ही निकलता है । आरंभ में विद्यार्थी को सबसे ऊपर बताये हुए स्थूल प्रकार से आयु निकाल कर मतोप कर लेना चाहिए । जैसे

(१) यह महात्मा गांधी जी की कुटली है ।

(१) यहाँ लग्नेश शुक्र लग्न में तुला राशि का है तुला चर लग्न है (२) और अष्टमेश भी शुक्र होने से चर लग्न में हुआ, दोनों चर आने पर दीर्घायु हुई ।

(१) दीर्घायु योग

श म ढ	६ सु
११ गु.	७ बु शु
१० के.	४ रा
११	१ गु.
१२	२

(२) मे लग्नेश चन्द्र वृष राशि में है जो स्थिर राशि है । अष्टमेश शनि मेष चर राशि में है । एक चर दूसरा स्थिर होने से मध्यमायु हुई ।

(२) मध्यमायु योग

५	३ मं.
६	४
७	सू. बु. शु श १
८ रा.	१०
९	११

(३) अल्पायु योग

२	१२
३	१
बु. शु श रा. ४	१० के वं
गु. मं. ५	७
६	९

(-) लग्न मेष है लग्नेश मंगल हुआ । यह मंगल सिंह राशि में है जो स्थिर राशि है । अष्टम भाव में वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल अष्टमेश हुआ । यह मंगल स्थिर राशि सिंह में है । दोनों स्थिर राशि में होने से अल्पायु हुई ।

अध्याय ४८

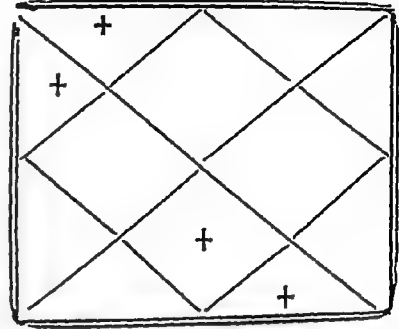
मारक स्थान और मारकेश विचार

जन्म कुण्डली में विशेष स्थान जिस से मृत्यु होने का विचार होता है उसे मारक स्थान कहते हैं । मारक स्थान का स्वामी मारकेश कहलाता है ।

ज्योतिष में मृत्यु शब्द का अर्थ विस्तीर्ण है ।

यहाँ मृत्यु शब्द मे=यथा, दुःख, भय, लज्जा, रोग, शोक, मरण तथा अपमान भी सम्मिलित हैं।

मारक स्थान ।



(१) लग्न से अष्टम स्थान और अष्टम से अष्टम स्थान अर्थात् तीसरा स्थान ।

इन दोनों का व्यय स्थान (वारहवाँ स्थान अर्थात् अष्टम, का व्यय स्थान सप्तम हुआ और तीसरे का व्यय स्थान दूसरा भाव हुआ । अर्थात् दूसरा तीसरा सप्तम और अष्टम स्थान, कुंडली में जहाँ + चिह्न हैं, मारक स्थान कहलाते हैं । इन चारों में द्वितीय और सप्तम मुख्य और बलवान मारक स्थान हैं । इन मारक स्थान के स्वामी मारकेश कहलाते हैं ।

मारकेश विचार (संक्षिप्त में)

कुण्डली में अल्प, मध्य, पूर्ण आयु के विचार के उपरांत मारकेश का विचार करना चाहिए ।

(१) गनि और केतु की महामारक मंज्ञा है । ये मारकेश होते हैं तो अति अनिष्ट प्रभाव पहुँचाते हैं ।

(२) सूर्य और चन्द्र को छोड़ कर शेष सब ग्रह, राहु केतु भी मारक स्थान के स्वामी होने पर मारकेश होते हैं ।

(३) चन्द्र जब बुरे स्थान में हो तो उसकी अंतर्दशा में भी मृत्यु हो जाती है ।

(४) गनि जब पाप ग्रह के साथ हो तो मारकेश होने पर सब ग्रहों को दबा कर मृत्यु कारक होता है ।

(५) मारकेश की मुख्य दशा व मारक स्थान में स्थित क्रूर ग्रह की अंतर्दशा में या पाप ग्रह की महादशा में जब पाप ग्रह का अन्तर (अन्तर्दशा) हो तो मृत्यु होती है ।

(६) बलवान ग्रह की दशा में जब वह मारकेश होता है तो मृत्युतुल्य कष्ट, रोग, भय, शोक, अग्नि भय, चोर भय, आदि दुःख प्रभाव उत्पन्न करता है ।

अध्याय ४६

दशासाधन

ग्रहो का जो फल होता है उस फल की प्राप्ति का समय जानने को दशा साधन करना पड़ता है ।

दशा कई प्रकार की हैं परन्तु उनमें साधारण प्रकार से मुख्य ३ दशाएँ उपयोग में आती हैं । इतर दशाओं के साधन में कुछ गणित करना पड़ता है और कही कही अधिक गणित करना पड़ता है, इस कारण उनको यहाँ छोड़ देते हैं । गणित खड में उनका वर्णन होगा ।

३ प्रकार की दशा ।

(१) विंशोत्तरी दशा (२) अष्टोत्तरी दशा (३) योगिनी दशा ।

जन्म पत्रिका में प्रायः विंशोत्तरी या अष्टोत्तरी दशा निकाली जाती है । विंशोत्तरी दशा में परम आयु १२० वर्ष की और अष्टोत्तरी दशा में १०८ वर्ष की मान कर दशा साधन की जाती है ।

इन दशाओं का फल जानने के लिये जैसा ग्रह का फल होगा वैसा फल उसकी दशा में होगा । उन ग्रहों के विषय में गुण दोष अच्छी तरह जान लेना चाहिये ।

विंशोत्तरी या अष्टोत्तरी दशा में से एक कोई दशा साधन करना चाहिए । यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि समय जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा और कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो तो अष्टोत्तरी दशा लेना चाहिए ।

शुक्ल पक्ष में दिन के समय या कृष्ण पक्ष में रात्रि के समय जन्म हो तो योगिनी दशा साधन करना चाहिए । परन्तु बहुधा ज्योतिषी लोग विंशोत्तरी और योगिनीदशा दोनों साधन करते हैं । अष्टोत्तरी दशा अधिकतर दक्षिण तथा गुजरात में प्रचलित है । मुख्य दशा होने के कारण यहाँ केवल विंशोत्तरी दशा निकालना बतलाते हैं ।

विंशोत्तरी दशा साधन

विंशोत्तरी दशा में परम आयु १२० वर्ष की मानी गई है । जिस नक्षत्र में अपना जन्म हुआ हो उस नक्षत्र के विचार से ग्रह की आरभ दशा निकाली जाती है ।

इस दशा में ग्रहों की दशा का क्रम और वर्ष एवम् उनके नक्षत्र नीचे चक्र में बताये गये हैं । कृत्तिका को आदि नक्षत्र मान कर एक एक नक्षत्र में एक एक ग्रह भोगता है । इस प्रकार ६ ग्रह २७ नक्षत्र भोगने से प्रत्येक ग्रह को ३-३ नक्षत्र मिलते हैं ।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ग्रह °	आदित्य (सूर्य)	चंद्र	कुज (मंगल)	राहु	जीव (गुरु)	शनि	बुध	केतु	शुक्र
सकेत अक्षर	आ०	च०	कु०	रा०	जी०	श०	बु०	के०	शु०
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२०
चंद्र नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पूर्वा.
	उ. फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूर्वा.
	उ. पा.	श्रवण	घनि	शत.	पू. भा	उ. भा	रेवती	अश्वि.	भरणी.

ग्रहों का क्रम ऊपर दिये सकेताक्षर से पंडित लोग स्मरण रखते हैं।

ग्रह की दशा निकालना—

कृत्तिका नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिनने में जो संख्या आवे उसमें ६ का भाग दो। जो शेष बचे आ० च० कु० रा० जी० श० बु० के० शु० इस प्रकार क्रम पूर्वक गिनो जो ग्रह आवे उस ग्रह की महादशा में जन्म हुआ ऐसा जानना।

जैसे आर्द्रा नक्षत्र में जन्म हुआ है तो कृत्तिका से आर्द्रा तक गिना ४ संख्या हुई। यह संख्या ६ से अधिक होती तो ६ का भाग देते, शेष ४ ही रहा। आ० १ च० २ कु० ३ रा० ४ गिनने से चौथी राहु की महादशा आई।

ऊपर चक्र दिया है, उसमें गिनने की आवश्यकता नहीं है। जन्म नक्षत्र आर्द्रा के ऊपर क्रम का ४ दिया है, नीचे राहु लिखा है और नीचे १८ वर्ष लिखे हैं। इससे प्रगट हुआ कि राहु की महादशा में जन्म हुआ है और यह महादशा १८ वर्ष रहती है।

आर्द्रा नक्षत्र कुछ भुक्त हो चुका होगा उसी अनुपात से राहु के वर्ष भी भुक्त हो गये होंगे। जन्म नक्षत्र कितना भुक्त हो चुका है और कितना भोगने को शेष है और पूरा नक्षत्र कितने घड़ी पल का है जान कर उसी अनुपात से दशा के भुक्त वर्ष निकाले जाते हैं।

(भयात ५ महादशा वर्ष) ÷ भोग = भुक्त वर्ष मास दिन आदि।

(महादशा वर्ष — भुक्त वर्ष) = भोग्य वर्ष महादशा के (गणित आगे दिया है)

अंतर्दशा

महादशा का समय बहुत बड़ा रहता है। उससे सूक्ष्म समय निकालने को अंतर्दशा निकालना पड़ता है। अंतर्दशा से भी सूक्ष्म समय प्रत्यंतर दशा में और उससे भी सूक्ष्म समय विदशा साधन करने से निकलता है। यह सब गणित खंड में दिया है। यहां केवल अंतर्दशा निकालना बतलाते हैं।

जिस ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा निकालना हो तो पहिले उस ग्रह की अन्तर्दशा होगी जिसकी महादशा है। उसके उपरान्त उसके आगे क्रमानुसार जो ग्रह चक्र में दिये हैं उनकी अन्तर्दशा होगी।

अन्तर्दशा के ग्रहों के वर्ष निकालने के लिये अन्तर्दशा में जो ग्रह पड़ा है उस के वर्ष और महादशा के वर्ष की संख्या गुणा कर $= \frac{1}{3} \times 10 = 10$ का भाग दो तो अन्तर्दशा के मास दिन आदि की संख्या निकल आयेगी। १२ मास से अधिक हो तो १२ का भाग देकर वर्ष बना लो। १० का भाग देने से जो बच रहे उस में ३ का गुणा कर देने से दिन की संख्या आ जायेगी। जैसे सूर्य वर्ष ६ है। सूर्य की महादशा में पहिले सूर्य ही की अन्तर्दशा होगी।

अन्तर्दशा सूर्य वर्ष ६ + महादशा सूर्य वर्ष ६ = ६ + ६ = ३६ $\div$ १० = ३ मास १८ दिन। ३६ में १० का भाग दिया तो लब्धि ३ के ३ मास हुए, शेष ६ $\div$ ३ = २ दिन हुए। इसी प्रकार सब ग्रहों की अन्तर्दशा निकाली जाती है। यहाँ पहिले सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा हुई। इसके आगे चन्द्र, फिर मंगल की इत्यादि क्रमानुसार अन्तर्दशा होगी। सब अन्तर्दशाओं के वर्ष का योग, महादशा की वर्ष संख्या के बराबर होता है। आगे प्रत्येक ग्रहों के अन्तर्दशा का चक्र और उसका वर्ष आदि दिया है।

विंशोत्तरी अन्तर्दशा चक्र—

सूर्य की अन्तर्दशा	चन्द्र की अन्तर्दशा	मंगल की अन्तर्दशा	राहु की अन्तर्दशा	गुरु की अन्तर्दशा
ग्रह वर्ष मा दि ग्रह वर्ष मा दि ग्रह व मा दि ग्रह व. मा. दि ग्रह व. मा. दि				
सूर्य ० ३ १८ चन्द्र ० १० ० मंगल ० ४ २७ राहु २ ८ १२ गुरु २ १ १८				
चन्द्र ० ६ ० मंगल ० ७ ० राहु १ ० १८ गुरु २ ४ २४ शनि २ ६ १२				
मंगल ० ४ ६ राहु १ ६ ० गुरु ० ११ ६ शनि २ १० ६ बुध २ ३ ६				
राहु ० १० २४ गुरु १ ४ ० शनि १ १ ६ बुध २ ६ १८ केतु ० ११ ६				
गुरु ० ६ १८ शनि १ ७ ० बुध ० ११ २७ केतु १ ० १८ शुक्र २ ८ ०				
शनि ० ११ १२ बुध १ ५ ० केतु ० ४ २७ शुक्र ३ ० ० सूर्य ० ६ १८				
बुध ० १० ६ केतु ० ७ ० शुक्र १ २ ० सूर्य ० १० २४ चन्द्र १ ४ ०				
केतु ० ४ ६ शुक्र १ ८ ० सूर्य ० ४ ६ चन्द्र १ ६ ० मंगल ० ११ ६				
शुक्र १ ० ० सूर्य ० ६ ० चन्द्र ० ७ ० मंगल १ ० १८ राहु २ ४ २४				
योग ६ ० ० योग १० ० ० योग ७ ० ० योग १८ ० ० योग १६ ० ०				

शनि की अन्तर्दशा			बुध की अन्तर्दशा			केतु की अन्तर्दशा			शुक्र की अन्तर्दशा		
ग्रह	वर्ष	मा. दि.	ग्रह	व.	मा. दि.	ग्रह	व.	मा. दि.	ग्रह	व.	मा. दि.
शनि	३	० ३	बुध	२ ४	२७	केतु	० ४	२७	शुक्र	३ ४	०
बुध	२	८ ६	केतु	० ११	२७	शुक्र	१ २	०	सूर्य	१ ०	०
केतु	१	१ ६	शुक्र	२ १०	०	सूर्य	० ४	६	चन्द्र	१ ८	०
शुक्र	३	२ ०	सूर्य	० १०	६	चन्द्र	० ७	०	मंगल	१ २	०
सूर्य	० ११	१२	चन्द्र	१ ५	०	मंगल	० ४	२७	राहु	३ ०	०
चन्द्र	१ ७	०	मंगल	० ११	२७	राहु	१ ०	१८	गुरु	२ ८	०
मंग.	१ १	६	राहु	२ ६	१८	गुरु	० ११	६	शनि	३ २	०
राहु	२ १०	६	गुरु	२ ३	६	शनि	१ १	६	बुध	२ १०	०
गुरु	२ ६	१२	शनि	२ ८	६	बुध	० ११	२७	केतु	१ २	०
योग	१६	० ०	योग	१७	० ०	योग	७	० ०	योग	२०	० ०

दशा साधन और दशा का समय निकालने का उदाहरण

जिसके जन्म कुण्डली में विंशोत्तरी दशा निकालना है उसके लिये जन्म नक्षत्र का भयात और भभोग निकालना चाहिए।

(देखो कुण्डली बनाने का गणित)

मान लो सम्बत् १९९५ इष्ट कालीन सूर्य कन्या के गताश १५ (१ रा १५°)
(यहाँ सूर्य स्पष्ट ठीक नहीं मालुम है केवल राशि अंश मालुम है। इस कारण कला विकला को छोड कर सूर्य के केवल राशि अंश लिया है)।

जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढा भयात (भुक्त घडी) ४८ घ. १२ प , भभोग (पूर्ण नक्षत्र) ६६ घ. १२ प. है। इसका विंशोत्तरी मत से दशा साधन करना है।

विंशोत्तरी दशा चक्र में पू. पा. जन्म नक्षत्र से शुक्र की महादशा होती है। इसके पूर्ण वर्ष २० है तो शुक्र की महादशा में जन्म हुआ है ऐसा कहेंगे। शुक्र के २० वर्ष में कितने वर्ष भुक्त हो चुके हैं और कितने वर्ष भोगने को रहे हैं गणित से निकालते हैं।

(भयात X महादशा वर्ष) ४८ घ. १२ प. X २० वर्ष २८९२ प. X २० वर्ष ५७८४०

भभोग

६६-१२

३६७२ पल

३६७२

= १४ वर्ष ६ मा. २२ दिन भुक्त वर्ष

घड़ी के पल बताये

४८ घ. १२ प.	६६ घ. १२ प
<u>×६०</u>	<u>×६०</u>
२८८०	३९६०
<u>+ १२</u>	<u>+ १२</u>
२८९२ पल	३९७२ पल
भयात	भभोग

शुक्र वर्ष-मास-दिन

पूर्ण वर्ष-१०	०	०
भुक्त वर्ष-१४	६	२२
शेष ५	५	८ भोग्य वर्ष
शुक्र की महादशा	शुक्र के	
वर्ष. म. दि.	और भोगने को रही ।	
५	५	८

३९७२)५७८४०(१४ वर्ष

<u>३९७२</u>
१८१२०
<u>१५८८८</u>
२२३२२

×१२ मास

३९७२)२६७८४(६ मास

<u>२३८३२</u>
२९५२

×३० दिन

३९७२)८८५६०(२२ दिन

<u>७९४४</u>
६१२०
<u>७६४४</u>
११७६

विंशोत्तरी दशा चक्र

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	५	५	८
सूर्य	६	०	०
चंद्र	१०	०	०
मंगल	७	०	०
राहु	१८	०	०
गुरु	१६	०	०
शनि	१६	०	०
बुध	१७	०	०
केतु	७	०	०

अंतर्दशा साधन

शुक्र की महादशा केवल ५ व० ५ मा० ८ दि० भोगने को शेष रही है। अब इसमें देखना है, शुक्र के अन्तर्गत कौन ग्रह की अन्तर्दशा भोगने को रही है। शुक्र महादशा की अन्तर्दशा के वर्ष उलटे क्रम से घटाते जाना चाहिए। अर्थात् अन्त की अन्तर्दशा के वर्ष घटने पर और शेष रहे तो उसके पहिले जो ग्रह हो उस की दशा घटाना, इसी प्रकार जब तक घटते जावे उलटे क्रम से घटाते जाना चाहिए। जो शेष रहे वहाँ से अन्तर्दशा का समय गिनना चाहिए। शुक्र की अन्तर्दशा में इस प्रकार वर्ष है।

देखो अन्तर्दशा चक्र—

ग्रह	वर्ष	मास		प० मा० दि०
१ शुक्र	३	४	शुक्र भोग्य वर्ष	५ ५ ८
२ सूर्य	१	०	- ९ अंत का केतु	१ २ ० घटाया
३ चंद्र	१	८	शेष	४ ३ ८
४ मंगल	१	२	- ८ बुध	२ १० ० घटाया
५ राहु	३	०	शेष	१ ५ ८
६ गुरु	२	८	- ७ शनि	३ २ ० नहीं घटा
७ शनि	३	२		
८ बुध	२	१०		
९ केतु	१	२		
योग	२०	०		

यहाँ जलते क्रम से अन्तर्दशा के वर्ष घटाना आरंभ किया। केतु और बुध के वर्ष घट गये, शनि के वर्ष नहीं घटे। इससे प्रगट हुआ कि शनि की अन्तर्दशा में जन्म हुआ था और शनि की अन्तर्दशा १ व० ५ मा० ८ दि० भोगने को शेष रह गई है।

इसी के अनुसार अन्तर्दशा चक्र बनाया।

शुक्र महादशा की अन्तर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	इसके आगे सूर्य की महादशा आरंभ होगी।
शनि	१	५	८	उसके अन्तर्दशा वर्ष, चक्र के अनुसार ही उद्धृत कर
बुध	२	१०	०	देना और आगे महादशाओं की अन्तर्दशा भी चक्र
केतु	१	२	०	के अनुसार स्थापित करना।
योग	५	५	८	

महादशा और अन्तर्दशा का समय निकालना

जन्म सम्वत् और जन्मसमय का सूर्य स्पष्ट लो और इसमें ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा के वर्ष मास दिन आदि इसमें जोड़ते जाना तो दशा का समय (जब तक वह दशा रहेगी) निकल आयेगा। जोड़ने के लिये सम्वत् में वर्ष, सूर्य की राशि में मास, अथ में दिन, कला में घड़ी और सूर्य की विकला में दशा के पल जोड़ना।

सम्वत्=वर्ष

सूर्य अश=दिन

इसका उदाहरण देकर

सूर्यराशि=मास

सूर्य कला=घड़ी

नीचे समझाया है।

सूर्य विकला=पल

महादशा चक्र बनाकर उसमें जन्म का सम्बत और जन्म समय का सूर्य स्पष्ट राशि अंश कला विकला जोड़ना पड़ता है।

उदाहरण में यहाँ सूर्य स्पष्ट नहीं निकाला। सूर्य की केवल राशि अंश ज्ञात है, इससे केवल राशि अंश लिया है। कला विकला ज्ञात न होने से छोड़ दिया है।

जन्म समय	सम्बत	सूर्यराशि	अंश		२०१६	१०	२३
शुक्र महादशा वर्ष	१९९५	५	१५	+ मंगल महा के	७	०	०
तक शुक्र =	२०००	१०	२३	तक मंगल =	२०२३	१०	२३
+ सूर्य महा० के	६	०	०	+ राहु महा० के	१८	०	०
तक सूर्य =	२००६	१०	२३	तक राहु =	२०४१	१०	२३
+ चन्द्र महा० के	१०	०	०	+ गुरु म० के	१६	०	०
तक चन्द्र =	२०१६	१०	२३	तक गुरु =	२०५७	१०	२३
				+ शनि म० के	१९	०	०
				तक शनि	२०७६	१०	२३
				+ बुध० के	१७	०	०
				तक बुध =	२०९३	१०	२३
				+ केतु के	७	०	०
				तक केतु	२१००	१०	२३

अन्तर्दशा चक्र

जन्म समय	सम्बत	सूर्य राशि, अंश
	१९९५	५—१५
+ शनि की अंतर्दशा	१—५—८	
तक शनि =	१९९६—१०—२३	
+ बुध की	२—१०—०	
तक बुध =	१९९९—८—२३	
+ केतु	१—२—०	
तक केतु =	२०००—१०—२३	

इस प्रकार शुक्र की महादशा में अंतर्दशा वर्ष हुए।

अंश जोड़ते समय ३० अंश से अधिक होने पर राशि में एक बढ़ा दो और राशि जोड़ते समय १२ से अधिक हो तो वर्ष में एक बढ़ा देना।

इस प्रकार जोड़ कर महादशा या अन्तर्दशा का समय निकाल लेना । अब इन सब को इस प्रकार चक्र बना कर लिखेंगे ।

सावन किया हुआ महादशा चक्र

सूर्य की

शुक्र की अन्तर्दशा का चक्र

सूर्य की

ग्रह वर्ष मास दिन सम्बत रा. अश

ग्रह वर्ष मास दि. सम्बत रा अंश

१९९५ ५ १५ जन्म

१९०५ ५ ११ जन्म

शुक्र ५ ५ ८	२००० १० २३	तक शनि १ ५ ८	१९९६ १० २३	तक
सूर्य ६ ० ०	२००६ १० २३	„ बुध २ १० ०	१९९६ ८ २३	„
चन्द्र १० ० ०	२०१६ १० २३	„ केतु १ २ ०	२००० १० २३	„
मं० ७ ० ०	२०२३ १० २३	„		
राहु १८ ० ०	२०४१ १० २३	„		
गुरु १६ ० ०	२०५७ १० २३	„		
शनि १९ ० ०	२०७६ १० २३	„		
बुध १७ ० ०	२०९३ १० २३	„		
केतु ७ ० ०	२१०० १० २३	„		

इसके आगे सूर्य की अन्तर्दशा के वर्ष इसमें जोड़ते जाओ तो सूर्य की अन्तर्दशा का चक्र बन जायगा । आगे चन्द्र, मंगल, राहु, आदि की अन्तर्दशा इसी प्रकार निकाल लो । चक्र से प्रगट होगा कि इतने सम्बत में जब सूर्य उतने राशि अश पर आयेगा तब तक वह दशा रहेगी । जैसे शुक्र महादशा सम्बत २००० में सूर्य जब १० राशि २३ अंश पर आयेगा उस समय तक रहेगी । इसी प्रकार और भी ग्रहों की दशा या अन्तर्दशा के विषय में समझना ।

सूर्य की कौन राशि किस चान्द्र मास में पडती है पहिले बता चुके हैं, उसके अनुसार उस सम्बत का मास जान सकते हो । मोटे हिसाब से सूर्य १ दिन में १ अश चलता है । इस हिसाब से जितने अश हो उतने दिन जान लो । यदि पचाग पास हो तो पंचांग देख कर उस समय की तारीख निकाल लो, जिससे प्रगट हो कि किस तारीख से किस तारीख तक कौन ग्रह की दशा रहेगी । जैसे कन्या राशि का सूर्य है तो कुआँर में कन्या राशि आती है । इसी प्रकार समय का अनुमान कर लेना ।



अध्याय ५०

कार्य सिद्ध योग

जब यह जानना है कि कोई विशेष कार्य सिद्ध होगा या नहीं, तो उस समय घड़ी देखकर लग्न निकाल कर उस समय के ग्रह पंचांग से देखकर कुंडली बना लो। यही प्रश्न कुंडली हुई। इसी पर से किसी प्रश्न का विचार करना पड़ता है। जिस प्रश्न का विचार करना हो वह प्रश्न किस भाव से सम्बन्ध रखता है, खोजो। जैसे किसी ने स्त्री सम्बन्ध का प्रश्न किया तो यह सप्तम भाव से सम्बन्ध रखता है, इस कारण सप्तम भाव कार्य स्थान कहलाया। कार्य भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है। मान लो सप्तम स्थान में वृष राशि है तो वृष का स्वामी शुक्र होता है। इस कारण कार्येश यहाँ शुक्र हुआ। फिर लग्नेश कार्येश और उनकी दृष्टि आदि सम्बन्ध से निम्न रीति से प्रश्न का विचार करो।

(१) लग्नेश, कार्येश लग्न में हो।

(२) लग्नेश कार्येश दोनों कार्य स्थान में हो।

(३) लग्नेश कार्य स्थान में हो और कार्येश लग्न स्थान में हो।

(४) किसी स्थान में लग्नेश, कार्येश साथ हो।

(५) लग्नेश लग्न में कार्येश कार्य स्थान में हो।

(६) लग्नेश कार्येश कहीं हो परन्तु उनकी दृष्टि हो।

(७) लग्नेश कार्येश अपने अपने उच्च या स्वगृह के हो।

इनमें से किसी योग के होने पर कार्य सिद्ध होगा और इनमें से कोई योग न हो तो कार्य सिद्ध नहीं होगा।

कार्य सिद्ध समय

(१) चन्द्र की दृष्टि और योग से जो समय आवे उस समय में या जब लग्नेश या कार्येश का मिलाप हो पंचांग देख कर समय का विचार करना।

(२) प्रश्न काल में जो लग्न हो और वर्तमान में जो लग्न का उदित नवांश हो और उसका जो ग्रह नवांश स्वामी हो उनके अनुसार समय की अवधि जानना।

ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अवधि	अयन	क्षण	दिन	वृत्त	मास	पक्ष	वर्ष

(६ मास)

कार्य सिद्ध कितने मास अयन क्षण या कितने दिन में होगा जानने को लग्न के उदित अंश देखना, जितने अंश पर हो, उतनी ही संख्या कहना !

अध्याय ५१

नवांश ज्ञान

किसी राशि के ९ सम विभाग करो तो एक विभाग को नवांश कहते हैं। $\frac{360}{9} = 40^\circ$ का १ नवांश हुआ। किसी राशि के आरम्भ होने से अन्त होने तक, इस प्रकार ९ नवांश पूरे हो जाते हैं।

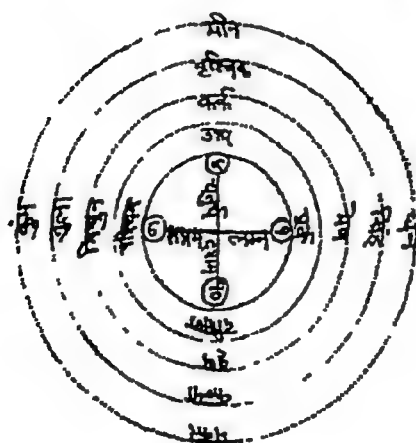
अब यह जानने को कि किस राशि में पहिले कौन नवांश उदय होता है, राशियों की दिशाओं पर ध्यान दो। जिस राशि की जो दिशा है उसका जो भाव है स्मरण रखो तो राशि के आरम्भ नवांश का पता लग जायगा।

(१) यहाँ लग्न की दिशा पूर्व है जिसकी राशियाँ १, ५, ९ हैं तो लग्नभाव १ होने से इन राशियों का नवांश मेष से आरम्भ होगा।

(२) उसके बाद दशम की दिशा दक्षिण है जिसकी राशियाँ २, ६, १० हैं, तो ये राशियाँ दशम भाव १० की होने से, इनमें १० राशि का नवांश पहिले उदय होगा।

(३) इसके बाद सप्तम की पश्चिम दिशा की राशियाँ ३, ७, ११ हैं तो ये राशियाँ सप्तम भाव ७ की होने से ७ राशि से इनका नवांश आरम्भ होगा।

(४) उपरान्त चतुर्थ की उत्तर दिशा होने से इनकी राशियाँ ४, ८, १२ का



चि०—८८

दिशाओं की राशियाँ और भाव

नवाश ४ राशि से आरंभ होगा, क्योंकि ये चतुर्थभाव उत्तर की राशियाँ हैं । (देखो चित्र संख्या ८८)

आरंभ की उदित नवाश (आरंभ का नवाश) की राशियाँ उपर बता चुके हैं । इनके आगे क्रमशः आगे की राशियों का उदय होगा । यहाँ नवाश चक्र देते हैं जिससे नवाश समझ लेना ।

(राशियों की दिशाएं राशि गुण धर्म चक्र में दे चुके हैं)



संमतियाँ

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चंद्राकौ यत्र साक्षिणौ

वैदिक काल से भारत वर्ष में ज्योतिष शास्त्र का प्रचार है। केवल भारत में ही नहीं ससार के अनेक भागों में लोगों का विश्वास ज्योतिष शास्त्र में बढ रहा है। कोई धर्म कोई देश का वधो न हो, भविष्य फल सत्य उतरते ही ज्योतिष शास्त्र पर विश्वास करना ही पडता है। इस कारण सर्व शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र प्रथम माना गया है।

हिन्दुओं के प्रत्येक पर्व-तिथि आदि के निर्णय के लिये पंचाग देखना ही पडता है। कृपक लोग वर्षा कैसी होगी, बौने का शुभ समय कब होगा, कौन सूर्य नक्षत्र चल रहा है आदि बातें जानने के इच्छुक रहते हैं। संतान होने पर सम्पूर्ण विवाह आदि सस्कार के निमित्त ज्योतिषियों की शरण लेना पडता है। संतान की कुण्डली बनवाते हैं और शुभा-शुभ फल जानने के इच्छुक रहते हैं। कई तो स्वयम् अपना वर्ष-फल ज्योतिषियों से बनवाते हैं। इस कारण प्रत्येक को यह इच्छा होती है कि स्वयम् को ये सब बातें जानना आ जावे।

आजकल ज्योतिष शास्त्र का अधिक प्रचार हो रहा है और पाश्चात्य लोगों में भी फलित ज्योतिष पर विश्वास बढने लगा है। इस कारण पढे लिखे नव युवकों के हृदय में इस शास्त्र के अध्ययन करने की इच्छा होती है। अंग्रेजी पढे लिखे तो कुछ अंग्रेजी पुस्तकों का सहारा लेते हैं, परन्तु वे पुस्तकें बहुधा अधिक मूल्य की होने के कारण सर्व साधारण को सुलभ नहीं है। इस विषय पर संस्कृत में अधिकतर पुस्तकें हैं, परन्तु उनकी भाषा टीका होने पर भी नवीन विद्यार्थी को बिना गुरु के इस विषय को समझने में कठिनाई प्रतीत होती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी में ऐसी एक पुस्तक की बड़ी आवश्यकता थी जिस के सहारे कोई विद्यार्थी इस शास्त्र को स्वयं अध्ययन कर सके। इसकी पूर्ति करने में बी. एल. ठाकुर साहब का प्रयत्न सराहनीय है। ज्योतिष के नवीन विद्यार्थी को इस शास्त्र में प्रवेश पाने के लिये जो प्रारंभिक ज्ञान होना आवश्यक है वे सब बातें ज्योतिष शिक्षा प्रारंभिक ज्ञान खंड में दे दी गई हैं। अंग्रेजी जानने वालों के लिये एक सुविधा जनक बात यह भी है कि स्थान २ पर आवश्यक अंग्रेजी नाम भी दे दिये गये हैं और अंग्रेजी पंचाग (एफेमरी आदि) भी देखने के लिये नाक्षत्र काल आदि तत्सम्बन्धी आवश्यक बातों का ज्ञान कराया गया है।

इस पुस्तक के अध्ययन कर लेने से पंचाग अच्छी प्रकार से देखना और समझ लेना एवं कुंडली और टिप्पणी बनाना आ जायगा। केवल कुण्डली से जन्म आयु समय आदि जान लेना और बिना पंचाग के तिथि नक्षत्र आदि भी जान लेना आ जायगा।

कुण्डली देखने के लिये जितनी आवश्यक बातें चाहिए वे सब इसमें अच्छी प्रकार से समझाई गई हैं और कुण्डली का कैसे विचार करना है यह भी बताया गया है ।

इसके अध्ययन कर लेने पर प्रारम्भिक ज्ञान के सम्बंध में और कोई विषय जानना शेष नहीं रह जाता । इतना सब विषयों का संग्रह किसी भी ग्रंथ में नहीं है । विशेष कर हिन्दी में ऐसी पुस्तक का होना गौरव की बात है । ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के इच्छुक इसको अध्ययन करके ग्रंथकर्ता के परिश्रम को सफल बनायेंगे यह आशा है ।

विदुषामनुचर

पं. नर्मदाप्रसाद शास्त्री

आ. विशारद प्रधान अध्यापक मुक्तानंद संस्कृत पाठशाला

(नरसिंह पुर) १८-७-४५

वर्तमान युग में जिस प्रकार से ज्योतिष शास्त्र की आवश्यकता थी वह पुस्तक ज्योतिष शिक्षा प्रथम भाग हमने आद्योपान्त देखा और उसके देखने पर यह प्रसन्नता हुई कि ज्योतिष शास्त्र पर श्रद्धा रखने वालों को यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है । इसमें सभी विषय हिन्दी में सुचारु रूप से चित्र सहित समझाये गये हैं । वैसे तो आज तक हिन्दी लेखकों ने कई हिन्दी ज्योतिष की पुस्तकों को लिखा है । परन्तु इस प्रकार की पुस्तक आज तक देखने में नहीं आई । इस पुस्तक का प्रयोग हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि सभी भाषाओं के जानने वाले कर सकते हैं । और सरलता से ही ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं । इस पुस्तक में जो लेखक (श्री बी. एल. ठाकुर पेन्शनर जी) ने अपना अमूल्य समय खर्च किया है उसके लिये हार्दिक वधाई है ।

आधुनिक ज्योतिष कार्यालय की ओर से

पं० बाबूलाल चतुर्वेदी ज्योतिषाचार्य

रचयिता भुवनविजय पंचांग

जबलपुर १६-८-५३

ॐ

Prof. G. R. Mahadik

L. Ag. F. R. H. S. (LONDON)

Astro-Palmist सामुद्रिकरत्न

Mahadik Astrological

Bureau.

Jabalpur

श्रीमान बाबूलाल जी ठाकुर ने ज्योतिष विषय पर २ खंडों में एक अपूर्व पुस्तक की रचना की है । उसमें प्रथम खंड को मैंने सूक्ष्म रूप से अवलोकन किया । देखने पर

अत्यन्त हर्ष हुआ यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिये जो इस विषय का अध्ययन करना चाहते हैं अत्यन्त ही मूल्यवान होगी और इससे पूर्णज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।

आशा है आपको इसके प्रकाशन में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी । इस कार्य के लिये श्री ठाकुर सा० का प्रयत्न सराहनीय है ।

प्रो० महाडिक

२१-८-५३

श्री गणेशाय नमः

पण्डित रामव्यास पाण्डेय

ज्योतिष विभागाध्यक्ष

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

अम्सी, बनारस ५

P. Ramvyas Pandeya

Head of the Department of Jyotish

Banaras Hindu University

Assi, Banaras

Dated 20-6-1954

संसार के प्राणियों की कल्याण कामना से आप्लावित होकर वेद पुराणादि के द्वारा त्रिस्कन्ध ज्योतिष का ज्ञान भारत से ही संसार में व्याप्त हुआ है । यह अक गणना प्रणाली से निर्विवाद निष्ठ है, वर्तमान समय में इस अनुपम ज्ञान को सर्व-साधारण में पहुँचाने के लिये राष्ट्रभाषा हिन्दी में ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता थी, जिसकी पूर्ति नरसिंह सदन निवासी श्री बी. एल. ठाकुर जी ने "ज्योतिष शिक्षा" ग्रन्थ के द्वारा की है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत के लिये अनुपम देने होने के कारण दिनोदिन इसकी अभिवृद्धि होती जायगी ।

श्रीराम व्यास ज्योतिषी

मेरे पूर्व परिचित मित्र बाबूलाल ठाकुर को ज्योतिष से बहुत प्रेम है और इसके लिये मैंने ज्योतिष शास्त्र की ऐसी पुस्तक लिखने के लिये उन्हें बहुत उत्साहित किया था । मुझे इस पुस्तक को देखकर बहुत सतोष हुआ कि उन्होंने मेरी बात को मान कर अपने सचित ज्ञान को लोक हितार्थ इस पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है । ज्योतिष शास्त्र से मुझे अमित काल से बहुत रुचि है और इस विषय को मैंने कई एक पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी वा संस्कृत में देखी हैं, परन्तु पूर्ण ज्ञान का समावेश किसी भी एक पुस्तक में नहीं है । इस न्यूनता की पूर्ति के लिये यह पुस्तक अपने ढंग की एक नवीन ही कृति है । इसमें सरलता से हर एक बात जहाँ आवश्यकता हुई वहाँ उदाहरण वा चित्र देकर समझाई गई है, जिससे की ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थियों को बिना किसी

सहायता के इस विषय को सीखने में सुविधा हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रेमी इससे अवश्य लाभ उठावेंगे।

अम्बिकाचरण दुवे

१४-७-४५

बी. ए. एल.-एल. बी. बकील, जबलपुर

पं. श्री उमाकान्तज्ञा विद्याभूषण गवर्नमेंट प्रमुख परीक्षोत्तीर्ण ज्योतिष शास्त्री, ज्योतिषाचार्य लोकविजय पंचांग के रचयिता जबलपुर की सम्मति।

ज्योतिष शिक्षा प्रथम भाग मैंने देखा। ज्योतिष सीखने वालों को प्रारम्भ में जो जो ज्ञान होना आवश्यक है वे सब बातें इस पुस्तक में दी गयी हैं। जो इस विषय को बिल्कुल नहीं जानते उनके लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इसमें सब बातें सरलता से समझायी गयी हैं और जहाँ आवश्यक समझा गया है चित्र भी दे दया गया है। हिन्दी में ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी।

उमाकान्त झा, ज्यो० आ०
ता० १७-४-४५ ई०

श्री बी० एल० ठाकुर द्वारा रचित "ज्योतिष शिक्षा" (प्रथम भाग) इस विषय का उत्तम ग्रंथ है। विद्वान् लेखक द्वारा इस भाग में आकाशीय ज्योतिष का वैज्ञानिक पद्धति पर भासिक विवेचन किया गया है। चित्रों एवं उदाहरणों की बहुलता से यह कठिन विषय सर्वथा सुगम बना दिया गया है। फलित ज्योतिष का महान् प्रासाद जिस आधार पर खड़ा है उसकी प्रचुर और सुबोध सामग्री अन्य किसी भी देशीय प्रकाशन में अब तक देखने में नहीं आई। मेरी सम्मति में ज्योतिष के प्रारम्भिक अध्ययताओं के लिये यह ग्रंथ अत्यन्त हितकर ही नहीं, अनिवार्य है। श्रीयुक्त ठाकुर को इस सुकृति के लिये हार्दिक बधाई।

जबलपुर

गंगा दशहरा सं० २००८ वि०

एस० एस० लाल

एम० ए० बी० टी०

